छिपी हुई
सभ्यताओ की खोज के
इन विवरणो का एक-एक शब्द
कल्पना से कही अधिक
चमत्कारी सत्य है।
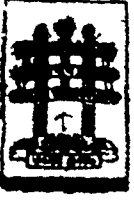
भारतीय ज्ञानपीठ
प्रकाशन

पुरातत्त्व
का
रोमांस

भगवतशरण उपाध्याय

लोकोदय ग्रन्थमाला : ग्रन्थाक-२४०
सम्पादक एवं नियामक :
लक्ष्मीचन्द्र जैन

Lokodaya Series : Title No 240

PURATATTWA KA
ROMANCE

(Reportage)

BHAGAWATSHARAN UPADHYAYA

*Bharatiya Jnanpith
Publication*

First Edition 1967

Price Rs 6 00

भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन

प्रधान कार्यालय
९, अलीपुर पार्क प्लेस, कलकत्ता-२७

प्रकाशन कार्यालय
दुर्गाकुण्ड मार्ग, वाराणसी-५

विक्रय-केन्द्र
३६२०।२१ नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-६

प्रथम संस्करण १९६७

मूल्य ६.००

सन्मति मुद्रणालय,
वाराणसी-५

प्रिय

डॉ० राममनोहर लोहिया

को —

'पुरातत्त्वका रोमांस' जैसा कोई प्रकाशन भारतीय भाषाओमें नही हुआ। हिन्दीके पाठकोके हाथमे इसे देते सुख और गौरवका अनुभव कर रहा हूँ। इससे पाठकोंका मनोरंजन होगा। मुझे पुरातत्त्वके इन स्थलोंको निकटसे देखनेका सौभाग्य मिला। इनमें-से कुछकी खुदाइयोंमें शामिल होनेका भी। कुछ स्थलों पर तो मै महीनों तम्बुओंमें रुका रहा था। इसकी सामग्री, जहाँ अन्यत्रसे उद्धृत हुई है, सीधे खनकोकी डायरियोंसे भी ली गयी है। मुझे इस पुस्तकको लिखकर विशेष सन्तोष हुआ है। इसके अध्याय 'धर्मयुग' मे धारावाहिक रूपसे छपे थे।

— **भगवतशरण उपाध्याय**

महानगर,
लखनऊ
१९.४.१९६७

■ ■

■ ■

पुरातत्त्वका रोमांस

पुरातत्त्वका भी क्या कोई रोमांस हो सकता है? क्या पत्थर, मिट्टी और हड्डियोंका भी रोमांस हुआ है? खण्डित शिलाओंका, टूटे-बिखरे पत्थरोंका, मिट्टीके फूटे ठीकरोंका, हड्डीके टुकडोका, चिथड़ोका?

हाँ, इनका भी एक रोमांस है। ये उस पुराने अतीतकी कहानी कहते है, उस दूर, सहस्राब्दियों दूरके अतीतकी जिसका हमे कभी गुमान भी न था। शायद ऐसे ही दूसरे टुकडे उस सुदूरतर अतीतकी कहानी अपने नये मिलनेवाले पन्नोके माध्यमसे कहते है, जो कभी खुले नही और जिनकी प्राचीन कहानीका हमे आज भी गुमान नही। ये टुकडे हमारे उस जी चुके जीवनके संवाहक है जिसे हम फिर जीना चाहते है, जिसे हमारे पुरखे अपनी अपूर्व साधोके साथ विविध स्वर्गोंकी परिधिमे जीना चाहते थे और जिन्होने उन्ही साधोको पूरा करनेके लिए अनन्य रोमांचक मृत्युके परवर्ती काम्य संसारोकी रचना की। अतीत वर्तमानसे जुडा हुआ है, वर्तमानमे ही पल्लवित है, जैसे वर्तमान भविष्यके साथ जुड़ा हुआ है, भविष्यमे ही पल्लवित होनेवाला है, और इस प्रकार जब अतीत वर्तमानकी राह भविष्यकी मंज़िलें तय करता है तब लगता है जैसे भविष्य अतीत ही हो, अतीत ही फिरसे जनम रहा हो, या कि भविष्य सुदूर अतीतमे ही अजन्मा पड़ा रहा था जो ज़माने बाद फिर साँस लेने लगा हो। सो अतीत, वर्तमान और भविष्यकालकी एक ही अविरल धारा है, अटूट अनन्त प्रवाह है। और जब हम अतीतके, अतीतके समानधर्मा मानवके कृत्योंको, पत्थरों, मिट्टीके ठीकरों और हड्डियोके ज़रिये ढूँढने लगते है तब हमारा प्रयास मात्र अपनेको देखना होता है, अपने समूचे मानवरूप-

को। और वह करिश्मा पुरातत्त्वका है जो फावडोकी चोटसे पृथ्वीकी छाती फाड विज्ञानके चमत्कारसे विगतको फिरसे संजीवित कर देता है।

और फिर उस पुरातत्त्वके करिश्मोका, फावडेके चमत्कारोका एक रोमास है, आकर्ण खिचे नेत्रोसे प्रजनित काव्य-रोमांससे कही मोहक, कही सुखद, कही स्थायी। कौन जानता था कि लरकाना जिलेमे कुपाण-स्तूपका आधार ढूँढते राखालदास वन्द्योपाध्यायको पत्थरकी वह छुरी मिल जायगी जो स्तूपके आधारकालीन जगत्से सहस्राब्दियो पूर्वकी दुनिया खोद निकालेगी, कि ज़मीनकी परतोके नीचेसे एक सभ्यताकी परतें खुलती जायेंगी और तब नगरोके भव्य भवन, उनकी समानान्तर सडकें और उनके मौज मारते सरोवर सहसा तिलिस्माती जादू-से हमारी आँखोमे उठ आयेंगे और इतिहासके सबल पाये सिद्ध होंगे? श्लीमानने लघुएशियामे केवल अन्ध-कवि होमरके अमर काव्य "ईलियद"का नगर त्रॉय खोजा था और जब उसने त्रॉय खोजा तब यूरॅपके पण्डित व्यग्यसे मुसकरा उठे थे—कहाँ होमरका वह कपोल-कल्पित सपनोका देश, कहाँ उस जर्मनका वह स्थूल भौतिक पराक्रम? पर आज कोई उस पराक्रमके परिणामपर आश्चर्य नही करता, कोई होमरके काव्यकी सचाईपर, उसकी कपोल-कल्पित काव्य-धारापर संदेह नही करता, उलटे उसके त्रॉय, ऐतिहासिक त्रॉय नगरके नीचे, एक पर एक बसी पाँच-पॉच त्रॉय नगरियोको देख अवाक् रह जाता है। किसने जाना कि श्लीमानका वह स्थूल पराक्रम जो केवल ग्रीकोका त्रॉय ढूँढता था, मात्र वही जिसके लिए अलभ्य लाभ था, आकाशसे चाँद तोड़ लाना था, वह त्रॉयकी ज़मीनके नीचे प्रागैतिहासिक सभ्यताकी, क्रीति-मिनोई सभ्यताकी, पाँच-पाँच नीवें खोद निकालेगा? मिकीनी नगर-की गहराइयाँ खोदते ग्रीकोके राजा और त्रॉयके प्रियमके पुत्र पेरिसके दुश्मन अगामेम्ननकी कब्र ही तो श्लीमानने खोजी थी, पर उसकी जगह मिल गया त्रॉयके प्रियमके खजानेसे कही समृद्ध, कही कीमती, मिकोनोका वह संसार, जो ईजियाई सभ्यताका ससार रहा था, आर्य दोरियाई ग्रीकोके

ग्रीसमे पहुँचनेसे बहुत पहलेका संसार, क्रीत और मिनोसका संसार। श्लीमानको पता क्या था कि त्रॉय और मिक्नीनी खोदते उसके फावडेका फल उस सभ्यताकी दीवारोसे जा टकरायेगा जिनपर समुन्दर पारके टापू क्रीतके महलोकी छत टिकी थी ? उस राजा मिनोसके महलोंकी छत जो मात्र कल्पित पुराणकी कहानी बन गया था, उस कहानीका आधार जिसमें स्वर्णका लालची राजा भोजन तकको स्पर्श मात्रसे सोना बना देता था, भोजनसे भी वंचित रह जाता था। उसीके नामपर मिनोई सभ्यताका नाम पड़ा जिससे त्रॉयसे भी प्राचीन प्रासाद पहले उसकी क्रीतकी राजधानी क्नोससमे खड़े हुए, फ़ाइस्तसमे। और जो महल क्नोससके टीलोसे प्रादुर्भूत हुए उनका गुमान स्वयं सर आर्थर ईवांसको न था। मेकेंज़ीको न था, जिन्होने क्रीतके उस नगरको खोदकर उन महलोको साकार खडा किया था, जिन्होने मिस्री पिरामिडोकी दुनियामे भी ऐसे महल नही पाये थे जैसे क्नोससके ये मिनोई महल है, जिनकी दीवारोपर लहराती राग-रेखाओमे अभिरामकी कामिनियोकी कमनीय आकृतियाँ अपने सौन्दर्यकी सम्पदामे लिखी पड़ी है और जिनकी दीवालोके पीछे आज भी निशोथके विलासकी मौजोसे उठते बीनके स्वर कानोमे गूँज उठते है, जिनकी प्रसिद्ध भूल-भूलैयामे भागती प्रेयसियो और उन्हे खोजते प्रणयियोके पदचाप आज भी हमे सुन पडते है। सच, यह पुरातत्त्वका रोमांस है, उस जर्मन मोदीके लड़के-द्वारा प्रस्तुत रोमास जिसने दूरके अपने गाँवोमे होमरकी कहानियाँ पढ़ते समय विश्वास किया था कि उसके सपनोका देश सच है, कि व्यापार-द्वारा धन कमा वह एक दिन अपना सपना सच करेगा। और वह समुन्दर पार चला गया था, अमेरिका, जहाँ उसने मोदीकी दुकान खोली और उसकी दुकानमे धारासार धन बरसने लगा—करोड़ो डॉलर, जिनकी अनन्तताकी नि:सारतासे उसे कोई स्नेह न था, वह तो उसे त्रॉयकी खोजका साधन मात्र बनाना चाहता था। अपने करोड़ो डॉलर उसने लिये समुन्दर वापस लाँघा और यूरॅपके पूर्व-दक्खिन वह तुर्की जा पहुँचा,

सुल्तानसे उसने लघुएशियामे तोरस पहाडोकी छायामे थोड़ी भूमि खरीदी और उसपर फावडोंकी चोट करने लगा। फिर त्राय निकला और वह ग्रीस जा पहुँचा, यद्यपि क्रीतको खरीद वह न कर सका, तुर्कोने उस 'कारूँके खजाने'के बदले कारूँकी ही दौलत माँगी और श्लीमानके बूतेकी बात वह न रही। ईवांसके नसीबमे चार चॉद लगने थे और उसने मिनोसके महलो-को क्नोसस और क्रीतमे खोजा, उस विज्ञानको शुद्ध वैज्ञानिक करते हुए जिसकी नीव श्लीमानने डाली थी, जिसे पुरातत्त्व कहते हैं।

किसने सोचा था कि मिस्रपर नेपोलियनका हमला पुरातत्त्वका अच-रजका रोमांस निकल आयेगा? संसारके कूटनीतिज्ञ जानते थे कि नेपोलि-यनकी आँख भारतपर लगी है, कि वह बड़ोदाके गायकवाड़से खत-किताबत कर रहा है, कि मिस्र जीतना उसका मात्र भारतकी राह सुगम करना है। पर किसको गुमान था कि पिरामिडो और मन्दिरोकी, गाज़ा, कारनाक, लुक्सर और मेम्फिसकी लिखावट उसके आक्रमणके माध्यमसे पढ़ी जानेवाली हैं; कि सहस्राब्दियो सोये, अबूझ पहेली बने, पिरामिडोका इतिहास सहसा खुल पडेगा, कि रोसेता शिलाखण्ड उस लिखावटकी, उस फ़राऊनी मिस्री इतिहासकी, उसके तिलिस्मकी कुंजी बन जायेगा?

रोसेता शिलाखण्ड—नेपोलियनके इंजीनियर-अफसरने नील नदीके समुद्री मुहानेपर उसे पाया। तीन लिपियो—ग्रीक, हिरेटिक (घसीट पुरोहिती) चित्रलिपिमे—उसपर लेख खुदे थे, एक ही इबारत, एक ही अर्थके लेख, तीन भाषाओमे, तीन लिखावटोमे, जिनकी अन्तिम, कालकी दृष्टिसे निकटतम, लिखावट ग्रीकमे थी, जो पढ़ी जा सकती थी। शापो-लियाँने उस लिखावटका राज़ खोला, उस ग्रीकसे भी पहलेकी लिखा-वटोका : हिरेटिक और चित्रलिपि हिरोग्लिफ़िकका। मिस्रकी प्रसिद्ध विलासिनी रानी क्लियोपात्राका लेख था वह, और देखा गया कि रानीका नाम सर्वत्र कार्तूसनुमा लकीरोसे घेरकर लिखा गया है, वैसे ही कार्तूसी घेरे बाकी दोनो लिपियोमे भी लिखे थे। राज़ खुल गया, उसी नामके

आधारपर, क्योंकि नामोंका सम्बन्ध उच्चारण और ध्वनिसे होता है और सारी भाषाओमे एक-सा रहता है। बस उसीके जरिये ध्वनि और अक्षर पहले हिरेटिकमे फिर हिरोग्लिफिकमे खोज लिये गये। तिलिस्म मिट गया, पहेली बूझ ली गयी—फ़राऊनी मिस्रका समूचा जानदार अबतक अज्ञात इतिहास हमारी नज़रोंमे खुल पडा था, परियोकी कमनीय कपोल-कल्पित कहानियोंसे कही अधिक रोमांचक, पुरातत्त्वका अभिराम रोमांस। और इस रोमांससे भी कही अधिक रोमाचक लाभ तूतनख़ामनकी वह कब्र थी जिसकी दीवारोके भीतर मानव जातिकी अविश्वसनीय स्वर्णसम्पदा प्रच्छन्न पड़ी थी, जिसे देखते ही उसे खोद निकालनेवाले दोनो पुराविद् जैसे पागल हो उठे थे, उन्हे काठ मार गया था, कि जब अगलेवालोने पागलोकी तरह सुराख़से अँधेरेमे आँखें फाड़-फाड़कर निर्वाक् हो देखना शुरू किया तो पीछेवालेने उसके कन्धेके पीछेसे उचककर कहा—“अरे, नेक हट जा, वरना कुतूहलवश मेरे प्राण निकल जायेंगे। मुझे भी देख लेने दे जो तू देखकर अवसन्न हो रहा है!” फिर जो उसने देखा वह आँखोके लिए अविश्वसनीय था, कल्पनातीत—सोनेकी दीवाल और दीवालके पीछे ठोस सोनेका मनो भारी तूतनख़ामनका ताबूत! पुरातत्त्वका रोमास सचमुच कितना अविश्वसनीय है!

ईस्ट इण्डिया कम्पनीका नौकर था वह कर्नल रॉलिन्सन जो १९वीं सदीके मध्यसे पहले ही ईरान जा पहुँचा था, ईरान और कम्पनीकी सरकारके बीच बातचीतके सिलसिलेमे। फ़ारसीका पण्डित था वह और उसे बहिस्तूनका वह शिलालेख मिल गया, दाराका वह सीधा खड़ा शिलालेख जिसमे उसकी प्रशस्ति उसके साम्राज्यकी जातियोंकी बोलियोके अनुरूप ही तीन भाषाओंमे खुदी थी—प्राचीन फ़ारसीमे, शूषीमे, बाबुलीमे। पहाड़की उस खड़ी दीवारपर प्यारी जानको खतरेमे डाल रॉलिन्सनने उस समूची लिखावटकी नकल तैयार कर ली और उसकी सहायतासे हिंक्स और नोरिसने दाहिनेसे बायें लिखी जानेवाली वह अरमई लिखावट

पढ डाली–सिद्ध कर दिया कि तीनो तीन भाषाएँ है, तीन लिखावटें, कि तीनोमे बावुली प्राचीनतम है, कि तीनो प्राचीन असूरी और प्राचीनतर सुमेरोसे निकली है, कि उनकी मूल लिखावट कीलनुमा है। और वह कीलनुमा लिपि पढ़ डाली गयी। फिर तो हजारो और लाखो ईटोपर लिखा अनन्त साहित्य अपनी सम्पदाके साथ आवरणकी अपनी गाँठें छोड सहसा खुल पडा–जलप्रलयको पहली बार साक्षर करनेवाला मानवका पहला काव्य गिलगमेश, मनु आदि मनीषियो-द्वारा प्रस्तुत जीवनकी योजनाओका, संविधान और कानूनका पहला विशाल ग्रन्थ राजा हम्बुराबीका 'कोड'। और अनन्त साहित्य, करुण और क्रूर, सहसा हमारे ज्ञानकी परिधिमें आ गया। बाइबिलकी पुरानी पोथीके तबतक सर्वथा काल्पनिक समझे जानेवाले प्रकरण सच हो गये और बाबुलकी क़ैदमे यहूदी नबियो-द्वारा प्रस्तुत होनेवाले हजरत मूसाके पाँचो इब्रानी खण्ड 'पेतेतुख' बाबुलके भग्नावशेषोके अमूल्य गौरव बने।

नबुख़दनेज़ारके नाती बेलशेज़ारकी दावतके समय महलकी दीवारपर 'मेने मेने तैकेल उफरासीन' लिखनेवाले हाथकी सच्ची लिखाई चाहे सर्वथा सन्दिग्ध हो, नबूखदनेज़ार और बेलशेज़ारके इतिहासकी सत्यतामें अब किसीको सन्देह न रहा। रहता भी कैसे जब बोत्ता और लेयर्डने, टेलर और बूलीने असूरिया और बाबुलके प्राचीन नगरोके खण्डहर उनके रेत-भरे टीलेके भीतरसे खोद निकाले? असुर, किला, निनवे अपने निमरूद और खोर्साबादकी ज़मीनसे, बाबुल, कीश, निप्पुर, सुरुप्पक, लारसाम, ऊर, और ऊरूक, दजला और फ़रातके द्वाबकी दक्खिनी ईरानकी ज़मीनसे, और एलामकी ईरानी भूमिसे जो दौलत निकली उसका गुमान भी किसे था? किसने सोचा था कि बाबुलके दक्खिनकी नदियोके मुहानोके बीचकी जमीनसे सहसा एक नयी दुनिया फट पडेगी, ऐसी दुनिया जहाँ कभी हज़ारो साल पहले एक बाढ आयी थी जिसने सैकड़ो मीलके गावोमे प्रलय मचा दी और सारा चराचर

पानीमे डूब गया, कि जिस प्रलयसे जीवोकी रक्षा सुरुप्पकके वीर ज़िउ-सुद्दूने उनके जोड़े नावपर बचाकर की, और जिसकी कहानी बाइबिलकी पुरानी पोथी हज़रत नूहकी जीवनीमे, हमारे शतपथ ब्राह्मणके मनुकी कथा-मे, और दूसरे साहित्योकी जलप्रलयकी कहानियोमे आज भी सुरक्षित है।

उन प्राचीन नगरोके नीचे आज भी सैकड़ो मील लम्बी-चौड़ी जमीन-पर प्रायः ६ फुट गहराईके पानीके निशान पुराविदोने खोद निकाले है, और खोद निकाली है उन्होने ऊरकी वे क़ब्रे जिनके भीतर राजा और रानीके साथ उनके दास-दासियाँ, नौकर-बाँदियाँ, उनके रथोमे जुतनेवाले खच्चर ज़हरके प्याले पिलाकर दफ़ना दिये गये थे, जहाँ रानी शुबादके सुनहरे ब्रूच और सेफ़्टीपिन उस प्राचीनतम कालको आजके जीवनमे झलका देते है।

हम प्राचीनको वर्तमानके प्रतीको-द्वारा पहचानते है, और वर्तमानके प्रतीक जब प्राचीनके जीवनमे मिलने लगते है तब मानवके समसामयिक विस्तारके अतिरिक्त उसके कालान्तरकी समष्टि भी प्रस्तुत हो जाती है और हम इसके एकस्थ रूपको दृष्टिगोचर कर लेते है। रानी शुबादकी उन ऊरकी कब्रोसे दो हज़ार साल बाद शायद जूदियाके धीमान् राजा सुलेमानका यश धरापर फैला जिसके गौरवसे खिचकर अरबकी रानी शेबा जुरूसलम चली आयी थी। मोहनजोदडोकी लिपि निःसन्देह आजतक नही पढी जा सकी, जैसे क्रीतकी लिपि भी नही पढ़ी जा सकी, पर सर जेम्स प्रिन्सेप-द्वारा भारतीय ब्राह्मी लिपिका पढ लेना पुरातत्त्वके चमत्कारकी एक घटना है। मोहनजोदड़ोके दिनोमे ही उसका साँड चलता-चलता कलाके अभिप्रायके माध्यमसे मिस्र जा पहुँचा था, वहाँ आपिस् साँड़के रूपमे पूजा गया था, फिर असुरोकी राजधानी कलामे उसने मानवमस्तक और पंख धारण किये, फिर दाराओके ईरानमे, पर्सिपोलिसके महलोमे, उनके स्तम्भोके शिखरपर चिकने मानव मस्तक-धारी वे पुंगव बने, फिर शुद्ध प्रकृत पुंगव, और फिर वही लौटकर अपनी

प्राचीन भूमिपर अशोकीय स्तम्भोके मस्तक बने, मौर्य कलाके चमत्कार, हमारे अभिराम मूर्द्धन्य। और उनकी छायामें स्तम्भकी यष्टिपर अशोकके मानवीय मातृस्नेहसे सिक्त सन्देश लिखे गये, उस ब्राह्मी लिपिमे जिसका मोहनजोदडोकी लिपिसे कोई सम्बन्ध न था और जिसका भेद सर जेम्स प्रिन्सेपने खोला, और भेद खोलकर अशोक और उसके लोकस्नेहको हमारे सामने मूर्तिमान कर दिया।

उस ब्राह्मी लिपिके पठनकी कहानी वस्तुत पुरातत्त्वका रोमास है। प्रिन्सेपने बारह-बारह वर्ष उसकी गाँठें खोलनेके प्रयत्न किये पर वह निष्फल रहा। और एक रात जब वह सुबहके गहराते अँधेरेमें ब्राह्मी अक्षरोको मनकी आँखोसे अपलक निहार रहा था, एकाएक उसे कुछ सूझा—ताम्रपत्रोमे लिखावटका अन्त अधिकतर सदा एक ही प्रकारके अनुस्वारान्त दो अक्षरोसे क्यो होता है, ताम्रपत्र वस्तुतः दानोल्लेख है, अधिकतर ब्राह्मणोको दिये दानकी सनद है, कही अन्तके अनुस्वारान्त दोनो अक्षर संस्कृतके 'दान' शब्दको तो व्यक्त नही करते? और विस्तरसे कूदकर प्रिन्सेप अँधेरेमे खड़ा हो गया। उसने चिराग जलाया और ज्ञानका चिराग उसी माध्यमसे अचानक जल उठा—उसने ताम्रपत्रो और उनकी नकलोपर नजर डाली, शब्द दान ही था। दो अक्षर पढ लिये गये 'दा' और 'न' और जहाँ-जहाँ उनका संयोग हुआ वहाँ-वहाँ उनके ज्ञानका प्रकाश पड़ा और धीरे-धीरे एकके बाद एक ब्राह्मी लिपिके सारे अक्षर सार्थक हो उठे।

फिरोजशाह तुगलकके दरबारमे तोपरा गाँवसे आये अशोकके स्तम्भके ऊपर खुदी ब्राह्मीकी इबारतको कभी दरबारके पण्डितोने सुल्तानके इकबालको फ़रिश्तो-द्वारा लिखा बताया था, अब वह देशके गौरवशाली इतिहासकी कुंजी बन गया और हमारी संस्कृतिके वैभवने नये डग भरे। हमने अशोकके अभिलेखसे जाना कि भारतीय संस्कृतिकी बुलन्दी बदीका जवाब नेकीसे देकर हासिल की गयी है, कि जिस सिकन्दरने हमारे

पंजाबमे रक्तकी होली खेली थी उसीके साम्राज्यके पाँचो यूनानी खण्डोमे, यूनानी राजाओके राज्योंमे अशोकने दो ही पीढ़ी बाद दवाएँ बँटवायीं।

यह भारतका बदला था। कबीरसे दो हजार सालों पहलेका, कबीरके ही सिद्धान्तके अनुरूप—"जो तोको काँटा बुये ताहि बोइ तू फूल।" और यह कुल कहानी बस पुरातत्त्वके रोमांसकी है।

■

असली सोनेका बना
तूतनख़ामनका चेहरा

तूतनख़ामनका तिलिस्म

आजसे कोई तीस-पैंतीस साल पहले यूरॅप-अमेरिकाके समाचारपत्र छापने लगे—"फराऊन,तूतनखामनके प्रेतका पहला ग्रास"....."दूसरा ग्रास"....."तीसरा ग्रास"....."चौथा....आठवाँ....अठारहवाँ"। प्रेतके उन्नीसवें ग्रासकी खबर एक समाचारपत्रने इस प्रकार छापी—"आज अठहत्तर सालके लॉर्ड वेस्टबरी लन्दनके अपने सातवी मंज़िलके आवासकी खिडकीसे अनायास कूदकर मर गये। लॉर्ड वेस्टबरीके पुत्र, जो तूतनखामनको खोद निकालनेवाले हॉवर्ड कार्टरके सेक्रेटरी रहे थे, नवम्बरकी एक रात अच्छे खासे शयनागारमे घुसे थे, सुबह मरे निकले!" तूतनखामनके वे बीसवें ग्रास थे। आर्चिबॉल्ड डग्लस रीड एक ममीका एक्स-रे करने जा रहे थे कि सहसा चल बसे, फराऊनके प्रेतके शिकार हो गये। पत्रकारने लिखा—"इस मृत्युसे इंग्लैण्डमे डरकी एक लहर बह गयी है!" मिस्री पुराविद् आर्थर वाइगॉल फ़राऊनी प्रेतके इक्कीसवें ग्रास बने : मात्र साधारण ज्वरसे अकाल-कवलित हो गये! अब बारी कार्टरके सहयोगी ए० सी० मेसकी थी जिन्होने प्रेतकी कब्रमे प्रवेश कर फराऊनी अभिशाप अपने सिर लिया था और अभी तूतनखामनका शव निरावृत भी नही हो पाया था कि मेस मौतके घाट जा लगे। तूतनखामनकी कब्र खोदनेके प्रधान नायक लॉर्ड कार्नार्वन और हॉवर्ड कार्टर रहे थे। लॉर्ड कार्नार्विन फराऊनी अभिशापके पहले शिकार थे और अब उनके भाई ऑब्रे हर्बर्टने सहसा पागल होकर आत्महत्या कर ली। और लॉर्ड कार्नार्विनका तो कुनबा ही उस अभिशापसे मर मिटा जब उनकी पत्नी लेडी एलिज़ाबेथ कार्नार्विन क्षुद्र कीटके काटनेसे चल बसी। शेष रह गये बस हॉवर्ड कार्टर

—कब्रके प्रधान खनक—अपने समस्त सहकारियोंके एकके बाद एक मौतके मुँहमे टपकते जाते गहरे अवसादको झेलनेके लिए। अभिशाप ब्रह्मलेख-सा खुदा था—"जो फराऊनकी शान्ति भंग करेंगे, उसकी निद्रा तोडेंगे, मौत अकाल उन्हे निगल जायेगी !" और मौत सबको निगल गयी थी। प्रत्येकके मरनेके वैज्ञानिक कारण बताये गये, अभिशाप कब्रके अभि-लेखोंके सन्दर्भमे निराधार सिद्ध कर दिया गया, पर जनविश्वास बना रहा कि मौतें तूतनखामनका तिलिस्म तोडनेसे ही हुई।

फराऊन तूतनखामनका तिलिस्म।

अलादीनके चिरागके जिन्नके करामात इतने अजूबे न थे, मिस्रका जादू इतना विस्मयकारक न था जितना रोमांचक तूतनखामनकी समाधि-की खोज थी। इस तिलिस्मके टूटनेका इन्तजार जमाना कर रहा था, सारी दुनिया साँस रोके मिस्रकी ओर एकटक देख रही थी, कि तिलिस्म टूटा और सोनेकी दीवारो, रत्नोकी राशियोसे उनकी आँखे चौंधिया गयी।

कैसे ?

मिस्री पुरातत्त्वका अमरीकी पण्डित हॉवर्ड कार्टर पिरामिडोकी खुदा-इयोके बाद नील नदके तीर लुक्सरके प्राचीन मन्दिरोके खण्डहरोमे जरा दम ले रहा था। उसने इंग्लैण्डके लॉर्ड कार्नर्विनके साथ तूतनखामनका शव, उसकी ऋद्ध समाधि, ढूँढ निकालनेका साझा किया था।

दिन नम था, कुछ गीला। नदीकी शीतल, जाडोकी कुछ ठण्डी बयार रेतको लाँघ जिस्मको लगती और कार्टर बियाबाँमे दूर वतनका माहौल पा रीझ उठता था। सपने सच करनेके लिए नीलकी घाटीमे जान-लेवा रेतकी दुनियामें पडा था, फलाहीनोके बीच, और पिरामिडोके प्रेतोके गहरे अँधेरे कमरे न्यूयॉर्क और शिकागोकी गगनचुम्बी इमारतोको भुलाते चले जाते, गहराती रातोमे मृतकोके साये स्मृतिमे सहसा गहरा उठते और कार्टर कब्रिस्तानमे सोया-सा सहसा जग उठता। ऐसी ही रातके परे जब वह दिन जागा तब कार्टर भी जागा और पाया कि दिन नम था।

और तभी कुछ लोग भागे हुए आये, बताया कि अब्दुल रसूलके साहसी वंशजोने फिर फराऊनी कब्रोंपर डाका डाला है। लुक्सर और कारनाकके सामने नीलनदके पार, उसके पश्चिमी तटपर बीबान अल-मुल्कके पास ही मिस्रके प्राचीन राजाओंके मकबरे है जिनका नाम आजके पुराविदोने 'राजाओंकी घाटी' रख दिया है। घाटी जिस रेगिस्तानमे अवस्थित है वही कभी थीब्रिजका नगर बसा था। उसी नगरके अभिजात श्रीमानोके शवोकी रक्षाके लिए घाटीकी पहाडी दीवारोमे गहरी गुफाएँ काट ली गयी थी। और कालान्तरमे देवता अमूनके मन्दिरोंकी स्तम्भ-रेखा उठती चली गयी थी।

कार्टर उठा, क़ब्रोंकी ओर चल पडा। उसके साथी मजूर उसकी रक्षा और हुक्म बजा लानेके लिए साथ चले। शाम हो चली थी। कुर्नोकी पहाडियोपर अठारह सौ फ़ुटकी ऊँची चढाई सामने थी, चाँद निकलने ही वाला था। आधी रात हो चली जब कार्टर घटनास्थलपर पहुँचा। डाकुओके एक दलको सोनेका सुराग मिला था, दूसरे दलको जो उसकी गन्ध मिली तो वह भी वहाँ जा पहुँचा और जमकर लड़ाई हुई। विजयी दल एक मोर्चा जीत दूसरे मोर्चेपर जूझ रहा था, जब कार्टर वहाँ पहुँचा।

गाइडने अविलम्ब डोरके उस छोरकी ओर इशारा किया जिसके दूसरे छोरसे डाकू कब्रमे उतर चुके थे। कार्टरने झट डोर काट दी और भागनेका मात्र साधन नष्ट कर दिया। स्वयं उसने कमरसे मजबूत डोर बाँधी। दूसरी ओर चमकती रातमे वह चोटीसे गोरकी ओर उतर चला। कब्रके डाकुओसे अक्सर कार्टरकी मुठभेड हो जाया करती थी और उस रातकी वह मुठभेड़ खतरेसे खाली न होकर भी कुछ कम दिलचस्प न थी। डाकू संख्यामे आठ थे, काममे मशगूल। कार्टरपर नज़र पडते ही थथमे।

"तुम्हारी डोर कट चुकी है, भागनेकी अकेली राह खत्म हो चुकी है", कार्टर बोला, "अगर जान बचानी हो तो मेरी डोर हाज़िर है,

वरना ममियोके साथ यही ज़िन्दगी बितानेके लिए तैयार हो जाओ।"

डाकुओंको सद्बुद्धि आयी और वे चुपचाप रस्सीके सहारे ऊपर चढ गये। कार्टरने वही रात बितायी।

कब्रे अनेक खुद चुकी थी, घनी सुनहरी कब्रें, मिस्री सम्राटो—फराऊनो-की कब्रें। थुथमिस, रामेसेज़, आमेनेम्हेत, सभीकी मिल चुकी थी, बस एक रह गयी थी—तूतनखामनकी, जिसकी अहर्निश खोज थी। उसके नामसे अंकित अनेक चीजें मिल चुकी थी—रत्नदीप, स्फटिक प्याले, स्वर्णपत्र। पर कहाँ थी उस तूतनखामनकी समाधि जो अट्ठारह सालकी उम्रमे ही चल बसा था और जिसकी सोलह सालकी हसीन रानीने राजाके ताबूतपर फूलोका गजरा रख दिया था?

बेल्ज़ोनी, लेप्सियस, डेविस, प्रास्पेरो, सभीने खोजा था, पर पाया कार्टरने। लॉर्ड कार्नार्विन और कार्टरने उसे खोजनेका साझा किया था, खोजा भी साथ-साथ एक अरसे तक, पर असफल रहे थे, और कार्नार्विन दम लेने इंग्लैण्ड गया हुआ था। पर कार्टर डटा था, वैसे दम वह भी ले रहा था, पर दूर स्वदेश अमेरिकामे नही, वही चिलचिलाती धूपकी घाटी-मे, लुक्सरके पास, नीलनदके तीर।

प्रयासका आखिरी साल था जब थके कार्टरने विमन हो कुदाल हाथमे ली। जाड़ोके दिन थे—इतिहासकी खुदाइयाँ जाड़ोमे ही हुआ करती हैं—नवम्बरका महीना, महीनेका तीसरा दिन, १९२२ का साल। पर किस्मतने इस बार साथ दिया और ज्यो ही कार्टरने प्राचीन मजूरोकी झोपडियोका मलबा हटाया, चट्टानमे नीचेकी ओर कटी सीढ़ियाँ नजर आयी। कार्टन कब्रके सोपानमार्गपर जा खड़ा हुआ।

पर पुराविदोके मनमे हज़ार सन्देह उठा करते हैं। क्या ठीक, कार्टरने सोचा, अपूर्ण अधकटी गुफा भी तो हो सकती है? और अगर गुफा समूची कटी हुई भी तो क्या ठीक कि 'ममी' लुट न गयी हो, प्राचीन कालके डाकुओंने ही उसपर हाथ साफ न कर लिये हो? फिर ममी अगर

बन्द भी रही हो तो तूतनख़ामनकी ही हो, इसका ही क्या निश्चय ? किसी श्रीमान् अभिजातकी भी तो हो सकती है, उच्चपदीय व्यक्तिकी, असामान्य पुरोहितकी ?

कार्टरका मन अनेक दिशाओमे भरमा, पर कार्टर कुदाल चलाता रहा, उसके मजूर पत्थरपर जमी पत्थर-सी ही कडी रेतसे जूझते रहे। तनिक भी विशेष आवाज उसे चौका देती और उसकी आँखे मजूरोकी गिरती-उठती कुदालोपर अनवरत पेंग मारती रही। आज तीसरा दिन था, पाँच नवम्बर। दिन चढ चला, दिनके साथ ही मनकी लालसा भी बढी। दिन उतरा पर लालसा चढी रही। रात आयी, नवम्बरकी रात, मिस्री रेगिस्तानकी रेशमी रात, और कुदाले चलती रही।

सीढीके नीचे सीढी। एकके बाद एक, बारह सीढियाँ—सोपान मार्ग। और बारहवी सीढी जब निकली तो सहसा द्वारका ऊपरी भाग दिख गया—बन्द, पलस्तर किया, मुद्रांकित द्वार ! मुद्रांकित द्वार क्या सच ? कार्टरको विश्वास न हुआ। किसी खनकके लिए, कार्टरके लिए विशेष, कुतूहलका समय था। धड़कते दिलसे उसने मुहरकी परीक्षा की। मुहर राजकीय थी। निश्चय ही भीतर राजकीय व्यक्तिका शव दफनाया हुआ था। ज़ाहिर, पर क्या शवका राजकीय होना काफी होगा ? और क्या भीतर सब कुछ कुशल था ?

भीतर सम्भवतः कुशल था, क्योंकि उसका मुँह मजूरोके आवासोसे ढका था। निस्सन्देह पिछली तीस सदियोसे कब्रको किसीने हाथ नही लगाया था। सन्देह और असाधारण उपलब्धिके दोलेमे कार्टर झूल रहा था। आवेगोसे काँपते हुए उसने एक सूराख कर लिया, बस बिजलीकी टॉर्चके प्रवेश-भरके लिए। उसने देखा—दरवाजेके पीछेका गलियारा ऊपर तक पत्थरोसे भरा है। जाहिर है कि कब्रको सुरक्षित रखनेके लिए विशेष प्रयास हुआ है।

अगली सुबह, ६ नवम्बरको कार्टरने साझीदार कार्नार्विनको तार

दिया—'आखिर घाटीमे आश्चर्यजनक खोज कर ही डाली—शालीन कब्र, मुद्राक यथावत्, फिर बन्द कर दिया, तुम्हारे आने तक, बधाई !" दो दिन बाद ही उत्तर मिला—"सम्भवत: शीघ्र ही आऊँ, २० तक सिकन्दरिया पहुँचना चाहता हूँ।"

२३ नवम्बरको लॉर्ड कार्नार्वन अपनी बेटीके साथ लुक्सर आ पहुँचे। कार्टरका बुरा हाल था। दो सप्ताहसे ऊपर शंकाओका शिकार, अधीरताका आहार बना वह मकबरेके द्वारपर पडा रहा था। सीढियोके प्रकाशमें आनेके दो ही दिन बादसे बधाइयोके तारोकी बाढ-सी आ गयी थी। पर कार्टर बेहाल था—बधाई अभी किसलिए ? क़ब्र किसकी ? कब्रमे है क्या ? काश कि कुछ ही इंच और उसने खोद लिया होता ! फिर तो उसे तडपते हुए इक्कीस बेचैन रातें न गुज़ारनी पडी होती।

२४ नवम्बरको मलबा हटाकर सीढियाँ साफ़ कर दी गयीं। सोलहवी सीढी उतर कार्टर मुद्राकित द्वारके सामने जा खड़ा हुआ। अब उसने साफ देखा, बल्लियो उछलते दिलपर हाथ रखे, मुहर तूतनखामनकी थी। और तभी मिस्री खनकोका समान अनुभव, कष्टकर अनुभव कार्टरको हुआ—उससे पहले जिन्दा इनसान उसके भीतर डोल चुके थे—डाकू प्राचीन कालमे ही उसपर डाका डाल चुके थे।

धीरे-धीरे एक बात और स्पष्ट हुई, कार्टरने देखा—द्वारका ऊपरी भाग दो बार खोला और बन्द किया गया है और कि दोबारा बन्द किये भागपर मुहर—शृगाल तथा नौ बन्दियोकी—क़ब्रिस्तानकी है, उधर नीचे, द्वारके अछूते भागपर तूतनखामनकी अपनी मुहर है। सो कब्र सर्वथा अछूती न रही थी। लुटेरोने उसमे प्रवेश पा लिया था और एक नहीं दो-दो बार। पर कब्रके द्वारपर दो बार मुहर लगानेसे यह भी ज़ाहिर था कि कब्र अभी समूची लुटी नही, कुछ बाकी है। क्या है बाकी ?

अभी कार्टरकी परीक्षा पूरी नही हुई थी, उसे शंकाकी दिशामे काफी झेलना बाक़ी था। द्वारके मलबेमे उसे भाँडेके कुछ टुकडे मिले जिनपर

अनेक फ़राऊनोके नाम खुदे थे—इख़नातून, सकारिज, थोथमिज, आमें-नौफिस, तूतनख़ामन, सभीके। तब क्या अकेले तूतनख़ामनको समाधि वहाँ न थी, सबकी जुमला कब्रें थी ? फिर तो, शायद सफलता आंशिक होकर रह जाये।

इसे जॉचनेका उपाय बस एक था—अली बाबाके द्वारका खुल जाना। कार्टरने उसे खोलनेकी तैयारी की। द्वार खुला। गलियारा मिला, बत्तीस फुटका, फिर दूसरा द्वार। उसपर भी दोनों मुहरें—क़ब्रिस्तानकी भी, तूतनख़ामनकी निजी भी। पर साथ ही इसका सबूत भी मिल गया कि लुटेरे इस दूसरे द्वारको भी भेद भीतर चले गये थे। फिर इस जुमला मक़बरेमे, जिसे डाकुओने खोल लिया था, बचा ही क्या रह सकता था ? पर कार्टरको जाना तो आख़िरी दीवार तक था।

शंका बढती जा रही थी, उत्कण्ठाने भी पंख मारे और भावनाने उछाले भरनी शुरू की। कार्टर लिखता है—"निर्णायक क्षण उपस्थित था। ऊपरके बाँयें कोनेमे मैने कांपते हाथो एक सुराख़ किया। मैंने लोहेकी शहतीर सुराख़से भीतर डाली, शहतीर कही टिकी नही—भीतर खाली था। मैंने ज़हरीली गैससे बचावके लिए मोमबत्तियाँ जला ली। सुराख़को जरा बड़ा किया।"

तूतनख़ामनका आकर्षण बडा था, काहिरा, सिकन्दरियाका विद्वद्वर्ग, अभिजात वर्ग उस कब्रमे सिमट आया था। अब भीड़ आगे बढी, कार्टर-की पीठपर लॉर्ड कार्नार्वन, उनकी बेटी, लेडी एवेलिन और मिस्री पुराविद् कैलेण्डर, जो कब्र मिलनेकी खबर पाते ही मदद देने आ पहुँचा था। सभी दम साधे पजोपर उचक रहे थे, अन्धकारमे आँखें फाड़-फाड़ देख रहे थे। डरते हुए, कमजोर हाथो, नर्वस कार्टरने दियासलाईकी बत्ती जलायी, उसे मोमबत्तीकी लौपर रखा, और लौको सुराख़पर। उसका सिर सुराख़पर झुका, तब वह आन्तरिक आवेगोसे कॉप रहा था, जैसे दूसरे भी उत्कण्ठासे विकल थे। हलके-हलके भीतरकी गरम हवा जो

बाहर निकली तो मोमबत्तीकी लौ और दमक उठी। मोमबत्ती भीतर जल रही थी, कार्टरकी आँखें सुराखपर टिकी थीं, पर भीतरका कुछ भी वह देख न सका। फिर धीरे-धीरे जब उसकी आँखें झिलमिलाती लौके प्रकाशकी अभ्यस्त हो गयीं, तब भीतरकी आकृतियाँ उसे कुछ स्पष्ट होने लगीं—पहले आकृतियाँ, फिर उनकी छायाएँ, फिर उनके रंग। उसके मुँहसे एक आवाज़ तक न निकली, जैसे वह सर्वथा गूँगा हो गया। सब दम साधे खड़े थे, उसीकी तरह चुप, पर हियाको मसलते-से। जब कार्नार्विनसे न रहा गया तब वह बोला—"पागल हो जाऊँगा कार्टर, वरना बोलो, क्या देख रहे हो, क्या सचमुच कुछ देख रहे हो ?"

सिर फेरते हुए, धीरे-धीरे काँपती आवाजमें कार्टर बोला—'हाँ, देख रहा हूँ—हैरत अंगेज़, अचरज-भरी चीजें।"

और जब द्वार खोला गया और बिजलीकी रोशनी उछल-उछल सर्वत्र पड़ने लगी तब जो देखा वह वर्णनातीत था, खननके इतिहासमें जो कभी नहीं देखा गया था—सुनहरे कोच, सुनहरा सिंहासन, बड़ी-बड़ी दो काली मूरतें, अलाबस्तरके भाँडे, असामान्य वेदिकाएँ। डरावने जानवरोंके सिरोंकी डरावनी छायाएँ कम्पित प्रकाशमें दीवारोंपर डोलने लगीं। वेदियोंमें-से एकके खुले द्वारसे जब विकराल सर्पने झाँका तब उचके पैर सहसा पीछे हटे। पर शीघ्र लोगोंने देखा, सर्प सोनेका था, मिस्रका राजचिह्न। दो राजसी मूर्तियाँ आमने-सामने प्रहरियोंकी भाँति खड़ी थीं, सुनहरे लिबाससे सँवरी, सुनहरे सन्दलोंसे विभूषित, गदा और दण्डसे सयुक्त, ललाटोंपर संरक्षक पुनीत नागसे अलंकृत।

पर इस समूची सम्पदाकी शालीनताको, जो अपने बहुविधिक विस्तारके कारण एक नज़रमें देखी नहीं जा सकती थी, एक स्पष्ट चेतनाने दूषित कर दिया—पूर्वागन्तुकोंकी आगमन-चेतनाने। सभीने देखा—द्वारके पास ही इस काल भी गारेसे अधभरा पात्र, जलकर काला हो गया दीप, हालकी रँगी सतहपर उभरी उँगलियोंकी छाप, और नीचे

देहलीपर विदा होते समय डाला फूलोका गजरा।

और अभी अचरजोंकी परम्परा चुकी भो न थी कि कार्टर तथा कार्नर्विन दोनोको सहसा एक साथ ही ध्यान आया कि इस कोषराशिके बोच ताबूत अथवा ममो तो एक भी नही। तत्काल फिर शका जगी—यह अकेला राजकीय मक़बरा है या सम्मिलित समाधियोका परिवार ?

तभी दोनों प्रहरी मूर्तियोके बीच तीसरा द्वार दिखाई पड़ा। "हाल ही देखो बहुमूल्य वस्तुओंसे भरे कमरेके भीतर कमरेका स्वप्न।" कार्टर लिखता है, "सहसा हमारे मानसमें जग डूबा और हमारी साँस धौंकनी-सी चलने लगी।" चमकते बिजलीके प्रकाशमे उन्होने सामनेके मुद्रांकित द्वारको परीक्षा को। देखा, नीचे दरवाज़ेमे राह बनाकर फिर मुद्रित कर दो गयी है। प्रकट है कि डाकू बाहरी कक्षको भेद भीतर पहुँच गये थे। पर प्रश्न तो यह है कि उन्होने वहाँ कुछ छोड़ा भी है या नही ? आगेके गलियारे या कमरेमे क्या है ? वह समूचा जनसकुल एकान्त रहस्यमय हो उठा था। वह रहस्यमयता इस बातसे और भो घनी हो उठी थो कि किस आकर्षणके लिए डाकू तीसरा द्वार लॉघकर भी बाहरको सारी स्वर्णराशि अछूती छोड़ गये थे ? उस अनायास लब्ध स्वर्णराशिसे क़ीमती आख़िर कौन-सी वस्तु थी ?

इसी बीच एक और अचरज हुआ। तीनो कोचोके नीचे किसीकी नजर गयी। चमत्कृत हो उछलकर उसने बिजलीका लैम्प घसीट लिया। लोग घुटनोके बल झुके। एक कोचके नीचे दीवारमे बड़ा सुराख था, झाँका, वह एक छोटा कमरा निकला, बाहरवालेसे छोटा, पर ऐसा जो बहुमूल्य पदार्थोसे अटा पड़ा था। लगा, जैसे डाकुओने वहाँ तूफानकी तेजीसे काम किया है। सारी चीज़ें तितर-बितर कर दी थी। शायद कुछ उठायी, बाहरवाले कमरे तक ले गये, पर बाहर न ले जा सके। क्यों ? क्या पकड़ लिये गये ?

पर सवाल डाकुओसे भी बढ़कर दूसरा था—तूतनखामन कहाँ था ?

और इसका जवाब अभी सम्भव न था, क्योंकि यद्यपि तिलिस्म टूट गया था, उसका एक भाग फिर भी अन्धकारमे था। शायद तीसरे बन्द द्वारके पीछे। वही, शायद वही तूतनखामन पिछली तीस सदियोसे सोया पड़ा था, अपने द्वारपर पड़ती कुदाल और हथौडोकी चोटोंसे बेखबर।

■
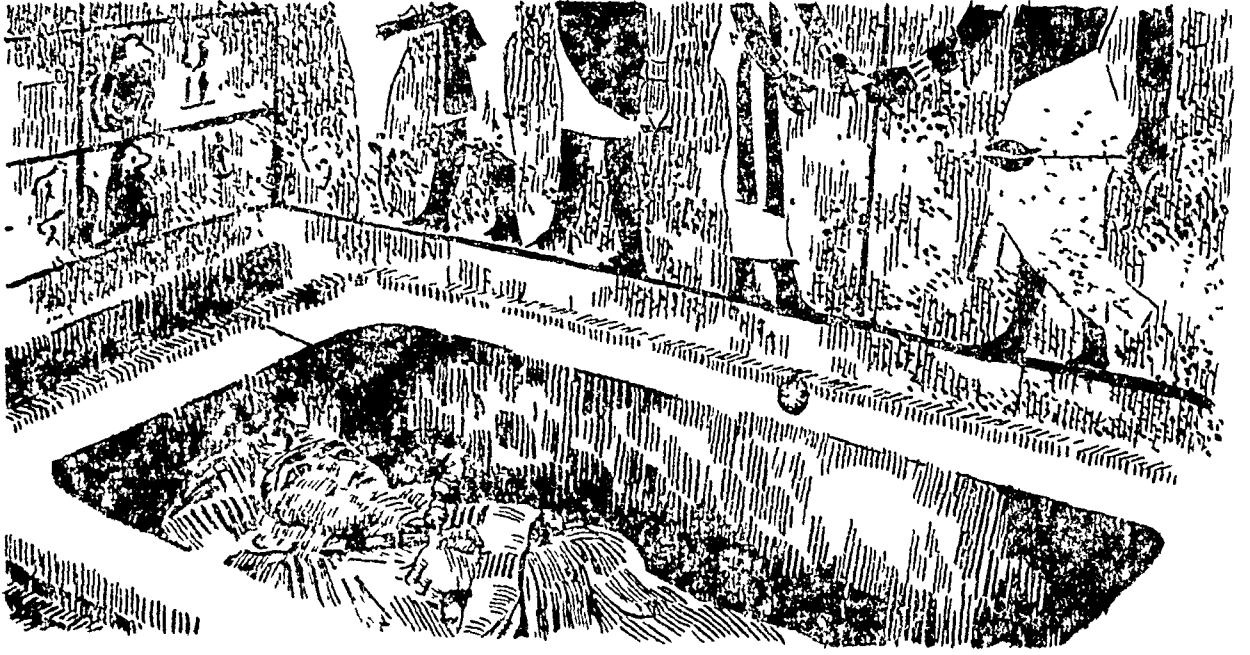
छह फुट लम्बा ठोस सोनेका ढक्कन
उठानेपर जो दिखा वह थी छातीपर रखे हाथोंमें राज-
दण्ड थामे तूननख़ामनकी मृत्युंजय देह

तूतनख़ामनका ताबूत

सामने दरवाजा था, पहरुओके बीच, मुहरबन्द। कार्टरने पिछले जाड़ो जहाँ काम छोड़ा था, काम वही ठमका हुआ था। कारण कि ऐसा नही कि पुरातत्त्वका काम एक दिनमे समाप्त हो जाये। एक-एक चीज़, सहस्राब्दियो पुरानी होनेसे बड़ी सावधानीसे सँभालनी होती है, वरना हाथ लगाते ही देखते-ही-देखते धूलका ढेर हो जाये।

सो सामनेका दरवाजा खुलनेके पहले तूतनख़ामनकी क़ब्रपर महीनो काम चला। वैज्ञानिक प्रबन्धके लिए लार्ड कार्नार्विनको इग्लैण्ड भागना पडा था, कार्टरको क़ाहिरा। कार्टरने कमरोंको पहले-सा ही बन्द कर उनके सामने पत्थरोंकी दीवारे खड़ी कर दी थी और बाहरी द्वारपर फ़ौलादका दरवाज़ा जड़वा दिया था।

पश्चिमी संसारके सभी भागोंसे सभी प्रकारकी सहायता आ रही थी। सभी प्रकारके वैज्ञानिकोने राजाओकी घाटीमे आकर डेरा डाल दिया था—पुराविद्, चित्रलिपिके जानकार, रासायनिक, धातुविद्, फोटोग्राफ़र, सभी। कब्रके द्वारपर ही रासायनिक-प्रयोगशाला स्थापित कर ली गयी थी और तब बाहरी कमरोकी बहुमूल्य वस्तुओको हटानेका काम शुरू हुआ। पुरातत्त्वकी प्रत्येक वस्तु बहुमूल्य होती है, लकड़ीसे सोने तक।

बाहरी कमरेमें एक-से-एक बढकर चीजें थीं, कला और इतिहासकी दृष्टिसे असाधारण। लकड़ीकी पेटी मिस्री कलाकी अनुपम निधि थी। उसपर पतला पेण्ट चढ़ा हुआ था और चारो ओर मनहर डिजाइने लिखी थी। चटख़ रंगोकी शोख़ी जितनी दर्शनीय थी, कोमल लचीली रेखाओंका छन्दस् उतना ही स्तुत्य था। चितेरेने आखेट और युद्धके जो चित्र लिखे

थे उनकी कारिता अनुपम थी, उन-सा कुछ भी मिस्री-कलामे अबतक नही मिला था।

और पेटिका तो मात्र विधान थी, उसके भीतरकी वस्तुएँ राजा-रानियोके भी कुतूहलका कारण बनती। तबकी शरीरजन्य प्रायः सभी बारीक आवश्यकताओकी पूर्ति उसमे चुनी चीजोसे हो सकती थी। तीन सप्ताह, तीन-तीन सप्ताह कार्टरने उन चीजोको पेटिकासे निकालनेमे लगाये। हर चीज ऐसी थी जिसका जादू अजाना था और बराबर डर लगा रहता कि हाथ लगाते ही चीज धूलकी ढेर न हो जाये, स्पर्श-मात्रसे टूट न जाये। सवा तीन हजार साल पुरानी चीजे, मुश्किलसे, आँखो देखनेका भार तो शायद सह सकती थी, परसकी परुषता नही। तीन सप्ताह उनके लिए कुछ भी न थे।

सामने उभरी पशवाकृतियोसे संयुक्त पार्श्ववाले तीन कोच थे, स्वर्ण-पत्तरोसे मँढे। स्वर्ण तो जैसे धूल था, सर्वत्र बिखेर दिया गया था। कोचो-की शक्ले मकबरोके चित्रोमे चित्रित होनेसे वैसे तो जानी-पहचानी थी, पर वास्तविक प्राचीन मिस्री कोच पहली बार देखने-छूनेको मिले। तीन हजार साल पहलेके कलावन्तोंने इन्हे सिरजा था, तीन हजार साल बादके पुराविद्-कलापारखी इन्हे देख-छू रहे थे, रोमांचित-कण्टकित शरीरोकी उँगलियोसे।

फर्नीचरके नाजुक आदर्श थे वे कोच। प्रत्येकके नीचे पादपीठी थी। एककी बनावट दूसरेसे भिन्न थी। एक सिंहशीर्ष था, दूसरा गोशीर्ष, तीसरा दो जलपशुओ—दरियाई घोड़े और मकर-का सम्मिलित मस्तक। उन कोचोके ऊपर और चहुँ ओर अनमोल चीजे अँटी थी, कसकर बँधी, जैसे कभी खुलनेवाली ही न थी। खुलनेवाली तो सचमुच न थी, कमसे कम रखी वे इसी विचारसे गयी थी कि उनका व्यवहार मात्र मृतक करेगा, पुराविदोका वह अजूबा परिवार नही जो सहस्राब्दियो बाद अपनी नयी नस्ल लिये मिस्रकी धरापर सहसा उतर आया!

सुनहरे रतन जडे कोच उस कालको आवश्यक वस्तुओसे ढँके थे—ऐश्वर्यशाली राजसी सम्पदासे, रत्नजटित शस्त्रास्त्रोंसे, बहुमूल्य परिधानोंसे। एकके नीचे एक लकड़ीकी पीठवाला सिंहासन रखा था। उसे देखते ही कार्टर चमक उठा, तत्काल उसने डायरीमे लिखा—'बग़ैर झिझकके कह सकता हूँ—इतनी सुन्दर वस्तु मिस्रमें अबतक कही नही मिली।'

तूतनख़ामनका सिंहासन, लकड़ीका बना, स्वर्णपत्तरोसे ढँका, काँच, जवाहरात जडा। तूतनख़ामन और उसकी रानी आँखेंसामन—तूतनख़ामन सिंहासनपर सरल बैठा, आँखेंसामन सामने खडी, दाहिने हाथसे राजाका बाँयाँ कन्धा प्यारसे मृदु परसती। तूतनख़ामन मृत्युके समय आयुके अठारहवें साल कुछ ऐसा ही लगता रहा होगा जैसी उसकी षोडश-वर्षीया सुकुमार प्रिया आँखेंसामन भी।

उधर चार-चार चमकते रथ थे, इतने बडे कि पहली बार कब्रमे लाये जाते समय उनकी धुरियोंको आरीसे दो टूक चीर लेना पडा था। रथोके टुकड़े प्राचीन डाकुओने चारों ओर फैला दिये थे, फिर भी रथोंका रूप देखने लायक था। चारो रथ सर्वत्रसे सोनेसे ढँके थे, उनका इंच इंच उभारी डिजाइनोसे ढँका था, दृश्य सोनेमे हथौडेसे जड़ दिये गये थे, रंगीन काँचके टुकड़ों और बहुमूल्य पत्थरोंसे उनके बहिरंग मुखरित थे।

धीरे-धीरे महीनोंके वैज्ञानिक परिश्रमसे मकबरेका बाहरी कमरा ख़ाली कर दिया गया। चौतीस लम्बे-चौडे बडे-बडे बक्से चौड़ी गाड़ियोपर बडी सावधानीसे लादे गये, चालू रेलसे साढे पाँच मील दूर नील नदीमे खड़े स्टीम-बजरेपर पहुँचाये गये। फिर तूतनख़ामनकी कब्रका वह अनमोल ख़जाना उसी राह वापस चला जिस राहसे सवा तीन हज़ार साल पहले पवित्र जुलूसके साथ आया था। सात दिनो बाद वह ख़ज़ाना काहिरा जा पहुँचा।

अब पहरुओंके बीच-पीछे मुहरबन्द दरवाज़ेकी बारी आयी। समूचे संसारकी आँखें उसपर लगी थीं, कब्रके बाहर भी, भीतर भी। अभी तक पता न था कि तूतनख़ामनकी 'ममी' भीतर है या नहीं। १७ फरवरीको शुक्रवार था। कक्षाभ्यन्तर कक्षका अन्तिम द्वार खुलना था। उसका रहस्य जाननेके लिए प्रकृतितः धीर, पर प्रसंगतः अधीर, बीसियों लब्धप्रतिष्ठ और विज्ञानके पण्डित कब्रके उस बीचके कमरेमें ठसे खड़े थे। उत्सुकताकी बेकल बे-अन्दाज थी, फिर भी किसीको गुमान तक न था कि दो घण्टे बाद किस अचरजपर निगाह टिकेगी। जो देखा था वह स्वयं अविश्वसनीय था, जो अभी देखना था—और असाधारण होनेसे तीसरे तालेमें प्रच्छन्न था—वह कितना अलौकिक होगा! इसका बस अटकल लगाया जा सकता था।

वैज्ञानिक पुराविद् मिस्र तत्त्वविद्, मिस्री अफसर ठसी कुरसियोंपर बैठे। इन्तज़ार बुरी बला होती है, फिर इस तरहका इन्तजार, जिसमें जिन्दगी मौतको नंगा कर रही हो, दम घोट देता है। इससे कुरसियाँ बाहरसे मँगा ली गयी थीं जिससे लोग क्षणोंकी व्याप्ति सदियोंमें आरामसे झेल लें। कब्रकी खामोशी अपने-आप घनी थी, मृत्युकी खामोशी घनी होती ही है, पर ज़िन्दगीकी खामोशी, अस्वाभाविक होनेसे, और गहरी भयावह हो जाया करती है। और जब बन्द दरवाजेकी मुहर तोड़नेके लिए, इसी कामके लिए नये बने चबूतरेपर कार्टर चढ़ा तबकी खामोशी कहनेकी बात नहीं, देखनेकी बात थी। लोग निस्पन्द, निर्वात दीपशिखासे, वस्तुतः ग्यारहों प्राणोंसे सम्वलित, जागरूक थे।

कार्टर चुपचाप धीरे-धीरे बड़ी सावधानीसे दीवारके ढोले पत्थर हटाने लगा, बड़ी सावधानीसे, क्योंकि डर था कि अगर वे भीतर गिरे तो कहीं किसी चीज़को नुकसान न पहुँचा दें। तिलिस्मकी चीजें ऐसी कि जब वे उँगलियोंकी मृदु परस न सह सकें, तब पत्थरकी चोट कैसे सह सकती थीं? फिर दरवाजेकी मुहर भी बचा रखनी थी, क्योंकि उसकी

वैज्ञानिक बिसात बड़ी थी। फिर भी स्वयं कार्टरकी चेष्टा, उसकी सावधानीके बावजूद, अदम्य उत्सुक थी। लिखता है—"हर लमहा महत्त्वका था, हर क्षण जी चाहता कि हाथ रोक भीतर झाँक ले।"

कार्टरके सहकारी मेस और कैलेण्डर उसकी मददको बढे। दस मिनिट पत्थर हटानेका काम कर चुकनेपर कार्टरने हाथ रोका, फ्लैश लाइट उठाकर द्वारके सुराखपर रखा—दम साधे लोगोमे हलकी फुसफुसाहट हुई, अनजाने, इतनी हलकी पर साथ ही जैसे इतने ज़ोरकी कि मौतका वह कमरा ज़िन्दा आवाज़से गूँज उठा।

कार्टरको कुछ दिखाई न पड़ा, बस एक चमकती दीवार दिखी। फ्लैश लाइटका रुख़ इधरसे उधर, उधरसे इधर करके भी कार्टर उस दीवारके छोर न पा सका। ज़ाहिरा उस दीवारने कमरेका दरवाज़ा भीतरसे ढँक रखा था। और वह दीवार कैसी थी? ऐसी, जैसी इनसानने न पहले कभी देखी थी, न पीछे कभी देखेगा—ठोस सोनेकी दीवार!

अब जितना तेज़ कार्टर हटा सकता था उतना तेज़ वह सामनेके पत्थर हटाने लगा। अब तो उसके पीछे खड़े-बैठे सभी सोनेकी दीवार देख सकते थे। उसकी चमक सभीकी आँखोपर छा गयी थी। कार्टर लिखता है—"जैसे-जैसे एकके बाद एक पत्थर हटते गये, हमने मानो बिजलीकी लहरसे वैसे-ही-वैसे जाना कि किस मात्रामे देखनेवालोके मानस आवेगसे भर उठे है।" शीघ्र ही कार्टर, मेस, कैलेण्डरने एक-साथ जाना कि दीवार क्या है, कि वह समाधिकी ही दीवार है, कि वे समाधिके ही सामने खड़े है। समाधि प्राय: कमरेके बराबर ही है, उससे केवल पन्द्रह इंच चतुर्दिक् छोटी। समाधि सोनेकी बनी, इतिहासकी सबसे कीमती समाधि, सोनेमे ढँकी, चमकती, रंगोसे भरी बहुविध मृतकरक्षक प्रतीकोंसे चित्रित, मूल्यवान् दीप्यमान पदार्थसे जडी, सत्रह फुट लम्बी, ग्यारह फुट चौडी, नौ फ़ुट ऊँची।

कार्टरके काममे कुछ देर हुई, लोगोके धीरजका बाँध टूट चला। देर

इस कारण हुई कि कार्टर नीचे पड़े हुए मनके चुनने लगा था। मनके उस हारके थे जो भागनेकी हड़बड़ीमें डाकुओंसे टूट गया था। लोग उत्कण्ठासे बेहाल कुरसियोंपर बेसब्र चंचल हो रहे थे, पर पुराविदोंकी संयत धीरतासे कार्टर बडी सावधानीसे एकके बाद एक मनका उठाता जा रहा था, यद्यपि स्वयं उसकी व्यग्रता भी कुछ कम न थी क्योंकि वह जानता था कि शीघ्र ही वह उस पुरातात्त्विक रहस्यका उद्घाटन करनेवाला है जिसकी कोई समता नही होगी।

अब सबके सामने एक ही प्रश्न अनेक प्रकारसे उठ रहा था—क्या लुटेरोको समाधिमे प्रवेश करनेका समय मिला? क्यो उन्होने उसमे प्रवेश कर ममीको नष्ट कर दिया है? कार्टरने देखा, समाधिके पूर्वी छोरका द्वार बन्द तो है पर मुहर किया हुआ नही है। काँपते हाथो उसने अर्गला हटा दी, भीतर घुसा। भीतर एक द्वार और था, किवाड पहले-जैसे ही बन्द थे, साथ ही मुहर किये हुए भी थे। तीनों पुराविदोने शान्तिकी साँस ली क्योंकि इन किवाडोके पीछे पहली समाधिके भीतर एक और समाधि दिखाई पडी, फिर एक और। उन्होने जाना कि जहाँ अबतक लाँघे सारे द्वार उनसे पहले लाँघे जा चुके थे, यह एक द्वार अब ऐसा मिला जिसे किसीने कभी लाँघा न था, जिसे लाँघनेवाले वे पहले थे। नि सन्देह, उन्होने जाना, ममी अछूती समूची मिलेगी, ठीक वैसे ही जैसे सवा तीन हजार साल पहले वह दफनायी गयी थी।

उन्होने समाधिके किवाड भेड़ दिये, बडी सावधानीसे, हलके। अब वे समाधि कक्षमे दूसरी ओर जा पहुँचे। वहाँ उन्हे एक नीचा दरवाजा मिला। उसमे प्रवेश करके एक छोटे कमरेमे घुसे। कमरेके बीचो-बीच, दरवाजेके ठीक सामने एक सोनेका समाधिनुमा बडा सन्दूक रखा था। और उसके चतुर्दिक् उससे पृथक् चार देवियाँ मूर्त थी। मूर्तियोमे इतनी गरिमा, इतनी स्वाभाविकता थी, इतना अनुरोध, इतनी भावातुरता थी कि उनपर नजर डालना अपावन लगता था। कार्टर कहता है, "मुझे

स्वीकार करते तनिक भी लाज नहीं लगती कि उन्हें देख मेरा मन भरसे भारी हो आया।"

धीरे-धीरे कार्टर, कार्नार्वन और लूकस बाहरी कक्षमें लौट आये, जिससे उन्होंने जो देखा है वह दूसरे भी देख लें। बाहरी कक्षसे हमने समाधि-कक्षसे लौटते एक-एकका चेहरा देखा। हर चेहरेपर अचम्भेका भाव था, आँखोंमें अचरज भरा था। जब निकले तो लगा कि किसीमें कूवत नहीं कि जो देखा है उसका बयान कर सके।

सन् १९२६-२७ के जाड़ोंमें, तूतनखामनकी क़ब्र मिलनेके पाँचवें वर्ष (बीचमें हर जाड़े काम होता रहा था) इस खोजका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्यका आरम्भ हुआ – सुनहरी समाधि और तूतनखामनका ताबूत खोलने, ममीको निरावृत करनेको सारा संसार उत्सुक था कि तीन हज़ार साल पूर्वके मिस्री सम्राट्के रूबरू खड़ा होकर उसके चेहरेपर एक नज़र डाल ले।

बाहरी कमरे और समाधि-कक्षके बीचकी ईंटकी दीवार हटा दी गयी। पहली सुनहरी समाधिकी चूलें अलग कर उसे उठा लिया गया। कार्टरका विश्वास था कि शव तीसरी समाधिके भीतर होगा। क्षण अत्यन्त भावोत्तेजक था। उत्तेजनाको संयत कर उसने सावधानीसे मुहर हटायी, अर्गला खींचा, किवाड़ खोले। और तब एक चौड़ी समाधि दिखाई पड़ी, अत्यन्त चमकीली, ठीक पिछलीकी-सी ही कारीगरी की। उत्तेजना अकथनीय थी—उस चौथी समाधिके पीछे क्या है? उसने काँपते हाथों उसकी अर्गला भी खोली, किवाड़ोंकी मुहर हटायी। धीरे-धीरे किवाड़ खुल गये और तब जैसे समूची समाधिको घेरे पत्थरका भारी ताबूत दिखाई पड़ा, अछूता, समूचा, जैसा पुरोहितोंके पवित्र हाथोंने तीन हज़ार वर्ष पूर्व उसे रख दिया था। क्या दृश्य था! चतुर्दिक् स्वर्ण-

दीवारोकी आभा तावूतपर बरस रही थी, तावूतके निचले भागपर उसकी अनधिकारी हाथोसे रक्षा करती-सी भुजाएँ और पंख फैलाये देवीकी आकृति खुदी थी। उस मूक-मुखर चेतावनीसे आहत कार्टर भयसे स्तब्ध रह गया।

तावूत-कक्षसे समाधियोको निकालनेमे चौरासी दिन लगे। उनके विविध भागोकी संख्या अस्सीसे ऊपर थी और प्रत्येक भाग भारी और तनिक असावधानोसे भी टूट जानेवाला था। समाधियोंको देखनेसे स्पष्ट हो गया कि अन्तिम क्रियाएँ निष्पन्न करनेवाले जल्दीमे थे जिससे उन्होने चूले उलटो मिला दी थी और उन्हे परस्पर बिठा देनेका काम हथौड़ेके ज़ोरसे किया था, जिससे पच्छिमके दरवाज़े पूरबको हो गये थे। और जानेकी जल्दीमे तबके कारीगर लकड़ी आदिके चूर भी वहीं छोडते गये थे।

सामने शव-वेदिका पड़ी थी, एक ही पीताभ पत्थरका बना तावूत ८-८ फुट लम्बा, ४-८ फुट चौड़ा, ४-८ फुट ऊँचा, ढक्कन उसका गुलाबी पत्थरका बना था। बड़ो कठिनाईसे बारह हण्ड्रेडवेटका वह ढक्कन अपनी जगहसे हिला। लोग भीतर झाँकनेको झुके — कपड़ेमे लिपटा कुछ दिखाई पड़ा, भारी-भरकम। पर जब वह कपड़ा हटाया गया तब भीतरका तावूत साफ़ निकल आया।

अभी शव अदृश्य था। मानवाकृतिक तावूतपर किशोर सम्राट्की सोनेकी आकृति उभरी थी। उसका स्वर्ण अमिताभ दमक रहा था। मस्तक और भुजाएँ साँचेमे ढालकर बनी थी, शेष समूचा शरीर उत्खचित था। सीनेपर कसे हाथोंमे राजदण्ड था। नील पत्थर जड़ा। चेहरा सच्चे सोनेका था, नेत्र और भवें विविध रत्नोसे बनी थी। चेहरा, अपनी धात्विक कठोरताके बावजूद, सजीव लगता था।

और तभी लोगोने कुछ और देखा, ऐश्वर्य और राजसी वैभवसे भरे

स्वर्णकी राशिसे दमकते उस कक्षको सहज मानवीयतासे मुखर करता एक अत्यन्त मर्महर दृश्य – विदाके अन्तिम क्षणोंमे प्रियके स्वर्णभालपर प्रिया-द्वारा छोडा फूलोका हार ।

फूल कुम्हलाकर सूख गये थे, पर रंग उनके अब भी पहचाने जा सकते थे । सवा तीन हज़ार साल जैसे अपनी काल-परिधिको लाँघ पास आ गये । अतीत चाहे जितने भी दूरका हो, वर्त्तमानसे कितना निकट है ! कारण कि दोनों एक ही काल-प्रसारके छोर है, कारण कि अजस्र बहती मानवीयता दोनोको अपनी स्नायुओंसे जोडे हुए है । अपने अट्ठारहवर्षीय प्रिय तूतनखामनको उसकी प्रियाने किस साधसे प्यार किया था, किस करुण कठोरतासे वह उससे अन्त कालमे विलग हुई थी, यह इन सहस्राब्दियो पारके रगोंको, रसकी वर्णिम दीप्तिको, आज भी जीवित रखनेवाली मालिकाके फूलोंसे प्रकट है ।

ताबूतके भीतर ताबूत – एकके भीतर एक – तीन-तीन । अन्तिम ठोस सोनेका छह फुटसे अधिक लम्बा । सोनेका ढक्कन उठा लिया गया । उसमे तूतनखामनका सवा तीन हजार सालका मृत्युंजय शरीर पडा था । उत्तेजित चेहरे झुके – शव अभी चीवरमे लिपटा था, मृत्युंजय होकर भी शरीर शव था, प्रेत-चीवरमे लिपटा । लोग प्रतापी फराऊनके रूबरू खडे थे, भावनाएँ आकाश चूम चली ।

तूतनखामन मिस्री सम्राट् था, इतना प्रतापी निःसन्देह नही जितना उसकी समाधिका ऐश्वर्य सूचित करता है । सूर्यका अद्वैत एकाधिराज पन्द्रह वर्षकी आयुमे मिस्रमे स्थापित करनेवाले प्रतिभाशाली विचक्षण फराऊन इखनातूनका वह दामाद था, सम्भवतः सौतेला भाई भी । १३५० ई० पू० के लगभग आजसे कोई तैतीस सदियो पहले तूतनखामन मिस्रपर राज करता था ।

शरीरवैज्ञानिक डॉ० डैरीने ममीके चीवरके बन्ध काट दिये और

स्वर्णके चेहरेसे ढँका तूतनखामनका मुखमण्डल निकल आया। वह शिष्ट सुसंस्कृत मानवका मस्तक था, क्रोधादिसे अविकृत। शेष शरीर रासायनिक विलेपनके आधिक्यसे विकृत हो गया था। इतना असहाय शरीर फिर भी स्वर्णाभूषणोंसे भरा था। रत्नोसे ढका। समूचे रत्नों और आभूषणोकी संख्या १४३ थी। रानीके गजरेकी गणना इन रत्नाभूषणोंमें न हुई।

श्रौर देखते-देखते
विनाश सबको लील गया
ज्योंका त्यों श्रौर जहाँका तहाँ

नगर जिनपर

अंगार बरसे

सत्रह सौ अड़सठका साल था। इटलीके त्रियस्त नगरमे होटलके एक कमरेमे पुरातत्त्वका पण्डित बैठा था—ऊँचा जिस्म, कुछ भारी-भरकम, बड़ी-बड़ी काली गहरी आँखें, ऊँची नाक, ठुड्डी और मुँह गोल नरम। हाल-की खुदाइयोसे निकली वस्तुओंका ब्योरा लिख चुका था और अब अपने प्रकाशकको हिदायतका खत लिख रहा था। पर जैसे ही उसने पत्रपर दो शब्द लिखे—'ऐसा चाहिए···' वैसे ही गलेमे फन्दा गिरा और पलक मारते दम घुट चला। अभी वस्तुस्थिति उसने समझी भी न थी कि छुरे-की चोटे पड़ी और हत्यारा मारिया थेरेसाके सोनेके सिक्के मेजकी दरार-से निकालकर चलता बना। अतिकाय पण्डित जैसे-तैसे अपने बेबस शरीर-को घसीटता जीनेसे लुढ़कता नीचे पहुँचा पर वेटरो और मेडोने जो ख़ूनसे लथपथ उसके कपड़े देखे तो सहमकर रह गये, घबराहटमे उसे अस्पताल भी न भेज सके और पुरातत्त्वका पहला पण्डित विंकेलमान संसारसे चल बसा।

जे० जे० विंकेलमान प्रशाके श्टेण्डम नगरका रहनेवाला था, १७१७ मे जन्मा, जो इसलिए इटली भाग आया था कि तबके फ़्रेडरिक महान्‌के प्रशामे नागरिक स्वतन्त्रता नगण्य थी। और जमाना आया जब विंकेल-मानने हरकुलेनियम और पॉम्पेईके शालीन खण्डहरोकी कहानी पहली बार कही। कहानी वह विध्वंसकी थी, दो नगरोके विध्वंसकी, इटलीके प्राचीन नगरों, हरकुलेनियम और पॉम्पेईकी, जो कभी पास-ही-पास, ग्यारह मीलके रकबेके भीतर, बसे थे और एक साथ ७९ ईसवीमे जलकर खाक हो गये थे।

समुन्दरके किनारे जहाँ आज नेपुल्सका विशाल नगर है उससे थोड़ी ही दूरपर विसूवियसका ज्वालामुखी है, जो जब-तब तपता है और फूट पड़ता है। उस प्राचीन काल ईसवी सन्‌की पहली सदीमें भी वह एक बार फूट पड़ा था और तब जिस प्रलयका उसने सृजन किया उसीमें हरकुलेनियम और पॉम्पेईके नगर नष्ट हो गये थे, जलती राखमें दरगोर! आज भी दूरके राही, राह टेढ़ी होनेपर भी, उस बियाबाँकी ओर मचल पडते हैं और सभ्यताके, समृद्धि और शालीनताके, खड़े भग्न स्तूप देख आहें भरते निश्चित दिशाओंकी ओर लौट जाते हैं, जहाँ वे उन नगरोंके विध्वंसकी सुनी कहानी दोहराते हैं।

साहित्य और इतिहासने उनके विध्वंसकी कहानी लिख छोडी है, प्राचीन इतिहासका हर विद्यार्थी वह कहानी जानता है। कितने विख्यात, कितने ऋद्ध वे नगर थे, इसका अन्दाज़ वहाँकी टूटी संगमरमरकी लाटोंसे, भवनोंके खण्डित गुम्बजोंसे लगाया जा सकता है। कहते हैं कि सम्राट् ओगुस्तसने रोमकी नगरीको मिट्टीकी ईंटोंसे बना पाया पर छोड़ा उसने उसे संगमरमरका बनाकर। पॉम्पेईको मिट्टीकी ईंटोंके दिन कभी देखने नहीं पड़े थे। उसकी घटिया इमारतें भी कमसे कम अलाबस्तरकी बनी थीं और ऐतिहासिक इमारतोंका तो कहना ही क्या—कुलीन संगमरमरकी पट्टिकाओंमें जैसे नीली रंगें दौड़ गयी हों। ऐसा होता भी क्यों न जब पॉम्पेईका निर्माता प्रसिद्ध जनरल वह पॉम्पे था जिसकी पीठ युरॅपने कभी न देखी, जब एशियाने देखी भी तब पॉम्पे अपनी क़ब्रकी ओर डग भर चला था। थेसालीकी चट्टानी धरापर फारसेलसके मैदानमें जानलेवा जंग छिड़ा जब जूलियस सीज़रने रुबिकन पार कर रोमन सिनेटकी शक्तिको चुनौती दी और जिसकी रक्षाका भार वीरकर्मा पॉम्पेने अपने ऊपर लिया। फ़ारसेलसका मोरचा उस युद्ध-परम्पराका अन्तिम था। जूलियसने रुबिकन पार करते ही अपना प्रसिद्ध वाक्य कहा था—"पाँसा फेंका जा चुका है!" फिर वह बिना जनरलकी, पॉम्पेकी सेनाओंको स्पेनमें हराकर अब बिना

सेनाओंके, जनरल पॉम्पेको हराने फारसेलस पहुँचा था। अपने टूटे मोरचे-से अकेली जान लेकर पॉम्पे बिथूनिया-फ़िलिस्तीनकी राह मिस्र भागा था और सीज़रका सामना करनेके लिए सेना तैयार कर रहा था कि सीज़र वहाँ पहुँचा और उसकी आवभगतमे, अजेय रोमन सरदारको, नजरमे, मिस्रके राजा तोलेमीने उसके शत्रु पॉम्पेका सिर काटकर पेश कर दिया था। यह अशुभ निर्माताके प्रारब्धसे उसके निर्मित नगर पॉम्पेईके भाग्य-पर भी जा मँडराया और अपने सृजनकी पीढ़ी बीतते-न-बीतते उसके नगर-को लील गया। सत्रह सौ साल गुजर गये तब ज़िन्दा इनसानने मुरदा इनसानकी क़ब्र खोद डाली, यद्यपि वह कब्र वस्तुतः मुरदोंकी न थी, ज़िन्दोकी थी जो यकायक अंगारोंके तूफानसे दफना दिये गये थे।

१७३८ के साल सेक्सनीके एलेक्टर आगस्टस तृतीयकी बेटी मेरिया अमेलिया क्रिस्टिना, दोनो सिसिलियोके राजा चार्ल्स बूर्बोसे ब्याह कर नेपुल्स पधारी। तरुणी रानीके मनमे प्राचीनताके प्रति उल्लास जगा। इटलीकी भूमि बरबस नवागन्तुकोके मानसमे वह उल्लास आये-दिन जना करती है—और उसने अपने महलके फैले बगीचोंकी सीमाएँ नाप डाली। मूर्तियोके अम्बार जहाँ-तहाँ पेड़ोमे दबे पड़े थे जिन्हे जब उसने निकालकर देखा तब उनमे प्राचीन रोमन नागरिक तोगा पहने दिखे और एक जगह रानीने कुदाल लगवा दी। रानीका स्वप्न फला और अभी दिनकी रोशनी खत्म भी न हुई थी कि साँझको अनवरत पड़ती कुदालोंने मिट्टी हटाकर घुडसवारोंकी धातुकी बनी मूर्तियाँ निकालकर रख दी। मूर्तियाँ ठीक तभीकी बनी थी जब रोमन लोजियनोके रिसाले मिस्रसे गॉल और इंग्लैण्ड तक पार्थिया-ईरानसे स्पेन तक धावे करते थे।

पहले विध्वस्त नगरोकी ज़मीनको देल्बफ़ने खोदा फिर काबेलियरे आल्कुबियरेने, और कुछ ही काल बाद विंकेलमानने अपनी जादूकी क़लमसे उनके ब्योरे लिखे और तबका सभ्य संसार साहित्य और इतिहासमे वर्णित विस्मृत हरकुलेनियम और पॉम्पेईकी कहानीकी सच्चाईसे चौंक उठा।

प्राचीनताके ज्ञानके गर्भमे पुरातत्त्वका बीज पड़ा।

पहले हरकुलेनियम खुदा, फिर पॉम्पेई। वस्तुत. दोनो साथ-ही-साथ खुदे, क्योकि पुरातत्त्वका ज्ञान अभीष्ट न था, विज्ञानका प्रयोग अभीष्ट न था, लोगोंपर सोनेका लोभ हावी था और जहाँ-जहाँ उसकी उपलब्धिकी सम्भावना हुई वही-वही कुदालकी चोट पडी। इनमे कभी हरकुलेनियमका क्षेत्र कभी पॉम्पेईका, अपनी सदियोकी धरोहर खोदनेवालोको लौटा देता। उस खुदाईकी कहानी जितनी ही दिलचस्प है उतनी ही मार्मिक, उतनी ही करुण भी। अकालमे एक इनसानका मर जाना कहानी बन जाया करता है फिर जहाँ हजारो-हजारो इनसानो और अपनी समूची समृद्धिके साथ दो-दो नगर जमीनमे सहसा समा गये हो, उनकी कहानी स्वाभाविक ही कितनी भयानक होगी, कहना न होगा। पर उनके विध्वंसकी कहानी तो कहानी ही होगी, जो इस प्रकार है।

७९का साल था, पहली सदी ईसवीका, अगस्तका महीना। पड़ोसके ज्वालामुखी विसूवियसमे कुछ हडकम्प हुई, हलकी-सी हलचल, धुएँके कुछ बादल आसमानपर घिरे और मँडराये, पर किसीने उनपर ध्यान न दिया। ध्यान कोई दे भी कैसे जब विसूवियसपर आये-दिन धुएँके बादल मँडराया करते थे, जैसे वे आज भी मँडराया करते है। पर जैसे ही चौबीस अगस्तका दिन निकला, विसूवियसकी अन्तरकी आवाजें कुछ मुखर हुई और जैसे-जैसे दिन चढा वैसे-ही-वैसे अघट घटनाएँ घट चली।

ऐश्वर्यसे मढ़े नगर हरकुलेनियम और पॉम्पेई अभी सोकर जगे ही थे। ऐसे नगरोकी, जहाँ वैभव बरसता रहता है, स्वर्ण-राशि दिन-दिन ऊँची होती रहती है, विलासकी अखण्ड धारा बहती रहती है, नींद जल्दी उचटती भी नही, क्योकि वह लगती भी जरा देरसे है। रातकी रौनक रातको मिनिटोमे निगल जाती है और उनीदी आँखोकी अलसायी भारी लदी झपकी पलके सुबहको जल्दी उठती नही। सो नगरोके श्रीमान् अभी बिस्तरोकी कमनीय कायाओमे उलझे पडे थे कि अचानक तूफान आया

और जैसे बाइबिलकी पुरानी पोथीके यहूदियोके भगवान् जेहोवाने चिल्ला-कर कहा हो—'सावधान हो जाओ, पापके पंखसे सने दोनो सोदोम और गोमोराके नगरो ! मै तुम्हे नष्ट कर दूँगा, तुम्हारे ऊपर अंगार और राख बरसाकर तुम्हे जला डालूँगा, तुम्हारे मैदान जल उठेगे, नागरिक जल उठेंगे, जानदार हर चीज नष्ट हो जायेगी ।' और सोदोम और गोमोराके नगरोपर अंगार और राख बरस पडी थी, उनके मैदान जल उठे थे, नागरिक जल उठे थे, जानदार हर चीज जल उठी थी और नगर वरबाद हो गये थे ।

हरकुलेनियम और पॉम्पेईके नगर अपने-आपके कारण उलट गये या विसूवियसकी लपटोसे जलकर राख हो गये, इसका निर्णय न कर सकनेपर भी इस सन्दर्भमे सोदोम और गोमोराकी याद स्वाभाविक है । यह याद इन रोमन नगरोके विध्वंसपर प्राचीनोको भी आयी थी और उनका कहना था कि प्रान्तोंकी लूटी, पराजित जातियोसे छीनी धनराशि हरकुलेनियम और पॉम्पेईके संगमरमरी प्रासादोमे अँटी पड़ी थी, जहाँकी रातें दिनके उजालेको चौंधिया देती थी और जहाँ नंगी, तरुण रूपराशियाँ ऋद्ध यशस्वी रोमन तरुण छैलोके मधु-पात्र, कामदग्ध आपानकोमे सालो सँजोयी सुवासित मद्यसे भरा करतीं और प्राची गगनसे मिटती उषाकी आखिरी ललाई तक ये कामशिथिल नग्न तरुण औंधे पड़े रहते । फिर तो वासना उन नगरोमे इतनी बढी कि लगा, जैसे नगर बेलशेज़्ज़ारका बाबुल हो, जिसके पापसे झल्लाकर जेहोवाका रहस्यमय हाथ दीवारसे निकलकर उसके ऊपर लिख चला था—'मेने मेने तेकेल उफार्सीन'—तुम्हे तराजूपर तौला गया है और तुम अपूर्ण प्रमाणित हुए हो, तुम्हारा अन्त निकट है ।

२४ अगस्तके पूर्वाह्णमे विसूवियसकी कुछ गड़गडाहट बाबुलके उसी भित्ति-लेखकी तरह सावधान करनेवाली आवाज़ थी, लेकिन वह तब सुन पडी जब हरकुलेनियम और पॉम्पेईके पापका घडा भर चुका था । और अगर लोग उस आवाजको सुन-समझ अपने पापसे सहम रक्षाके उपाय

सोचते भी तो क्या कर सकते थे जब प्रलयका तूफान सिरपर बरस पड़ा था। अब तो भागनेसे भी रक्षा सम्भव न थी।

नगरोमे चहल-पहल कबकी शुरू हो गयी थी। दूधकी मण्डियोमे दूध बह चला था, आसवकी मण्डियोमे आसव। बाज़ारोमे अन्न और मांस, मछलियाँ और विविध खाद्य, साग और सब्ज़ियाँ जिस तेजीके साथ बेचनेवालोके द्वारा लायी जाती खरीदारोके द्वारा उसी प्रकार खरीदकर चुका दी जाती। अरबके इत्र और सुवासित द्रव्य, भारतके मोती, गरम मसाले और मलमल, मिस्रकी स्वर्णराशि और गालके सुखस्पर्श चर्म, चीनके दुकूल अनन्त राशिमे बाजारोमे बेचे-खरीदे जा रहे थे कि यकायक धुएँके बादल आसमानपर घिर आये, घिरते चले गये। हज़ारो तोपोके दगनेकी आवाज़ें एक साथ दिशाओमे गूँज उठी और लोगोके कानोके परदे फट चले, दिल दहल उठे। लोगोने एक-दूसरेकी ओर विस्मयसे देखा, किसीके पास उन बिन-पूछे सवालोका उत्तर न था। लोगोने पृथ्वीकी ओर देखा फिर आसमानकी ओर, पृथ्वी थर-थर काँप रही थी, भीतर-ही-भीतर घुमड़ती, आसमान आगकी लपटें बखेर रहा था, धुएँके काले मेघोमे बिजलियाँ कौंध रही थी।

लोग अनायास भागे। बाहरके लोग घरोमे भीतर, घरोके लोग मैदानोमे बाहर। मैदानोमे आग बरस रही थी, घरोमे गन्धककी तेज गन्ध कोनो-कतरो तकको भरे जा रही थी। दोनो नगरोका तजरबा अपना-अपना था, दोरुखा, एक-दूसरेसे भिन्न। हरकुलेनियमको ज़मीनने गलाया, पॉम्पेईको आसमानने। हरकुलेनियम लावाका शिकार हुआ, पॉम्पेई लापिल्लीका। लावा विविध खनिजोसे बनी पिघली चट्टानोंकी धारा होती है जो ठण्ढी होते ही चिकनी शिला बन जाती है, लापिल्ली अंगारके साथ, राखके साथ पृथ्वीकी फटी छातीसे फेंकी जाकर टूटी नन्ही चट्टानोके साथ बरसनेवाली आग होती है जो नगरोको ज़िन्दा दरगोर कर देनेकी ताकत रखती है। हरकुलेनियम, जैसा लिखा जा चुका है, लावासे जला,

पॉम्पेई बरसते अंगारोसे।

खनिजों और चट्टानोंकी पिघली हुई अजस्र धारा हरकुलेनियमके राजमार्गों, उसकी गलियोसे होती घरोके भीतर बह चली थी और घर-बाहर सर्वत्रके प्राणी जलकर राख हो गये थे। सडकों और गलियोकी सतहें पिघली चट्टानोंके जलते हुए मलबेसे ऊँची होने लगीं और धीरे-धीरे घरोंकी छतोंकी ऊँचाई तक जा पहुँची। लोग बाजारोसे घरोंमे भागे, घरोसे मैदानोमे, पर त्राण कही न मिला, लौटकर अपने घरोंमे ही वे दफ़न हुए। छतोसे नीचे फिर ऊपर, फिर प्रच्छन्न कमरोमे, अटारियोमे, सोपान-मार्गोके नीचे जा छिपे। पर प्रकृतिकी उस अमानुषी ज्वालाने उन्हे कही न छोड़ा, दोज़खकी वह आग सर्वत्र जलती चली गयी और सर्वत्र उसने उन्हे जा पकड़ा। नगरोंका एक आदमी भागकर ऐसा न बचा जो अपनेपर बीती कहानी कही दूसरेसे कह पाता। जिन लोगोने मीलों दूर समुन्दरकी सतहपर बँधे डोलते जहाज़ोसे नगरोका इस प्रकार नष्ट होना देखा बस वही कहानी कहनेको जिन्दा रह गये और उनमें-से भी वस्तुत: सभी नही, बहुत थोड़े, जो दूरकी लहरोंपर क्षितिजावलम्बी हो लपटोका यह मारक व्यापार देखते रहे थे, वरना तीरका समुन्दर मीलों दूर तक जैसे बड़वानलसे खौल उठा था और उसके जन्तु जल-जलकर निर्जीव हो उछलती लहरोंमे बहते जा रहे थे। रोमका प्रसिद्ध इतिहासकार प्लिनी स्वयं उस आगमे जलकर इतिहासकी घटना बन गया।

पॉम्पेई लावाका नही, 'लापिल्लो'का शिकार हुआ। लोग पार्कोमे पडे थे, गरम घरोंकी गरमीसे निकल मैदानोमे रम रहे थे, बाज़ारोमे बेच-खरीद रहे थे कि सहसा कर्णभेदी विस्फोट सुनाई पडा और धुएँके बादलो-मे लिपटी आगकी लाल लपटें नागोके उठे फैले फनोकी भाँति आसमान चाटने लगीं। धुंए के बादल ऊँचे चढ चले, इतने ऊँचे कि दूर सीरियाके लोगोने, मिस्र अफ़्रीकाके लोगोने, भूमध्यसागर पारसे उन्हें आसमानमे फैलते, उसे काला करते देखा था, जैसा उस कालके वहाँ-वहाँके अगणित

उल्लेखों से प्रमाणित है।

पॉम्पेईके लोगोको पहले तो लगा कि जैसे पाउडर-सी कोई हलकी राख हलके ही बरस रही है। उन्होंने अपने कन्धोसे, हाथोसे, तोगोसे उस राखको हलके-हलके पोंछ दिया पर शीघ्र ही वह राख भारी हो चली—कुछ गरम, फिर ज्यादा गरम और फिर आसमानसे पत्थरोके अंगार बरसने लगे।

लोग भागे। कहाँ? किसीको पता न था। पर भागे सब, जहाँ जिसको राह मिली वही वह भागा—भीतरसे बाहर, बाहरसे भीतर। बाहर अंगार और पत्थर बरस रहे थे, भीतर गन्धका धुआँ सर्वत्र भरा जा रहा था। कुछ काल कपडोमे साँसकी राहोको ढँक-ढँककर प्राणोकी रक्षा की पर इससे रक्षा कहाँतक सम्भव थी? दम घुट गये। कोई किसी-को न बचा सका, न पति पत्नीको, न माता बच्चेको, न मालिक गुलामो, पालतू पशुओको।

अभी बरसती राख जलते अंगार भी न बनी थी कि आसमानके झुलसे हुए पक्षी नीचे गिरने लगे थे, पशु अनागत भयसे माँदोकी ओर भाग चले थे, मनुष्य शंकित कुछ सोच न पाया था कि अगला कदम किधरको उठाये, और अब अपने ही घरोमे उसे यकायक भस्मीभूत होकर दम घुटकर सदाके लिए समाधिस्थ हो जाना पड़ा। सत्रह सदियो बाद ज्योका त्यो पुराविदोने हरकुलेनियम और पॉम्पेईके भग्न स्तूपोको जब खोद निकाला तब लोगोने देखा कि वहाँके निवासियोका जीवन-धागा यकायक टूट गया था, जो जैसा रहा था वैसा ही रह गया था, वैसा ही वह खोदकर निकाला भी गया।

एक कमरेमे कुत्ता जंजीरसे बँधा था। नीचेका धरातल जब लावासे उठने लगा तब वह उठता हुआ जंजीरके साथ ही छत तक जा पहुँचा और वही झुलसा हुआ मरा पडा मिला था। हरकुलीजके द्वारके पास एक अस्थिपंजर पड़ा था जिसके हाथोके आस-पास सोने-चाँदीके सिक्के बिखरे

पड़े थे जिन्हें समेटनेका, लगता था, वह मरकर भी हड्डीके हाथों समेटनेका लोभ संवरण नहीं कर पा रहा था। शूकरी अधलेटी अपने बच्चोंको दूध पिला रही थी, तभी ज्वाल-धारा आ धमकी और स्तनोंपर झुके बच्चे और अधलेटी माँ सब झुलसकर मर गये। माता-पिता और बच्चे, परिवारके परिवार, घरमे जो कुछ मिला, अनुपातत: कीमती, उसे उठाकर बाहर भागे और सहसा मर गये थे, चीजें बिखर गयी थी। कितनी ही माताएँ अपने बच्चोंको लिये कपडोंकी तहोंसे अपनी और बच्चेकी आखिरी दम तक गन्धकके धुएँसे रक्षा करती मर मिटी थीं और उसी स्थितिमे राखसे दबकर सत्रह सदियों वाद खुदकर मिली थीं। माता-पिता और चौदह वर्ष-का कुटुम्ब भागा था। पिता-माता दोनोने पहले बच्चेकी रक्षाका प्रयत्न किया था पर उसका दम घुट जानेपर पतिने पत्नीको बचाना चाहा, पर कोई किसीको नही वचा पाया, आदमी स्वयंको भी नही और पॉम्पेई नगरका वह विशाल रोमन नागरिक अपने फैले अस्थिपंजरके रूपमे पडा था जब प्लैस्टर ऑव पेरिसकी सहायतासे खनकोने उसे जैसाका तैसा उठा लिया था। दो युवतियाँ खासा सामान लेकर, सोने-चाँदी-भरी पिटा-रियाँ लेकर, भागी थीं पर नगरके द्वार तक पहुँचते-पहुँचते सिक्कोंके साथ ही पिघल गयी थीं।

हरकुलिज़के द्वारका दृश्य अत्यन्त बीभत्स था। लाशें एकपर एक गिरी पड़ी थी। लगता है, जैसे मृत्यु नगर-द्वारका प्रहरी बन खड़ी हो गयी थी और जैसे-जैसे लोग आते गये अपने झोलेमे वह उन्हे डालती गयी। ज़ाहिर है कि द्वारसे निकलनेकी तेजीमें किसीको राह न मिली। द्वार या तो झुलसकर उनपर गिर पडा या बन्द होनेसे उन्हे राह न मिली और पीछेके धक्केने लाशपर लाश गिरा दी।

एक कमरेमे स्वामिनी और कुत्ता दोनों बन्द हो गये थे। अपने प्रिय श्वानको लिये स्वामिनी सम्भवतः घरसे बाहर भागी थी परन्तु जब बाहर-की गन्धसे दम घुटने लगा तब वह कुत्तेको लिये कमरेके भीतर घुसी और

कमरेका दरवाजा भीतरसे बन्द कर लिया। कमरेके भीतर ही उसका दम घुट गया। अभी कुत्ता मरा नही था। स्वामिभक्त कुत्तेने स्वामिनी-का अंग चिचोड लिया, स्वामिनीकी हड्डियाँ बिखरी पड़ी मिली और कुत्तेका अघाया तन अनन्त निद्रामे सोया मिला। सात बच्चे एक ही कमरेमे खेल रहे थे। खेलते-ही-खेलते सातो एक साथ दम घुटनेसे मर गये और सत्रह सौ साल बाद उनके अस्थिपंजर एक साथ मिले। एक बडे हालमे चौतीस जनोने एक साथ भागकर पनाह ली थी और जब उन्हे अन्यत्र कही शरण न मिली तब मनुष्यकी सहचरी बकरी उन्हीके साथ उसी हालमे आ मरी थी।

यह मृत्युका ताण्डव, उसका मारण कार्य इतने वेगसे हुआ था कि चूल्हेपर पकती रोटियाँ पकती ही रह गयी थी, मेजोपर रखी मोमकी मुहरे रखी ही रह गयी थी, ग्रन्थागारोमे पेपीरस कागजके ग्रन्थ पढे जाते खुले ही रह गये थे, स्नानागारोकी सफाई करते हाथ व्रणोपर अटके ही रह गये थे, कारखानोमे मजूरोके हाथ औजारोपर साबुत पडे थे। यकायक मृत्युका यह हमला हुआ था।

सरायोमे मेजोपर शराबे चुनी थी, खाने चुने थे, लोग खाकर जो पैसे गिनकर मालिकको उसके बिलोका भुगतान कर चले गये थे सो पैसे काउण्टरपर पडे थे, सराय-मालिकके गिरे अस्थिपंजरके पास ही, जो वस्तुत. अपने हालके स्वामी बिलोका भुगतान करनेवाले भगेडोके द्वार-पर पडे अस्थिपंजरोको निहार रहे थे। सरायकी दीवार, प्रेमियो, कामियो-की कविताओसे अब भी भरी थी, खोदकर निकाले जाकर सत्रह सदियो बाद भी।

और उस प्रसंगकी मार्मिक करुणाका उल्लेख कैसे करते बने जिसमे मृत्युके प्रकरणका ही उल्लेख हो? एक मरे व्यक्तिके ताबूतको दफनानेके लिए उसके परिवारके लोग और मित्र-समुदाय कब्रिस्तानमे उपस्थित थे। अन्त्येष्टि क्रियाएँ सम्पन्न हो रही थी कि पॉम्पेई नगरके विनाशका प्रकरण

शुरू हुआ और मरेको दफनानेवाले स्वयं जिन्दा दफ्न हो गये। सत्रह सौ साल बाद जब वह जगह खोदी गयी तब नये-पुराने मरे हुओंकी अस्थियाँ एक साथ मिली।

हरकुलेनियम और पॉम्पेईके मृतकोका पुनर्जागरण इतिहासकी अविस्मरणीय घटना थी। संगमरमरके प्रासादोकी क़तारकी कतार, स्तम्भोंकी परम्परा, नाट्यगृहो और खेलके अखाडोके मंचोंको घेरनेवाली मूर्तियोकी अनन्त सम्पदा साठ-साठ फुट लावाकी ठोस चट्टानी भूमिसे खोदकर निकाल ली गयी है। लावाकी चोटसे मूर्तियाँ टूटती एकके ऊपर एक गिरती चली गयी थी। पॉम्पेईको खोदना उतना कठिन न था क्योंकि वहाँ लावा न था, बरसी हुई राख थी और जब वह हटायी गयी तब कलाकी अनन्त राशियाँ प्राप्त हुईं। उन्हीमे भारतकी हाथीदाँतकी बनी कुषाणकालीन खडी नारीकी नग्नमूर्ति भी थी। भारतके कलावन्तने देशकी सीमाओके पार पॉम्पेईकी कलाराशिमे यह पैना तीर मारा था। एक-से-एक रोमन कलाके नमूने – वस्तुतः वे नमूने रोमन कलाके न थे, रोमन कला ग्रीक प्रतीकोंकी मात्र प्रतिकृतियाँ बनाया करती थी – ग्रीक कलाके रोमन रूप मिले। मीरन, फ़ीदियस, प्राक्सितिलीज़की अमर कलाकृतियोंकी प्रतिकृतियाँ मिली। वे भित्तिचित्र मिले जो ग्रीक-कालकी प्रतिकृतियोके रूपमे लिखे गये थे जिनमे विजेता सिकन्दरके इतिहास-प्रसिद्ध चित्रकार आपिलीज़की अमर कृतियोंकी अनुकृतियाँ थीं। ईरानी सम्राट् दाराकी सेनापर गौगामेला और अरबेलाके मैदानोमे आक्रमण करते हुए सिकन्दरका एकमात्र चित्र पॉम्पेईके ही एक प्रासादकी दीवारपर अंकित था जो आज भी सुरक्षित है।

हरकुलेनियमके नगर-द्वारके पास ही वह प्रासाद मिला था जिसमे कलाकी वस्तुएँ अँटी पड़ी थी, जिसकी दीवारें अमर चित्रोसे भरी पड़ी थी, और जो कालान्तरमे दार्शनिक 'सिसेरोका प्रासाद' कहलाया। पर इससे कहीं क़ीमती दार्शनिक फिलोदेयसका वह ग्रन्थागार था जो पॉम्पेईमे

मिला था और जिसका पेपीरस कागज़का भण्डार एक अशमे बड़ी कठिनाई-से रक्षित हुआ। जब विंकेलमानको विध्वस्त नगरोके खननेकी सुविधा तो दूर रही, रोमकी सरकारसे उपलब्ध मूर्तियोका परीक्षण करनेकी भी इजाज़त न मिली तब वह पादरी पियाग्गीके मठके कमरेमे पेपीरसके रोलोको उसका सँभालना चुपचाप निहारा करता। जिस विधिसे तवके वाल वेचनेवाले कारीगर लच्छेदार वालोको वडी सँभालके साथ कंघीदार यन्त्रसे खीचा करते उसी यन्त्रसे फादर पियाग्गी पेपीरस ग्रन्थोके पत्रोको वडी बारीकीसे सुलझाया करता। विंकेलमान उनको फिर सँभालता, पढता और दफनायें नगरोके मृतकोकी जैसे सुधि करता। जैसा लोगोमे दुर्विश्वास है, मृत्युका सम्पर्क मृत्यु ही उत्पन्न करता है, विंकेलमान भी मृत्युका चिन्तन करता, अकाल मृत्युका शिकार बना और प्रायः उसी अकाल क्षणिक मरण-वृत्तिसे, जिससे मृत्युने हरकुलेनियम और पॉम्पेईको जा दबोचा था।

■

रूपरानी हेलेनके आभूषण

हेलेनका अभिसार

त्रॉयका विध्वंस

नारीके लिए संसारमें युद्ध अनेक हुए है और एकाधने तो सभ्यता-का रुख ही बदल दिया है। सीताके लिए राम-रावण युद्ध, द्रौपदी-के लिए महाभारतका युद्ध और हेलेनके लिए ग्रीको और त्रोजनोका युद्ध संसारको ख्यातोमे अमर घटनाएँ हैं।

युरॅप और एशियाके बीच अनेक बार ऐसी घटनाएँ घटी जिनका सम्बन्ध नारीके हरणसे था। ग्रीक पौराणिक कथाओमें इस प्रकारकी एक ऐसी घटनाका उल्लेख हुआ है जिसमे देवराज जीयूस वृषभका रूप धारण कर लघु एशियासे राजकुमारी यूरोपाको हर ले गया था। इस प्रकारकी घटनाओमे अन्तिम अन्धकवि होमरके काव्य-प्रबन्ध 'इलियद'में मुखरित हुई है। वह स्पार्ताकी रानी हेलेनके लघु एशियाके त्रायके राजकुमार पेरिस-द्वारा हरण और परिणामतः ग्रीको-द्वारा त्रायके विध्वंसकी कहानी है, जो इस प्रकार है–

ईजियन सागरके पार लघु एशियाके सागर तटपर अत्यन्त प्राचीन कालमे एक नगर था–त्रॉय, जहाँ प्रियम राज करता था। प्रियमके वीर पुत्रोमे सबसे वीरवर हेक्तर था और सबसे रोमैण्टिक पेरिस। पेरिस एक बार घूमता हुआ ग्रीस देशके पश्चिमी भागके स्पार्ता नगरमे जा पहुँचा जहाँ मेनेलाउस राज करता था। मेनेलाउसकी रानी हेलेन अपने रूपके जादूके लिए तबके संसारमे अनुपम विख्यात थी। पेरिस स्पार्ताके राजा-रानी-का अतिथि हुआ। नारीका रूप और पुरुषका पौरुष पास होनेपर दोनो एक-दूसरेकी ओर स्वाभाविक ही आकृष्ट होते हैं, सो जैसे पेरिस भुवन-मोहिनी हेलेनपर रीझा, हेलेन भी उसे देख सुध-बुध खो बैठी। दोनोका

प्रेम पहले अनजाने फिर लोगोकी आँख बचाकर चला और जब दूरीका अन्तर बरदाश्तके बाहर हो गया तब एक दिन अभिन्न होनेके लिए दोनो स्पार्तासे भाग निकले। समुन्दर पार पेरिसके पिता प्रियमके नगर त्रॉयमे हेलेन और पेरिसने शरण ली।

ग्रीकोके राजपरिवार, उनके अनगिन कबीले, हेलेनके इस अपहरणसे क्षुब्ध हो उठे। उन्हे लगा—जैसे ग्रीक रनिवासकी लाज लुट गयी और सारे ग्रीक रजवाडे, सारे क़बीले, हेलेनके पति मेनेलाउसके भाई और आर्गोसके राजा आगामेमननके नेतृत्वमे त्रायके विध्वंसके लिए चल पड़े। मेनेलाउस और आगामेमनन आखिलिज़, पेत्रोक्लस, उलिसीज़ और ईनियस ग्रीक ख्यातोके सारे प्रसिद्ध वीर आगामेमननके झण्डेके नीचे जा खडे हुए। हज़ारो पालोवाले हज़ार जहाज त्रॉयकी ओर चल पड़े।

त्राय भी तैयार बैठा था। वह जानता था कि ग्रीकोका दुर्दम्य पौरुष पेरिसके छलका प्रतिकार करेगा और हेलेनके अपहरणका मूल्य उसे रक्तसे चुकाना पडेगा। प्रियम और उसके बेटे त्रॉय नगरीके परकोटोकी रक्षा करने लगे और प्रियमकी बेटी कसेन्द्राकी त्राय-विध्वंस-सम्बन्धी भविष्य-वाणीके बावजूद, विजयके सपने दहशतके साथ देखने लगे। ग्रीकोके जहाज त्रॉयके सामनेके समुद्रकी लहरोपर अपने श्वेत पालोके साथ जब लहराने लगे तब त्रॉयके प्रहरियोने नगरके द्वार बन्द कर लिये। ग्रीकोको जब पैठ न मिली तब उन्होने नगरके चारो ओरके जनपद उजाड़ डाले, नागरि-काओको अस्मत लूटी, उन्हें अपने शिविरोमे उठा ले गये। उनमे-से एकने आगामेमनन और आखिलीज दोनोको आकृष्ट किया, पर सेनाका अधिपति होनेके कारण आगामेमननके ही हिस्से वह पड़ी और निराश ईर्ष्यासे जला आखिलोज युद्धसे विरत हो अपने शिविरमे जा बैठा। ग्रीक वीरोने बार-बार उसकी मिन्नतें की पर आखिलीज अपने शिविरसे न निकला, युद्धमे वह शामिल न हुआ।

तब उसका मित्र पेत्रोक्लस उससे उसका कवच और रथ माँग युद्ध-

भूमिको ओर चला। आखिलीजका कवच पहने उसीके रथपर आरूढ़ पेत्रोक्लस उसीके रूपमे समरभूमिकी ओर जब बढ़ा तब उसे आखिलीज़ समझ त्रायके वीरोंने राह छोड़ दी। पर प्रियमका वीरपुत्र हेक्तर यह अपमान न सह सका, आगे आया और घमासान युद्धके बाद उसने पेत्रोक्लसका वध कर दिया। जब मित्रके वधका हाल आखिलीजने सुना तब दु:ख और क्रोधसे विक्षिप्त वह रथारूढ युद्धस्थलपर जा चढ़ा। त्रॉयकी सेना काईकी तरह फटती चली गयी और लगा कि जैसे त्रॉयका विनाश आखिलीज़के रूपमे सदेह चला आ रहा है। हेक्तर फिर सामने आया पर यमराज-सरीखे आखिलीजने उसे कुचल डाला। तीन बार त्रॉय नगरके चारों ओर दौड़ते हुए उनका परस्पर युद्ध हुआ, और अन्तमे विक्रान्त आखिलीज़ने हेक्तरको अपने रथसे बाँधकर बड़ी बर्बरतासे नगरके परकोटेके कई चक्कर किये और उसकी लाशको अपने शिविरमे उठा ले गया। राजा प्रियमने जब अपने बुढापेकी ओर इशारा कर आखिलीज़को उसके बूढ़े बापकी याद दिला उसके सामने घुटने टेक दिये तब आखिलीज़ने उसके बेटे हेक्तरकी लाश उसे सौंपी।

इलियदके काव्य-प्रबन्धकी कथा यही समाप्त हो जाती है। त्रॉयकी लड़ाई दस साल तक होती रही थी और इलियदमे केवल दसवें सालकी लडाईका ओजस्वी वर्णन हुआ है। आगेकी कथा, जो बहुत थोड़ी रह गयी थी, होमरके दूसरे काव्यप्रबन्ध 'ओदिसी' मे कही गयी है। उसके नायक उलिसीज़ने लकडीका एक ऐसा कपट अश्व तैयार किया जिसके खोखले उदरमे ग्रीक सिपाही छिपकर बैठे। अश्व जब नगरके भीतर पहुँचा तब ग्रीक सैनिकोने उसके उदरसे निकलकर सिंहद्वार खोल दिया और ग्रीकवाहिनी नगरमे पिल पडी। राजपरिवार नष्ट हो गया, राजा प्रियमका विख्यात 'खज़ाना' फिर भी ग्रीकोके हाथ न लगा, अपहृत हेलेनके साथ त्रॉयकी राजकन्या कसेन्द्रा भी आगामेमननको मिली। हेलेन पतिके साथ सालों बाद स्पार्ता पहुँची, त्रॉयका प्रसिद्ध नगर विध्वस्त हो गया, उसकी

दानवनिर्मित चट्टानोकी दीवारें ज़मीनसे मिला दी गयी।

त्रॉयके विध्वंसकी यह कहानी एक सभ्यताके विध्वंसकी है। ग्रीसके दक्षिणमे क्रीत नामका लम्बा-चौड़ा द्वीप है। उसकी राजधानी कभी क्नोसस थी जिसके भग्नावशेष कुछ दिन हुए खोद निकाले गये है। जब मोहेन-जोदेड़ो और हड़प्पा, मिस्र और बाबुलकी सभ्यताएँ प्रौढ हो चुकी थी तभी क्रीतकी सभ्यताका उदय हुआ था। उस द्वीपने अपना सांस्कृतिक और राजनीतिक अधिकार समूचे ग्रीस और लघु एशियापर स्थापित किया था। उसपर ग्रीक पुराणोमे वर्णित मिनोस नामके राजा राज करते थे जिनके नामपर वह सभ्यता 'मिनोई' कहलायी। उसके दूसरे नाम द्वीप और समीपके सागरके नामपर क्रमशः 'क्रीती' और 'ईजियाई' पड़े, फिर ग्रीक नगर मिकीनीके नामपर 'मिकीनी' भी। क्रीतके राजाओका प्रताप तब इतना प्रखर तपता था कि ग्रीसके रजवाड़े उसे कर दिया करते थे और यह कर भी कुछ साधारण न था। ग्रीक पुराणोमे लिखा है कि मिनोसके साँड़के लिए ग्रीस सात सुन्दर तरुण और सात सुन्दर तरुणियाँ हर नवे साल भेजा करता था। इस अपमानका वदला ग्रीक वीर थीसियसने मिनोसके साँडका वध कर लिया।

वस्तुतः यह दो विरोधी सभ्यताओका संघर्ष था। प्राचीन क्रीती सभ्यता और नयी वर्वर ग्रीक सभ्यताका। जब ईसवी पूर्व चौदहवी-तेरहवी सदीमे आर्य ग्रीकोके एशियाई क़वीलोने ग्रीसपर आक्रमण किया तब क्रीती सभ्यताके दो प्रमुख सन्तरी उत्तरमे शक्तिमान थे—स्पार्तके पास मिकीनी और दर्रादानियालके पास लघु एशियामे सागर तटपर त्रॉय। एशियाई ग्रीकोने मिकीनी और क्रीतपर आते ही क़ब्ज़ा कर उस प्राचीन सभ्यताको नष्ट कर दिया जिसका अन्तिम केन्द्र त्रॉय था। उसे प्रायः दो सौ साल वाद बारहवीं सदी ईसवी पूर्वके लगभग उन्ही ग्रीकोने धूलमे मिला दिया। इसी नाशकी पद्यवद्ध कहानी अन्धकवि होमर नवी सदी ईसवी पूर्वमे गाँव-गाँव नगर-नगर तन्त्रीनादके सहारे गाता फिरा करता था।

ट्रॉयका वह नगर अपनी सभ्यताके सन्ध्याकालमे जो सोया तो सदियों, प्रायः तीन हज़ार साल सोता रहा, जब एक दिन एक भावुक जर्मनने उसकी कुम्भकर्णी नीद तोड दी और उसे खोद निकाला। ट्रॉयको खोजकी वह कहानी परी-जगत्की है जिसके सम्पर्कसे पुरातत्त्वके विज्ञानका जन्म हुआ। ट्रॉयकी खोजके नायक श्लीमानकी कहानी स्वयं हैरत-अंगेज है, ग़जबकी दिलचस्प !

१८२९ का जिक्र है, उत्तरी जर्मन देशमे मैकलेन्बर्ग गाँवमे सात बरसका एक बालक गाँवके पादड़ी अपने पितासे कहानी सुन रहा था। कहानी वही ट्रॉयके विध्वंसकी थी। इलियदकी वह कहानी बालक श्लीमान अनेक बार सुन चुका था पर बार-बार सुनकर भी वह उससे अघा न पाता था। पिता जब कहानी कहने लगता तब बालककी चेष्टाएँ देखने ही लायक़ होती। उसके नथने फैल जाते, विस्मयसे आँखें फैल जातीं, होंठ फड़फड़ा उठते, और जब-जब कहानी ख़त्म होती वह पूछता, पिता क्या यह सच है ? पिता कहता, नही बेटे, मात्र कवि-कल्पना है — कहाँ आख़िलीज, कहाँ हेक्तर, कहाँ हेलेन, कहाँ पेरिस, कहाँ ट्रॉय ? और बालक बड़ी गम्भीरता, बडी दृढ़तासे धीरे-धीरे कहता — ना पिता, कहानी वह सच है, और एक दिन ट्रॉयको मै खोद निकालूँगा।

और श्लीमानने बड़े होकर ट्रॉयको ही नही, होमरके महाकाव्य इलियदके समरकेन्द्रको ही नहीं, क्रीती सभ्यताको खोद निकाला। पर वह खुदाई श्लीमानके जीवनकी कहानीका उपसंहार है। निर्धन परिवारके उस बालक श्लीमानने अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेकी योजना बनायी। उसने तय किया कि वह धन कमायेगा, इतना धन कि लघु एशियाके उस मैदानको खरीदकर खोद ले जिसके तले ट्रॉयका वह इतिहास-प्रसिद्ध नगर दबा पड़ा था। उसने मोदीकी दूकानमे नौकरी कर ली जहाँ सुबहके पाँच बजेसे गयी रात तक वह काम करता और हेलेन-पेरिसके प्यारसे कही अधिक आकर्षक ट्रॉयको खोद निकालनेके सपने देखता और पेट काटकर एक-एक पैसा

जोडता जाता। एक रात उसने सोचा – पैसा-पैसा जोडते तो सात जनम चुक जायेंगे और त्रॉय न खुद सकेगा, उसके लिए अमित धनकी आवश्यकता है और वह धन मोदीकी दुकान न दे सकेगी।

जर्मनीके गाँव-नगरसे श्लीमान भागा। उत्तरकी ओर नार्थ सी मे! वेनेजुयेलाकी ओर जानेवाले जहाजके कप्तानसे मिला, केबिन ब्वॉयकी नौकरी उससे माँगकर कर ली! पर जहाजपर जो कम्बख्तोका सामना पड़ा तो वह नार्थ सी की लहरोमे गर्क हो गया। किशोर श्लीमान समुन्दर तैरकर उस द्वीपके किनारे पहुँचा जो हालैण्डके अधिकारमे था। ऐम्स्टर्डमकी एक फर्ममे उसने नौकरी कर ली। अब उसकी योजना आकाश चूम चली, पर उसने उसे कल्पनाके पंख काटकर पृथ्वीपर उतारा और प्रायोगिक विधिसे उसे साधना शुरू कर किया। अँगरेज़ी, डच, स्पेनी ईतालवी, फ्रेंच, ग्रीक आदि छह-छह भाषाएँ दो सालके भीतर उसने सीख डाली। डच फर्ममे वह एकाउण्टेण्ट था और उसे रूसकी राजधानी सन्त पीतर्सबर्गके व्यापारियोसे खत-किताबत करनी पड़ती थी। उसने अपने-आप कठिन भाषा रूसी सीखनी शुरू की पर जब उसे कोई बोलनेवाला न मिला तब वह जोर-ज़ोरसे रूसी भाषामे लिखो तोलिमेकसकी कहानी दोहराने लगा। पड़ोसी नीदमे खलल पड़नेसे बुरा मान श्लीमानको रोज़ सुबह धिक्कारते और श्लीमान रोज़ सुबह उनसे माफी माँगता। जब उसे रूसी बोलनेवाला न मिला तब उसने किरायेपर एक आदमी रखा इसलिए कि वह उसके अज्ञात भाषामे लिखे काव्यके पारायणको सुननेसे ऊबे नही। कुछ ही दिन बाद नगरके बन्दरगाहमे आये रूसी जहाज़के व्यापारियोसे वह धाराप्रवाह रूसीमें बात करने लगा।

अपनी डच फ़र्मकी ओरसे श्लीमान कुछ व्यापार सम्बन्धी बातें तय करने सन्त पीतर्सबर्ग पहुँचा जहाँ स्वय उसने अपना विदेशोसे आयात-निर्यातका व्यवसाय शुरू किया। धन उसकी तिजोरियोमे जैसे बरस पड़ा। साल चुक जाते पर निरन्तर बरसते धनकी राशि न चुकती। श्लीमान

अमेरिका जा पहुँचा, वहाँ भी उसने दूकानोंकी एक श्रृंखला क़ायम की और अछोर धन पैदा किया। अमेरिकाका राष्ट्रपति उसके उत्साहसे चकित रह गया। फिर तो श्लीमानने उस त्यागका परिचय दिया जिसका उदाहरण मानव जातिके इतिहासमे नही। उसने अपना सारा व्यवसाय एक दिन सहसा समाप्त कर दिया और अर्जित धनराशि लेकर वह तुर्कीकी ओर चल पडा। संसारके किसी व्यापारीके पास सफल व्यापारकी दूकानोकी वह श्रृंखला होती तो वह स्वर्ग-अपवर्गके सुख छोड़ उसकी साधना करता और अनन्त धन, केवल धनके स्वामित्वके लिए, अर्जित कर चलता। पर श्लीमानको वह अभीष्ट न था। उसको अभीष्ट तो त्रॉयको खोद निकालना था जो उसके जीवनके बालपनकी प्रतिज्ञा थी, धन मात्र उसे पूरा करनेका ज़रिया था।

हाइनरिख़ श्लीमान दर्रादानियालके पास तुर्की सुलतानोकी हुकूमतमे बसनेवाले लघु एशियाके मैदान हिसार्लिक जा पहुँचा। राहमे ही उसे शुभ शकुन हुआ। इथाकाके पहले ग्रीक ग्रामीण परिवारसे ही जब वह मिला, गृहस्थने अपनी पत्नीका नाम उसे पेनिलोपी और पुत्रोके नाम तेलिमैकस और उलीसीज़ बताकर उनसे उसका परिचय कराया। तीनो नाम होमरके काव्योमे उसके जाने थे और उसने अपनी भावी सफलताको करतलगत जाना।

महीनो श्लीमान त्रॉयके चतुर्दिक् गाँव-गाँवकी खाक छानता रहा और एक दिन उसने समुन्दरसे थोड़ी ही दूरपर खड़े एक टीलेपर कुदाल चला ही दी। अबतक उसने, उस बयालीस सालके श्लीमानने, हेलेनकी-सी ही सुन्दर उन्नीस सालकी ग्रीक तरुणी सोफ़ियासे विवाह कर लिया था और दोनो त्रॉयके पुनरुद्धारके लिए कमर कस टीलेपर नित्य चढ़ जाते। सौ मजूर नित्य टीलेको गोड़ते, नित्य साँझ श्लीमान खुदाईमे मिली वस्तुओंका ब्यौरा बनाता, देर साँझ इलियदका काव्य जोर-ज़ोरसे गाकर ग्रामीणोंको सुनाता, देर रात गये पत्नीको प्यार करता और जब कभी

सोता भी तब राजा प्रियमके खज़ानेके सपने देखता, ऑयके दानवों-द्वारा निर्मित विशाल चट्टानोंके परकोटोंके सपने देखता।

और एक दिन उसका वह शैशव और कैशोरका, तरुणाई और प्रौढ़ आयुका सपना सच हो गया जब श्लीमानने प्रियमका खजाना, दानवों-द्वारा चट्टानोंसे निर्मित ऑयका परकोटा खोद निकाला। परकोटा, जिसे होमरने 'साइक्लोपों'के द्वारा बनाया लिखा है। दिन चढ चला था, श्लीमान बीबी सोफियाके साथ टीलेकी गहराईमें पुरानी खड़ी बीते जगत्की दीवारोंकी नींवपर पड़ती कुदालोंको देख रहा था कि सहसा बिजली छू जानेकी-सी उसमें हलचल हुई। उसने बीबीसे कहा – 'सोफिया, चिल्लाकर मजूरोंका काम रोक दे, कह दे कि सहसा याद आयी कि आज मेरे जन्मका दिन है। कह दे, उसकी खुशीमें इन्हें मजूरी समूचे दिनकी मिलेगी।'

सोफियाका हुक्म सुन मजूर खुश-खुश कामसे अपने घरोंको वापस चले गये और तब श्लीमान खुदाईकी गहराइयोंमें जा पहुँचा। कुदालें हटा छुरीसे काम लेना शुरू किया। खतरेमें, यह जानते हुए भी कि दानवोंकी बनायी ऑयके महलोंकी, उसके परकोटोंकी चट्टानी दीवार अगर गिरी तो उसकी हड्डी-पसलीका भी कहीं पता न चलेगा। पर वह निरन्तर घण्टों छुरी चलाता रहा। प्रियमका सोना दोनों हाथों निकालता गया और जब सोनेके कर्णफूलोंका जोड़ा मिला तब उसने सोफियाके कानोंपर उन्हें धर उसे पुकारा – 'प्यारी हेलेन!'

श्लीमानने जो खोदा था, प्रियमका खजाना उसमें नितान्त गौण था और ८७०० स्वर्णालंकरण कुछ कम न थे। यद्यपि ठोस सोनेके छह हार, दो सुराहियाँ, दो कड़े, दो ताज, साठ कर्णफूल, जो उसने अपने समकालीन सन्दिग्ध संसारको भेंट किया वह न केवल जाने ऑयका नगर था बल्कि उससे भी सहस्राब्दियों पुरानी अनजानी मिनोई सभ्यताके उत्तुंग शिखर थे, जिसका मूल केन्द्र क्रीतका टापू रहा था। ऑय तो खुदाईकी निचली तीसरी ही मंजिलपर मिल गया, पर साथ ही उसके नीचे एकके ऊपर

एक बसी छह-छह नगरियाँ निकल आयी, कुल नौ।

संसारके पुराविद् विद्वान् जो युरॅपमें उसकी मूर्खतापर हँस रहे थे – जो होमरके काव्य-प्रबन्धको कपोल-कल्पना मानते थे – सहसा सन्नाटेमे आ गये। श्लीमानकी झोपड़ी सोने और प्राचीन वस्तुओसे भरी थी। उसे लेकर निकल भागना आसान न था। पर जिसने सहस्राब्दियोंसे खोयी सभ्यताके दर्शन आसान कर दिये उसके लिए तुर्कीके पहरेसे निकल भागना क्या असम्भव था? धीरे-धीरे उसने छिपे तौरसे सोफियाके सम्बन्धियों-द्वारा ग्रीसको सरबस भेज दिया, फिर एक दिन बीवीको लिये वह स्वयं ग्रीस जा पहुँचा। प्रायः उसी भाँति जिस भाँति देवराज ज़ीयूस कभी एशियासे यूरोपाको ले भागा था, जैसे त्रॉयके प्रियमका बेटा पेरिस स्पार्तासे मेनेलाउसकी रानी हेलेनको ले भागा था।

■

सोनेका मुखौटा
स्वर्णनगरी मिकीनीयर-से मलबा हटानेपर देखनेमें आये होमरके वीरोंके अघट खजाने-का एक उदाहरण

होमरके

वीरोंका ख़ज़ाना

१७७६ ई० के अन्तमे ट्रॉयके उद्धारकर्ता हाइनरिख़ श्लीमानने ग्रीसके राजाको मिकीनोके भग्नावशेषोसे तार दिया—"तत्रभवान्, मैने आगामेमनन, कसान्द्रा और उनके साथियोंकी कब्रें खोद ली हैं।" श्लीमान होमरके काव्यको इतिहास मानकर चला था और उसीके बताये मार्गका अनुसरण कर रहा था। १७६७ में ट्रॉयको खोद निकालनेके बाद अब १७७३ में होमरकी बतायी सोनेकी मिकीनी नगरीके प्राचीन मैदानोमे उसने डेरा डाला था और प्राचीन युगके नंगे खण्डहरोपर कुदाल चलानी शुरू की थी।

आगामेमनन और उसके साथी ग्रीक वीरोंकी ऐतिहासिकतामे ट्रॉयकी खुदाइयोके बाद विद्वानोको कोई सन्देह न रहा था। वह ग्रीक वीर परिवार हमारे महाभारतके वीरोंसे कुछ ही पहले हुआ था। महाभारत-युद्धसे कुछ ही पहले ट्रॉयका महासमर लडा गया था, सम्भवतः दो ही सदी पहले। स्वाभाविक ही था कि उस सोनेके नगरमे राज करनेवाले प्रतापी नरेश आगामेमननकी कथा सदियोके प्रसारमे फैली साहित्य-लतापर फूलकी भाँति यत्र-तत्र-सर्वत्र खिल उठे। उस कहानीको ई० पू० पाँचवी सदीमें इस्कीलसने अपनी नाट्यकृति 'आगामेमनन'मे, सोफोक्लीज़ने अपनी 'एलेक्ट्रा'मे और यूरीपीदीजने 'ओरीस्तीज़'मे बार-बार दोहराया और उस प्रसंगकी कारुणिकता सदियो बादके साहित्यकारोको भी मथती रही जिससे विचलित हो आजके फ्रेंच नाटककार ज्याँ-पॉल सार्त्र और अमरीकी साहित्यकार यूज़ीन और नीलने अपनी 'ओरीस्तीज'में उसका मार्मिक बयान किया।

कहानी सच ही बड़ी दर्दनाक थी, कृतघ्नता और वंचकताकी कहानी। वस्तुतः राजा आत्रियसके दोनो बेटे – मेनेलाउस और आगामेमनन – अपनी पत्नियोके सम्बन्धमें अतिथियो-द्वारा छले गये थे। जैसे दोनो राजा भाई-भाई थे वैसे ही दोनोकी पत्नी-रानियाँ आपसमे बहनें थी और दोनोंने घरमे जार बिठाकर अपने पतियोको छला। हेलेनकी प्रणय-छलनाने जैसे त्रॉयका विध्वंस किया वैसे ही उसकी बहन आगामेमननकी रानी क्लेतेम्नेस्त्राकी वंचकताने पेलोपौनेसस और अर्गासके धनी शक्तिमान् स्वामी आगामेमननको मौतके घाट उतार दिया था। मेनेलाउससे भागी हुई पत्नी हेलेन तो लौटकर पतिको मिली पर आगामेमननको तो समूचे साथियोके साथ अपने ही घरमे अपनी ही पत्नी और उसके जारकी दुरभिसन्धिका शिकार होना पडा था। और वह कथा इतनी मर्मभेदी थी कि सहस्राब्दियो बाद प्राचीन और अर्वाचीन सभी कालके नाट्यकार उसे अपनी कृतियोका कथानक बनाते चले गये।

वह कथानक इस प्रकार घटा। त्रॉयके राजकुमार पेरिसके हेलेनको भगा ले जानेके बाद सारे ग्रीक रजवाडे, कबीलोके ख्यातिप्राप्त वीर आगामेमननके नेतृत्वमे त्राय जा पहुँचे और दस साल तक उसपर घेरा डालनेके बाद उसे नष्ट कर डाला। दस बरसका अरसा खासा था जिस बीच अरक्षित स्वदेशमे कोई भी दुरभिसन्धि फल-फूल सकती थी। मिकीनीके राजपरिवारमें वह सच ही फली-फूली। क्लेतेम्नेस्त्राने अपने प्रणयी ईगीस्थसको वस्तुतः अपना स्वामी बना लिया और प्रकट रूपसे उसके साथ सहवास करने लगी। पापकी एक कमज़ोरी यह हुआ करती है कि वह स्वयं बीज बन जाता है और अनन्त वृक्षो-बीजोकी परम्परा सिरजता चला जाता है, साथ ही वह अपनेको प्रकृत और स्थायी समझने लगता है, विवेकको तिलांजलि दे देता है, व्यवस्था – जिसको उसने तोडा है – वह लौटने नही देता। क्लेतेम्नेस्त्रा और उसके जार ईगीस्थसको अपनी स्वच्छन्द प्रणयलीलाका मोह इतना घना हो गया कि उसके

स्थायित्वके लिए उन्होंने कृतघ्नता और प्रवंचनाका सहारा लिया। दुर्ग और पासके पर्वतपर उन्होंने रातों-रात आग जलवा रखी जिससे त्राॅयसे लौटते आगामेमननके आगमनकी सूचना अनायास मिल जाये। सूचना मिल गयी और प्रणयियोने कर्तव्य निश्चित कर लिया। लौटे हुए पति आगामेमननको क्लेतेम्नेस्त्राने प्यारसे भेंटा और ईगीस्थसने उसका अनोखा स्वागत किया। साँझके गहराते अँधियारेमे उसने राजाको भोज दिया और उसके सारे साथियो-सहित उसे ऐसी निर्ममतासे मार डाला जैसी स्वाभाविक निर्ममतासे तब बलिका बैल मारा जाता था, और उनकी लाशोको खोहोंमे डाल दिया। अपनी माता और उसके जारकी इस वंचक क्रूरताको देख, पिताकी हत्याके बाद, ओरीस्तीज और एलेक्त्रा – भाई-बहन – ने राजप्रासादसे भाग अन्यत्र शरण ली, फिर बहनकी सहायतासे भाईने माता क्लेतेम्नेस्त्रा और उसके जार ईगीस्थसका, दण्डस्वरूप, वध किया।

त्राॅयके विध्वंसकी ऐतिहासिकता प्रमाणित हो जानेके बाद स्वाभाविक था कि श्लीमान उस महायुद्धके उपसंहारकी भूमि भी खोजता। तीन वर्ष बाद उसने मिकीनीकी समाधियोका कुदालो-द्वारा निरावरण आरम्भ किया। मिकीनीके खण्डहर त्राॅयकी भाँति जमीनके नीचे गडे न थे, ऊपर दूरसे ही दिखाई पड़ते थे। अर्गासके हृदे प्रान्तरके एकान्तमे मिकीनी दुर्गके खण्डहर यात्री सदियोसे देखते आये थे, अपने यात्रा-विवरणोमे उन्होने उनके बयान किये थे। होमरने लिखा था कि त्राॅय ऋद्ध है पर मिकीनी ऋद्धतर है, सोनेकी बनी, जहाँ पेलोपनीससके राजाओंने अपने सोनेके खज़ाने गाड रखे है। होमरको कल्पनाके ऊपर सत्यका स्रष्टा माननेवाला श्लीमान भला उसके बयानकी प्रामाणिकता सिद्ध करनेमे कैसे चूक सकता था? उसने मिकीनीकी भूमि उलट दी और वहांके राजाओका सोनेका खज़ाना ढूँढ लिया।

दिसम्बरका महीना था, सर्द, जब मिकीनीके मैदानोमे जब-तब बर्फ़

बरस जाती थी, और हवा तो तीर-सी छेदती जिस्मके पार चली जाती। पर श्लीमानके साठ मजूर दिनो-दिन कुदाल बरसाते रहते, और एक श्लीमान अपनी पत्नी सोफियाके साथ मिकीनी राजप्रासादमे दाखिल हो गया जिसकी ऊँचाई प्रायः पचास फुट थी और छत गुम्बजनुमा थी, जिसमे पत्थरोके ढोके एक-दूसरेसे बगैर गारेके निरवलम्ब सटे थे। पास ही के कमरोमे प्राचीन राजाओंकी समाधियाँ थी जिन्हें सदियों विद्वानोने मिकीनी नगरके परकोटेके बाहर माना था। पर जिनका भीतर होना श्लीमानने अपने अध्यवसायसे सिद्ध कर दिया। इनके सामने बाहर मिकीनी राजाओं-का सिंहद्वार, सिंहाकृतियोसे संयुक्त, खड़ा था।

श्लीमानके विज्ञानसे कही अधिक उसके प्रारब्धने उसका साथ दिया था और जैसे सौभाग्यप्रेरित उसकी राहमे पृथ्वीकी गहराइयोसे त्रॉय उछल पड़ा था, मिकीनीका राजप्रासाद भी सहसा उसके सदियोका मलबा हटाते ही सामने नंगा उठ खड़ा हुआ। अनेकानेक कलाकृतियो, भॉडे और पात्र, अपनी ज्योमितिके डिजाइने अंगपर धारे, देवी हीराकी मूर्तियाँ, उत्खचित प्रासाद, शिलाखण्ड अनन्त मात्रामे मिकीनीकी खुदाईमे निकल पड़े। प्राचीन वस्तुओके संग्रहालय मिकीनीकी इस उपलब्धिके बाद अत्यन्त तुच्छ लगने लगे। श्लीमानने लिखा—जिसे तत्कालीन विद्वानोने पहले अनिच्छासे फिर विश्वासके साथ स्वीकार किया—कि अद्यावधि उपलब्ध प्राचीन कलानिधियो-मे कोई भी स्थल इतना ऋद्ध प्रमाणित न हुआ जितना मिकीनीका यह स्थल।

समाधियोका निरावरण धीरे-धीरे आरम्भ हुआ। मजूरोको अलग कर श्लीमान अपनी निरन्तर सहायक सोफियाके साथ उस कठिन और धैर्यकी परीक्षा करनेवाले कार्यमे लग गया। सोफियाने पचीस दिन तक लगातार छुरीसे धीरे-धीरे बड़ी धीरतासे समाधियोको तराशा और तब जो मिला वह सचमुच पुराने राजाओका खज़ाना ही था, जिसकी चर्चा प्राचीन साहित्योमे बार-बार हुई थी पर जिसे किसीने देखा न था और जो केवल

कहानी बनकर अतीतके अन्तरालमे धराके गह्वरमे समा गया था ।

समाधियाँ पाँच थीं, अस्थिपंजर उनमे कुल पन्द्रह थे, राजाओं-रानियों दोनोंके । और प्रत्येक अस्थिपंजर सोनेसे अँटा था । निस्सन्देह इतना सोना-१९२२ मे मिस्रमें तूतनखामनकी कब्रको छोड़, अन्यत्रकी खुदाइयोंमे कहीं कभी पहले न मिला था, न कभी पीछे मिला । श्लीमनने सत्य ही, स्वाभाविक ही, कहा था कि जितना प्राचीनकालीन स्वर्ण मिकीनीकी समाधियोमे मिला है उतनेका पंचांश भी संसारके समग्र संग्रहालयोंकी संयुक्त राशिमें उपलब्ध न था

पहली ही क़ब्रमे तीन अस्थिपंजर निकले, प्रत्येक पंजरपर पाँच-पाँच सोनेके ताज रखे थे, स्वर्णके बने लारेल-पत्र थे, सोनेके क्रॉस थे । एक दूसरी क़ब्रमे तीन नारी अस्थिपंजर थे, जिनपर सात सौ एक मोटी पत्तियाँ स्वर्णकी बनी हुई मिली । उसी कब्रमे सोनेके ही बने अनेक अलंकरण जानवरों, फलों, तितलियों, मछलियोंकी आकृतियोंमे मिले । सोने-चाँदीके खिलौने, सोनेके ही सिंह और विविध पशुओंके कलासम्मत रूप वहाँ उपलब्ध हुए । एक अस्थिपंजरकी खोपडीपर एक ताज था जिसे छूते ही खोपडी तो धूल हो गयी पर ताज साफ निकल आया । उसके पट्टबन्धपर छत्तीस मोटे सोनेकी पत्तियाँ बनी थीं । एक अन्य क़ब्रमे तीन और जो कंकाल मिले उनके सिरपर भी ताज थे, एक कंकाल तो उठाते ही धूल हो गया दूसरेके कपालसे दूसरा ताज चिपका हुआ मिला ।

आखिरी समाधि अचरज-भरी थी । अस्थिपंजरोके मस्तक सोनेके चेहरोंसे ढँके थे और छातियाँ सोनेके कवचोसे । प्राचीन साहित्यसे प्रकट था कि इस प्रकारके रक्षा-उपकरण मात्र राजाओके शरीराच्छादनमे प्रयुक्त होते थे जिससे, तबके विश्वासके अनुसार, उनकी प्रेतावस्थामे राजाओका कोई अपकार-अपमान न कर सके । चेहरोपर जो आकृतियाँ बनी थी, एक-दूसरेसे भिन्न थी और श्लीमानने सहज ही माना कि जिन-जिन राजाओके वे अस्थिपंजर थे उन्हीके वास्तविक चेहरे उन सोनेके मुखौटोमे

उभारे हुए थे। स्वाभाविक विश्वाससे उसने संसारको, ग्रीसके राज-परिवारको विशेषज्ञ विद्वानोको सूचित किया कि उसने आगामेमननकी समाधि खोदकर उसका खज़ाना, मय उसके शरीर, कवच और मुखौटेके, पा लिया है। स्वाभाविक ही उसने अपनी पुस्तकके एक अध्यायका शीर्षक लिखा—'आगामेमननका मुखौटा'।

पर निस्सन्देह वह आगामेमननका मुखौटा न था, उसका कवच न था, समाधियाँ अगामेम्नन और उसके साथियोकी न थी, न अस्थिपंजर ही उनके थे। किन्तु यहाँ भी श्लीमानने अपनी भूलसे जो खोजा उससे कही कीमती, अपनी कल्पनासे भी अधिक महत्त्वपूर्ण, वस्तु पायी। ये समाधियाँ और इनकी स्वर्णराशि ग्रीक राजाओकी न थी, पर थी वे राजाओकी ही, उनसे सदियो पहलेके राजाओकी, क़रीब चार सौ साल पहलेकी, उस मिकीनीकी जो त्रॉय और क्रीत टापूका पश्चिमी ग्रीसमे प्रधान केन्द्र रहा था। श्लीमानने सोनेकी रक्षाके लिए समाधियोके चारो ओर आग जलवायी, ठीक उसी तरह जैसे २३४४ साल पहले ईगीस्थसने आगामेमननके आगमनकी सूचनाके लिए जलवायी थी।

श्लीमानका सौभाग्य उसके पीछे था। त्रॉय और मिकीनीके बाद, होमरके बयानके ही अनुसरणमे तीरीनमे उसने कुदाल लगायी, और क्रीती सभ्यताका वह अद्भुत राजप्रासाद साफ निकल आया जिसके दानव-निर्माणकी बात होमरने कही थी। तीरीनी राजाओका राजप्रासाद सामने खड़ा था। प्रासाद क्या था अभेद्य दुर्ग था। ऐसा दुर्ग, जिसकी काया चट्टानोसे गढी थी, दो-दो तीन-तीन गज़ लम्बी, गज़-गज़-भर चौड़ी, गज़-गज़-भर ऊँची पत्थरकी शिलाओसे। होमरने सच ही लिखा—भला इनको मनुष्य कैसे वहन कर दीवारोके रूपमे खड़ा कर सकता था? इनके लिए तो दैत्योकी आवश्यकता थी और निश्चय इन्हे दैत्यो—साइक्लोपो—ने ही बनाया था। दीवारें सात-सात, आठ-आठ गज चौड़ी थी और जहाँ राजा स्वयं रहता था वहाँके कमरोकी दीवारें तो चालीस-चालीस फ़ुट

तक चौड़ी थी ।

कलाकी जो अनेक वस्तुएँ मिली उनसे तत्कालीन सभ्यताका एक विशिष्ट रूप दिखाई पड़ा । वह सभ्यता मिस्र-बाबुल आदिकी सभ्यताओं-की सयुक्त देन थी । भाण्डोके ऊपर जो ज्योमितिक आकृतियाँ बनी थी वे प्रायः उसी प्रकारकी थी जिस प्रकारकी उन भाण्डोपर खिची थी जो ई० पू० सोलहवी सदीमे होनेवाले मिस्री सम्राट् थोतमोसके शासनकालमे मिस्रमे पश्चिमी एशियासे लाकर प्रचलित किये गये थे । कुछ आश्चर्य नही जो उनकी बनावटमें भारतकी सैन्धव-सभ्यताका भी कुछ हाथ रहा हो । संस्कृतियोंका अन्तरावलम्बन इतना महान् सत्य है कि उनके अध्ययन-के क्रममे उनका विघटन अपने पोरपर पोर खोलता, शृंखलाकी कडीसे कड़ी होता, दूरके आरम्भ तक चला जाता है ।

पुरातत्त्वके विज्ञानका आरम्भ करनेवाले हाइनरिख श्लीमानका अन्त चिन्त्य हुआ । सभ्यताओंकी कोर नंगी कर लेनेके बाद जब वह १८९० मे ६८ सालकी उम्रमे क्रिसमस मनाने घर जानेकी तैयारीमे था तभी इटलीमे उसका निधन हो गया । नेपुल्सके जनसंकुल वातावरणमे वह घूम रहा था कि एकाएक वह पृथ्वीपर गिर पडा और उसकी जबान बन्द हो गयी, यद्यपि वह सचेत था और सचेत वह मरने तक बना रहा । उसके कानमे एकाध दिन पहले दर्द हुआ था और उसने स्थानीय डॉक्टरसे दवा ले ली थी । उससे कुछ लाभ न हुआ था और कानका दर्द बना हुआ था कि एकाएक यह घटना घटी । लोग उसे टाँगकर अस्पताल ले गये परन्तु अस्पतालमे उसे जगह न मिली, उसे लौटा दिया गया । लोगोंने उसे यतीम समझ थानेमे पहुँचा दिया । पुलिस-ने उसकी जेब देखी और उसकी डायरीसे उस डॉक्टरका पता हासिल किया जिसने उसके कानकी दवा की थी । डॉक्टर आया पर कुछ कर न सका । श्लीमानकी ज़बान बन्द थी पर होश बना था । वह थानेके आँगन-मे भूमिपर मृतक-सा पडा हुआ था । लोगोंने पूछा, इस यतीमके दफना-

नेका खर्च कौन देगा ? और डॉक्टरने चमककर कहा, यतोम कैसा, यह तो करोडपति है। जब श्लीमानकी और जेबें भी देखी गयी तब एकमे-से सोनेके सिक्को-भरा तोडा निकला। श्लीमान अपने होटलमे पहुँचा दिया गया जहाँ वह अगली रात मर गया।

श्लीमानका शव एथेसमे पड़ा था, राजपरिवारके सामने। ग्रीसका राजा, उसका युवराज, प्रधान मन्त्री, विविध देशोके राजदूत सब चारो ओर खड़े थे और वही खड़ी थी उसकी सोफिया—हेलेन, और उसके बच्चे आन्द्रोमाखी और आगामेमनन जिनका नामकरण उस होमरके काव्य-प्रबन्धो-द्वारा प्रेरित हुआ था, जिसका प्राचीन बस्ट अपनी ऊँचाईसे नेत्रो-द्वारा नीचे श्लीमानके ताबूतपर अजस्र स्नेह बरसा रहा था।

■
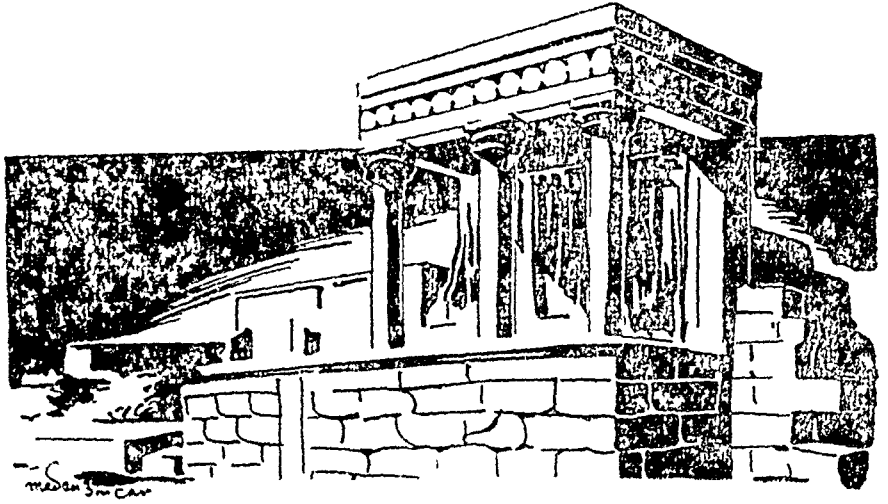
महलका उत्तरी प्रवेशद्वार

क्नोससकी

भूलभुलैया

लखनऊ मेडिकल कॉलेजके पास अवधके नवाबोके इमामबाडेकी भूल-भुलैयामे चक्कर खानेवालोंको शायद गुमान भी न होगा कि उसके पीछे हज़ारो सालका इतिहास है और उसका मूल हजारों मील दूर ग्रीसके दक्खिन क्रीतके टापूमे है। भूलभुलैयाका चक्कर आज मनोरंजनका साधन है, पर एक ज़माना था जब वह ख़तरेका ज़रिया था और अनेक बार उसका उपयोग खतरनाक दुश्मनोंकी कैदके लिए हुआ करता था। लख-नऊके इमामबाड़ेकी भूलभुलैयाकी भी कितनी ही रोमांचक कहानियाँ कही जाती है। पर क्रीतकी भूलभुलैया तो स्थापत्यके क्षेत्रमे जितनी शालीन है पौराणिक वृत्तोंकी दिशामे उतनी ही वह रक्तरंजित भी थी।

ग्रीक ख्यातोसे प्रकट है कि क्रतीकी प्राचीन राजधानी क्नोससमे वहाँके राजा मिनोसने संसारकी सबसे चक्करदार, सबसे खतरनाक भूलभुलैयाका निर्माण अपने महलोमे कराया। वह निर्माण, जो आज क्नोससकी खुदा-इयोका जौहर बन गया है, मूलतः मिनोसके प्रतिशोधका प्रतीक था। कहते है कि मिनोसकी रानीको एक बार किसी दिव्य वृषभ (सॉड़) के प्रति कामना जगी। वृषभके प्रति नारीकी कामलिप्सा – बात विस्मयकी है, पर सही है – का अलौकिक कथानक अनेक प्राचीन सभ्यताओके पौरा-णिक आख्यानोका विषय रहा है। स्वयं ऋग्वेदका कामी देवराज इन्द्र वृषभ कहलाता है और उसके जिस बन्दर-मित्रके प्रति इन्द्राणी आकृष्ट होती है, जो इन्द्राणीसे दबे-दबे, इन्द्रकी अनुपस्थितिमे, काम-चर्चा करता है, और जिसके सामीप्यसे देवराजकी वह पत्नी भयातुर हो उठती है, उसका नाम भी उस प्राचीन धर्मपुस्तक ऋग्वेदमे 'वृषाकपि' दिया हुआ है। ग्रीकों-

की पौराणिक ख्यातोमे देवराज जोउस यूरोपाके रूपपर रीझकर जब उसे हरनेके उपक्रम करता है तब सहसा वह वृषभ बन जाता है और उस सुन्दरीको अपनी पीठपर बिठा कामार्त हो क्रीतके द्वीपको ले भागता है। कुछ अजब नही जो वृषभ पुगवके रूपमे नरत्व और पौरुषका प्रतीक होनेके कारण संस्कृतिसे वियुक्त नारीका आकर्षण रहा हो। वैसे मिस्र, बाबुल, असुर, ईरान, मोहेनजोदेडो – सर्वत्र प्राचीन कालमे उसकी पूजा हुई है, इसमे सन्देह नही। सो क्या आश्चर्य जो मिनोसकी रानीकी अतृप्त तृष्णा भी एक दिन किसी अलौकिक वृषभके अदम्य नरत्वको माँग बैठी हो।

रानीकी इस अमनुज पिपासाको मिनोसने इतना कौतुकसे नही जितना क्षोभसे देखा और, अपने बच्चोकी जननी होनेके बावजूद, उसे उसने प्राय: तज दिया। यद्यपि उसकी यह प्रतिक्रिया शायद ऐसी न होनी चाहिए थी, क्योकि वह स्वयं, पुराणोके अनुसार, वृषभ रूप धर जोउसका ही बेटा था। मिनोसने रानीकी उस अपार्थिव कामनाके लिए उसकी बड़ी भर्त्सना-की और उसे प्राय. अकेला कर दिया। अकेला अनन्त कल्पनाका साधक हुआ करता है और यदि वह साधना असामाजिक हुई तो उसकी प्रवृद्धिमे सहायता भी कुछ विशेष मिला करती है। रानीको असाधारण शिल्पी दिदेलसकी सहायता मिली जिसने दैवी वृषभके प्रति रानीका अभिसार सम्भव कर दिया। इस असम्भव प्रयाणसे जो पुत्र रानीने जना वह आधा मनुष्य आधा वृषभ था, नाम जिसका मिनोतौर अर्थात् 'मिनोसका वृषभ' पड़ा। मिनोसने दीदेलसकी सहायतासे एक ऐसे भवनका निर्माण किया जिसमे मिनोतौर कैद कर दिया गया और जिसके यकसाँ हालों, कमरो और गलियारोंके चक्करदार प्रसारसे मिनोतौर किसी प्रकार बाहर नही निकल सकता था। इस भवनका नाम ही इस कारण 'लेबिरिन्थ' – (भूलभुलैया) पड़ गया और इसी नामसे क्रीतके बाहर भी होमर आदिकी ग्रीक ख्यातोमे उसका उल्लेख होता रहा।

दीदेलसके प्रति मिनोसका आक्रोश स्वाभाविक था और वह दोनोके

लिए मारक सिद्ध हुआ। दिदेलस ग्रीसका रहनेवाला था, वहाँका प्रसिद्ध शिल्पी और संगीतज्ञ था, पर जब उसका भतीजा तालोन उसकी कलामे उससे भी बढ़ गया तब दीदेलसने धोखेसे एक दिन उसे मरवा डाला और दण्डके भयसे स्वयं भागकर क्रीत पहुँचा। जबतक वह वहाँ राजा मिनोसके महलोका निर्माण करता रहा तबतक उसका मित्र बना रहा और तबतक मिनोसकी कृपा उसपर बनी रही, पर जब मिनोसकी रानीका राजाके विपरीत इष्ट साधनेमे वह सहायक हुआ तब उसे उसके क्रोधसे रक्षाके लिए क्रीत छोड भागना भी पड़ा। ग्रीक-पुराणोकी कथा है कि दिदेलसने अपने और अपने बेटे इकेरसके लिए दो-दो पंख तैयार किये और दोनों उन्हे अपने कन्धोसे चिपकाकर समुन्दर पार ग्रीसकी ओर उड़ चले। पिताने पुत्रको भरपूर समझा दिया था कि उड़ता हुआ वह कही सूरजके पास न चला जाये वरना मृत्यु निश्चय होगी। पर जवान बेटेने बूढ़े बापकी बात न मानी और पंखोंके सहारे दूर ऊपर चढ़-चला। सूरजकी धूपसे वह मोम, जिससे पंख कन्धोंसे चिपके हुए थे, पिघल गयी, पंख जलकर गिर गये और इकेरस समुद्रमे गिरकर डूब गया। उधर दिदेलस पंखोंके सहारे हवाके बहावके साथ इटलीके दक्खिन सिसिलीके द्वीपमें जा पहुँचा। मिनोस दिदेलसका पीछा करता सिसिली पहुँचा जहाँ दिदेलसने पहले तो उसकी आवभगत की, पीछे उसे नहाते हुए हम्मामके धुएँसे दम घोटकर मार डाला।

पर कहानी तो मिनोतौरकी थी, मिनोसके साँड़की। राजाके जीवनकालमे एथेन्समे खेल हुआ करते थे, जैसे बहुत पीछे तक होते रहे थे। मिनोसका बेटा आन्द्रोजियस भी हर साल खेलमे शामिल होने क्रीतसे एथेन्स जाया करता। वह तरुण इतना यशस्वी सिद्ध हुआ कि एथेन्सके खेलोंका कोई पुरस्कार उससे नही छूटा और उसकी ख्याति इतनी बढ़ी कि एथेन्सके राजा ईजियसने उसकी हत्या कर दी। मिनोसने अपने बेटेकी हत्याका बदला लेनेके लिए एथेन्सपर हमला किया और सालो उसपर घेरा डालनेके बाद उसे जीत लिया। उस विजयके परिणाममे जो सन्धि

हुई उसके फलस्वरूप हर नवे साल ग्रीससे सात सुन्दर तरुण और सात सुन्दर तरुणियाँ क्रीत भेजी जाने लगी। वहाँ वे मिनोतौरकी बलि होते। क्रीतकी भूलभुलैयामे वे डाल दिये जाते जहाँ वे दिनो-रात चक्कर काटते रहते और निकल न पाते। मिनोतौर उनकी मुक्तिकी शंकासे आश्वस्त चुपचाप उनका पीछा करता, एक-एकको पहले अपने कामका साधन बनाता, फिर खा जाता। जब इस करकी तीसरी बारी आयी तब ईजियसके बेटे थीसियसने सात तरुणोमे अपनेको भी शामिल कर लिया और मिनोतौरके वधके लिए क्रीतको ओर चल पड़ा। तरुण-तरुणियोको लेकर जहाज़ काले पाल फहराये क्रीतकी ओर चला। यह निश्चय हुआ था कि थीसियस अगर मिनोतौरका वध कर लौटेगा तो जहाजके पाल श्वेत कर लिये जायेगे अथवा काले पालोके साथ ही जहाज एथेन्स लौटेगा। जब जहाज क्नोसस पहुँचा और मिनोसकी रूपवती कन्या आरियाद्नीने थीसियसको देखा तब वह उसके रूपपर रीझ गयी। मिनोसको मारनेके लिए उसने उसे एक जादूकी तलवार दी और भूलभुलैयाके चक्करसे बचकर निकल आनेके लिए ऊनका एक गोला दिया जिसका एक छोर आरियाद्नीने अपनी बाँहमे बाँध लिया। थीसियस क्नोससकी उस भयानक भूलभुलैयामे घुसा जिसके कमरोंके भीतर कमरोसे होता हुआ वह मिनोतौर तक पहुँचा और द्वन्द्व युद्धमे उसने उसे मार डाला। ऊनके सहारे वह चक्करसे बाहर निकल आरियाद्नीसे मिला। फिर उसे भी अपने तरुण-तरुणियोके साथ ग्रीसकी ओर ले भागा। भगदडकी हडबडीमे जहाज़के काले पालोकी जगह सफेद पाल उड़ाना वह भूल गया और उसके पिता ईजियसने निश्चित संकेतके विपरीत काले पालोवाले जहाजको देख बेटेको मरा जान समुद्रमे कूदकर जान दे दी।

क्रीती भूलभुलैयाकी यह कहानी अभी हाल तक मात्र पौराणिक आख्यान समझी जाती रही थी, पर जैसे श्लीमानने त्रॉयकी होमरी कथाको इतिहास कर दिया, सोनेकी मिकीनीको खोद निकाला, तीरीनके

दानवनिर्मित राजप्रासादको ज़मीनसे निकाल बाहर खड़ा कर दिया, वैसे ही प्राचीन ग्रीकोंका यह क्रीत-सम्बन्धी पुराण भी पुरातत्त्वने इतिहास कर दिया। वह चमत्कार भी वस्तुतः श्लीमानका ही था, उसीने क्नोससके प्राचीन टीलोको पहले-पहल पहचाना था पर कारणवश उसे उसकी खुदाईसे विरत हो जाना पड़ा था और क्नोससकी खोजका सेहरा आर्थर ईवान्सके सिर बँधा। ईवान्सने मिनोसको ऐतिहासिक राजाओंकी शृंखलामे बिठा दिया और क्नोससके महलोको खोद पुराणोंकी भूलभुलैया आँखोसे देख सकना सम्भव कर दिया। क्नोससकी वह भूलभुलैया, जो असुर-बाबुलकी राह, अरब-ईरानकी राह लखनऊ पहुँची थी, अपने सैकडों चक्करदार कमरो, गलियारो, सीढ़ियोंके साथ इतिहास और धराके गर्भसे निकल, द्विजन्मा हो, सदेह खड़ी हो गयी।

आर्थर ईवान्स श्लीमानसे सर्वथा विपरीत था। श्लीमानकी मेधा अयाचित अनायास जिज्ञासुकी थी, ईवान्सकी ज्ञान-द्वारा विनीत संस्कारोंकी। श्लीमानने अपनी प्रतिभा खुली प्रकृतिसे पायी थी और ईवान्सने हैरोके स्कूल और कैम्ब्रिजके विश्वविद्यालयसे। विश्वविद्यालयके सारे पुरस्कारोको जीत वह मिस्री चित्रलिपिकी पहेली सुलझा रहा था जब उसे क्रीत जाना पडा। राहमे एथेन्सका नगर पडा जहाँ दूध बेचनेवाली अनेक ग्रीक नारियोको उसने मिट्टीकी बनी छोटी-छोटी अजीब ताबीजें पहने देखा, उनपर मिस्री चित्रोसे मिलती-जुलती आकृतियाँ उभरी देखी। पूछकर उसने जाना कि वे ताबीजें क्रीतके टापूसे आयी है। ईवान्स क्रीतके टापूकी ओर चला। वहाँ उसे उस प्रकारकी हजारों चित्राकृतिक मिट्टीकी मुहरे मिली पर उनका राज़, अपने अथक प्रयत्नोके बावजूद, वह न खोल सका। आज तक कोई पुराविद् उनका राज़ न खोल सका जो आज भी मुहर बन्द पड़ा है।

ईवान्स क्रीत गया तो था कुछ महीनोके लिए ही, और उसने लिखा भी कि कुछ महीनोमे वह वहाँका काम ख़त्म कर इंग्लैण्ड लौट जायेगा,

पर ऐसा हुआ नही। ईवान्सने जो श्लीमानके टीलोका मलबा हटाया तो जमीनके नीचे एक ऐसी दुनिय मिली जिसमे एक समूचा तिलिस्म दबा पड़ा था और जिसकी गहराइयोमे मिनोसके महल सोये पडे थे और चाहे मिनोतौर वहाँ न रहा हो, उसकी जानलेवा चक्करदार भूलभुलैया अब भी वहाँ खड़ी थी। ईवान्सने १९०० के साल क्नोससकी खुदाई शुरू की, हफ़्ते महीनोमें बदलते गये, महीने सालोमे, और जहाँ ईवान्सने मात्र महीनो ठहरनेकी कल्पना की थी वहाँ वह चौथाई सदी तक ठहरा अनवरत कुदाल चलाता, दूरकी विगत सभ्यताकी मंज़िलें, उनकी तहोंपर तहे, उघाडता चला गया।

सभ्यता बीते युगोंकी थी, सहस्राब्दियो पुरानी, प्रायः ३००० ई० पू०से १२००ई०पू० तकके काल-प्रसारपर फैली—क्रीतकी सभ्यता—जिसकी शाखाएँ ग्रीस और लघु एशियामे तिरीन, मिकोनी और त्रॉय तक फैली थी, वे शक्ति-मान नगर जिसके ऐश्वर्यके प्रतापी प्रहरी थे। क्रीतके वे पहरुए दीर्घकाल तक जागते रहे थे पर जिन एकियाई आक्रामकोने क्रीतका विध्वंस किया उन्होने ही उन पहरुओको भी रसातल पहुँचा दिया। थीसियसकी क्रीतपर विजय कहानी ईजियाई सभ्यतापर एकियाई और दोरियाई आर्य ग्रीकोंकी विजय की है, पुरातत्त्वसिद्ध, इतिहाससिद्ध। ईवान्सने उस सभ्यताकी तहें अपनी कुदालके माध्यमसे खोली। उसकी तीन प्रधान मंजिलें थी—प्राचीन मिनोई, मध्य मिनोई और उत्तरकालीन मिनोई, और इनमे-से प्रत्येकके अपने-अपने प्राचीन, मध्य और उत्तरकालीन स्तर थे—ई० पू० ३००० से २००० तक, २००० से १६०० तक, १६०० से १२०० ई० पू० तक। बीचका काल मिनोई अथवा क्रीती सभ्यताका स्वर्णयुग था जब मिनोसने राज किया, जिसके सन्दर्भमे उस स्वर्णयुगको सच करनेवाली वह पुरानी कहानी बनी जिसमे राजा मिनोस चाहे जा भी छू देता, मिट्टी और भोजन तक, वह सोना हो जाया करता था। उस सभ्यताकी उपलब्धियाँ महती हैं।

जितनी सभ्यताएँ अबतक खोदी जा चुकी है उनसे क्रीतकी यह

सभ्यता सर्वथा भिन्न, बोधमे विपरीत थी। सारी दूसरी सभ्यताएँ–भारत, चीन, बाबुल, मिस्र, पिछले कालके ग्रीस, रोम आदि की–महाद्वीपोके फैले प्रसारपर, नदियोके काँठेमे, जन्मी और फैली, पर क्रीतकी सभ्यता द्वीपकी थी जहाँसे वह ग्रीस आदिके महादेशोमे फैली। लंका, जावा, सुमात्रा, सिसिली आदि द्वीपोने महाद्वीपोसे लिया था पर क्रीतने द्वीप होकर भी युरॅप और लघुएशियाके महाद्वीपोको अपने प्रकाशसे प्रकाशित किया था। दूर अतीतसे पाया उसने भी, मिस्र और फ़िनीशियासे, पर उसने जो कुछ पाया उसे आहारवत् पचा अपना शरीरांग बनाकर उस अपनी निजी धरोहरसे ग्रीसको सनाथ किया। एकियाई ग्रीकोने उसकी राजनीतिक शक्ति नष्ट कर डाली, पर उसका सांस्कृतिक जादू, उसके नाशके बावजूद, उनके सर चढकर बोला।

सबसे बडी विशेषता उसकी यह थी कि वह सभ्यता आधुनिक थी, नागरिक सभ्यता, जिसमे आधुनिकताके अनेक मूल रूप सास्कृतिक सन्दर्भ में विद्यमान थे। अगर विद्यमान न था तो वह आजके आक्रमणका उपकरण। क्रीतकी सभ्यतामे सुरक्षाके नामपर कोई विशेष सेना न थी, हाँ, दूरकी शाखाओपर शासन ओर पासके समुद्रपर व्यापारके लिए नौसेना अवश्य थी। संसारके इतिहासमे क्रीतकी नौसेना निस्सन्देह पहला जहाजोंका जगी बेडा था। मिनोसकी नौसेना ग्रीक ख्यातोमे प्रसिद्ध हो गयी है। पर यह कुछ कम विस्मयको बात नही कि क्नोससमे कोई गढ नही, कोई शहर या नगरका परकोटा नहीं। उसके राजप्रासाद सागरकी लहरोमे झिलमिलाते पर्वतोके प्रसारपर नंगे खड़े थे, जैसे वे आज भी खडे है, द्वीपके अर्धचक्राधारपर, और उन राजप्रासादोके धवल खम्भोकी कतारें, धूपमे वैसे ही चमचमाती थी जैसे उसकी दीवारोके चित्रोके रग दूरसे ही दीपते थे। क्रीतका टापू सभ्य ससारके मध्यमे बसा था–ग्रीस और मिस्र, इटली और एशियाकी फ़िनीशियाके बीच, और इस प्रकार अफ़्रीका, एशिया और युरॅपके प्राचीनतम ऋद्ध देश उसके निकटतम पड़ोसी थे। संसारकी सभी

सभ्यताओका-सा ही क्रीती सभ्यताका भी आचरण रहा था। सभ्यताएँ श्रम तथा संयमकी पृष्ठभूमिसे जनमती है, विलास और असंयममे विलीन हो मर जाती है। क्रीतकी सभ्यताकी भी वही गति हुई। वह 'स्तोइक' उत्पन्न हुई, 'एपिक्यूरियन' मरी।

जिनको आजकी सभ्यताके थियेटरो तथा अन्य सार्वजनिक प्रदर्शनोमें विलासको साधनेवाले नर-नारियोके खिलखिलाते उल्लासको देखनेका अभ्यास है वे क्रीतकी सभ्यताके जीवनको सहज समझ लेगे। नारी क्लासिकल ग्रीसकी गृहिणीसे अपने अधिकारोमे सर्वथा भिन्न थी। ग्रीसकी विवाहिताओका द्वारके बाहर झाँकना पाप था, क्रीतकी नारियाँ सम्भवतः मध्यरात्रिमे ही गृहकी दीवारोके भीतर प्रवेश करती। उनका जीवन समाज-प्रवण था। घरसे बाहर, उनके मित्र-नरोके सामीप्यमे जिया जाता था, आनन्द और अट्टहासके हिलोरोके साथ। बाहर वे तरुणोके साथ कमलके फूल लोढती, लिली और केसर, नरगिसकी कोपले निहारती, फैले मैदानोमे रसिया छैलोके साथ रमती, गयी रात तक तन्त्री-नादसे तरगित नर्तको-नर्तकियोके नाच देखती, दिनमे साँडोसे खेलते कलाबाजोको निहारती, अखाड़ोमे खरीदे नर-नारियोके भूखे सिहोके साथ हताहत खेल देखती। तरुण तरुणियोके साथ साँड़ोसे उलझते, कौशलसे उन्हे जीत लेते, उनकी सीगो और पीठोसे उछल, कुलाँच भर, कलाबाजी खा, कमसिन कमनीय छरहरी तरुणियोके भुजपाशमे जा गिरते। पुरुष शायद कुछ बेचारे थे, मतलब कि स्त्रियोके मुकाबले बेचारे, क्योकि वे मात्र कटिपर घुटनो तकके हलके वस्त्र धारण करते थे, जहाँ स्त्रियाँ सिरपर तिकोनी हैट पहनती, अपने कुंचित कुन्तल विविध प्रसाधनो-द्वारा कन्धोपर लटकाती, उरोजोको निरावृत छोड उनको घेरती चोलियाँ धारण करती और नीचे अनेक तहोमे बहुरगी अधोधः गिरते जाते पैरो तक घाघरे पहनती। और जब सभ्यताके नाशका समय आया, जब ऐश्वर्यके सायेमे विलास पलकर पक गया, धनने अवकाश सम्भव किया, तब कठिन कुचों-

को कठिनतर दर्शानेवाले कंचुक उन्हे उपलब्ध हुए, पीवर जंघाओ और भारी नितम्बोंको पीवरतर और शिथिलतर प्रकट करनेवाले झोने चीवर प्रस्तुत हो गये। सभ्यता निस्सन्देह अपनी परिणतिके बाद जरा पाकर मृत्युकी ओर डग भर चली थी।

घरोके अन्तरंग अपनी दीवारोंपर जीवनके अद्भुत चित्र लिये हुए थे। उस सभ्यताने जीवनको ही साधा था – इसीसे उसमे दार्शनिक भी न थे, पुरोहितोंकी मारक क़तारें भी न थी, जीवन ही अपनी अजस्र धाराओंसे उसपर बरस रहा था। शयनागार, स्नानागार, क्रीड़ागार गृहोंमे सभी थे, पत्थर अथवा पकायी ईटके उन घरोंमे – संगमरमर वहाँ उपलब्ध न था। वहाँके एक मंज़िलेसे पाँच मंज़िले तक ऊँचे खडे मकानोंमे हम्माम गरम होते, उनका जल फूलोसे बासा जाता, तब नागरिक उनमें नहाते। नलोमे शुद्ध साफ जलको धारा दौडती जो स्नानान्तर नालियोंसे होती नगरसे बाहर निकल जाती। उस सभ्यताको खोदनेवाले पुराविदोने ४००० साल बाद जब उस धाराधाविनी जलव्यवस्थाको फिरसे संचालित किया तब, इतने दिनो रसातलमे रहनेके बावजूद, वे चालू सिद्ध हुईं।

क्रीत टापूके अनेक स्थल पुराविदोने अपनी कुदालोसे खोद डाले। सर्वत्र कलाके अचरजके नमूने उपलब्ध हुए। चित्रोकी आकृतियोमें उल्लाससे भी बढकर उनका आभिजात्य था। तनी हुई छाती, समुन्नत मस्तक, पतले छरहरे बदनपर खूब ही फबते थे। ऐसी आकृतियाँ सेवकों तककी थी, जो कानोमे कुण्डल, भुजाओमे भुजदण्ड, हाथोमे कगन धारण करते थे। सुरावाही युवाका एक ऐसा चित्र देख लगता है जैसे वह राजसेवक हो और अपनी स्थितिकी विशिष्टतासे दर्पिल हो उठा हो। पश्चात्कालीन ग्रीसकी मधुर गायिका सैफोका अभिजात भाई मिस्रमे सुरावाहक ही था। प्रकट है कि वह सेवाकार्य आभिजात्योको ही मिला करता था। क्रीतके चषकवाहक भी सम्भवतः अभिजात तरुण ही हुआ करते थे।

सभ्यता क्रीतकी कैसे नष्ट हुई, प्रकृतिकी शत्रुतासे अथवा मानवकी शत्रुतासे, कह सकना आज कठिन है। इसमे सन्देह नही कि क्रीतमे आज भी ज़लज़ले आते है, जैसे प्राचीनकालमे भी अकसर आया करते थे। ईवान्सके खनन कालमे भी एक ऐसा भूकम्प आया था जिससे क्रीतके गाँवके गाँव, नगरके नगर नष्ट हो गये थे, केवल मिनोसके महल, और भूलभुलैया नवनिर्माणके साधनोसे जीर्णोद्धृत होनेके कारण बच रहे थे। कुछ अजब नही जो भूकम्पने क्रीतकी सभ्यताका नाश कर दिया हो। परत-परतमे अग्निसात् भवन भी मिले है, कार्यरत लोगोके जैसेके तैसे अस्थिपंजर भी, जिससे ज़ाहिर है कि उस सभ्यताके लोगोका अन्त यकायक हुआ था। पर यह सम्भावना बाहरी आक्रमणोके परिणाममे भी घटित हो सकती है और अधिकतर विद्वानोकी राय भी यही है कि जिन एकियाई ग्रीकोने त्रॉय, मिकीनी आदि क्रीती सभ्यताके सन्तरियोका नाश किया, उन्होने ही क्रीतकी द्वीपी सभ्यताका भी नाश किया। फिर उनसे जो कुछ बचा-खुचा उसे दोरियाई ग्रीकोने ज़मीनमे मिला दिया।

पर मरी सभ्यताएँ भी भरसक मरती नही, और आज भी पुराविदोके विज्ञानकी मददसे क्रीतकी सभ्यता जैसे करवट बदल कर सोतेसे जग उठी है और अपने अवशेषोके माध्यमसे फिर एक बार आकाशको देख रही है, अपने उन मधुर तत्त्वोके साथ भी, चित्र आदि कलाएँ जिनकी मनहर विधाएँ है, उन क्रूर तत्त्वोके साथ भी, भूलभुलैयाके चक्कर जिनके प्रतीक है।

■

जल-प्रलय

सारी प्राचीन जातियोंके साहित्यमे जल-प्रलयकी कथा कही गयी है। सुमेरी, बाबुली, असूरी, खत्ती, ग्रीक, लातीनी, भारतीय, चीनी और उन सारी सभ्यताओमें, जिनका साहित्य सुमेरी-बाबुली लिपि और साहित्यसे प्रभावित है, जल-प्रलयकी कहानी दोहरायी गयी है। 'दोहरायी गयी' कहनेका मतलब है कि मूल कहानी उन विविध-साहित्योकी अपनी नही है, अन्यत्रसे ली गयी है। और वह 'अन्यत्र' दजला-फरात नदियोके फ़ारसकी खाडीसे लगे मुहानेपर बसे सुमेरके नगरोंके आदिम इतिहाससे सम्बद्ध है। जल-प्रलयकी वह सर्वनाशी घटना उसी सुमेरमे, जिसकी पृष्ठभूमिसे बाबुल और असुर, निमरूद और निनेवे उठे, घटी थी। उसी मूलसे भारतीय आदि साहित्योकी जल-प्रलयकी कहानी ली गयी।

भारतीय पुराणोमे बार-बार होनेवाली सृष्टिका उल्लेख हुआ है (सर्गश्च प्रतिसर्गश्च), जिसमे-से एक मछलीकी भी कहानी है जो ऋषिके सम्पर्कमे आकर बढती चली गयी थी और जब घडेसे गड्ढेमे, गड्ढेसे तलैयामे, तलैयासे अपने बढते हुए आकारके कारण, समुद्रमे डाल दी गयी तब, कहते है, जल-प्रलयके संकटमे मनुकी नौकाको वही सूखे थलकी ओर ले गयी। पर भारतीय साहित्यमे इसका सबसे प्राचीन उल्लेख 'शतपथ ब्राह्मण'मे हुआ है, जिस ग्रन्थका निर्माण-काल भारतीय और युरॅपीय वैज्ञानिक विद्वान् ईसासे प्रायः आठ सौ साल पहले मानते है। यदि हम और भी उदार दृष्टिसे 'शतपथ ब्राह्मण' का काल-निर्णय करना चाहे तो वह दसवी सदी ई० पू० से पहले किसी दशामे न पहुँच पायेगा। हिन्दीके जयशंकर 'प्रसाद'ने उसी जल-प्रलयकी घटनाके बाद अपने काव्य 'कामायनी' का

कथानक रखा है। 'शतपथ ब्राह्मण'मे जो जल-प्रलयकी कहानी दी हुई है उसके अन्तमे एक मजेका संकेत है। मनुने जब जीवोके जोडोकी रक्षा जल-की बाढके समय उन्हे अपनी नौकामे डालकर कर ली तब उन्होने भगवान्-की इस रक्षारूपी महती कृपाके लिए यज्ञ-द्वारा उसके प्रति आभार प्रकट करना चाहा। पर अपने देशमे उस यज्ञके सही जानकार न होनेसे उन्हे किलाल और आकुलो नामके दो असुर पुरोहित बुलाने पडे थे—"किलाताकुली असुर ब्राह्मण इति आहूतः।" पुरोहितोसे भरे इस देशमे असुर देशके ब्राह्मणोके बुलानेकी आवश्यकता क्यो पडी, इस टेढी खीरको समझनेके लिए उस पौराणिक प्रसंगकी ओर संकेत करना पडेगा जिसमे शको-द्वारा पहली बार यहाँ मूर्तिके रूपमे सूर्य-पूजाका आरम्भ किये जानेपर मग यानी ईरानी पुरोहितोको बुलाना पडा, मात्र जो सूर्य-पूजाका पौरोहित्य जानते थे और जो आज भी भारतमे शकद्वीपी ब्राह्मणोके नामसे जाने जाते है। पुराणोमें इसका उल्लेख कृष्णके बेटे शाम्ब-द्वारा मुलतानमे निर्मित सूर्य-मन्दिरमे सूर्यप्र-तिमाकी प्रतिष्ठाके प्रसंगमे हुआ है। 'शतपथ ब्राह्मण'मे असुर-ब्राह्मणोका उल्लेख इसी प्रकारके दूसरे रहस्यका उद्घाटन करता है। इस तरहको वह कहानी असुर देशकी ईंटोपर लिखे सुमेरी-बाबुली साहित्यसे उठायी गयी है।

असुर देश दजला-फरात नदियोके द्वाबमे उत्तरी ईराकमे बसा था जिसकी तीनों राजधानियाँ – असुर, कला और निनेवे – युरेपीय पुराविदोने पिछली सदीके अन्तमे और वर्तमान सदीके पहले चरणमे खोद निकाली है। 'असुर' जातिका भी नाम था, उस जातिके प्रधान देवताका भी, उसकी राजधानी और उस देशका भी, जिसका ग्रीक नाम असीरिया पडा। निनेवेकी खुदाईमे जो सम्राट् असुरबनिपालका सातवी सदी ई० पू० का ग्रन्थागार निकाला गया है उसमे इस कहानीसे सम्बन्धित अनेक सदियोमे बार-बार् लिखा साहित्य मिला है। उसका अन्तिम उल्लेख भी आजसे करीब तीन हज़ार साल पहले हुआ था,

कीलनुमा अक्षरोमे। उन सदियोमें अनेक देशों और सभ्यताओंकी भाषाओंमें यह कहानी नकल कर ली गयी थी, कुछ अजब नही जो तभी आठवीं सदी ई० पू० के आस-पास जल-प्रलयकी कहानी भारतीय साहित्यमे पहली बार 'शतपथ ब्राह्मण'मे लिखी गयी हो और देवनागरीकी जननी ब्राह्मी लिपिके साथ-ही-साथ वह भी उसी सुमेर और बाबुलकी दिशासे आयी हो। हमे भूलना नही चाहिए कि आठवी-नवी सदी ई० पू० असुर सम्राटोका साम्राज्य भारतके पडोसी ईरानसे भूमध्यसागर और मिस्र तक समूचे भूखण्डपर फैला हुआ था। निनेवे आदिकी खुदाइयोसे प्रमाणित हो गया है कि भवनोके निर्माणकी असूरी कला शिल्पकी ऊँचोसे ऊँची चोटो छू चुकी थी और वहाँके अभिलेखोसे सिद्ध है कि वहाँके शिल्पियोकी माँग तबके संसारके सारे सभ्य देशोमे भवन-निर्माणके लिए बेहद बढ गयी थी। हमारे शिल्प-सम्बन्धी ग्रन्थोमे जो बार-बार असुर इंजीनियर मयका नाम आया है वह सम्भवतः असुरोके इसी शिल्प-विज्ञानकी ओर संकेत करता है, जिनकी सभ्यतामे जल-प्रलयकी घटना घटी।

जल-प्रलयकी वह कहानी सबसे अधिक विस्तारसे बाइबिलकी पुरानी पोथीके छठे, सातवे और आठवें अध्यायोमे और सुमेरी बाबुली-असूरी अभिलेखोमें लिखी है। जैसे भारतीय कहानीमे जल-प्रलयसे मनु जीवोकी रक्षा कर नयी सृष्टि उत्पन्न करते हैं वैसे ही यहूदियोकी कहानीमे हज़रत नूहने जल-प्रलयसे रक्षा कर नयी सृष्टिका आरम्भ किया था। पर मनु और नूहकी कहानीसे पहलेकी जल-प्रलय-सम्बन्धी कहानी असूरी-बाबुली और सुमेरी ईंटोपर उनसे सदियो पहले — और सुमेरीमे तो सहस्राब्दियों पहले — लिख ली गयी थी। असूरी-बाबुली कहानीमे जल-प्रलयका नायक मनु और नूहकी तरह ज़िउसुद्दू है और उससे भी पहले सुमेरी कहानीका नायक उत्-निपिश्तिम है। यह जल-प्रलयके असूरी-बाबुली-सुमेरी महाकाव्य 'गिलगमेश'मे प्रबन्ध रूपसे प्रस्तुत है जो ससारका सबसे पहला वीरकाव्य है। निनेवेमे मिली बारह ईंटोपर 'गिलगमेश'का अधूरा

काव्य लिखा पडा था जो अब पढ लिया गया है और दूसरी भाषाओमे उसी प्राचीन लिपिमे लिखे अन्य पाठोसे पूरा कर लिया गया है। इसके एक पाठकी ईंटें ब्रिटिश म्यूज़ियम, लन्दनमे, दूसरे पाठकी ईंटें सोवियत रूसके लेनिनग्राद नगरके 'एरमिताज़ते संग्रहालय'मे रखी हुई है, (जिनको इस लेखकने देखा है)।

'गिलगमेश' काव्यका नायक स्वयं गिलगमेश है जो सुमेरी उत्-निपिश्तिम अथवा ज़िउसुद्दूका वंशज है, जो अमरवेलिकी तलाशमें घूमता हुआ अपने अमर पूर्वज जिउसुद्दूसे मिलता है जो जल-प्रलयका नायक है और उस प्रलयसे अपनी रक्षाकी कहानी आप कहता है। पुरानी सुमेरी कहानी-से स्पष्ट है कि देवताओमे आपसी राग-द्वेप प्रवल थे और उनमे अक्सर लडाइयाँ होती रहती थी। देवताओके क्रोधकी ही यह जल-प्रलयकी कथा दिलचस्प कहानी है, जो इस प्रकार है। देवता एंलिलने आदमियोके पाप-से चिढकर देवताओको सभा की, और दण्डके रूपमें जल-प्रलय-द्वारा सृष्टि-का नाश कर देनेका निश्चय किया। देवता इयाने उसका भेद शुरुप्पक नगरके रहनेवाले मानव ज़िउसुद्दू (उत्निपिश्तिम-अत्रखसीस) को बताकर मानव जातिकी रक्षा की। जल-प्रलयकी वह कथा जिउसुद्दू अपने वंशज गिलगमेशसे कहता है, – "मै तुझसे एक भेदकी बात कहूँगा और तुझसे देवताओकी रहस्यमन्त्रणा तक कह दूँगा। शुरुप्पकको तू जानता है, उसे जो फरात (फ़रात्) के तटपर बसा है, वह नगर पुराना हो गया था और उसमे बसनेवाले देवता – महान् देवता – के चित्तमे हुआ कि जल-प्रलय करें – 'दिव्य स्वामिन् – नेक देवता एंकी' – उनके विरुद्ध था। उसने उनकी मन्त्रणा एक नरकटकी झोपड़ीको सुनाकर कही – नरकटकी झोपडी! दीवार, जो दीवार! सुन, हे नरकटकी झोपड़ी! समझ, ओ दीवार!"

यह इस प्रकार झोपडीके बहाने इसलिए कहा गया कि ज़िउसुद्दू जो उसी झोपड़ीमे रह रहा था, सुन ले, फिर देवताने खुलकर उससे

कहा –

"शुरुप्पकके मानव, उबर्दुद्के पुत्र, घरको गिरा डाल, एक नौका बना, माल असबाब छोड़ दे, जानकी फिक्र कर। जायदादको तौबा कर और (अचानक मर नही) ज़िन्दगीको बचा ले। सारे जीवोंके बीज चुन ले और नौकाके बीच ला रख।"

जिउसुद्दूने नौका बनायी और उसे जीव-बीजोसे, भोजन आदिसे भर लिया और नगरवासियोसे वह बोला – "शक्तिमान् पवन देवता एंलिल उससे घृणा करता है। इससे वह जिउसुद्दू उनके बीच नहीं रहेगा। जाते समय उसने झूठ कहा कि देवता उनपर कृपा करेगे, रहमत बरसायेगे। उसने अपने परिवारको फिर नावमे चढा उसे सब ओरसे बन्द कर लिया। और तब भयानक तूफान आया और काले विकराल मेघोके बीच स्वयं देवताओको समस्त नागरिकोने मशाल चमकाते देखा।

भाई भाईको न पहचान पाता था। शून्य और आदमीमे कोई फर्क नही था (ये लोग दिखाई नहीं पडते थे)। स्वयं देवताओको जल-प्लावन से भय हो चला। वे सरके। वे देवताके स्वर्गमे जा पहुँचे। देवता कुत्तोकी भाँति भयसे काँप रहे थे, स्वर्गकी देहलीमे एक दूसरेसे चिपटे। देवी इनन्ना (सुमेरी मातृदेवी, सामियोकी इश्तर अथवा अस्तार्ते) प्रसवपीड़िता नारीकी भाँति चीख उठी। वह मधुभाषिणी देवपत्नी रो-रोकर देवताओसे कहने लगी – दिन मिट्टी हो जाय क्योकि मैने देव-सभामे अनुचित कहा। भला क्यो देवताओकी सभामे मैने कुवाच्य कहा ? क्यो अपनी ही प्रजापर तूफान बरपा किया ? मैने क्या अपनी प्रजाको इसलिए जना कि उनसे मछलियोके अण्डोकी तरह समुद्र भर जाय ?"

छह दिन और छह रात तूफान और जलकी बाढ उमड़ती रही और जलकी सतहपर बहता जिउसुद्दू अपने साथियोके लिए जार-जार रोता रहा। पर्वत-शृंखलाके ऊँचे शिखर मात्र जलके ऊपर थे। इन्हीमे एकसे नौका जा लगी और सप्ताह-भर वही लगी रही। जिउसुद्दू कहता

गया –

"सातवे दिन मैने एक कबूतर निकाला और उडा दिया। कबूतर उड गया। वह चहुँओर उडता रहा पर कही उतरनेकी जगह न मिली और वह लौट आया। मैने एक अबाबील निकाली और उडा दी। अबाबील उड़ गयी। वह चहुँओर उडती रही पर कही उतरनेकी जगह न मिली और वह उडती हुई लौट आयी। मैने एक काग निकाला और उड़ा दिया। काग उड गया। और उसने घटते हुए जलको देखा। उसने (दाना) चुगा, जल हेला, डुबकियाँ लगायी, लौटकर नहीं आया। मैने (हविष) निकाला और कुरबानी की (यज्ञ किया), चारो हवाओके प्रति। पर्वतकी उत्तुग शिलापर मैने आपान (मदिरा) चढाया, और सात बोतलें रख दी, उनके नीचे बेंत, दारु और धूप-अगुरु बिखेरे। देवताओने सुरभि सूँघी, देवताओने प्रभूत गन्ध ली, देवता यज्ञके स्वामीके चारों ओर इकट्ठे हो गये। अन्तमें देवी (इनन्ना) ने पहुँचकर वह ग्रैवेयक (हार) उठाकर, जो देव अनने उसके कहनेसे बनाया था, कहा – 'देवताओ, जैसे मै अपने गलेकी नीलमणियोको नही भूलती, उसी प्रकार मै इन दिनोको नही भूल सकती। इन्हे सदा याद रखूँगी। देवता यज्ञमें पधारें, परन्तु एंलिल न आये, इस यज्ञका भाग वह न पाये, क्योकि उसने कहना न माना, क्योकि उसने जल-प्रलयकी सृष्टि की और नाशके लिए मेरी एक-एक प्रजा गिन ली।' तब देवता एंलिलने नाव देखी। एलिल क्रुद्ध हो उठा, उसने पूछा कि किस प्रकार कोई मर्त्य (उस प्रलयसे) बचकर निकल गया? श्रीमान् और शिष्ट भूदेव एंकीने उससे तर्कपूर्वक कहा –

देवताओके देवता, वीर, क्यो, क्यो तूने कहना नही माना और बरबस प्रलय की? पाप पापीके ऊपर डाल, सीमोल्लघनका अपराध सीमा लाघँनेवालेपर। कृपाकर, जिससे वह सर्वथा उच्छिन्न (एकाकी)न हो जाय, नितान्त विभ्रान्त (मूढ)न हो जाय। तेरे जल-प्रलय लानेसे अच्छा है कि सिंह भेजकर प्रजाकी सख्या कम कर दे। तेरे जल-प्रलय लानेसे

अच्छा है कि भेडिया भेजकर प्रजाकी संख्या कम कर दे।

'क्रुद्ध देवता शान्त हो चला, एंकी कुछके किये पापोका दण्ड बहुतो-को देनेवाले उस देवकी भर्त्सना करता गया। अन्तमे एलिल नौकाके भीतर चला आया। उसने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे बाहर लाया, स्वयं वह मेरी पत्नीको भी बाहर निकाल लाया और मेरी बगलमे उससे घुटने टेकवाये (प्रणाम कराया)। उसने हमारे माथेका स्पर्श किया और हमारे बीच खडे होकर हमे आशीर्वाद दिया – 'पहले जिउसुद्दू मनुष्य था पर अबसे जिउसुद्दू और उसकी पत्नी निश्चय ही हमारी तरह देवता होंगे। जिउसुद्दू और उसकी पत्नी दूर नदियोके मुहानेमे वास करेंगे।''

यह उस जलप्रलयकी कहानी है जो सुमेर यानी दजला-फरातके मुहानेके नगरोमे ईसासे करीब ३५०० साल पहले घटी, कलियुगसे कुछ ही पहले। सैलाबकी वह रोगटे खडे कर देनेवाली कहानी ईसासे प्रायः ढाई हजार साल पहले उन ईंटोपर लिख ली गयी थी जो असुर बनिपा-लके नगर निनेवेके ग्रन्थागारमे मिली है। यह कहानी कथाके भीतर कथा है जो गिलगमेश नामक सुमेरी-बाबुली महाकाव्यमे लिखी है। इस कहानीको प्रायः सभी प्राचीन जातियोने अपनी-अपनी धर्मपुस्तको और साहित्योमे लिख लिया। बाइबिलकी जल-प्रलयकी यहूदी कहानीका नायक नूह यही जिउसुद्दू ही है, या उससे भी प्राचीनतर सुमेरी रूप उत्-निपिश्तिम, जैसे वही हिन्दू जल-प्रलयकी कहानीका नायक मनु भी है।

कहानी कितनी सादी है, बनावटसे दूर, कहना न होगा और कहानी आदिम इनसानकी है जब उसका विश्वास था कि देवता केवल आपसमे ही राग-द्वेष नहीं करते, मनुष्योके जीवनकी घटनाओमे भी जब-तब हस्तक्षेप करते रहते है। यह कहानी, जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, कीलनुमा अक्षरोमे जिसको पण्डित 'क्यूनीफॉर्म' लिपि कहते है, ईसासे ढाई हजार साल पहले, यानी आजसे कोई साढ़े चार हजार साल पहले गीली ईंटोपर लिख ली गयी थी। इन ईंटोकी खोजकी कहानी भी बडी

दिलचस्प है।

पुराविद् लेयार्डने निनेवेकी खुदाई की थी, जो नगर दजला नदीके तीर बसा था और सातवीं सदी ईसापूर्वके अन्तमें ईरानी आर्यो-द्वारा जला डाला गया था, जो असुर सम्राटोंकी राजधानी रहा था और जहाँ लेयार्डने उनके राजमहलोंके साथ-साथ पक्षधारी साँडोंकी विशाल मूर्तियाँ और तीस हज़ार ग्रन्थोंवाला सम्राट् असुरबनिपालका ग्रन्थालय खोद निकाला था। वहीं उसके असिस्टेण्ट सीरियक ईसाई रस्समको गिलगमेश महाकाव्य यानी जल-प्रलयकी कहानी कहनेवाली ईंटें मिली थीं।

जब ये ईंटें लन्दनके ब्रिटिश म्यूजियममें पहुँचीं तब उसके असूरी-बाबुली संग्रहके रक्षक जार्ज स्मिथने उनको पढ़कर देखा कि कहानी अधूरी है। सारे यूरोपीय संसारमें अब तक गिलगमेश वीरकाव्यकी धूम मच गयी थी, विशेषकर इस कारण कि जैसे त्रॉयकी खुदाईसे होमरके काव्य इलियदके युद्धकी घटनाकी ऐतिहासिकता प्रमाणित हो गयी थी, वैसे ही इस वीरकाव्यकी उपलब्धिने बाइबिलकी पुरानी पोथीकी जल-प्रलयकी कहानीकी भी ऐतिहासिकता सिद्ध कर दी। कहानीका अधूरा होना विद्वानोंके लिए असह्य हो उठा, स्वयं आम जनताने भी उस सम्बन्धमें गहरी दिलचस्पी ली। यह सोचा जाने लगा कि खर्चका इन्तज़ाम हो जाय तो किसीको ईराक भेजा जाय, निनेवेकी खुदाइयोंके स्थलपर, क्या अजब कि कहानी पूरी करनेवाली बाकी ईंटें भी मिल जायँ। लन्दनके प्रसिद्ध अखबार 'डेली टेलिग्राफ'ने तुरन्त वह खर्च मुहैया कर दिया। उसने ऐलान किया कि जो दजलाके तीर जाने और उन ईंटोंको खोजनेका बीड़ा उठाये उसके खर्चके लिए हजार गीनियाँ तैयार हैं। जार्ज स्मिथ स्वयं उन हजार गीनियोंको लेकर निनेवे जा पहुँचा और भाग्यने उसका भी साथ कुछ वैसे ही दिया जैसे उसने श्लीमानका त्रॉयकी खोजमें दिया था। स्मिथ तीन सौसे ऊपर पट्टिकाएँ लेकर लन्दन लौटा जिनमें जल-प्रलयकी कहानी पूरी करनेवाली ईंटोंपर लिखे अभिलेख भी थे। कहानी पूरी हो गयी।

पर यह तो कहानीके पूरे होनेकी बात हुई, उसकी ऐतिहासिकताका प्रमाण इससे कैसे मिल सकता था ?

वह ऐतिहासिक प्रामाणिकता लियोनार्ड वूलीने प्रस्तुत की। १९२७-२८ ई०मे इग्लैण्ड और अमरीकाकी सम्मिलित योजनाके अनुसार उस पुराविद्‌ने बाइबिलकी पुरानी पोथीमें वर्णित 'खल्दियोंके ऊर'की खुदाई शुरू की। उसने उसी दरमियान ऊरके अतिरिक्त ऊरुक और शुरुप्पक आदिको भी खोदा। ये प्राचीन नगर थे जिनकी ओर संकेत जल-प्रलयकी कहानीमें था। शुरुप्पक कहानीमे तो नष्ट हो ही गया था, वूलकी खुदाईमे भी अत्यन्त प्राचीन कालमे भी नष्ट ही मिला, जो बाबुलकी तरह फिर बस न सका। वूलीने मीलोकी परिधिमे सुमेर सभ्यताके अनेकानेक नगरोंके खण्डहर खोद निकाले। खुदाईसे पता चला कि प्रायः ३२०० साल ईसासे पहले ऊर, ऊरुक और शुरुप्पकमे यह बाढ आयी थी जब उनके इतिहासके पहले राजवंशका भी अभी आरम्भ न हुआ था। किसी प्राकृतिक कारणसे, लगता है, फारसका समुन्दर उमडा और नदियोके मुहानोसे होता दजला और फरातके दोआबको आप्लावित करता उत्तरकी ओर बह गया था और सुमेरी सभ्यताके ये नगर उसमे डूब गये थे। बूलीने पाया कि नगरोके पहले राजवंशकी निवास-भूमिके नीचे ऊरमे बाढ़की लायी मिट्टी पाँच फुट गहरी पडी थी और ऊरुक तथा शुरुप्पकमे आठ-फुटसे भी अधिक गहरी।

प्रकट है कि इस जल-प्रलयका संकट इतना भयानक माना गया कि दूरकी सभ्यताओ तक, दूरके कलान्तर तक, उस सर्वनाशकी कहानी जा पहुँची और सबने इनसानके उस दुःखको अपना माना।

मै जब सन् '५०में तुर्कीमे था तब सुना कि अमरीकाके कुछ लोग उस खबरकी सच्चाई जाँचने तुर्कीके अरारात पहाड़पर चढ गये है जिसे एक तुर्क किसानने अखबारोमे छपवाया था, कि उसने हज़रत नूहकी

नौकाके टुकड़े उस पहाडपर पडे देखे थे। ज़ाहिर है कि अन्धविश्वास प्राचीनोंकी ही बपौती न थे, आज हमारी भी विरासत है, और कि आज भी हम शायद उतने ही श्रद्धालु हैं जितने कहानीके कहने और सुननेवाले थे – ज़िउसुद्दू और गिलगमेश !

■
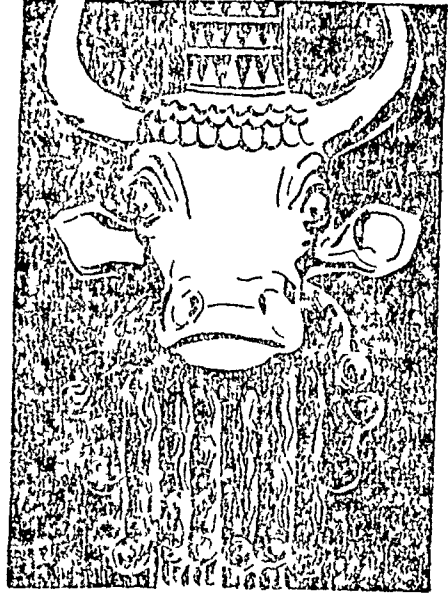
मेष-वीणा
रानी शुबादकी कब्रमें मिली
रत्नजड़ी वीणा

आदमीका रक्त पीनेवाली क़ब्रें

आदमीका रक्त पीनेवाली तो सभी कब्रें होती है, या कमसे कम अगर मरनेके बाद रक्त जिस्ममे नही रह पाता तो जो कुछ भी रह पाता है वही सभी कब्रोका आहार वनता है। पर ये कब्रें, जिनका मै यहाँ जिक्र करने जा रहा हूँ, वे सचमुच आदमीका खून पीनेवाली कब्रे थी जब मरा इनसान जिन्दा इनसानके रक्तसे तृप्त होता था।

बात बहुत पुरानी है, सदियो ही नही सहस्राब्दियो पुरानी, आजसे कोई पाँच हज़ार सालसे भी ज्यादा पुरानी। तबकी, जब अभी हमारे यहाँ कलियुगका प्रारम्भ भी न हुआ था। और जिन क़ब्रोका मै ज़िक्र करने जा रहा हूँ, जिन राजाओंकी क़ब्रोका, उनमे सबसे अधिक महत्त्वकी रानी शुबादकी क़ब्र थी। आदमीके इतिहासमे ऐसी रानियोकी कमी नही जिन्होने अपनी प्रतिभाके अधिकारसे धराको भोगा हो। दिद्दा, शुजुरूद्दूर, रज़िया, नूरजहाँ, क्लियोपात्रा, एलिज़ाबेथ, कैथरीन, विक्टोरिया – अनेक ऐसी हो गयी है जिन्होने अपने जौहरसे मर्दोंको लजा दिया है। दिद्दा कश्मीरकी रानी थी, जिसने अपने जार खसवशी तुगके सायेमे पतिको अप्रतिभ कर, बेटेका अभिभावक वन, पोतोको अपनी राहसे खूनी हाथों हटा खुद गद्दीनशीन हो झेलम-की उस खुशनुमा घाटीपर आधी सदी हुकूमत की। शुजुरूद्दूर मिस्रके मामलुक सम्राट्के भतीजेकी बीवी थी, जिसने क्रूसेडोके युद्धमे फ्रान्सके राजा लुईको सम्मुख समरमे हराकर बन्दी कर लिया। अल्तमशकी बेटी रज़िया पहली नारी थी जो राजाके अधिकारसे भारतीय इतिहासमे दिल्ली-के तख्तपर बैठी और वह भी ऐसे समय जब एशियामे मगोलोके तूफान

चलते थे, और उन तूफानोका रुख बार-बार दिल्लीकी ओर फिर जाया करता था। नूरजहाँके छलिया रूप और अक्लके जादूने मुग़ल सम्राट् जहाँगीरके मनको कुछ ऐसा कर दिया कि उस कलासर्वस्व नृपतिने शराब-के दो प्याले और अफीमकी एक खुराकके बदले मलकाको अपनी सल्तनत बेंच दी। क्लियोपात्रा मिस्रकी वह ग्रीक रानी थी, जिसने रोमके इतिहास-मे अपने पदाक छोडे और जिसकी इच्छा-शक्तिने रोमके वीरवरोंको सीजर और अन्तानीको अपने प्यारमे इज्जत बख्शी और अपनी सहज मेधासे ज़मानेपर राज किया। एलिजाबेथ, इंग्लैण्डकी कुँआरी रानी, वस्तुत कुँआरी न थी। रूप भी उसे न मिला था, पर कोरी कायाके ऊपर जो प्रतिभाका आब था उसने तबकी दिलेरसे दिलेर तलवार, प्रखरसे प्रखर मेधा, वाणीसे चिती अलभ्यसे अलभ्य कल्पना रानीके पैरोमे ला धरी। कैथरीन जर्मनीकी बेल थी जो रूसकी जमीनमे लगी और जिसने एक ओर फ्रेंच इनसाइक्लोपीडिस्ट दिदेरो और महान् व्यग्य-कार वोल्तेयरको अपने सम्मानकी निजता दी दूसरी ओर रूसी तातारी बर्बरतापर हुकूमत की।

पर रानी शुबादका राज इन सबसे भिन्न था, क्योकि वह जिन्दगीसे परे मौतका राज था, जमीनके ऊपरका नही ज़मीनके नीचेका, कब्रका। दूर ऊरकी बात है, पाँच हज़ार साल पुरानी, तबकी जब सुमेरमे, बाबुल-के पास, ईराकी नदियो—दजला और फ़रातके मुहानोके बीच और ऊपरके दोआबमे गैरसामी राजा राज करते थे, फैले नगरोके ऊपर जहाँ देवताओ और उन सुमेरी राजाओमे, उनके पुरोहितोमे उनकी प्रजा कोई फ़र्क नही करती थी, तीनोको देवताकी तरह पूजती थी। उन्ही राजाओमे एक रानी हुई जिसका नाम था शुबाद। रानी वह किस राजाकी थी यह कहना तो सम्भव नही, पर इसमे सन्देह नही कि थी वह ऊरकी और मरी वह आजसे कोई पाँच हज़ार सालसे भी ज्यादा पहले और वही ऊरमे ही उसकी काया दफनायी गयी। काया, जो चाहे कभी कुन्दनको फीका कर

देनेवाली रही हो, अब तो वह मिट्टी हो गयी थी, पर मिट्टी ऐसी जिसकी बिसात सोनेसे घिरी थी और इस तरह कि, जीवनमे, अपने जिस्मके कुन्दनको मरेमे सोनेकी राशिसे चमका रही थी।

फरात नदीके तीर, फारसकी खाडीसे उत्तर-पच्छिम, बसरासे थोडी दूरपर रेत और बालूसे ढके टीलोपर जब लियोलार्ड वूलीने कुदाल चला उनकी छाती तेहरी फाड दी तब जमीनने उस अति प्राचीन नगर ऊरको उगल दिया। आजसे हजारो साल पहले अथर्ववेदके साँपका मन्त्र झाडनेवाले ओझा ऋषिने नागीको इसी ऊरके साँपके जहरके विशेषज्ञ 'गुल'के सुपुर्द कर देनेकी धमकी दी थी। तब ऋषिने शायद दूरके ऊरकी चर्चा भर सुनी थी, पर उसके वैभवके जादूको वह भुला न सका था और अपने मन्त्रकी शालीनतामे सर्पिणीको उसकी दुहिता कह उठा था—'उरुगुलायाः दुहिता'। कुछ ही काल बाद ऊरका वह आकाशचुम्बी वैभव उसके राजवंशोके साथ ही धरतीमे समा गया था, जल-प्रलयके कुछ ही पीछे रानी शुबाद तभी कभी हुई थी, तभी कभी मरी और तभी उसकी क़ब्र बनी। १९२७-२८ मे जब डॉ० वूलीने रानी शुबादकी कब्र खोदी तब शुबादकी कायाको मास-मज्जा तो मिट चुकी थी, अस्थिपंजर पडा था और उसके मस्तकसे सोनेका ताज लगा हुआ था। पंजरके पास ही दो नौकरोके पंजर सोये पडे थे। शरीर-रक्षक थे वे, जो रानीको बलि कर दिये गये थे, जिससे वे मृत्युके बादकी अनन्त यात्रामे बगलगीर हो उसकी रक्षा कर सके। मौत जिस राह मृतकको ले जाती थी उसमे रक्षा शायद मरे हुए सन्तरियो-द्वारा ही सम्भव थी।

थोडी ही दूरपर कब्रके द्वारके भीतर ही दस अस्थिपंजर पडे थे, नौ नारियोके, एक पुरुषका। दो कतारोमे, जिनमे एक क़तारमे पाँच नारियोके पंजर थे, दूसरीमे चार नारियो और एक पुरुषके। पुरुषका पंजर तन्त्रीवादकका था, बीनकारका, जिसकी छातीपर नंगी हड्डियोके हाथ अब भी तिकोनी तन्त्रीको पकड़े हुए थे। मौतकी राह जीवितोको चाहे जितनी

भयानक लगे उसकी खामोशी भरनेके लिए निस्सन्देह तन्त्रीनाद आवश्यक था, जैसा आवश्यक परिचर्या करनेवाली दासियो और मन बहलानेवाली सहेलियोका साथ था। रानी शुबादकी मौतको संगिनी बाँदियो और सहेलियो और बीन बजानेवाले कलावन्तके सामने उनके पिये हुए जहरके प्याले सूखे पडे थे, और प्याले ऐसे भी न थे जिन्हे दर्शनके प्यारे किसी सुकरातने पिया हो, बल्कि ऐसे जिनके पीनेवाले आखिरी दम तक जिन्दगी के दामनसे चिपके रहे थे और हर क्षण इस उम्मीदमे चौकन्ने थे, सारी निराशाओके बावजूद, कि कुछ हो जाय और मौतके द्वारपर भटकती ज़िन्दगी क़ब्रके अँधेरेसे दुनियाके उजालेको लौट जाय।

पर ऐसा कुछ हो नही पाया था, कभी ऐसा होता नही था, हुआ नही था, उस कालकी रीतिके अनुसार उन्हे अपनी स्वामिनीका साथ मौतमे भी देना पडा था जैसे उसकी ज़िन्दगीमे उन्होने दिया था। शरीर मरे पडे थे, अस्थिपंजर-मात्र रह गये थे पर उनके शृंगारके लिए – रानी शुबादके शृंगारके लिए – प्रसाधनकी पिटारियाँ पडी थी। कीमती पिटारियाँ, जिनके भीतर अजनसे इत्र-फुलेल तक सभी सामान मौजूद थे, केशकी पिनोसे लेकर कान खोदनेकी सुनहरी लकड़ी, दाँत खोदनेके सुनहरे तीर तक। और शुबादके अस्थिपजर पर, उसकी गली कायाके बावजूद, सिरका सुनहरा ताज, कानोके भारी कुण्डल, विविध हार, सोने और कीमती पत्थरोके बने, रौनक बरसा रहे थे। चाँदी-सोनेकी गंगाजमुनी बकरियाँ, चाँदीके जहाज़, अनेकानेक अलंकरण जैसेके तैसे धरे पड़े थे। निर्जीव बहुमूल्य वस्तुएँ उन शरीरोको सजा रही थी, जो कभी सजीव थे।

बडी कब्रमे, जो राजाओकी थी, छोटी बड़ी, मामूली और बेशकीमत क़रीब दो हजार चीजे मिली। मगर उन सबसे महत्त्वके, सबसे लोमहर्षक वे अस्थिपंजर थे जिनकी सख्या ७५ थी। राजा चाहे अकेला हो, बालक या वृद्ध हो, परिच्छद उसका बडा होता है। वह निर्जनसेवी नही होता, सदा परिचर परिवारसे, अनुयायिवर्गसे घिरा रहता है, और ऊरके नगर-

में तो वह जैसे जीवनमें वैसे ही मृत्युमे भी घिरा रहता था। अन्दाज़ कीजिए, ७४ लाशें – जो अकेली लाशके साथके लिए जिन्दा दफनायी गयी थी। और इस तरहकी अनेक क़ब्रें, प्रत्येकके द्वारपर, आदमी और बकरोकी बलि।

ऐसा भी नही कि वहाँ केवल राजकीय समाधियाँ ही रही हो, साधारण नागरिकोकी क़ब्रें न रही हो। कब्रें दोनो वर्गोकी मिली। दोनोमे सोने-चाँदी, पत्थर आदिकी चीजें मिलीं। हाँ, इतना जरूर था कि नागरिकोके लिए दूसरोका जीवन लेना इतना आसान न था। जैसे वे ज़िन्दगीमे अकेले रहे थे, मौतमे भी अकेले थे। श्रीमानोकी लाशोकी तरह उनके साथ लाशे दफनायी नही मिली। उन्होने बकरोकी बलिसे ही सन्तोष कर लिया था। राजाओकी क़ब्रोके भीतर-बाहर भी इनसान बलि चढ़ता था, जैसे भीतर वैसे ही बाहर, क्योकि बाहरी द्वारपर मलबे के नीचे उनकी लाशोके ताबूत लानेवाली चार पहियोकी बैलगाड़ियाँ भी मिली जिनमे तीन-तीन बैल जुते थे। ऊपर गाड़ीवान बैठे थे, नीचे साथके साईसोके-से अनुचर जिन सभीके अस्थिपंजर साबुत मिले, बैलोंके भी, उन्हे हाँकनेवालोंके भी, साईसोके भी।

इतिहासने रानी शुबादको नहीं जाना, समकालीन जगत्‌ने चाहे उसे ज़िन्दगीमे जाना हो। इतिहासने उसे मृत्युमे ही जाना, कब्रकी दीवारोके भीतर और बाहर। पर जब पुराविद् वूलीकी बीवी कैथरीनने उस रानीके मस्तकका मॉडल तैयार कर उसपर उस प्राचीनकालके बने सोने और क़ीमती पत्थरोसे जडे तारो और पत्तियोसे ढँके बालोंका ताज रखा, कानोमे सोनेकी मोटी दोहरी बालियाँ पहनायी, बडी-बडी आँखोंपर काला अंजन फेरा, गालोपर रूज और पाउडर लगाया तब जितने भी पुराविद् वहाँ खड़े थे उन्हे इस इतिहासपूर्वकी रानी शुबादके प्रसंगमे पड़ोसके ही अरबकी रानी बिलकिसकी भी याद आये बिना न रही जिसका उल्लेख 'शेबाकी रानी' के नामसे यहूदियोकी पुरानी पोथी 'बाइबिल' मे हुआ है।

शेबाकी रानी उस कोटिकी रानियोंसे सर्वथा भिन्न थी जिनका जिक्र इस लेखके शुरूमें आ चुका है। रानी, जो शेबाकी थी दक्खिनी अरबके यमनकी, जिसकी रेतमें गडी राजधानी वेण्डेल फिलिपने मारिषके टीलोंसे अभी हाल खोद निकाली है। सचमुच कितनी भिन्न थी शेबाकी वह रानी बिलकिस, क्लियोपात्रासे, दिद्दासे, कैथरीनसे।

उसने अपनी दुनियाके सबसे महान्, सबसे मेधावी, सबसे न्यायी यहूदियोंके राजा सुलेमान (सालोमन) के प्रति ज्ञानकी दिशामें अभिसार किया था, यद्यपि वह ज्ञानकी दिशाका अभिसार वस्तुतः प्रणयका अभिसार होकर ही रहा।

वह कहानी भी कहनेका लोभ संवरण न कर सकूँगा, विशेषकर इस कारण कि कहानी यह जिन्दगीकी है, ऊपर कही मौतकी कहानीसे भिन्न, इनसानके प्यार और हुनरके मोहकी कहानी। शेबाकी रानी इसराईलके राजा सालोमानके दर्शनोंके लिए गयी, उसका मेहमान बनी, जुरू-सलमकी राजधानीमें, जायन पर्वतपर बने दाऊदके महलोंमें। महलकी रानियोंने शेबाके रूपकी ख्याति सुनी थी, डरीं कि कहीं उनके राजाको वह रूप मोह न ले, और उन्होंने गढकर खबर उडा दी कि बिल्किसके पैर बकरीके पैरोंके-से हैं। सालोमनको यह बात खटकती रही, कि अभाग्यकी यह कैसी विडम्बना जो इतनी सुन्दर, धार्मिक यह रानी, और पैर इसके बकरीके-से।

सालोमनको सन्देह भी हुआ और उसने जानना चाहा कि वह खबर कहाँ तक सच है। अपने कारीगरोंको बुलाकर उसने स्फटिककी फर्श बनवायी जिसके एक सिरेपर खडे होकर शेबाकी रानीको अपनी ओर आनेका उसने इशारा किया। रानी फर्शके दूसरे सिरेपर थी और जब वह राजाको भेटने चली तब स्फटिककी भूमि कुछ ऐसे चमकी जैसे पानीसे ढँकी हो और उसने उसे लाँघते समय अपने लेबासके निचले छोर हाथोंसे कुछ ऊपर उठा लिये। सालोमनने देखा कि उसके चरण ऐसे थे

कि उन्हे महान्‌से महान्‌ नृपति भी अपनी गोदमे डाल सहलाया करे और कभी ऊबे नही ।

और सालोमनने कुछ ऐसी तरकीब की कि, रानीकी धार्मिकताके बावजूद, उसने उसके चरणोको अपने अंकमे डाल लिया। कहते है कि राजाने उसके भोजनमे गरम मसालोकी छौंक गहरी लगवायी और रातमे राजाके शयनागारके पास ही अपने शयनागारमे जब रानी सोयी तो मसालोके प्रभावसे उसे प्यास गहरी लगी। राजाके आदेशसे रानीके शयनागारमे जलके पात्र रीते रख दिये गये थे, इसके विपरीत शीतल सुवासित जलसे भरे पात्र राजाने अपने शयनागारमे रखवा लिये थे। प्याससे सूखे कण्ठ रानी दबे पाँव राजाके शयनागारमे घुसी, राजाकी पहुँचके भीतर और राजाने रानीको उठाकर उसके चरण अपने अंकमे डाल लिये।

जिन्दगीके मोहकी यह कहानी ऊरकी रानीकी कहानीसे कितनी भिन्न है। मौत और जिन्दगी एक-दूसरेसे भिन्न हुआ ही करती है, क्योकि जिन्दगी मौतका आहार है। जिन्दगी मर-मरकर भी फिर-फिर जीना चाहती है और अपनी रक्षाके लिए मकबरे-पिरामिड बनाती है, यद्यपि वह जी नही पाती। पर ज़िन्दगी खूबसूरत है, जीनेके लायक है – शुबादकी कब्रसे अलग, सालोमन और बिलकिसके महलोमे रहने लायक। जिन्दगीको जमीनपर शुबाद और शेबा क्या एक-दूसरेसे भिन्न रही होंगी ?

■
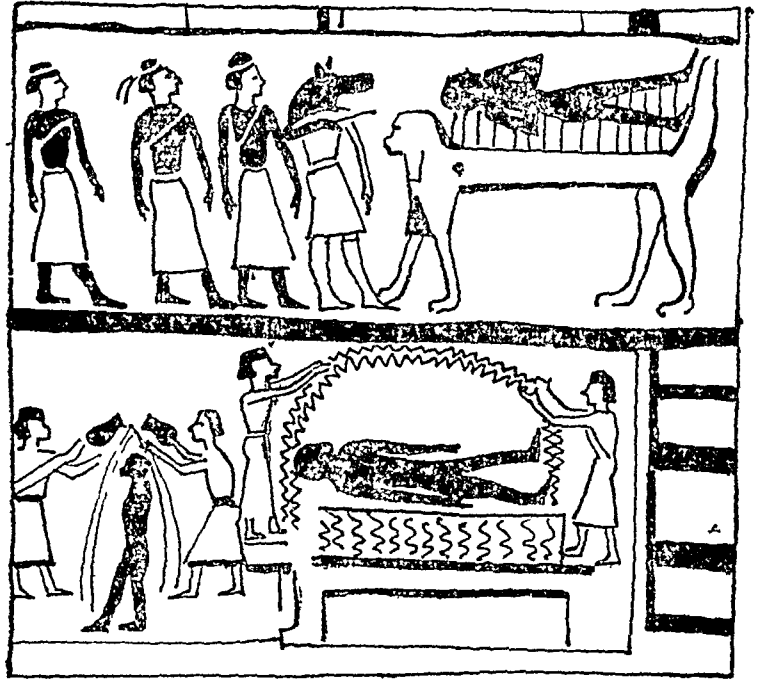
पिरामिडमे रखनेसे पूर्व शवको नहलाया जाता, रासायनिक द्रव्योंसे पुते कपडोंमें लपेट ममी तैयार की जात। पहले उसे लकडीके ताबूतमें रखते, फिर पत्थरोंके ताबूतमें, और फिर पिरामिडमें दफना देते।

ममी और मानव

१८८० के साल सर्दियोमे मिस्रमे काहिराके पास गीज़ाके पिरामिडोंके साये एक छोटे, टूटे अँधेरे मस्तबेमे एक आदमीने डेरा डाला। २७ सालका हट्टा-कट्टा अँगरेज़। जब रेतपर धुँधलका छाया तब जिस्मके सारे कपडे उतार मादरजाद नगा वह खूफूके आकाशचुम्बी पिरामिडमे घुसा और भीतरके अँधेरेमे खो गया। घण्टे गुजरते गये, साँझपर रात झुकी, फिर आधी रात और तब वह आदमी पिरामिडसे बाहर निकला, जैसे घुसा था वैसे ही, मादरजाद नगा। वह पेट्री था, विलियम मैथ्यू फ़्लाइण्डर्स पेट्री — अंगरेज़ पुराविद्।

उम्रके दसवे सालसे ही पेट्री मिस्री पुरातत्त्वसे आकृष्ट हुआ था। तबसे उस सम्बन्धका इतिहास बराबर पढता रहा था और अब वह स्वयं मिस्री प्राचीन ज्ञानको अपनी खुदाइयो-द्वारा प्रकाशित करने काहिरा जा पहुँचा था। वैसे तो हेरोदोतसके जमाने यानी ई० पू० पाँचवी सदीसे ही ग्रीक पण्डित और घुमक्कड मिस्रकी प्राचीनतापर अचरज करते रहे थे, उसके पिरामिडोकी गणना, संसारके सात आश्चर्योमे उन्होने की और बादकी सदियोंमे अनेक यूरॅपीयनों और अरबोने मिस्री सभ्यताकी बडी भावुकतासे चर्चा की, पर उस भावुकताको भेद-विज्ञानकी ठोस भूमि तक पहुँचनेका पहला प्रयास नेपोलियनके आक्रमणके साथ हुआ। तभीसे लोग मिस्री पुरोहितोकी चित्रलिपि पढनेका प्रयत्न करने लगे थे। फ्रेंच शाम्पोलियों और अंगरेज़ यंगने धीरे-धीरे उस लिपिकी गुत्थियाँ सुलझा ली और विगत मिस्री जीवन बेपरदा होकर हमारे सामने खुल पड़ा। जिन चार अंगरेज़ोने मिस्री सभ्यताकी दबी तहोको खोदकर प्रकाशित किया, पेट्री उनमें

चौथा था ।

पेट्री जब खूफूके पिरामिडसे आधी रातको बाहर निकला तब उसके हाथमे कुछ कागजके टुकडे थे । उन्हे लिये वह आकाशचुम्बी पिरामिडकी साढ़े चार हज़ार साल पहलेको अँधेरी दुनियासे निकलकर मस्तबाके उस छोटे कमरेमे घुसा, जिसमे कुछ कम अँधेरा न था और जहाँ पेट्रीके बक्सपर रखा टिमटिमाता चिराग इतना उस अँधेरेको घटा नही रहा था, जितना उसके विस्तारका एहसास करा रहा था । छोटा-सा कमरा, उसमे एक छोटी-सी खाट, उसपर पडा हलका बिस्तर, कोनेमे पडा मिट्टीके तेलका स्टोव, एक बक्सपर कुछ किताबे, कुछ नक्शे और चार्ट और दूसरेपर अकेला वह चिराग । उसके क्षीण प्रकाशमे बगैर कपडे पहने ही पेट्री बैठ गया और लगा कागज़के उन टुकडोको सँभाल-सँभाल कुछ लिखने-पढने, कुछ गणितके हिसाब लगाने, कुछ रेखाएँ खीचने और लिये हुए चित्रोके नोटोका, आजकी अँगरेज़ीमे अनुवाद करने ।

पेट्रीका कुतूहल उन नोटोके सम्बन्धमे कुछ ऐसा था जिसने उसकी सुधबुध भुला दी । सर्दीका तो जैसे उसकी त्वचापर असर ही नही हो रहा था और वह चुपचाप चिरागकी बत्ती उकसाता तबतक काम करता रहा, जबतक बाहरकी सूरजकी फैलती रोशनीने भीतरकी कमज़ोर रोशनीकी लौको सर्वथा प्रकाशहीन न कर दिया । अब पेट्री उठा, उसने कपडे पहने, अपना पाइप जलाया और चेहरेपर अनेक प्रकारके चिन्ताके गहरे भाव उडाता, मुँहसे धुआँ फेकता रहा । फिर धीरे-धीरे वह बाहर निकला और तीनो पिरामिडोके उसने बाहरसे चक्कर लगाये, खूफू, ख़ुफ़्न और मनकौराके पिरामिडोके, जिनके शरीर – पेट्रीका ऐसा विश्वास था – पिछली पैतालीस सदियोसे उनके अन्तरंगमे अनन्त निद्रामे सो रहे थे ।

पेट्री महीनो-सालो रहकर उन पिरामिडोका अध्ययन करता रहा, बाहरसे, भीतरसे । भीतरके कमरे और गलियारे उसकी उपस्थितिसे मृत और जीवित प्रेतोकी प्रतिध्वनि उत्पन्न करने लगे । दूसरा मनुष्य होता तो

डरके मारे भीतर झाँकनेकी हिम्मत भी न करता, पर पेट्री तो उसी रहस्य-का भेद खोलना चाहता था, इसीसे उसका अध्ययन कर रहा था, जिससे औरोके डरनेकी बात थी। आज क़ाहिरामे चौदह नम्बरकी जो बस मिलती है वह गीजाके रेगिस्तानमे सीधे खूफूके पिरामिड तक यात्रीको पहुँचा देती है और वहाँ खच्चर और ऊँटवालोकी आवाजें उसकी निगाह अपनी ओर खीचनेके लिए बुलन्द हो उठती है। पर सोचिए, आजसे अस्सी, बयासी साल पहले, जब पेट्री वहाँ पहुँचा था, उस जगह और राहका क्या हाल रहा होगा। तबकी उस लुटेरी जगहमे अकेले विदेशी इनसानका मुरदोकी बन्द दुनियामे झाँकना कितना डरावना रहा होगा, इसका अन्दाज़ लगाया जा सकता है।

पेट्रीने उन महान् सम्राटो-द्वारा निर्मित पिरामिडोके अचरज भीतर-बाहरसे कोने-कोने देख लिये। वस्तुतः देखना उसे बाहरसे कही ज्यादा भीतरसे था और बडी उम्मीदोके साथ उसने उन लाशोंको खोजा जिनकी सँभालके लिए मिस्रके फ़राऊनोने उन आश्चर्योका निर्माण किया था। पर खूफूके महान् पिरामिडके शव-कक्षमे जो पत्थरका ताबूत रखा था वह खाली मिला। जिसकी रक्षाके लिए वह इमारत खड़ी की गयी थी, वह स्वयं वहाँ न था, लाश लापता थी।

खुफ़नके गगनचुम्बी पिरामिडमे रखे जिस बाहरी पत्थरके ताबूतमें पिरामिड-निर्माताका शव रखा गया था, उसमे अब वह शव तो न था, वहाँ वह पत्थरके टुकड़ोसे ज़रूर भरा था। मनकौराके पिरामिडमे उसके शव-कक्षमे फ़राऊन मनकौराकी 'ममी' टुकड़ोमे बिखरी पडी थी। पेट्रीने जो खोजा वह तो नही पाया — राजाओके शरीरके अवशेष वहाँ उसे नहीं मिले — पर मिस्री तत्त्वका रहस्य उसने भेद डाला। हज़ारों साल पहले मरे मानवको, उसके विगत वातावरणको फिरसे ज़िन्दा कर आजका जीवित मानव उससे सदियोकी बात पूछ और जान रहा था, स्वयं मकबरो-के नाचेके पानोमे हलता, कीचड़मे सना। वह था पेट्री, मिस्री सभ्यताका

अन्वेषक, वैज्ञानिक – एक प्रकारका मानव ।

जीनेका मोह इतना प्रबल होता है कि मौत आदमीके शरीरको मारकर भी उस मोहको नही मार पाती । इसी मोहके वश नयी-पुरानी ज्ञानी-अज्ञानी सारी सभ्यताओ, सारी जातियोने मरनेके बादके जीवनका अनुमान किया, स्वर्ग-नरकके मनहर सपने खड़े किये, मरनेके बावजूद फिर-फिर जीना चाहा । पिरामिडोका निर्माण उसी मरकर भी जीते रहने की दिशामे हुआ था । विश्वास बना कि शरीरमे दो आत्माओका निवास है । एकका नाम है, प्राचीन मिस्री जबानमे, 'बा', जो शरीरके निर्जीव हो जानेके बाद स्वच्छन्द विचरा करती है, फिर उसी शरीरको लौट जाती है । दूसरेका नाम 'का' है, वह आत्मशक्ति जो कभी मरती नही और लौट-लौटकर मृत शरीरको ज्ञानसम्पन्न करती है जिससे वह मरनेके बाद भी ओसिरिसकी दुनियामे जी सके । चूँकि इसी शरीरकी मृतकावस्थासे उन आत्माओका सम्बन्ध था और उनकी स्थिति उस शरीरमे प्रवेशसे ही सम्भव हो सकती थी, उस शरीरको भी क्षतिसे बचा रखना अनिवार्य हो गया । उस शरीरको बचा रखनेके रासायनिक उपचार सम्पन्न कर उसे इन्ही पिरामिडोमे रखा जाता था । मरे शरीरको बचा रखनेके लिए मिस्रके फ़राऊनोने पिरामिडोके निर्माण किये ।

देशकी लाख-लाख जनता पिरामिडोके निर्माणके खर्चके लिए आवश्यक अनिवार्य 'कर' देती, बीस-बीस साल तक एक-एक फराऊन जीवनमे मृत्युकी तैयारी करनेमे, शवको समाधि देनेके लिए पिरामिड बनवानेमे खर्च करता, जीवन मृतकी तैयारीमे ही गुजर जाता । नूबिया और इथियोपियाके मजूर, फिलिस्तीन और सीरियाके मजूर, द्वीपोके मजूर लाख-लाखकी सख्यामे काम करते । खूफूके एक पिरामिड बनानेमे ही एक लाख मजूरोका उपयोग हुआ था । जीवनके पचीससे पैतीस साल तकके सबसे ताकतवर दस साल ये गुलाम-मजूर पिरामिडोके निर्माणमे खरचते और जब एक खेवेके मजूर पैतीस सालकी उम्रमे बूढे हो जाते,

मर जाते, या बूढे या मरे हुए समझ लिये जाते, तब उनकी जगह दूसरोसे भर ली जाती, और यही क्रम सदियो चला करता, क्योकि पिरामिडोके निर्माणका क्रम कभी टूटता नहीं था।

निर्माण क्या था, मनुष्यको निरन्तर बलि थी। तबकी लिखो कहानी आज भी पढी जा सकती है – फ़राऊन पूछता, काम ढीला क्यों चल रहा है? मन्त्री कहता, मजूर गुलाम दोचित्ते हो गये है। फ़राऊन पूछता, क्यों? मन्त्री कहता, वे आप तो यहाँ है, उनके बाल-बच्चे दूर वतनमे है – नूबियामे इथियोपियामे, फ़िलिस्तीनमे, सीरियामे। फराऊन कहता, उनके बाल-बच्चोको बुला लो। बाल-बच्चे बुला लिये जाते, रेगिस्तानमे घरकी तरह दीखनेवाले बिलोमे गुलामोके कुनबे ठूँस दिये जाते। फिर कार्य शिथिल होता और फराऊन पूछता, काम ढीला क्यो चल रहा है? मन्त्री कहता, गुलाम दोचित्ते हो गये है। फ़राऊन पूछता, क्यों? मन्त्री कहता, इसलिए कि बच्चे, जो घरपर है, उनके लिए इन्हे मोह हो आता है, कि पत्थरोकी ढुलाईमे अगर जान गयी, जो अकसर चला जाती है, तो इन बच्चोका क्या होगा? फराऊन कहता, बच्चोको नीलमे डुबा दो। और लाख-लाख बच्चे नील-नदकी मँझधारमे डुबा दिये जाते!

पर काम कभी बन्द न होता, सदा चलता रहता, पिरामिड आसमानमे तीर मारते उठते चले जाते। मोकत्तमके पहाडोसे शिलाएँ कटती, गज़ों लम्बी-चौड़ी टनों भारी चट्टानें, जिन्हे गलेमे रस्सी बाँध रोलरोपर लुढकाता घसीटता इनसान पहले निर्माण-भूमिमे पहुँचता, फिर धीरे-धीरे चीटोकी चाल चढ चार-चार सौ फुटकी ऊँचाई तक पहुँच जाता और चट्टानपर चट्टान इस अचरजसे रखता कि उनके बीच सुई या बाल तक नही घुस पाता। और गारा उन चट्टानोंकी जुड़ाईमे कभी न लगता। आवश्यकता भी क्या थी उसकी, गारा तो स्वयं इनसानकी मज्जा थी! ये दूसरे प्रकारके मानव थे, ये गुलाम जिन्होने पिरामिडोको बनाया। और वे तीसरे प्रकार थे, वे मिस्रके फराऊन, जिन्होने दो-दो बीघा ज़मीन

ढकनेवाले इन पिरामिडोको बनवाया।

पिरामिड चार-चार हज़ार साल बाद तक आज भी खड़े हैं। जिन्होने उन्हे बनवाया उनका विश्वास था कि उनके मृत शरीर पिरामिडोके अभेद्य अन्तरंगमे अनन्तकाल तक अक्षत बने रहेगे। प्रकृतिके क्रूर प्रहारोसे तो इन पिरामिडो और बैक्टीरियाविहीन मिस्रकी सूखी हवा और जलती रेतके सहारे उन्होने उन शवोकी रक्षा कर ली पर इनसानके क्रूरतर प्रहारोसे वे उनकी रक्षा न कर सके।

कारण कि हज़ारो सालसे भी पहलेसे ही उनपर डाके पड़ने लगे थे, उन पिरामिडो और समाधियोपर। मृतकोकी अनन्त यात्रामे उपयोगके लिए सैकडो प्रकारकी कीमती-बेशकीमती चीज़ें वहाँ मुहय्या होती, सोने, चाँदी, जवाहरातके ढेर पडे होते – उनका उपयोग करनेवाले सम्राटोके लिए बेशकीमत चीज़ोका वहाँ होना स्वाभाविक था – यही क्या कम था कि ऊरके राजाओकी तरह मिस्रके राजाओने साथके लिए अपने प्यारोको जहर देकर संग न ले लिया, उनकी जगह केवल उनकी पुतलियाँ रख ली। इन बेशकीमती चीजोको लाशोके साथ दफ़नाये जानेका भेद आम जनताको भी मालूम था, जैसे फ़राऊनो और उनके पुरोहितोको, लाशोको पिरामिडो-में ले जाकर दफनानेकी क्रिया करनेवाले मजूरो-कारीगरोको भी। और सोनेका आकर्षण फिर डाकू पैदा करता, और डाकू मकबरोमे, पिरामिडोमे जा घुसते, सोना-चांदी उठा लेते, ताबूतोको तोड देते, ममियोके बन्द खोल शवोसे ज़ेवर उतार उनके टुकड़े बिखेर देते। पिरामिडोमे अनेक राहें उन्हे गुमराह करनेके लिए बनी थी, अनेक गलियारे और दरवाज़े जहाँ खत्म होते वहाँ चट्टानी दीवार आ जाती। पर उनसे चाहे मिस्री पुराविद् बार-बार धोखा खाते रहे, गुमराह होते रहे, प्राचीन डाकू कभी उनसे गुमराह न हुए। हफ्तो वे हज़ारो साल पहलेके पिरामिडोमे झांकते रहते, उनकी ठोस दीवारें तोड़ते रहते और तब राह बना उसे उठा ले जाते, जिसे वहाँ रखनेमे बादशाहों तकको सीरिया और फिलिस्तीनकी

खाक छाननी पड़ी थी। निस्सन्देह इन डाकोंमें वे पुरोहित भी शामिल होते जिनको लाशोंके साथ दफनायी गयी दौलतका पता था।

हजारों साल पहले, प्राय: पिरामिडोके निर्माणके समयसे ही लाशोंकी डाकेजनीकी संख्याका भी विकास हो चला था। डाकुओके अपने-अपने कुनबे थे, पीढी-दर-पीढी डाकेकी विरासत थी, और जब प्राचीन मिस्री डाकू खत्म हो गये तब उनकी जगह अरब डाकुओने ले ली। गरज यह कि पिरामिडों और मकबरोपर, शवोंपर, डाके पडते रहे, इतनी साध और भावुकतासे सँभाली ममियाँ टूक-टूक होकर बिखरती रही। उनपर डाके डालनेवाले, ममियोंको टूक-टूककर सोनेकी लालचसे उन्हे बिखेर देनेवाले चौथे प्रकारके मानव थे।

और यह 'ममी' क्या थी ? ममी रासायनिक द्रव्योसे पुती कपडेमे लिपटी लाश थी, फराऊनों श्रीमानोंकी लाश। जन-साधारणकी लाश। जन-साधारणकी लाशकी ममी नंगी जमीनमें दफनायी जाती थी, राजाओ-श्रीमानोंकी मकबरों, पिरामिडोंमें। 'ममी'का अर्थ मोमियाई है। ममी बनानेकी अनेक रीतियाँ थीं, राजाओकी, धनिकोकी, गरीबोकी। मरे शरीरको जर्राहोके पास भेज दिया जाता। वे नाककी राह धातुकी अंकुसीसे दिमाग खीचकर बाहर निकाल लेते और पत्थरकी छुरीसे बगल चीर अँतड़ियाँ निकाल लेते। सामनेसे दिल और फेफड़े निकाल लिये जाते और उनमे रासायनिक द्रव्य भर दिये जाते, फिर रासायनिक तेलमे शरीरको डुबो दिया जाता। सत्तर दिन तक शरीर उसमे डूबा रहता फिर उसे कपड़ेसे भरपूर लपेटकर उसपर गोदका लेप कर दिया जाता और ममी तैयार हो जाती, जिसमे हज़ारों साल बचे रहनेकी ताक़त आ जाती। शरीरमे वस्तुतः केवल हड्डियाँ और त्वचा शेष रह जाती। शरीरको करवट अथवा सीधा लिटा दिया जाता, बाँहें छातीपर एक-दूसरेके ऊपर रख दी जाती। कपड़ेके भीतर धनी लोग क़ीमती अलंकार लाशको पहना देते। यह व्यवस्था धनी

मृतकोके सम्बन्धमे थी। इसी विधिसे, घटते जाते मूल्यमे मध्यवर्गीय, निम्नवर्गीय ममियाँ बनायी जातीं। लाश इस प्रकार प्रसाधित हो कपडेसे लपेटी जाकर ममी कहलाती। ममीको पहले शरीरकी ही आकृतिके लकड़ीके ताबूतमे रखते, फिर पत्थरोके ताबूतोमें। तूतनखामनका भीतरी ताबूत ठोस सोनेका था।

कुछ काल बाद देखा गया कि मृत शरीरके प्रति भी जब-तब उनका रोज़गार करनेवाला मानव अनुरक्त हो जाया करता है। कई घटनाएँ ऐसी घटी जिनसे मालूम हुआ कि जर्राहोके पास भेजी गयीं हालकी मरी ऐसी लाशें, जो जीवनमें सुन्दर नारीकी रही थी और जवान मरी थी, जर्राहो-द्वारा कामवश दूषित कर दी गयी हैं। फराऊनोको फिर तो इसके लिए विशेष क़ानून बनाने पड़े और लोग लाशोको जो जर्राहोके पास भेजते भी तो मौतके दो-तीन दिन बाद, जिससे शरीरकी रही-सही गरमी भी ठण्डी हो जाय।

■
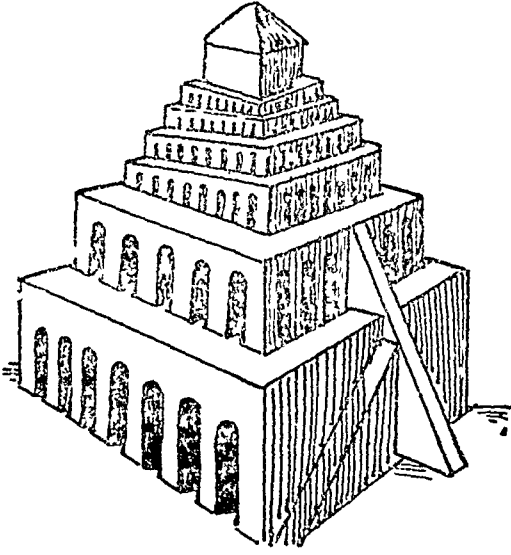
जिग्गूरत
जो आठ मंजिलोंका बना था
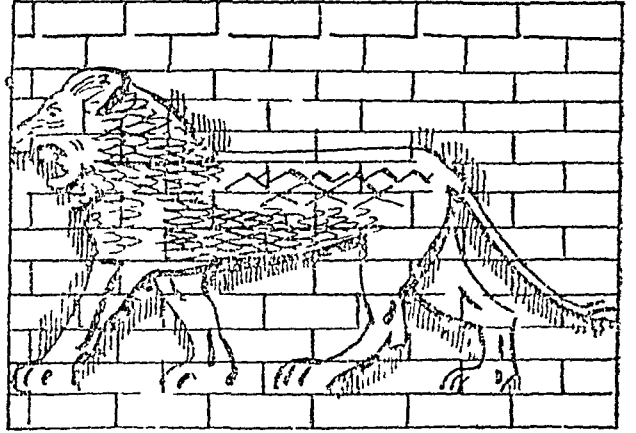
जिग्गूरतकी प्रमुख दीवारपर अंकित
हिंसक पशुकी आकृति

बाबुलका ज़िग्गूरत

भारतका कोनारक

ज़िग्गूरत बाबुलमे, कोनारक (कोणार्क) भारतमे है । ज़िग्गूरत टूट चुका है, कोनारक अभी खड़ा है, अपने टूटे मस्तकको उठाये । दोनो ही मन्दिर है ।

ज़िग्गूरत और कोनारकको एक साथ चुननेका एक ख़ास मतलब है । दोनोका सम्बन्ध एकाशमे मानवीय कामसे जुडा है । बात कुछ टेढ़ी है – पैराडाक्स–पर साथ ही सच है कि मन्दिरोका सम्बन्ध प्राय: सर्वत्र नारीसे रहा है, और बाबुल तो ऐसे सम्बन्धका गढ था । संसारकी वेश्यावृत्तिका आरम्भ वहीसे हुआ, जहाँ प्रत्येक विवाहिता पत्नीको पत्नीत्व-का क़ानूनी अधिकार तभी मिलता, जब वह फीस लेकर अजनबीसे घण्टे-दो घण्टे सहवास कर लेती । ग्रीकोकी अफ़्रोदीती और रोमनोकी वीनसकी भाँति ही बाबुलमे देवी मिलित्ताका गौरव था । मिलित्ता कामकी देवी थी जिसके बाबुली दुनियामे अनेक मन्दिर थे, जिन मन्दिरोमे गृहिणी-को अपना स्वत्व मन्दिरकी छायामे मिला करता था । समसामयिक इतिहासकार हेरोदोतसने ईसापूर्व पाँचवी सदीके मध्य मिलित्ताके मन्दिरके आँगनका जो आँखो-देखा वर्णन किया है, वह इस प्रकार है –

मिलित्ताका मन्दिर एक प्रकारसे अफ़्रोदीतीका मन्दिर है, पर मिलित्ताका सम्बन्ध कानूनी गृह-व्यवस्थासे है । बाबुलकी कोई विवाहिता नारी तबतक सही पत्नी नही मानी जाती जबतक अजनबीसे द्रव्य लेकर उसके साथ वह सहवास न कर ले । धनी, गरीब सभी गृहिणियोको यह कानूनी आचार बरतना पड़ता है । जो सुन्दर है उनको तो यह क़ानूनी अधिकार उस मन्दिरके दायरेमे एक ही बार बैठनेसे मिल जाया

करता है पर जो कुरूप हैं उनको प्रायः तीन-तीन, चार-चार बार अजनबियोकी कृपाको अपेक्षा करनी होती है। धनी गृहिणियाँ मूल्यवान् वस्त्र पहन मूल्यवान् आभूषण धारण कर बाँदियो-गुलामोसे घिरी मन्दिरमे जाती है और साधारण और गरीब नारियाँ सामान्य वस्त्राभूषण धारण कर उस पूजाचारमें भाग लेती हैं। प्रत्येक नारीको रस्सियोके अपने-अपने घेरेके अन्दर बैठना पडता है और दूर-दूरके गाँवोके अजनबी और यात्री वहाँ जाकर वह रूपका बाज़ार देखते है, सिक्के देकर अधिकारी पत्नीत्वके निर्माणमे सहायक होते है। अजनबी आता है, घेरेमे बैठी एक-एक नारीको देखता जाता है, जिसे पसन्द करता है, उसके सामने सिक्का फेंक देता है, नारी उठती है और मन्दिरके झुरमुटोमे उसके साथ चली जाती है। (यह स्थिति श्वेतकेतुकी माताके आचरणसे कितनी अभिन्न है !) ऐसा करनेसे वह इनकार नही कर सकती क्योंकि उसकी ओरसे पुरुषका चुनाव नही होता, पुरुषकी ओरसे उसका चुनाव होता है फिर वह इनकार करेगी ही क्यो जब उसके पत्नीत्वका अधिकार उसी आचरणपर निर्भर करता है ? इस आचरणमे दो बातें अनिवार्य है, एक तो सिक्केके बदले सहवास, दूसरी अजनबीके साथ सहवास। दोनो लक्षण, कहना न होगा, वेश्यावृत्तिके है। हाँ, यह आचरण केवल जोवनमे एक बार नारीको करना पडता है।

ज़ाहिर है यह आयोजित घटना कामकी तृषाके लिए नही, सामाजिक आचारके रूपमे बरती जाती थी। विशेषकर यह उस प्रवृत्तिसे सम्बन्ध रखती है जिसका सम्पर्क मन्दिरोसे प्राचीन कालमे रहा था। सिकन्दरिया-के बाहरके बगीचोमे अफ्रोदीतीके मन्दिरके उपवन इसी काममे आते थे, जहाँके कृत्योको ग्रीकोकी उस प्रेमकी देवीको संरक्षा प्राप्त थी। बहुत पहले त्रॉयके मन्दिरोमे भी नारी-पुजारिनोका सौन्दर्य वीरकर्मा व्यक्तियोके आकर्पणका केन्द्र हुआ करता था। जिस कसेन्द्राको त्रॉयके हमलावर ग्रीकोके सेनापति आगामेम्ननने बरबस भोगा, वह राजाकी बेटी होती

हुई भी, मन्दिरकी पुजारिन थी। रोममें प्रणयकी देवी वीनसका मन्दिर वेश्याओंका केन्द्र बन गया था और वेश्याएँ मन्दिरकी पुजारिनें ही थीं। अनेक रोमन सम्राटोंने ईसाकी पहलीसे पाँचवी सदी तक वीनसके उस मन्दिरके प्रांगणको अपने कामका अखाड़ा बना रखा था।

भारतीय मन्दिरोंकी परम्परा इससे भिन्न न थी। देवदासियोंकी एक संस्थाका जन्म ही मन्दिरोंके सान्निध्यसे हुआ था, जिसका जीवनकाल हजारों वर्ष तक रहा है और अभी हालमें ही समाप्त हुआ है। देवदासियाँ प्रायः प्रत्येक महत्त्वके मन्दिरकी निजी थी और देव-सेवार्थ प्रयुक्त होती थी, प्रभावशाली पुजारियोंके कामका साधन बनती थी। मन्दिरकी सेवामे अर्पित कर दिये जानेके बाद आमरण उनका जीवन उसके प्रागणमे बीतता था और उन्हे बिवाह-द्वारा भी मन्दिर तजनेका अधिकार न होता था। महाकवि कालिदासने उज्जयिनीके महाकालके मन्दिरकी सान्ध्य-पूजाका जो चित्र खींचा है, उसमें चँवरधारिणी नर्तकियोंसे नृत्यका बड़ा सचित्र और उत्तेजक वर्णन हुआ है। प्रमाणतः नर्तकियाँ देवदासियाँ ही थी। आज भी वैशाखीके अवसरपर शिवके मन्दिरोमे जो वेश्याओंके गायन-नर्तनका आयोजन हुआ करता है, वह उसी प्राचीन परम्पराकी ओर संकेत करता है। कोनारकके मन्दिरका उल्लेख इसी प्रसंगमे करना है।

और कोनारक तो प्रतीक-मात्र है, उसके प्रकारके मन्दिरोंकी संख्या अनेक है, पुरीसे खजुराहो तक। यह कहना तो आज कठिन है कि कोनारक और तत्सम मन्दिरोंका सम्बन्ध वेश्याओं अथवा उनकी वृत्तिसे था या नहीं पर उनके बहिरंग रूपायनसे स्पष्ट प्रकट है कि काम-विलासकी अनन्त प्रक्रियाएँ उन मन्दिरों-द्वारा समादृत हुई थी। कोनारक, भुवनेश्वर, पुरी, काशी, खजुराहोके मन्दिरोंके बहिरंग हजारो यौन आसनोंसे अलकृत है, जिनके मन्दिरोसे सम्बन्धकी चर्चामे काफी विस्मय प्रकट किया जाता है। यद्यपि जिस सन्दर्भमे हम इस प्रसंगको देख रहे है उसमे विस्मयका स्थान है नही। इन मन्दिरोंके इन यौन-सन्दर्भोंकी परम्पराका प्रारम्भ तो

स्थापत्य-वास्तुमे, पूजनके सान्निध्यमे, भारतमे भी कवका हो गया था। साँचीके महान् स्तूपको घेरनेवाली दूसरी-पहली सदी ई० पू० की रेलिगों-पर आदम-क़द नग्न शालभंजिकाएँ निर्मित है और मथुराके जैन स्तूपकी कलाकी तो गौरव ही घेरनेवाली रेलिंगोकी नयी नंगी यक्षिणियाँ है, जिनका कामविलास उससे भिन्न नहीं जिसकी ओर कालिदासने अपने 'मेघदूत' में यक्षको नायक बनाकर संकेत किया है। देवालयोके शृंगारिक रूपायनो और यौन उत्कीर्णनोंका, अर्द्धचित्रोका, घना सम्बन्ध था, प्राचीन प्रतीकोके अतिरिक्त, एलोराके कैलास मन्दिरसे लेकर खजुराहोके मन्दिरों तक।

बावुलके मन्दिरोमे मूर्धन्य एक विशाल गगनचुम्बी देवालय हुआ करता था, जिसे असूरी भाषामें ज़िग्गूरत कहते थे। ज़िग्गूरत दज़ला-फ़रातके दोआबके उस प्राचीन देशमे फैले प्रत्येक नगरका अपना था, जिसके शिखरपर देवाधिदेव मर्दुकका निवास था। इसी ज़िग्गूरतका उल्लेख बाइबिलकी पुरानी पोथीमे 'बाबुलका गढ़' नामसे हुआ है, जिसका दूसरा नाम आज अँगरेज़ीमे 'टावर ऑव बॅबुल' प्रचलित है। उसका मूर्धन्य अन्तरंग नारीके सम्बन्धसे संयुक्त था। फरात नदीके तीर दूर तक फैले वावुलके खण्डहर है जिन्हे पुराविदोने बार-वार खोदा है और जिन खुदाइयोंकी अन्तिम और महान् मर्यादा जर्मन पुराविद् कोल्डेवेने अभी हाल स्थापित की है। वावुलकी दोलाधृत निलम्बित वाटिकाको तो ग्रीकोने अपने संसारके आश्चर्योंमे गिना ही था, बाबुलका यह गढ भी प्राचीन सन्दर्भो और ख्यातोमे बार-बार लिखा गया है। बाबुलका वह गढ़ मन्दिर था, मर्दुकका मन्दिर, जो मिस्रके पिरामिडोकी भाँति ठोस, पर उनके पत्थरो-से भिन्न, ईंटोसे वना था। अभी हाल तक उस महान् ज़िग्गूरतका टूटा खण्डहर बिखरा पड़ा था जिसे कोल्डेवेने आठ सालकी अपनी मेहनतके बाद खड़ा किया। ज़िग्गूरत बार-वार बना, बार बार टूटा था। पहली बार उन्नीसवी-अठारहवी सदी ई० पू० के प्रसिद्ध सम्राट् हम्मुरावीने—जिसने संसारको नैतिक आचरण और क़ानूनका पहला संविधान दिया था—उसे

तोड़ा, फिर अनेक असूरी राजाओंने। छठी-सदी ई० पू० में सम्राट् नेबूखद-नेज्जार और उसके पिताने उसे फिरसे बनवाया। ईरानी आर्य राज. कुरूषने बाबुलको मिटाकर भी ज़िग्गूरतकी विशालतासे प्रभावित हो उसकी रक्षा की, पर उसीके वंशधर क्षयार्षा (जरक्सीज़) ने उसे तोड़कर भूमिसात् कर दिया। सिकन्दर जब ज़िग्गूरतके खण्डहरके सामने खडा हुआ तब वह उस अचरजको देर तक देखता रहा, फिर दसो हज़ार सैनिक लगाकर उसने उसका मलबा हटाया। मलबेको हटाना भी कुछ आसान न था क्योंकि उस ज़िग्गूरतके निर्माणमे तीन-तीन पीढ़ियाँ लगी थीं, पाँच करोड़ ईंटें। और अब प्रायः दो हज़ार साल बाद कोल्डेवेने उस मलबेको फिर सँभाला है और जिग्गूरतका उद्धार कर उसे अपने सहस्राब्दियो पुराने रूपमे जैसाका तैसा खडा कर दिया है।

जिग्गूरत नीचे चौकोन—जिसकी एक निचली रेखा २८८ फ़ुट थी—ऊपर क्रमशः छोटी होती जाती आठ मंजिलोका बना था। सबसे ऊपरकी मंज़िल देवालय था। ऊपरका देवालय नीली चमकती चिकनी ईंटोका बना था, जिसके दो खण्ड थे। निचले खण्डमे देवराज मर्दुककी ठोस सोनेकी मूर्ति थी, ८०० स्वर्णभारकी बनी, मनों भारी, जिसकी क़ीमत प्रायः दस करोड रुपये कूती गयी है। मूर्तिके सामने एक छोटी सोनेकी मेज़ रहती थी और सोनेकी ही एक पादपीठी। ऊपरके खण्डमे मात्र एक पलँग रहता था, जो मर्दुककी शय्याका काम देता था जिसपर आराम करनेका अधिकार केवल उस देवताको था और उसके साथ ही, जब उसकी इच्छा होती, उस नारीको, जो बाबुलकी सर्वसुन्दरी होती थी और आकाशसे उस एकान्तमे मात्र देवताके सम्पर्कमे अकेली रहती थी। विश्वास था कि स्वर्गका देवता इच्छापूर्वक समय-समयसे मांसल मानवका रूप धारण कर लिया करता है और तब उसे अपनी पुजारिनकी आवश्यकता शय्याकी भूमिपर हुआ करती है। बाबुलकी श्रद्धालु जनता सालमे एक बार अपने देवता, उसकी सदेह पुजारिन, और शय्याकी पूजाके लिए जिग्गूरतकी

दिशामे जुलूस बनाकर उमड़ चलती। जुलूसका मार्ग प्रशस्त और गहरा था, ७३ फुट चौड़ी, २२ फुट ऊँची दीवारोंसे दोनों ओर घिरा नेबूखद-नेज्जारका बनवाया जो नदीके तीरसे होता दोलाधृत वाटिकाको दाहिने छोडता ज़िग्गूरत तक पहुँचता था। हज़ार-हज़ार श्रद्धालु सैकडो बाजोके साथ पूजाकी अनन्त वस्तुएँ लिये उस राह चलते ज़िग्गूरत पहुँचते और चक्करदार सोपानमार्गोसे मंज़िल-मज़िल चढ़ते देवालयके चरण तक पहुँचते। जहाँ और ऊपर चढनेका अधिकार न होता, वहाँ देवताके पुरोहित चढावेकी चीज़ें देवताकी ओरसे स्वीकार कर लेते। मन्दिरकी पुजारिन देवालयोंके प्रागणमे बसनेवाली दासियोसे भिन्न थी, जो देवालयके चरणमे नही, उसके शिखरपर स्वयं देवताकी पहुँचके भीतर निवास करती थी। पता नही उस तक पुजारियो तक की पहुँच हो सकती थी या नहीं।

■
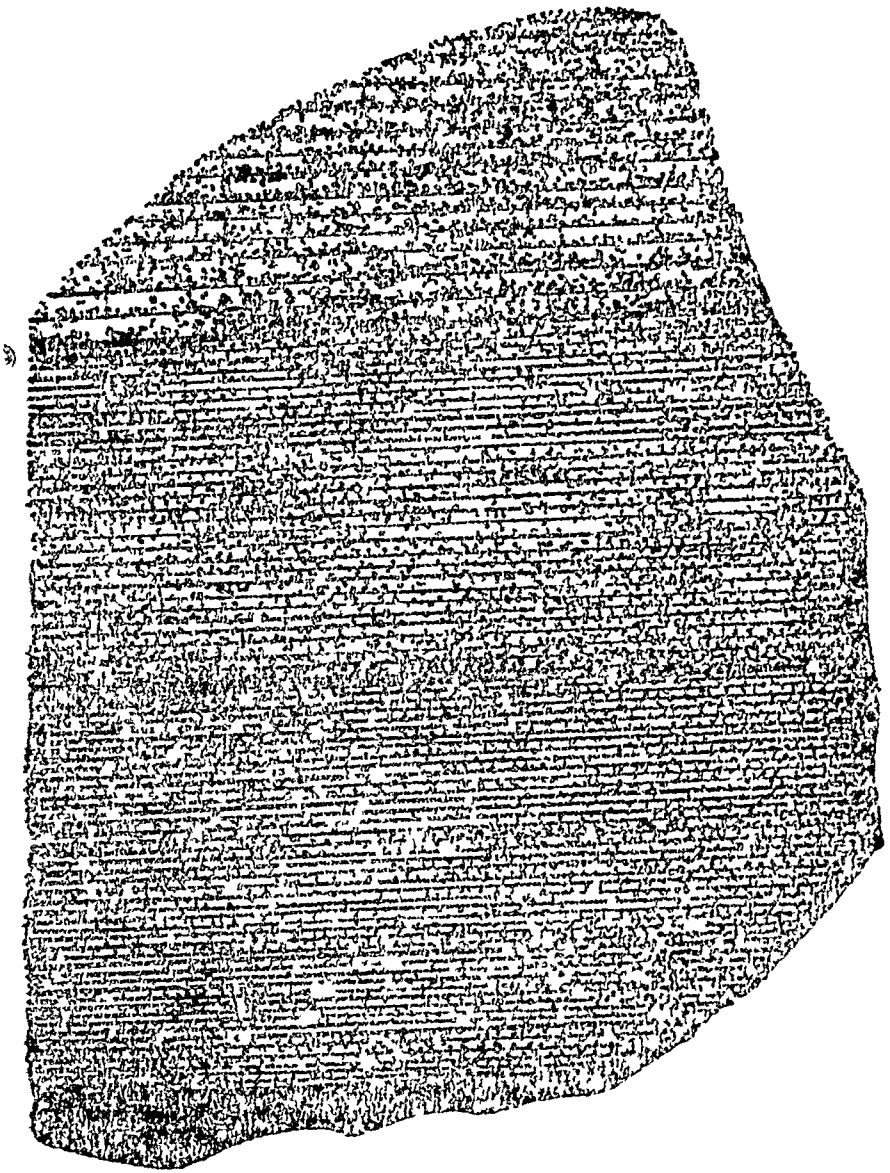
रोजेना शिला : मिस्री चित्र-लिपि और सभ्यताकी कुँजी, जिसपर तीन-तीन लिपियोंमें एक ही लेख खुदा हुआ था

रोज़ेता-शिला

मिस्री सभ्यताकी कुंजी

क़रीब चार हज़ार सालका मिस्री इतिहास चित्रोमे लिखा पडा था, पर पिछले दो हज़ार सालोसे उसे अनेक रूपोमे देखते रहकर भी कोई अनुमानसे आगे न बढ सका, कोई वह कुंजी न खोज पाया जो उस द्वारको खोल सकती, जिसके भीतर मिस्री-सभ्यता बन्द पडी थी। पिछले दो हजार सालोके भीतर ग्रीक-रोमनोसे लेकर युरॅपीय विद्वानो तक अनेकानेक प्रयत्न करते रहे पर अटकलके आगे मिस्री चित्र-लिपिका राज खोलनेकी दिशामे कुछ कर न सके।

कल्पनाकी उडान फिर भी विद्वान् भरते रहे। किसीने चित्र-लिपिकी इबारतमे फ़िलिस्तीनी-इब्रानो इतिहास पढा, किसीने फिनीको, किसीने ईसाई तथ्य तक उसमे खोज डाले और एकाधने तो चार-चार ग्रन्थ उसकी व्याख्यामे लिखे, बिलकुल बेतुके ग्रन्थ, जिनका कोई अर्थ, कोई सम्बन्ध मिस्रो चित्र-लिपिके तथ्यसे न था। इसका विशेष कारण यह था कि जिस लिपिका मिस्रमे आविष्कार आजसे कोई छह हजार साल पहले हो चुका था उसका उपयोग स्वयं उसी देशमें, प्राय: आविष्कारके दो ही हज़ार साल बाद, समाप्त हो गया था और उसीसे नि:सृत दूसरी लिपिका इस्तेमाल होने लगा था, जो लिपि भी करीब हज़ार साल बाद छोड़ दी गयी और तब उससे निकली एक तीसरी लिपिका उपयोग शुरू हुआ जो तबतक बना रहा जब ग्रीकोने चौथी सदी ई० पू० मे मिस्रपर अधिकार कर लिया। फिर अगले दो हज़ार सालोमे कोई ऐसा न हुआ जो चित्र-लिपिका राज़ खोल पाता, यद्यपि उस लिपिसे सम्बन्धित प्राचीन भाषा, 'कुफ्ती'के रूपमे, किसी-न-किसी हद तक ई० १६ वी सदी तक

बोली जाती रही। १८वी सदीके अन्तमे, सहसा वह कुंजी मिल गयी जो १९वीं सदीके आरम्भमें पढ ली गयी और मिस्री सभ्यताका बन्द राज़ खुल गया।

वह कुंजी 'रोज़ेताकी शिला' थी, जो अँगरेज़ीमें 'रोज़ेटा स्टोन'के नामसे प्रसिद्ध है। नेपोलियनकी आँख भारतपर थी और वहाँ पहुँचनेका स्वप्न देखता, राहकी एक मंज़िल तय करने — गायकवाड नरेशसे उसकी बातचीत चल भी रही थी — वह मिस्र पहुँचा। समुद्री लडाईमे अँगरेज़ नेल्सनसे हारकर भी मिस्रपर फ़ान्सीसी प्रभुता स्थापित करनेमें वह सफल हुआ। नेपोलियन मिस्री सभ्यताके प्रति जागरूक रहा था और अपनी सेनाके साथ ऐसे पण्डितोको वहाँ ले गया था जो पिरामिडोके भीतर झांककर मिस्री पहेलीको सुलझा सकें। एक दिन, १७९८ ई० के साल, नील नदीके रोजेता नामक मुहानेपर सन्त जुलियनके टूटे किलेमे एक पत्थर मिला जिसपर तीन-तीन लिपियोमे एक ही लेख खुदा था। सबसे ऊपर चौदह पक्तियोमे सिह, बाज़, सर्प, मनुष्य, बन्दर, हाथ-पैर आदिके चित्र बने थे। बीचमे बत्तीस पक्तियोंमे अनेक प्रकारके चिह्न बने थे, जिनमे जहाँ-तहाँ चित्रोकी आकृतियाँ भी दिखाई पडती थी। नीचे तीसरी लिखावट ग्रीक अक्षरोकी थी, ग्रीक भाषामें लिखी, ५४ पंक्तियोमें।

यही रोज़ेता शिला थी, मिस्री चित्र-लिपि और सभ्यताकी कुंजी। पर वह स्वयं पहेली बन गयी, जिसको सुलझा सकना कठिन हो गया। पर इनसानका दिमाग, जो कभी हार नही मानता और अध्यवसायसे, मेधाके माध्यमसे, अव्यक्तको व्यक्त कर देता है, असम्भवको सम्भव। शिलाकी इबारतें पढ़ ली गयी और मिस्री चित्र-लिपिका राज़ खुल गया। यह कैसे हुआ, इसकी भी कहानी कुछ कम दिलचस्प नही।

शिला मिली तो थी पहले नेपोलियनके फ़ान्सीसी इंजीनियरोको, पर सिकन्दरियाकी सन्धिके बाद, १८०१ ई० में वह ब्रिटिश म्यूज़ियममे जा पहुँची। तुरन्त शिलाकी लिखावटोंकी प्रतिलिपियाँ बनाकर प्रकाशित कर

दी गयीं और युरॅपके विद्वान् – इंग्लैण्ड, फ़ान्स, जर्मनी, हालैण्ड, इटलीमें– सर्वत्र उसको पढनेमे जुट गये। पर सफलताका श्रेय पहले दो विद्वानोंको मिला – इंग्लैण्डके डॉ० टामस यंग और फ़ान्सके जॉं फ़ान्स्वा शाम्पोलियोंको, जिनके बाद और जिनकी दिखायी दिशामे चलकर फ़ान्स, जर्मनी और इंग्लैण्डके अन्य विद्वानोंने मिस्री लिपियोंके अध्ययनके समस्त आँकड़े प्रस्तुत कर दिये। इस दृष्टिसे कि एक ही शिलापर तीन-तीन लिपियाँ लिखनेका अन्यथा अर्थ क्या हो सकता था, यह आसानीसे अन्दाज़ा लगा लिया गया और सच ही, कि तीनों लिखावटोका विषय एक ही है। तीनोमे-से कमसे कम एक, सबसे निचली, को पढनेमे कोई दिक्कत न हुई क्योंकि वह ग्रीक भाषामे लिखी थी और ग्रीक जाननेवालोकी संख्या युरॅपमे सैकड़ोमे थी, हर मुल्कमे कोडियों। नेपोलियनके एक जनरलने ही उसका अनुवाद प्रस्तुत कर दिया जिससे प्रकट हो गया कि लिखावटोंका विषय एक घोषणा है जिसके द्वारा मेम्फिसके पुरोहितोने मिस्रके तत्कालीन ग्रीक राजा पाँचवें तोलेमी एपीफानीज़को ई० पू० १९५ में देवांशसे संयुक्त घोषित किया था।

लिखावटके विषयका तो पता चल गया पर ऊपरकी दोनो मिस्री लिपियोको कैसे पढा जाय, यह बड़ा कठिन जान पड़ा। लिपिके साथ-साथ कठिनाई भाषाकी भी थी क्योंकि जिस भाषामे वे लिपियाँ खुदी थी उसके बोलने-जाननेवाले कबके मर चुके थे। कहींसे उनके पढनेमे सहायता नहीं मिल पा रही थी और ईसा-पूर्व ४थी सदीमे ग्रीक पण्डित होरापोल्लनकी तद्विषयक व्याख्याने लोगोंका पथ निर्देशन करनेके बजाय उन्हे गुमराह ज्यादा किया। ज़ाहिर था कि उन लिखावटो-का राज़ उन्हींसे खुलेगा, बाहरसे नही, और दो विद्वान्, औरोंके अति-रिक्त, उस दिशामे प्रयत्न करने लगे।

डॉ० टामस यंग इंग्लैण्डके भौतिक विज्ञानका प्रतापी पण्डित था, जिसकी 'जीनियस'का वहाँ साका चलता था। यंगने कई भाषाओंका

अभ्यास कर लिया था और अब उसने एक सालमे प्राचीन मिस्रियोंकी भाषा 'कुफ्ती' भी सीख डाली। 'कुफ्ती' १६ वी सदी तक मिस्रमे लिखी जाती रही थी, इससे उसे सीखना इतना मुश्किल न था। और शाम्पो-लियोने तो 'कुफ्ती'का एक कोश ही बना डाला। यंगने दिशा सही पकडी और चित्र-लिपिके अनेक चित्रो और चिह्नोके ध्वन्यात्मक और वर्णात्मक मूल्य प्रस्तुत कर दिये। शाम्पोलियोने बादमे पाया कि २२१ चिह्नोमे-से यंग-द्वारा प्रस्तुत ७६ चिह्नोके वर्णात्मक मूल्य सही थे। इसके अतिरिक्त यंगने एक और कदम उस दिशामे यह निश्चित कर उठाया कि लम्बे घेरे-मे – जिन्हे उसने कारतूस कहा – जो चिह्न बन्द है, जो चित्र बने है वे सजाएँ है, राजाओ, रानियोके नाम है। ग्रीक इबारतमे तोलेमीका नाम दिया हुआ था और चिह्नोके समझनेकी दिशामे व्यवहृत हुआ। इसके आगे यंगकी प्रतिभा कुण्ठित हो गयी क्योकि भाषा-विज्ञानका उसे ज्ञान न था।

इसके विपरीत शाम्पोलियोकी मेधाकी प्रगति फ्रान्समे निर्बाध होती गयी क्योकि वह भाषा-विज्ञानका भी पण्डित था और १२ सालकी उम्र तक पहुँचते-पहुँचते एक दर्जन भाषाएँ सीख भी चुका था। फ्रान्स क्या युरॅपमे उस काल, भाषाओकी दृष्टिसे, शाम्पोलियो-सा दूसरा जीनियस न था। १७९० मे, रोजेता शिलाकी उपलब्धिके आठ ही साल पहले, उसका जन्म हुआ था और सात सालकी उम्रसे ही उसे मिस्रमे दिलचस्पी हो गयी थी। १६ सालकी आयुमे जब उसने उस कालके ४० वर्षीय दूसरे मेधावी फूरियेसे बात की तब बराबरके जानकारकी तरह फूरियेने, जो स्वयं मिस्री लिपिकी गुत्थी सुलझानेमे लगा था, उस किशोरकी प्रतिभा स्वीकार की। अगले ही साल पेरिसके एक स्कूलमे दाखिल होने शाम्पोलियो गया जहाँ उसे, परम्पराके अनुसार, एक लेख लिखकर दिखानेको कहा गया। लेख साधारण स्कूली निबन्ध था, पर उसे न लिखकर उसने अपनी उस पुस्तककी भूमिकाके रूपमे निबन्ध लिख दिया जो बादमे 'फराऊनोके शासनमें

मिस्र'के नामसे छपी। लोग विद्वानोंके ईर्ष्यायोग्य उस निबन्धको तत्काल लिखे जाते देख हैरतमे आ गये और जरा उस हैरतका अन्दाज़ कीजिए जब उन्होंने जाना कि पाँच साल पूर्व १२ सालकी आयुमे शाम्पोलियो एक पूरी पुस्तक भी लिख चुका था। मिस्री फराऊनोंका इतिहास और उनके शासनका चार्ट उस किशोरने बाइबिलकी पुरानी पोथीके आधारपर, ग्रीक आदि यत्र-तत्रके सन्दर्भोके निष्कर्ष-द्वारा प्रस्तुत किया था। स्कूलका प्रेसिडेण्ट पहले तो शाम्पोलियोकी प्रतिभाको देख सन्नाटेमे आ गया, फिर भावातिरेकसे भर उसे गले लगा लिया और उसे उस स्कूलमे शिक्षकका कार्य करनेके लिए आमन्त्रित किया। शाम्पोलियो स्कूलका विद्यार्थी होने गया था, सहसा बन गया शिक्षक। दो ही साल बाद अभी वह १९ सालका भी नही हुआ था कि विश्वविद्यालयमे वह इतिहासका प्रोफेसर हो गया, जहाँ उसके अनेक शिक्षक अब उसके शिष्योके रूपमे उसके व्याख्यान सुनने सामनेकी बेचोंपर जा बैठते।

ऐसी प्रतिभाका धनी शाम्पोलियो टामस यंगके समानान्तर ही फ्रान्समे रोजेता शिलाका भेद खोलनेमे लगा। गरीबी हर तरहकी कठि-नाइयाँ लेकर उसके सामने आयी, उसे चोटोसे जर्जर कर दिया, पर शाम्पो-लियोकी खोज रुकी नही। टूटे मकानके छोटे गन्दे कमरेमे फटे चिथडेमे यशस्वी मेधावान चित्र बनाता रहता, नोट तैयार करता रहता। उसके कुछ नोटोंने तो गजबका चमत्कार किया। अभी जब वह विश्वविद्यालयमे आया भी न था, उसके कुछ नोट, जो कुफ्ती भाषामे पेपीरस कागजपर लिखे गये थे, विज्ञानके एक पण्डितके हाथ लग गये और उस पण्डितने उन नोटोंकी व्याख्या कर उन्हे यह कहकर प्रकाशित कर दिया कि वे १५०० साल पहलेके मार्कस आरीलियस आन्तोनियसके जमानेके है, ठीक उसी तरह जैसे वुर्जवुर्गके लड़को-द्वारा खेलमे गाडी कुछ हड्डियोको निकालकर प्रसिद्ध जर्मन प्रोफेसर बैरिंगरने उन्हे लाखो वर्ष पुरानी 'फासिल' होनेकी घोषणा कर दी थी।

पर शाम्पोलियोने कल्पनाकी उडान भरकर भी उसे वैज्ञानिक परिधिके भीतर रखा और दरिद्रतासे जूझता वह चित्र-लिपिको पढनेमे लगा रहा। एक दिन जब वह चित्रोकी भाषाकी खोजमे बहुत आगे बढ चुका था, उसके मित्रने बताया कि रोजेता शिलाकी लिपियाँ पढ ली गयी और उस सम्बन्धकी पुस्तक प्रकाशित हो गयी। यह खबर सुनकर शाम्पोलियोके पैरो तले जमीन सरक गयी और उसका सारा जिस्म, जिसे उसने लिखावटोका राज़ खोलनेमे डाल रखा था, थरथर काँपने लगा। जैसे-तैसे उसने अपने मित्रसे उस दूकानपर ले चलनेको कहा जहाँ वह पुस्तक बिक रही थी। जैसे-तैसे उस दूकानपर पहुँच उसने पेट काटकर बचाये पैसोसे वह पुस्तक खरीदी और काँपते पैरो घर लौटा। पुस्तकपर लेखकका नाम देख वह अविलम्ब समझ गया कि लेखक निश्चय ही उनमे-से नही है जिनकी प्रतिभा इस प्रकारकी पहेलियाँ बूझा करती है और डूबतेको जैसे सूखी जमीन मिली। रातमे जब घरकी मालकिनने विचित्र तरहकी आवाजें शाम्पोलियोके कमरेसे आती सुनी तब वह भागी हुई वहाँ पहुँची। देखा, शाम्पोलियोके आगे एक किताब खुली है और शाम्पोलियो कोचपर पडा इस कदर हँसता जा रहा है कि उसके जिस्समे जैसे ऐठने पड़ती जा रही है। लालबुझक्कड़-लेखककी प्रतिभाका भेद शाम्पोलियोने तत्काल खोल दिया, फिर वह स्वयं अपनी मजिलकी पहली राहपर बढ चला। नेपोलियनका सेक्रटरी शाम्पोलियोका बडा भाई था। उसकी नियुक्तिके लिए भाईका साक्षात्कार उसके सामने ही किया गया था। शाम्पोलियोकी लायब्रेरीमे सम्राट् एकाध बार गया भी, उसकी पुस्तकें प्रकाशित कर देनेकी बात भी कही, पर शाम्पोलियो गणतन्त्रका उपासक था, सम्राट्की बातोसे वह रीझा नही। जब पेरिसमे 'भयका शासन' चल रहा था तब शिशु शाम्पोलियोने दर्दनाक आवाजें सुनी थी और प्रजाकी सत्ताका उपासक हो गया था। नेपोलियन गया और आया, आया और गया, पर शाम्पोलियोकी निष्ठा प्रजातन्त्रमे बनी रही। वह काम करता रहा और बादमे

अभी जब वह अपनी निर्धनताको जीत भी न सका था कि अगले राज-तन्त्रका उसे शिकार होना पड़ा। अल्पायुमे ही वह मरा, पर रोज़ेता शिलाकी कुंजी उसने पा ली थी, चित्र-लिपियोंका राज उसने खोल दिया था।

क्या था वह राज ?

शाम्पोलियोने पाया – जिस सम्बन्धमे हर किसीने भूल की थी – कि चित्राकृतियाँ मिस्री चित्र-लिपिमे केवल वस्तुके रूपकी ओर ही संकेत नही करती, वे कई बार ध्वनित चिह्नका रूप भी ले लेती हैं, कितनी ही बार ध्वन्यात्मक वर्ण या अक्षर भी बन जाती है। और एक साथ उस चित्र-लिपि, चिह्न और विचार-लिपि, ध्वन्यात्मक वर्ण-लिपिसे संयुक्त विविध रूपोंमें प्रयुक्त होनेवाली मिस्री चित्र-लिपिका भेद खोलकर रख दिया। आज जो मिस्री लिपियोंका अध्ययन विद्यार्थी करते है उन्हे गुमान भी नहीं कि उनके 'प्राइमरो'के तैयार होनेमे शाम्पोलियोंका कितना रक्त सूखा है, उसको निर्धनतासे कितना युद्ध करना पडा है, कितनी उनीदो राते बितानी पड़ी है, कितनी मेधाका खर्च हुआ है।

कारतूसोके भीतर बन्द संज्ञा-नामोके अक्षरोको विचारचिह्नो, ध्वन्यात्मक वर्णोके रूपमे अन्य चित्रोंसे वह सालो सम्बन्धित करता गया और एक दिन उनका समूचा भेद खुल गया। सहस्राब्दियो पहले प्रस्तुत, सहस्राब्दियों पहले विस्मृत, मिस्री लिपियोका पढा जाना सुकर हो गया। रोजेता शिलाकी मिस्री लिपियाँ दो प्रकारकी थी : चित्र-लिपि और चिह्न-लिपि। वस्तुत: अतिप्राचीन कालमे ही मिस्रमें चित्र-लिपिका आविष्कार हुआ था जिसका पहले और अधिकतर उपयोग धर्मसम्बन्धी, देवसंज्ञक विषयोके आलेखोके लिए हुआ। हजारो साल बाद उस पवित्र लिपिका उपयोग जनसाधारणने करना चाहा जिसका पुरोहितोसे सम्बन्धित 'हिरेटिक' नाम पडा, जो सर्वथा चित्र-लिपिसे कुछ भिन्न थी। ईसासे अनेक सदियो पहले उस लिपिका एक तीसरा रूपान्तर हुआ, तेज लिखनेके

लिए, जो 'देमोतिक' कहलाया। वैसे तो प्राचीनतम 'हीरोग्लीफिक' अथवा चित्र-लिपिमें चिह्नों, ध्वन्यात्मक अक्षरोंका आरम्भ हो गया था पर उनका विशेष विकास देमोतिकमें ही हुआ। शाम्पोलियोंने तीनोंमें-से प्रत्येक मिस्री लिपिको पढ़कर उनके विविध प्रकारोंका अन्तर खोज निकाला। और प्राचीन मिस्रकी समूची सभ्यता, उसके देवताओं और उपासकोंके समूचे धर्मादेश और विश्वास, उसके सम्राटोंकी विजय प्रशस्तियाँ, उसका सारा पिरामिडों, मन्दिरों, स्तम्भोंकी दीवारोंपर खुदा साहित्य सहस्राब्दियों बाद मनुष्यके अध्यवसायसे पढ़ा जाने लगा।

इस लगन और सुखके बलिदानका अन्दाज कुछ सर जेम्स प्रिन्सेपके अध्यवसायसे लगाया जा सकता है जिसने देवनागरीकी जननी ब्राह्मी-लिपिका भेद खोला था। उसे पढ़नेमें प्रिन्सेपको प्रायः ३० साल लगे थे। अकसर ऐसा हुआ कि सालोंकी मेहनत बरबाद हो गयी और प्रिन्सेपको अध्ययन फिरसे शुरू करना पड़ा। आखिर एक रात, कहते हैं, प्रिन्सेप सोतेसे उछला और पत्नीसे बोला कि मैंने ब्राह्मीका रहस्य जान लिया। पत्नीने उसकी घोषणामें कोई रुचि इसलिए न दिखाकर उससे चुपचाप सो जानेको कहा कि इस प्रकार अनेक बार उसने इस भेदको पा लेनेका एलान किया था और हर बार उसे अपनी असफलता जानकर उदास हो जाना पड़ा था, सो कहीं ऐसा न हो कि इस बार भी मृगतृष्णा उसके पतिको धोखा दे रही हो। परन्तु इस बार उसे धोखा नहीं हुआ था। प्रिन्सेपने ब्राह्मीका भेद पा लिया था। उसने सोते-सोते ही अंधेरेमें बन्द पलकोंके पटपर जो ब्राह्मीके लिखे चिह्न पढ़े तो उसे लगा कि ताँबेके दानपत्रोंपर हर बार अन्तमें एक ही से लिखे जानेवाले दो अक्षर 'दानं' हो सकते हैं। ताम्रपत्र दानपत्र थे भी और केवल 'दा' और 'न'के दो अक्षरोंसे, 'आ'की मात्रा और 'न'के अनुस्वारसे, जो प्रिन्सेपने कुलाँच भरी तो अशोकके सारे अभिलेख तत्काल पढ़ लिये गये, और साहित्यसे भिन्न सही इतिहासकी भूमिपर अभिलेखोंमें बँधी भारतीय सभ्यता अपनी विविध

तहोंके साथ खुल पडी ।

कितना कठिन व्यापार लिपियोंके शोधका रहा है, कितनी उनीदी राते खोजियोंको बितानी पड़ी है,पर उस धीरजने मनुष्य जातिको कितनी अक्षय निधि भी सौंप दी है, कि वह अपनी ही चली मंजिलोकी राह लौट-लौट देख-पहचान सका है, जिससे उसे पीठपर कर उसकी धरापर अपने गतिमान चरण धर आगेकी राहकी मंजिलें वह तय करे ।

■

हजारों साल पहलेके मुरदोंके टीले-
का वह खण्डहर जो आज भी अपनी
योजनाबद्ध बनावट लिये
चकित कर देता है

आर्योंके पहले

सिन्धु घाटीमें

सुमेरी-बाबुली सभ्यताके नगरों–कीश और एश्नुन्ना–की जब युरॅपीय विद्वान् खुदाई कर रहे थे तब उन्हे इसका गुमान भी न था कि दूर पूरबमे उन्ही नगरो जितने पुराने, उनसे कही अधिक समृद्ध और सुरुचिसे बसे नगर, सिन्धु नदके तीर सुसंस्कृत शिष्ट जीवन बिता रहे होगे। जब कीश और एश्नुन्नामे गोल मुहरें मिली, जिनपर हाथी और गेंडेकी शक्लें बनो थी, तब उन्होने पूरबकी ओर देखा, दूर हिन्दुस्तानकी ओर उनकी नजर गयी। पर जो नगर वहाँ हज़ारो साल पहले मिट्टीमे दफना दिये गये थे उनका एहसास भी उन्हे भला कैसे हो सकता था!

पर एक दिन १९२२ मे जब असाधारण भारतीय पुराविद्ने कुछ अत्यन्त प्राचीन गिट्टी-चूनेके ठीकरे पाकर विद्वानोका ध्यान उधर आकृष्ट किया तब लोगोने जाना कि पहले महासमरके बाद ही जो सिन्धमे जगह-जगह इतिहासके पहलेकी बनी चीजें मिलने लगी थी वे आकाशसे नही टपक पड़ी थी, उन्हे ज़मीनने उगल दिया था ताकि इनसान खोजे और पाये। इनसानने खोजा और पाया–कुछ ऐसा, जो न बाबुलमे मिला था न मिस्र-मे, न क्रीत, न मिकोनी, न त्रायमे। सिन्धके लरकाना ज़िलेमे लर्काना-के कस्बेसे करीब २५ मील दक्खिन, कराचीसे कोई १५० मील उत्तर-पूरब रेतमे गडी-मरी ज़िन्दगीको ढॅके कुछ टीले खड़े थे जिन्हे पडोसके लोग मोहेनजो-दडो कहते थे, मुर्दोका टीला। उस जनपदके सिन्धियोने जिन टीलोको मुरदोका कहा था उन्हे भला क्या खयाल हो सकता था कि वे सच ही मुरदोके टीले थे, जहाँ न केवल जिन्दगी मुरदा बनकर रसा-तल चली गयी थी, बल्कि सचमुच जहाँ ४००० साल पहलेके मुरदे दफ-

नाये भी गये थे। सच्चाईका राज़ कुछ ऐसा है कि चाहे उसे कोई कितना भी नीचे दफनाये, एक-न-एक दिन वह खुलकर ही रहता है और जब-तक वह खुल नहीं पडता, अनेक प्रकारसे अनेक संकेतो-द्वारा वह अपने अस्तित्वका परिचय दिया करता है। और समय आता है जब बूझनेवाले उस आवाज़को बूझ लेते है, जो हवामे लहराती हुई भी इस इन्तज़ारमें रहती है कि कोई उसे बूझ ले।

१९२२ के साल स्वर्गीय राखालदास बन्द्योपाध्याय दूसरी सदी ई० के एक कुषाणकालीन बौद्ध स्तूपकी मोहेनजो-दडोमे खुदाई करा रहे थे जब उन्हे कुछ ऐसी चीजें मिलीं कि अचानक उनको हुआ कि जो ऊपर दीखता है वह समूचा नहीं है, ज़रा और खोदो। उन्होने ज़रा और खोदा और अचरजके साथ देखा कि थोडा ही नीचे खोदनेपर ईंटोकी कुछ दीवारें ऐसी मिलीं कि एकाएक धारणा हुई कि यद्यपि ऊपरके बौद्ध स्तूपका आधार और नीचेकी वे दीवारें एक ही प्रकारकी ईंटोकी बनी हुई है, दोनो-मे क़रीब दो हज़ार सालका अन्तर है।

दोनो खण्डहर निस्सन्देह एक ही प्रकारकी ईंटोसे बने थे, नीचेकी दीवारें भी, ऊपरके कुषाणकालीन बौद्धस्तूपका आधार भी। स्तूप वास्तव-मे नीचेकी टूटी दीवारोकी ईंटोसे ही बना था। राखालदास बन्द्योपाध्याय-ने कुषाणकालीन स्तूपकी परवाह न कर अब कुदाऊ और गहरे मारी और हज़ारो सालकी पुरानी ढकी दुनियाके खण्डहर सहसा ऊपर आ गये। नयी दुनियाने जाना कि भारतकी वह सिन्धुतीरकी दुनिया उतनी ही पुरानी थी जितनी सुमेर-बाबुलकी, मिस्रकी। अब इसमे भी सन्देह नहीं हो सकता था कि कीश, एश्नुन्ना और ऊरके ईराकी नगरोंमें मिली मुहरें और बर्तन सिन्धु सभ्यताके नगरोसे ही गये थे और कि जिस सभ्यताकी ओर लरकानाके उन मुरदोके टीलोने संकेत किया था उसकी सीमाएँ एक ओर दक्खिनी ईरानके एलामसे लगी थीं, दूसरी ओर वह गुजरात तक, गंगाकी घाटी तक, शिमलेके पहाडो तक, पंजाबकी भूमि तकपर छायी हुई

थी। और कि उसी सभ्यतासे व्यापारकी धारा प्राचीन कालमें बलूचिस्तान और ईरानके रेगिस्तानी बियाबाँको लाँघ दजला-फरातकी घाटीसे होती लघु एशिया और पूर्वी युरॅपकी दिशामें एक ओर, मिस्रकी दिशामें दूसरी ओर पहुँचती थी।

मुरदोंके टीले अत्यन्त प्राचीन कालमें ही मनुष्यकी क़ब्र नहीं बने थे, आजके पिछले दिनोंमें भी उनकी धरतीकी प्यास मानव रक्तसे बुझी थी। और यह रक्त मामूली इनसानका न था, पुराविद् वैज्ञानिकका था जिसे गड़े मुरदे उखाडते समय बलि हो जाना पडा था। असाधारण प्रतिभावान् भारतीय पुराविद् ननिगोपाल मजूमदार जब दिन-भर खुदाई करके चुके ही थे कि बन्दूकोंकी आवाजें हुईं और जबतक उनका 'स्टाफ़' आत्मरक्षाके लिए सँभले तबतक बलूची कबीलाई डाकुओंका एक गरोह आ पहुँचा। डाकुओंको पता था कि वह मजूरोंकी मजूरी बाँटनेका दिन होगा और वहाँ रुपयोंका अम्बार लगा होगा। उन्हें जानते देर न लगी कि खोदनेवालोंका अफसर कौन है और ननिगोपाल मजूमदारका तन उन्होंने गोलियोंसे छेद डाला। खडा पुराविद् गिर पडा, मरते वक़्त पीनेके लिए उसने पानी माँगा, पर आवाज़ आयी--क़ाफिर है, पानी न दो। और पुराविद् बिना पानीके मर गया। मुरदोंके टीलेकी आख़िरी बलि।

मोहेनजो-दडोकी वह खुदाई बडे दर्दकी है, प्रसवकी उपलब्धि बडे दर्दसे हुआ करती है। कीमती जानकी कुरबानीके बाद ही मुरदोंके टीलोंने अपनी दौलत भारतको सौंपी। ज़रा ख़याल कीजिए उस खतरनाक स्थितिका जब पुरातत्त्व विभागके बीसों मुलाज़िमोंपर क्या बीती होगी। उनके देखते ही उनका अफसर गोलियोंका शिकार हो गया और एक बूँद पानीके लिए तडप-तड़पकर उनके सामने ही मर गया। अब डाकुओंकी बन्दूकें खुद उनकी ओर उठीं, पर एक मुसलमान चपरासीकी हिम्मतने उनको मौतके घाट उतरते बचा लिया। चिल्लाकर बोला वह — "खानो, काफिर तो मर गया, बाक़ी सारे तो इसलामके बन्दे हैं, इन्हें क्यों मार

रहे हो ? इन्हे मारना क्या मुनासिब होगा, कुफ्र न होगा ?" डाकुओंके सरदारने कहा – "अगर ये मुसलमान हे तो नमाज पढाओ, हम देखेगा कि ये पढ पाते हे या नही ।" चपरासी इमाम बना, आगे-आगे बोलता गया, पीछे खडे लोग हलके-हलके झूठ-सच बुदबुदाते गये, जैसे-जैसे वह झुकता वैसे-ही-वैसे वे भी झुकते गये । डाकुओंको यकीन हो गया कि वे मुसलमान हे और वे रुपयोके थैले ले चम्पत हो गये । दूसरे दिन पुलिसने उनका पीछा किया, पर उनका पीछा होकर ही क्या होता ? वह तो मुरदोका टीला इनसानके लहूका प्याला था, उसे पीकर उसने सभ्यताके अपने छिपे खजानेका दरवाजा खोल दिया । वह खजाना बीसवी सदीकी ऐतिहासिक खोजोमे कीमती साबित हुआ ।

स्तूपके नीचे समूचा नगर अपने अनन्त समृद्ध भवनोके साथ भूमिसात् खोया पडा था । भवन मील-मील-भर लम्बी सीधी सडकोके दोनो ओर लगातार खडे होते चले गये थे । जब उसे भरपूर खोदा गया तब लोगोने जाना कि वह जैसे आजकी किसी योजनाके मुताबिक बना हो । निश्चय वह योजनाके अनुकूल ही बना था पर वह योजना करीब ५००० साल पुरानी थी, ऐसी योजना जो तबकी दुनियामे बिलकुल अनजानी थी । सुमेर और बाबुलके नगर – ऊर, कीश, एश्नुन्ना, निप्पुर – नागरिक होते हुए भी कितने गँवार थे, इसका पता सिन्धु तीरके इस नगर मोहेनजो-दड़ोके इस खण्डहरपर नजर डालते ही साबित हो जाता है । सुमेर-बाबुलके नगर कमजोर फूहड ईंटोके बने, जहाँ गन्दे पानी या कूडेको निकालनेका कोई जरिया न था, अपने जीवनकालमे भी कितने गन्दे रहे होगे । मकान छोटे और मुश्किलसे एक या दो मंजिलके थे । जो बड़े मकान थे भी वे केवल श्रीमानो और धनिकोके थे, राजाओ और देवताओ-के । और सडके ऐसी – सडकें कहना उनको शायद मुनासिब न होगा – जिनमे अगर खच्चर पीठपर माल लिये खडे हो जायँ तो राह बन्द हो जाय और राह तो उनकी अकसर बन्द हो जाया करती थी, क्योकि

थोड़ी-थोडी दूरके बाद गलीके सिरेपर सहसा खडे मकान आ जाते थे।

मोहेनजो-दडोकी दुनिया इनसे बिलकुल निराली थी। चौडो, सीधी, लम्बी सडकें, दोनों ओर सुन्दर लाल पक्की ईटोके मकान, अकसर दो-मंजिले, अधिकतर समान रूपसे बने, अपने शयनागारों, स्नानागारो, शौचागारोसे संयुक्त। सुमेर बाबुलके नगरोमे स्नानागार, शौचागारकी तो कल्पना भी नही की जा सकती थी – एश्नुन्नाके राजप्रासादमे जो एक शौचागार-स्नानागार मिला है निश्चय, युरॅपीय विद्वानोकी रायमे, सिन्धु सभ्यताके भवनोकी नकलमे, उनसे सीखकर बना था। मोहेनजो-दडोकी शालीन सड़कोपर आज भी जब हम चलते है तब ऐसा लगता है जैसे बीसवी सदीका बिलकुल नया नगर नयी योजनासे बनकर खडा हुआ हो, जिसके मकान प्राकृतिक प्रकोपसे सहसा नष्ट हो गये हों, सडकें बच रही हों अपने कूडे डालनेके आधारोके साथ, उन नालियोके साथ जिनका गँदला जल शौचादिके मलके साथ नगरसे बाहर प्रायः आदमकद नालियों-के जरिये निकाल नदीमे बहा दिया जाता था। उस नगरकी इस शौच-विधिका अन्दाज तो केवल इस बातसे भी लग सकता है कि उसके विध्वंसके ३००० साल बाद भी लन्दन-जैसे नगरमे सफाईका कोई इन्तजाम नही था और उस नगरके निवासी अपनी सुअरे, सड़कोंपर फेके गलीजसे पेट भरनेके लिए, आमतौरसे घरोसे बाहर हाँक दिया करते थे। जहाँतक सडकोकी बात है युरॅपके बडे-बडे शहरोमे आज भी बस-स्टैण्डोसे फर्लांग-भरके भीतर ही राह पाना मुश्किल हो जाया करता है और अभी पिछली सदी तक एडिनबरा-जैसे शहरका यह हाल था कि बगैर पेशेवर गाइडके कोई उस नगरके पुराने मुहल्लोमें घूम नही सकता था।

मोहेनजो-दडोकी नागरिक-सफाईके सिलसिलेमे मुझे एक घटना याद आ रही है, जो ईराकके मध्यकालीन और आधुनिक नगर बगदादमे घटी थी। प्रसिद्ध पाश्चात्त्य पुराविद् पेट्रिक कार्लेटन वहाँ एक अरब मित्रसे

मिलने गये। मित्रने उसकी बडा आवभगत की। पर जैसे ही अतिथि उस महानगरके मेज़बानके ऊँचे मकानसे लौटनेके लिए चौडी सडकपर उतरा, सामनेके गन्दे पानी-भरे, महापालिकाके बनाये, गढेमे गिरकर कमर तक डूब गया। सुमेरी-बावुली नगरोके नागरिक आधी सड़क तक अपने मकान बना लेना जैसे अधिकार समझते थे, पर मोहेनजो-दडोके नागरिकोकी महापालिका इतनी सतर्क थी कि सडकें मकानोसे अलग साफ चौडी बनी रही और अगर उनपर अनधिकार मकानोके कोने बढ़े भी तो तब जब हमलावरोके खतरोसे नागरिक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया था और शान्ति कालमे पनपनेवाली सभ्यताके झण्डे उखड़ चले थे। और मोहेनजो-दड़ोके साफ-सुथरे मकान नागरिकोके थे, देवताओ और राजाओके नहीं। देवालय शायद एक ही था और श्रीमानोकी संख्या भी कुछ शायद वहाँ विशेष न थी। साधारण गृहस्थ शान्तिके वातावरणमे सुन्दर स्वस्थ मकानोमे— जिनकी संख्या अपरिमित थी और जो समकोणोपर थोडो-थोड़ी दूरपर परस्पर काटनेवाली सीधी दौडती लम्बी-चौडी सडकोपर खडे थे — रहते थे। जहाँ सुमेर-बाबुलके नगरोमे देवताओ और राजाओके महलोके सामने साधारण नागरिकोके दयनीय मकान तुच्छ लगते है वहाँ मोहेनजो-दडोके नागरिकोके साधारण भवन अधिकारियोके प्रासादोके अनुपातमे अनन्त है। निस्सन्देह मोहेनजो-दडोका अर्थ संसार समाजवादी तत्त्वोसे पर्याप्त अनुप्राणित था।

यहाँ मोहेनजो-दड़ो और हड़प्पाकी खुदाइयोमे मिली वस्तुओकी तालिका देना अथवा उस सभ्यताकी ऊँचाइयोका वर्णन करना अभीष्ट नही। सर जॉन मार्शल, मैके और माधोस्वरूप वत्सके ग्रन्थोमे वे पढे जा सकते है। बस इतना ही कह देना यहाँ काफी होगा कि सिन्धु सभ्यताके वे स्वच्छ, सुसस्कृत नगर अपने समकालीन ससारमे अपनी कलाकी पूजा, शिष्टताके जीवन, शान्तिके वातावरण, व्यापारके संचरणमे लासानी थे। जिस प्रकार इटलीके नगरोमे — जैसा पॉम्पेईके भूमिसात्

नगरमे प्राप्त कुषाणकालीन हाथीदाँतकी भारतीय यक्षीमूर्तिसे प्रमाणित है – भारतीय वस्तुओका व्यापार प्राचीन कालमे सुरक्षित था, वैसे ही सिन्धु सभ्यताका व्यापार भी उस प्राचीन कालके पश्चिमी एशियाके नगरोपर धारासार बरसता था। मिस्र, सुमेर, बाबुल, असुर देशके व्यापारी अनिरुद्ध सिन्धु तीरके नगरोमे अपने सौदागरीके माल बेच आते थे और उन नगरोमे देशी-विदेशी पर्यटकोकी चहल-पहल मची रहती थी। मोहेनजो-दडो और हडप्पाके नागरिक – साँवले, बादामी, गेहुँए रंगके कुछ नाटे कदके – कानोमे कुण्डल, हाथोंमे कडे पहने, ऊपर शाल ओढे, नीचे तहमत बाँधे मुहरोके ठप्पोसे अपने कार्याचार करते, चित्राक्षरोमे पत्र लिखते वहाँ बहुविध निवास करते थे – शान्तिके वातावरणमे जहाँ युद्धके अभावमे उन्हे न अस्त्रोकी आवश्यकता थी, न रक्षाके लिए कवचोकी। सोने-चाँदीकी उनके पास कमी न थी, अनेक जेवर उनसे बनते थे, पर जिस तरह ऊरकी कब्रोमे मिली छुरियोकी मूठें सोने-चाँदीकी बनी बहुमूल्य पत्थरोसे जडी है, वैसी छुरियोकी कल्पना भी सिन्धुतटके निवासी नही कर सकते थे, क्योंकि मृत्युके साधनोंने उन्हे कभी आकृष्ट नही किया। उन्होंने तो शान्तिको साधा, कलाको साधा, जिनके प्रतीक रूप मिट्टी-चूनेकी बनी हजारों मुहरें कलाकी सुईकारी है, बारीकोमे वे अपना सानी नही रखती, उस काल पश्चिमी जगत्‌के खण्डहरोमे मिली हज़ार मुहरोमे एक भी उनकी कलाको नही पा सकती। उनके उभरे वृषभोकी आकृतियाँ इतनी शालीन है, उनमे पुंगवकी शक्ति इतनी सीमातीत अँटी हैं, कि उनकी समता अन्यत्र दुर्लभ ही नही सर्वथा अप्राप्य है। बारीक रेखाओमें उभारे शेर और गेंडे, मृग और मनुष्य, वृक्ष और घडियाल, दिव्यदर्शन है। सीगधारी देवता – शिवके त्रिशूलके-से – बीचमे बैठता है, चारो ओर पशु बैठते है, जिससे 'पशुपति' का स्पष्ट आदर्श प्रस्तुत हो जाता है, वन्य जीवो और केन्द्रस्थ मानवके परस्पर सौहार्दकी धारा जैसे फूट पड़ती है।

जब-तब उस स्थितिका रूपायन हुआ है जहाँ हाथी और शेर, मेढ़े

और गैंडेके एक साथ संयुक्त रूपमें उभारे गये है, उस स्थितिका भी, जहाँ खतरेसे बचनेके लिए मनुष्य वृक्षपर जा चढा है और नीचेका शेर ललचायी नज़रों उसे ऊपर घूर रहा है। हडप्पामें मिली नृत्यमान् अलग-अलग बने स्वतन्त्र अंगोसे संयुक्त पत्थरकी उस नर-मूर्तिका-सा मूर्तन तो ग्रीक इतिहासके स्वर्ण कालके तक्षक फीदियस और प्राक्सितिलीज़के पहले ३००० साल तक कोई कलाकार ऐसी नही कोर सका। कितना आधुनिक है वह नर्तनशील हडप्पाका मानव, कितनी आधुनिक मोहेनजो-दडोकी वह नग्न खडी काँसेकी छरहरी, पन्द्रह-सोलह सालकी उम्रवाली लडकीकी नर्तकी-मूर्ति है, जिसकी दाहिनी भुजा कमरपर टिकी है, बायी बगलसे अनायास लटक रही है। इतना अकृत्रिम, सहज रूपायन प्राचीन कलाकारने कही नही किया, सम्भवतः ग्रीसमे भी नही, जो आज भी अपनी स्वाभाविक सत्तामें स्वतःप्रमाण है, साथ ही उस कलाका सबूत भी है जिसमें त्रिविध धातुओका एकत्र ढाला जाना सम्भव हो सका था। शायद पहली बार मनुष्यने तांबे और टिनको मिलाकर कांसा सिन्धुकी भूमिपर बनाया।

सिन्धु सभ्यताकी सातो तहें सम्भवत कुल सात सदियों तक जीकर मर गयी – प्राय: २९वी सदी ई० पू० से २२वी सदी ई० पू० तक। प्रारम्भ शायद और पहले भी हुआ होगा क्योकि सुमेरमे जो मोहेनजो-दडो और हडप्पाके व्यापारियो-द्वारा पहुँचायी वस्तुएँ कीश, एश्नुन्ना, ऊर आदिमे मिली है उनका समय २६वी और २०वीं सदी ई० पू० के बीच है। मोहेनजो-दडो पहले मिटा, हडप्पा पीछे, १५वी-१४वी सदी ई० पू०। आर्योके उन रिसालोने उन्हे कुचल डाला जिन्होने उनसे पहले और पीछे, पश्चिमी एशियाके संसारको भी नष्ट कर दिया था।

पर क्या मोहेनजो-दड़ो और हड़प्पा मर सके ? उनकी सभ्यताकी अनन्त-अनन्त इकाइयाँ क्या आज भी हमारे जीवनकी नाडियोमे सचरित नही हो रही ? क्या उनका 'योग' हमारे देशमे फल-फूलकर हमारी

शाखाओं-प्रशाखाओके रूपमे युरॅप और अमरीकाके नगरोंकी जमीनपर नही पनप रहा है ? क्या शिव-ताण्डव, जो भारतीय इतिहासके मध्य-कालीन अध्यायोमे मरे काल-पुरुषपर रूपायित हुआ है, मोहेनजो-दड़ोके आदिम पशुपति शिवके हमारे विश्वासोमे नही जी रहा है ? क्या सिन्धु सभ्यताका मातृत्व आज भी शक्ति बनकर इस देशमे काली, दुर्गा, शीतला आदिके रूपमे नही पूजा जा रहा है ?

■
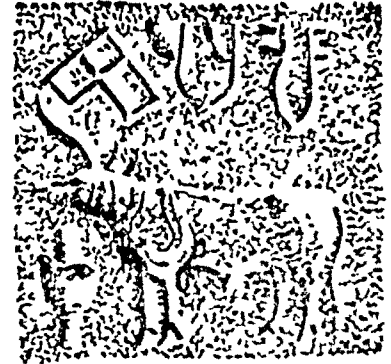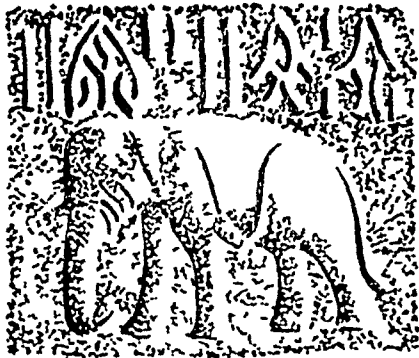
मोहेनजो-दडोसे प्राप्त मुहरें, जिनपर (बायेंसे दायें) हाथी पुजारी और गेंडा अंकित हैं
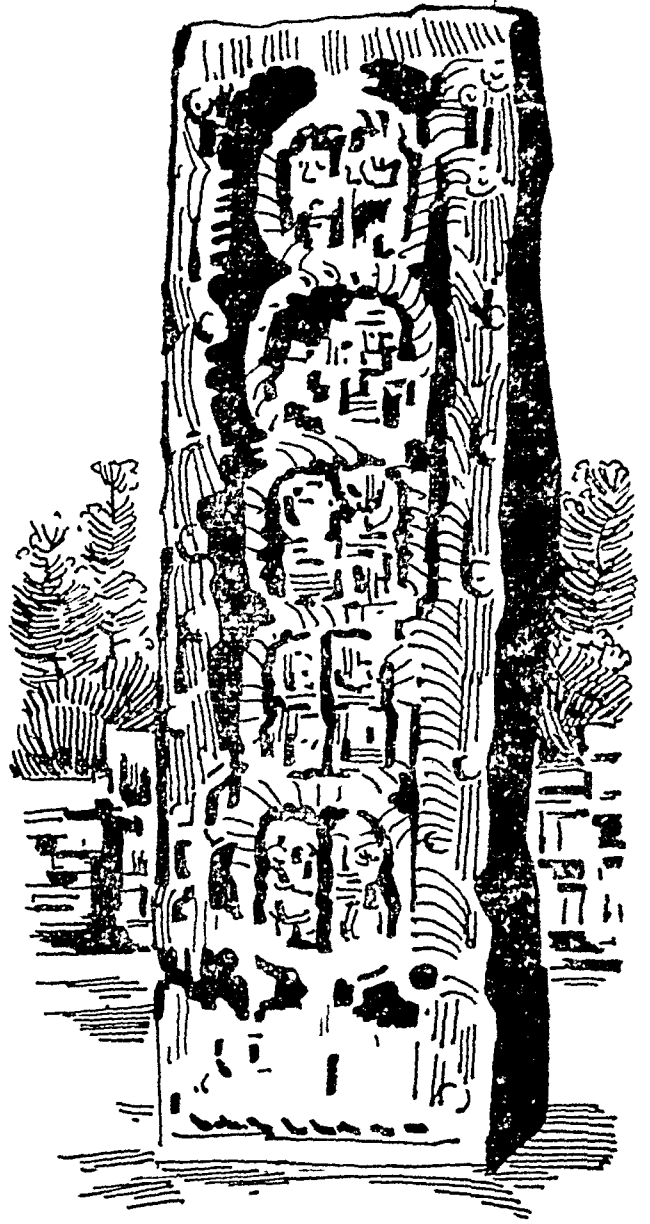
'मय' कलेण्डरका एक स्तम्भ : जिसमें गणनाके अंक चेहरेकी शक्लोंमें कटे हैं

प्राचीन अमेरिकाके

भारतीय निवासी

कुछ दिन हुए एक भावुक भारतीयने मध्य अमेरिकासे लौटकर एक पुस्तक लिखी जिसका नाम था 'हिन्दू अमेरिका'। कोलम्बसके अमेरिका ढूँढनेके पहले वहाँ जो कुछ जातियाँ बसती थी उन्हे भावुक भारतीयने जो 'हिन्दू' कहा उसके दो कारण थे – एक तो भावुकता, दूसरा एक पुरानी गलती। भावुकतामे कुछ वैज्ञानिकताका भी आभास था, क्योंकि उन जातियोंकी शक्ले, उनके विश्वास, देवता और मन्दिर एक अंशमें भारतीयोंसे मिलते थे। फिर उन जातियोंका यह विश्वास भी कि वे एशियाकी दिशासे आये। ग़लती उसकी न थी, इतालवी माँझी कोलम्बसकी थी जो १५वी सदीके अन्तमे चीन और भारत पहुँचनेकी सीधी राह खोजने, सोनेका नगर एल्दोरादो खोजने, स्पेनसे चल पड़ा था। भारत और चीन तो राहके अन्तमे होनेसे उसे न मिले और बीचमे ही जो अमेरिकाका नया महाद्वीप आ मिला, तो उसने और साथी माँझियोने उसे ही इण्डिया अथवा भारत कहा और उसके निवासियोको इण्डियन अथवा भारतीय। इस धोखेसे भावुक भारतीयपर जादूका असर हो जाना और उसका मध्य अमेरिकाकी प्राचीन सभ्य भूमिको हिन्दू अमेरिका कह उठना कुछ बहुत अस्वाभाविक न था।

पर 'वह हिन्दू' अमेरिका न था, उन 'मयों'का साम्राज्य था जो मध्य अमेरिकामे आजके मैक्सिको नगरके चतुर्दिक् फैला हुआ था और जिसके आधुनिक प्रतिनिधि साधारणतः वे ही है जो आजकल मैक्सिकोमे तो हैं ही, संयुक्त राज्य अमेरिकामे भी रेड इण्डियनके नामसे पुकारे जाते है। मैक्सिको नगरसे घण्टे-आध घण्टेकी रेलकी यात्रासे हो अनेक ऐसी जगहे

जाया जा सकता है जहाँ सीढीदार पिरामिडोकी दुनिया उदास पडी हुई है। बहुत काल तक धनी अमेरिकाकी नज़र इनपर नही पड़ी यद्यपि घरसे बहुत दूर समुन्दर पार ईराक और मिस्रमे करोड़ों डालर वह एशिया और अफ़्रीकाकी प्राचीन सभ्यताएँ खोजनेमे सरफा कर रहा था। वास्तविक खुदाइयाँ तो अमेरिकाके अपने ही महाद्वीपोमे २०वी सदीमे हुईं पर एकाकी खोज करनेवालोकी वहाँ १९वी सदोमे भी कमी न थी। उन खोजियोमे अत्यन्त रोमाण्टिक स्टीफेन्स और टॉम्सन थे। पहलेने मय सभ्यताके नगरोका पता लगाया, दूसरेने चिचेनइत्जाके नरभोजी बलिकूपका। इनकी कहानी अन्यत्र कहूँगा।

आपने परियोकी कहानी, जंगलमे सहसा राजकुमारके निकल पडनेपर देशके द्वार एकाएक खुल जानेकी, सुनी तो होगी ही, उनपर बचपनमे विश्वास भी किया होगा, फिर जैसे-जैसे संसारकी स्थितिका बोध होता गया वैसे-ही-वैसे परी देशका प्यारा विश्वास काफ़ूर होता चला गया होगा। पर जिन नगरोकी कहानी मैं कहने जा रहा हूँ वे आज भी मध्य अमेरिकाके जंगलोमे खड़े है, जिन्हे हज़ारोने नंगी आँखों देखा है, कुछ भारतीयोने भो, और मैने तो ख़ैर देखा ही है और आँखों देखा अचरज नीचे बयान कर रहा हूँ।

कल्पना कोजिए, यदि आप प्रत्यक्ष वहाँ न पहुँच सके, कि मैक्सिको, होन्दूरस, गुआतेमाला, युकातान – ये मध्य अमेरिकाके प्रजातान्त्रिक राज्य है – के जंगलोमे आप अचानक जा निकले है। जहाँ राह पहलेसे बनी है वहाँ राहसे चलिए; जहाँ राह नही मिलती, जंगल घना हो गया है, वहाँ कुल्हाड़ीसे काट-काटकर राह बनाते जाइए, मीलों, घण्टो, पहरों, दिनो और जब आप थकानसे चूर आगे बढ़नेका इरादा छोड़ देनेको मजबूर होने लगेंगे तभी पुरातन पेड़ोकी फुनगियोके ज़ोरकी हवासे हट जानेसे सहसा भवनका शिखर दिख जायेगा। आपकी थकान झटकेसे गायब हो जायेगी, जिस्मकी रगें तन जायेंगी और आँखोमे अचानक बेहद

ज्योति जग उठेगी और आप बदहवास आगे बढ चलेंगे। फिर तो एक बेतहाशी दौड शुरू हो जायेगी और मन्दिरके पीछे मन्दिर, महलके पीछे महल, पिरामिडोके पीछे पिरामिड, तहोकी तरह एकके ऊपर एक खुलते चले जायेंगे और आप उस निर्जनके नगरमे सीढियोसे ऊपर शिखरो तक, सीढियोसे नीचे सदियोसे इनसानी परोसे अछूती ज़मीन तक चढते-उतरते रहेंगे और वह परियोका सूना देश आपके सामने होगा, न किसी अन्ध-विश्वासकी उपज, न किसी लोक-कथाकारकी भावनाका सबूत। प्रत्यक्ष नगर जो कभी कारणवश छोड दिया गया था और जहाँसे ज़िन्दगी एक ज़मानेसे बसकर उजड़ गयी थी, उजडकर कहीको कूच कर गयी थी और जहाँको कूच कर गयी थी, वहाँ फिर वह आबाद भी हो गयी थी और इसी तरह कूच करते, आबाद होते उसने नगरोंका एक जंगल कायम कर दिया था। अगले नगर पेंग मारती ज़िन्दगीसे आबाद होते जाते, पिछले नगर सूने, बेजान होते जाते, जैसे शरीर पड़ा हो और ज़िन्दगी उससे कूच कर गयी हो। आपने फतहपुर सीकरी देखी है — अकबरका वह शालीन नगर जिसे बग़ैर चोट खाये बेमानी मौत मरना पड़ा था। सीकरीके वे महल जो अपने गुम्बजो, कलशो, कँगूरोके साथ खडे है बेरूह, बेआत्मा, मुरदा खड़े है। उसी फ़तहपुर सीकरीके-से बीसों निर्जीव वीरान छोड़े हुए नगरोकी कल्पना कर लीजिए, पर मथुरा-आगरेके राजमार्गपर नही, बस्तियोसे दूर घने जंगलोंके भीतर और आपको मध्य अमेरिकाकी प्राचीन सभ्यताके नगरका, उस सभ्यताके साम्राज्योका सही और ऐति-हासिक अन्दाज़ लग जायेगा। और विश्वास करे, आप ज़रा भी गलत न होगे, न इतिहासकी सच्चाईमे, न मात्राके विस्तारमे।

हाँ, मय लोगोके साम्राज्य भी थे, फैले साम्राज्य, जिनकी सीमाएँ कमसे कम चार बड़े राज्यो — मैक्सिको, होन्डूरस, गुआतेमाला और युकातान — को घेरती थी। साम्राज्य जो अनजाने युगोसे चलकर १६वी सदी ई० के मध्य तक बचा रहा था और जिसका नाश कोलम्बसके बाद

साम्राज्य-निर्माणकी कामनासे वहाँ पहुँचनेवाले स्पेनियोने किया। उनकी ही एक जाति आज भी संयुक्त राज्य अमेरिकामे बसी 'इण्डियन' कहलाती है जो अधिकतर गोरे अमेरिकनोसे मिलनेसे परहेज़ करती है और जिनके गांवमे बसनेवाले कुनबे न तो अपने बच्चोंको अमेरिकी स्कूलोंमें पढने भेजते है और न रूढिवादी बूढे अमेरिकनोंका मुँह तक देखना चाहते है। उनके घर मिट्टीके है, उनकी भाषा अपनी है। मध्य अमेरिकामे रहनेवाले उनके भाई-बन्द – इंका, परूबियन, मायन आदि – कहलाते है और अपने गोरे मालिकोसे भिन्न बादामी रंगके प्रायः नौकरोकी ज़िन्दगी बिताते है। उन्हीके पूर्वजोने कभी मध्य अमेरिकामें अपने साम्राज्य खडे किये थे। इन मयोंका उस मय असुरसे कोई सम्बन्ध नही, जो प्राचीन असुरियाका था, जिसके नामका उल्लेख बार-बार भारतीय वास्तु-ग्रन्थोमे हुआ है। ये मय कौन थे, इसका पता आजतक नही चला, यद्यपि अटकल इस सम्बन्धमे अनेक लगाये गये है। पर उसकी बात फिर कहूँगा, स्थान और समयसे।

मयोके साम्राज्यके काल-स्तरोके अनुसार तीन विभाग किये जाते है, पूर्वकालीन और उत्तरकालीन साम्राज्य। उत्तरकालीन साम्राज्य तो पिछली पाँच-छह सदियोके पहले तक चलता रहा था और पूर्वकालीन साम्राज्य ६१० ई० तक। इस पूर्वकालीन साम्राज्यके तीन काल-स्तर हैं – प्राचीनतम यानी अजानेकालसे ३७४ ई० तक, मध्यकाल यानी ३७५ से ४७२ ई० तक और उसका स्वर्ण अथवा महान् युग यानी ४७३ ई० से ६१० ई० तक।

इस प्रकार ईसवी सन्मे तिथिक्रम पढकर पाठकोको कुछ कम कुतूहल और आश्चर्य न होगा, यद्यपि इसमे कोई आश्चर्यकी बात है नही। कारण कि जहाँ ससारकी सभ्यतामे तिथियाँ स्पष्टतः नही दी गयी, मय सभ्यतामे अत्यन्त सूक्ष्म और स्पष्ट रीतिसे वर्ष आदि दिये मिलते है। और वर्षकी गणनाका मय कलेण्डर जितना पूर्ण है उतना संसारका कोई

कलेण्डर कभी पूरा न हो सका, न पहले न आज। प्रत्येक इमारतमें, प्रत्येक घेरेमे, उसके प्रत्येक अंगांगमे दिन और वर्ष दिये हुए है। मासके दिन २० होते थे और वर्षके ३६५। गणनाकी संख्या अथवा अंक चेहरे-की शक्लोमे, पत्थरोमें कटे हुए है। चेहरेमे तनिक भी परिवर्तन होनेसे अंक अथवा संख्या बदल जाती है, कानके अभावसे, नाकके अभावसे, ठुड्ढीके अभावसे, होठोके सम्पुट होने या खुल जानेसे। इस तरह शक्लमे ज़रा-सा परिवर्तन हो जानेसे अंकोंकी मात्रामे परिवर्तन हो जाया करते थे। पर इन्ही परिवर्तनोका यह परिणाम हुआ कि इन भवनो अथवा नगरोकी सभ्यताओकी ठीक तिथि पढ़ी जा सकती है। इन मय नगरोंके खण्डहरोके अनेक टुकड़े युरॅपके पेरिस आदिके संग्रहालयोमे सुरक्षित है। उनमे जहाँ कही भी आप विशेष बनावटके चेहरे, विकलाग अथवा अत्यंग देखे, समझ लें कि उसका तात्पर्य किसी-न-किसी अंकसे है। और इन चेहरोका प्रसंग एक बात और सामने ला देता है, जो मय सभ्यताके लिपिकी है। ससारमे सभी प्राचीनतम लिपियाँ – वस्तुओके प्रति संकेतके कारण, ध्वन्यात्मक वर्ण-संकेतके अभावके कारण – शक्लोके चित्र रूपमे ही लिखी गयी थी। भारतके मोहेनजो-दडो और हड़प्पामे, मिस्र और सुमेरमे लिपियाँ चित्र रूपमे ही लिखी जाती थी, जैसे वह आज भी चीनमे लिखी जाती है। चीनको छोड़ शेष सारी लिपियोने विचार-संकेतके माध्यमसे ध्वन्यात्मक वर्णमालामे अपना विकास प्राचीनकालमे ही कर लिया था, पर मय सभ्यताकी लिपि अपने अन्त काल तक चित्र रूपमें ही जीवित रही और आज भी ऐसे लोगोंका सर्वथा अभाव नही जो उसे पढ़ न सकें।

उस सभ्यताके साधारणतः तीन जातियोसे सम्बन्धित विभाग किये जाते है, एक तो स्वयं मयोकी सभ्यताका, दूसरा तोल्तेको और तीसरा आज्तेकोकी सभ्यताका। आज्तेक सम्भवतः सबसे प्रबल थे जो स्पेनी सेनाओके प्रहारसे १६वी सदीके आरम्भमे नष्ट हुए और मय तथा तोल्तेक,

विशेषत तोल्तेक, वास्तुके विधान और इमारतोंके निर्माणमे विशेष दक्ष थे। इनमे-से अन्तिम आज्तेकोंने तोल्तेकोंकी शक्ति तोडकर मैक्सिकोके बीच अपने साम्राज्यका केन्द्र स्थापित किया था। तोल्तेकोंका प्रसिद्ध नगर 'तुला' भी खोज निकाला गया है। मैक्सिको नगरके पश्चिमोत्तरमे प्रायः ८ मीलके गिर्दमें प्राचीन नगरका एक भाग खडा है। 'सर्पका पिरामिड' अपने विस्तारमे असाधारण है। ये पिरामिड मिस्री पिरामिडोंके-से मृतक रखनेके मकबरे नही, सुमेरियो-बाबुलियोंके देव मन्दिर जिग्गूरतके-से थे, जो सीढीदार नीचे चौड़े ऊपर क्रमशः छोटे होते गये थे, जिनके शिखरपर सूर्य और चन्द्रमाके देवालय बने थे। यह साधारण जन-विश्वास था कि प्रत्येक ५२ सालके बाद देवताके कोपसे प्रलय-द्वारा सृष्टिका अन्त हो जाता था और उसकी रक्षा मात्र वहाँके पुरोहित कर सकते थे। इसी कारण पुरोहित न केवल समृद्ध बल्कि असामान्य शक्तिमान् और भयावह हो गये थे। प्रलयसे प्रजाकी रक्षा और उसका अवरोध वे हर ५२वें साल एक पिरामिडको दूसरेसे घेर-घेर कर लिया करते थे। इसी कारण उन्हें बरबस तिथियोंका क्रम संख्या और अंकोंके रूपमे पत्थरमे काटकर रखना पडता था। इसीसे प्रत्येक इमारतकी तारीख चेहरोंके रूपमें वहाँ बनी मिलती है।

इन इमारतोंके देवताओंके चेहरे अत्यन्त विकराल है, जैसी विकराल उनकी भूख भी थी। उनकी भूख बिना मानव आहारके मिट न पाती थी, उनकी प्यास बग़ैर इनसानके रक्तके बुझ न पाती थी, जिनके सैकड़ों-सैकडों सबूत वहाँके उन बियाबाँमे खड़े नगरोंके देवालय अपनी चुप्पीकी हज़ार ज़बानोंसे देते हैं। नरबलि वहाँकी पूजाकी केन्द्रीय रीति थी। ज़रा अन्दाज़ कीजिए उस दुनियामे – वैसे अफ्रीका और भारतके नागालैण्डके 'हेड हण्टर्स' (मानव मस्तकके अहेरी) तो प्रसिद्ध है ही – १६वीं सदीके प्रायः मध्य तक इनसान पत्थरके देवतापर बलि चढ़ाता रहा है। बलिके आदमीके समूचे जिस्मसे जिन्दा खाल उतार ली जाती थी और तब एक खास

क़िस्मकी पूजाकी छुरीसे दिल निकालकर देवताके सामने पड़ी पत्थरकी शिलापर चढा दिया जाता था। आज्तेकोंके देवमन्दिर 'तियोकल्ली'मे जब स्पेनी फ़ौजोने प्रवेश किया तब उन्होने देखा कि न केवल मन्दिरकी भीतरी दीवारोंपर आदमकद तक खूनके लेपकी मोटी तहे चढी हुई थी, वल्कि देवताकी वेदीपर तीन-तीन दिल अभी हालके काटे चढे हुए थे, जिनमे-से गरम भाप अब भी निकल रही थी और उनमे फरफराहट अभी मरी न थी। बेकाबू जिन्दगी जिस्मसे बाहर दिलके आख़िरी कोटमे पर मारनेकी कोशिश कर रही थी!

और वह सभ्यता किस प्रकारकी थी? ऐसी जिसके शिल्पी शिला-स्फटिकको सही टेकनीकसे पॉलिश कर सकते थे, ८५४ सोने और बहुमूल्य रत्नोकी चिकनी, कटी गुरियोकी बीस-बीस लडियों तकके हार प्रस्तुत कर सकते थे। सोने और रत्नोके विभिन्न अनन्त आभूषण, ताज, भुजबन्द, कडे, अँगूठियाँ, ब्रूच और पिन – सब उस सभ्यताकी अचरजकी कारीगरीके प्रमाण है। सबसे अधिक आश्चर्यकी बात, जो अन्यत्रकी महती सभ्यताओ-मे अलभ्य रही है, यह थी कि वास्तुकलाके असामान्य आदर्श, पत्थरकी कटाई और असाधारण मूर्त्तन तथा गढाईका काम धातुकी छेनी और हथौडोसे नहीं पत्थरके ही औजारोसे हुआ था।

एक प्रश्न जंगलोमे धँसे इन नगरोके सम्बन्धमे स्वाभाविक ही यह होता है कि इन्हे सहसा छोड क्यो दिया गया? भूचालके कारण नही, क्योंकि नगरोके भवनो आदिकी, प्रकृत कालकी प्रगतिसे भिन्न, हानि नही हुई है। आक्रमण भी इसका कारण नही हो सकता क्योकि वहाँ धन-जन किसीकी हानि नही हुई, न तो इमारतें तोडी-फोड़ी गयी है, न अग्निसात् की गयी है, न वहाँके निवासियोके मारे जानेके ही प्रमाण मिले है। ऐसा भी नही कि सहसा आबोहवा वदल गयी हो, क्योकि नये नगर जो पुरानो-को छोड़ बसाये गये है, एक तो उनमे पूरी आवादी जा वसी है दूसरे वे पुरानोसे २५० मीलकी दूरीके भीतर ही है। इतनी कम दूरीपर बसे

नगरोमे यह सम्भव नही कि एककी आबोहवा इतनी असह्य हो जाय कि वह तो नष्ट हो जाय दूसरा भरा-पूरा रहे, जहाँ पहली आबादीके लोग जा बसें।

इसका कारण बस एक है — मयोकी जीवन-रीति। वे किसान थे, मक्का-बाजरा उगाने और खानेवाले मानव। मात्र खेतोपर निर्भर करनेपर भी, अपनी सदियो लम्बी सभ्यताके विकास-क्रमके बावजूद, वे उसके रूप-को न बदल सके, उत्पादनके साधनोमे कोई परिवर्तन न कर सके। अपने पिछले साम्राज्यकी शालीनताके समय भी खेत जोतनेका साधन वे नही खोज पाये। अन्त तक वे बरसातमे लकडीसे भूमिमें सुराख कर उसमें बीज डाल दिया करते थे और अन्न पक जानेपर उसे तोड लिया करते थे। भूमिको उर्वर करनेकी कलासे वे सर्वथा अनभिज्ञ थे। दो-तीन बार एक ही भूमि जोतनेपर जब वह अनुर्वर हो जाती, तब वे उसे छोड़ आगे बढ जाते, अन्यत्र चले जाते और वहाँ जगल काट उसे जला डालते, बरसातके पहले उसमें सुराख कर उसे बो देते। उधर छोडी परती जमीनपर जंगल चढ आता। इसी प्रकार वे बसते-उजडते फिरते और छोडी जगहके नगर अपने विशाल भवनोके साथ खडे रहते, उनके चारों ओर जंगल चढ आते और वे सर्वथा नजरसे ओझल हो जाते। मय जातिकी सभ्यताके घने जंगलमें आज भी खडे समूचे नगरोका भेद बस यही है। ऐसा ही एक नगर स्टीफेंसने प्रायः हजार रुपयेमे खरीदा था!

मय लोग आये कहाँसे?

कौन कह सकता है? पर आये वे निश्चय कही औरसे, स्वय उनकी ख्याते कहती है। कहते है, उनका देवता आया, सफेद चोगा पहने, सफेद दाढी रखे। देवताका नाम था क्वेत्जालकोआत्ल, आया वह सूरजके उदय होनेवाली दिशासे। उसने वहाँ साम्राज्य बनाया। अन्नकी पौध उगजायी, जिसकी बालें आदमकद थी, पौधोपर रुई और राईके कपडे उगाये, लोगो-को शिल्प, सभ्यता, सामाजिक व्यवस्था सिखायी। और एक दिन उसे

हुआ कि वह अन्यत्र चला जाये। और वह अन्यत्र चला गया, चोलूला, जहाँ उसने अपने शासनके सूत्र, अपनी लिपि, अपने गीत प्रचलित किये। फिर वह वहाँसे भी उठा, सागर-तीर जा पहुँचा, रोने लगा, अग्निमे उसने प्रवेश किया, उसका हृदय सुबहका तारा बन गया। कुछका कहना है, वह अपने पोतमे जा बैठा, जहाँसे आया था वहीको लौट गया। पर सारी ख्यातोंका कहना है कि वह विश्वास दिला गया कि वह निश्चय फिर लौटेगा।

और पश्चिमके ईसाई पण्डितोने, जिनका उनका नाश करनेमे खासा हाथ रहा है, कहा, वह लौटकर आया — स्पेनी विजेताओंके रूपमे, क्योकि उसका श्वेत चोला श्वेत त्वचाका प्रतीक था, श्वेत दाढ़ी सम्भवतः ईसाके चेलोमे-से किसीकी थी। निश्चय, लौटकर आनेकी प्रतिज्ञा तभी तो पूरी हुई, पिताकी भाँति अपनी प्रजाको छोडकर देवता गया था, प्रतिज्ञा पूरी करने लौटा उसके विध्वंसके साधन लेकर।

कौन थे वे वस्तुत ?

सम्भवतः मंगोल, सम्भवतः चीनी, सम्भवतः भारतीय। वे साइबेरिया-के पूर्वी उत्तरी तीखी निकली भूमिसे समुन्दरकी पतली धारा लाँघ अलास्का पहुँचे, फिर तीर-तीर दखिन। मध्य अमेरिकामे, मेक्सिकोके सागर-तटपर। धीरे-धीरे वहाँ उनकी सभ्यता उठी, फैली और पकी। और एक दिन कुछ लोग वहाँ पहुँचे, स्पेनसे, युरॅपके विविध देशोसे, जिन्होने पहले उनका साम्राज्य नष्ट कर दिया, फिर उनकी सभ्यता, उनके विश्वास, उनका धर्म, और अब वे उनकी जातियोंका अस्तित्व भी बडे वेगसे मिटाये जा रहे हैं। पर क्या वे उनकी संस्कृतिको, जिसकी ध्वनि 'मिसिसिपी' मे, 'मसाचूसेट्स्'-मे, अनेकानेक नगरों, नदियो, पहाडो, जन-मानवके नामोमे बस गयी है, कभी मिटा पायेंगे ?

■
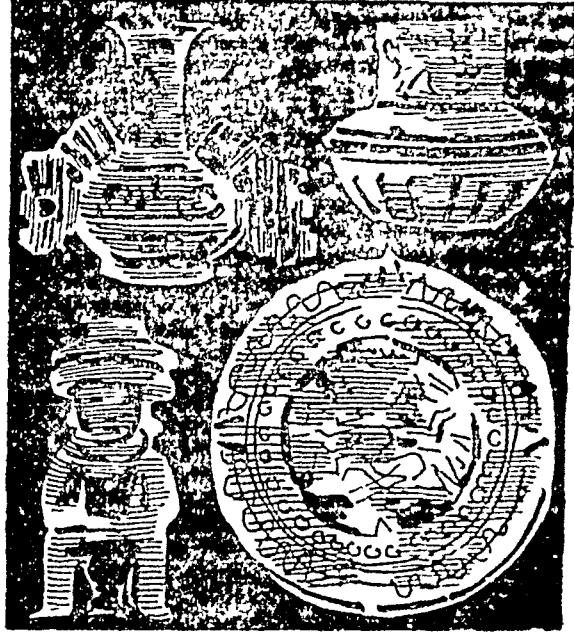
आज्तेकोंका गणित और ज्योतिष ज्ञान,
उनका कलेण्डर, उनका वास्तु और शिल्प
सभी स्पेनियोंसे श्रेष्ठ थे।

मोस्ते.जूमाका ख़ज़ाना

जब स्पेनकी सेनाओने मेक्सिकोके राज्यपर १५२० मे हमला किया तब वहांके स्वामी आज्तेक थे। मयोके अन्य राज्य अबतक मिट चुके थे, आज्तेकोने ही उन्हे मिटा दिया था और अब स्वयं वे ही नये साम्राज्य-के स्वामी थे। आज भी कोई अठारह लाख अमेरिकाके उन प्राचीन निवासियोकी संख्या है, मध्य अमेरिकामे, पर अब, जिन्होने कभी साम्राज्यसुख भोगा था, उनकी दशा नौकरोसे भी बदतर है।

जब स्पेनी सेना ले हेनोन कोर्तिजने आज्तेकोके साम्राज्यके अन्तिम गढपर मेक्सिको नगरके बीच आक्रमण किया तब आखिरी मोरचेपर उनका घायल सम्राट् मोस्तेजूमा बन्दी हो गया। हथकडी-बेडियोसे लाचार सम्राट्-को अपनी ही राजधानीमें कैदीका भोग भोगना पडा। मोस्तेजूमा वीर था, मोरचोका अभ्यस्त सेनानी, पर युरॅपके तबके गोला-बारूदका सामना लाठियो और बरछोसे वह न कर सका। नौ-नौ लडाइयाँ लड प्रत्येकमे बुरी तरह घायल हो उसे हथियार डाल देना पड़ा। उसने हथियार तो डाल दिये पर उसकी प्रजाने लडाई जारी रखी और एक दिन जब कोर्तिज़-ने आज़्तेकोका आखिरी गढ भी ले लिया तब वह लडाई भी बन्द हो गयी। इन्ही लडाइयोमे आखिरी मोरचा मेक्सिको नगरके बीच आज्तेकोंके प्रसिद्ध देवमन्दिर तियोकालीके मैदानमे लडा गया, जहाँ मोस्तेजूमाका खज़ाना स्पेनियोके हाथ लगा।

स्पेनी फौजें जहाॅ जातीं, वहाँ स्पेनके पादडी भी जाते, उसका खूनी धर्म-न्यायालय इंक्वीजिशन भी जाता और ईसाई-भिन्न शत्रुओकी हारके बाद उनके देवालयोको तोड़ वहाँ गिरजे खड़े कर लिये जाते। बडी

व्यवस्थासे शत्रु जनताको ईसाई धर्ममे दीक्षित किया जाता। स्पेनमे, जब युरॅपमे ही सहिष्णुताका इतना अभाव था तब उसकी आशा ईसाई-भिन्न जातियोके सम्बन्धमें कैसे की जा सकती थी ? अव्वल तो स्पेनी ईसाई अपनेसे भिन्न किसी जाति, धर्म अथवा सभ्यताको ऊँचा माननेको तैयार न थे और यदि परिस्थितियोने उन्हे मजबूर कर शत्रुकी सास्कृतिक ऊँचाई उनसे स्वीकार करा भी ली तो उनकी असहिष्णुता और भी बढ जाया करती और वे अपने कमजोर शत्रुओको नष्ट कर देनेमे कुछ उठा न रखते।

आज्तेकोकी सभ्यता निस्सन्देह उससे कही ऊँची थी, जो स्पेनने जाना या देखा था। आज्तेकोका गणित और ज्योतिष ज्ञान और उसपर अवलम्बित उनका कलेण्डर, नगरोका निर्माण और उनकी व्यवस्था, उनका वास्तु और शिल्प, सडकोपर यातायातका प्रबन्ध और जन-गणना तथा नागरिक रजिस्ट्रेशन, शिक्षाका प्रसार, सभी एक रूपसे कुछ ऐसे थे, जिनके सामने स्पेनियोको हार माननी पडी; पर उन्होने उसका प्रतिकार आज्तेकोकी सभ्यताको नष्ट कर करना उचित समझा।

तियोकालीके मन्दिरकी कोर्तिज़ने मुलाहिजा करनी चाही। मजबूर पुरोहितोने चुपचाप सिर झुका लिया और कोर्तिज़ पादड़ियोके साथ आज्तेकोके देवालयमे जा पहुँचा। भयानक बदबू थी क्योकि आज्तेकोका देवता न केवल मानव आहार करता था बल्कि हालके ही मारे नरोका भोग भी अभी हाल ही लग चुका था। दीवारोपर नजर गयी तो कोर्तिज-ने देखा उनपर रक्तके जो अनेक लेप मनुष्यकी ऊँचाई तक लगे थे, उनमे एक ताजा भी था। उधर जो देवताकी वेदीपर नजर गयी तो लोगोने देखा जिस्मसे निकाले तीन ताजे दिल अभी गरम तड़प रहे थे।

मोस्तेजूमासे कोर्तिज़ने जो उस अमानव बर्बरताका बयान किया तो लाचार नृपतिने कहा कि प्रार्थनाके वक्त भगवान्‌के बेटे ईसाका मास खाना और रक्त पीना नरबलिसे कही ज्यादा बर्बर है। शायद इस जवाबसे कोर्तिज़ विशेष प्रभावित न हुआ। वह भरपूर जानता था कि किस तरह

धर्मसभासे दण्ड पाये बन्दियोका मास स्पेनमें रॉध लेना धार्मिक कृत्य माना जाता था ।

तियोकालीके मन्दिरके दूसरे ओर एक और इमारत खडी थी, जिसमें करीब १, ३०,००० खोपडियाँ गिनी गयीं, उन अभागोकी, जो तियोकाली-के देवताके कालान्तरमे बलि चढे थे । तियोकालीका देवता चेहरेसे मनुष्य था, शेष शरीरसे सर्प, जिसके सारे अगोमे असंख्य छोटे-बडे रत्न और मोती जडे हुए थे । स्पेनियोने देवताका शरीर तोड डाला, रत्न और मोती चुन लिये । आज्तेकोके पुरोहित बेबस देखते रहे, प्रजा परबस, अपने भगवान्को भीतर-ही-भीतर कोसती रही । पर आग उनके दिलोमे सुल-गती रही और कुछ अजब न था कि एक दिन राखमे दबी चिनगारियाँ अगार बन जायें और भड़ककर वहाँकी दुनियाको जलाकर खाक कर दें ।

आखिर वह दिन भी आया । कोर्तिज़ विद्रोही स्पेनी जनरलको दबाने मेक्सिकोसे बाहर गया हुआ था और स्थानीय सेनापर अधिकार उसके पीछे अल्वेरादोका था । देवताका त्योहार आया और आज्तेक पुरोहितोने अल्वेरादोसे त्योहार मनानेकी अनुमति चाही । अनुमति अल्वेरादोने दे दी, पर इस शर्तपर कि उत्सव मनानेवालोकी संख्या ६०० से अधिक न हो, वे बगैर हथियारके आयें और देवालयमे नरबलि न हो । पुरोहितोने शर्तें मान ली, उत्सवकी साँझ जलते दीपो और मशालोसे चमक उठी । आज़्तेक अभिजात कुलोसे ६०० प्रतिनिधि चुन लिये गये जो उत्सवमे शामिल होनेके लिए तियोकालीके मन्दिरमे निहत्थे आ पहुँचे । हथियार-बन्द स्पेनी फौजो उनमे मिल गये और जब नाच-रंग अपनी चोटीपर पहुँचा तब वे आज्तेक प्रभुओंपर टूट पडे और ६०० निहत्थोमे-से एक-एक को तलवारके घाट उतार दिया ।

आज्तेकोने स्पेनियोसे, उनकी अनेक दुरभिसन्धियोके बावजूद, इस घटिया किस्मके धोखेकी कल्पना न की थी और जैसे-जैसे खबर उनके गॉवोमे फैलती गयी वैसे-ही-वैसे आज्तेकोके झुण्ड तियोकालीके मन्दिरमें

आ पहुँचे। लडाई छिडी और इतनी घनी लडी गयी कि स्पेनियोंको घिर-कर कैद हो जाना पडा और जब कोर्तिज बागी सेनाको सर कर लौटा तब उसने अल्वेरादोको आज्तेकोंसे घिरा पाया। उसने देखा कि अगर वह आज्तेकोंको बाहरसे घेरा उठानेको मजबूर करता है तो स्वयं उसे भी एक दूसरे घेरेमें घिर जानेको मजबूर हो जाना पड़ेगा। फिर तो उसने सम्राट् मोस्तेजूमाको बाहर ला खडा किया और मोस्तेजूमाने भी अपनी बेबसीसे लाचार अपनी प्रजाको आक्रामकोंकी प्रभुसत्ता स्वीकार कर लेनेकी राय दी।

पर आज्तेक प्रजाको यह मंजूर न था और उसने अपने सम्राट्की बुज-दिलीका जवाब उसे पत्थर मारकर दिया। उसने अपनी जीती हुई लडाई खोनेसे इनकार कर दिया। दिन-रात जुझाऊ मोरचा जमा रहा, लाशें गिरती गयीं। फिर वह रात भी आयी जो स्पेनके इतिहासमें 'नोखे त्रिस्ते' (रंजीदा रात) के नामसे प्रसिद्ध हुई।

रंजीदा रात। घमासान युद्ध जो छिडा तो कोर्तिजने देखा कि रात क़त्लकी है, जिससे रक्षा सम्भव नहीं। आज्तेकोंने सागरके बाँध काट दिये थे और नगरमें पानी भर चला था, पुल तोड दिये थे जिससे स्पेनियों-के भागनेकी राह बन्द हो गयी थी। आज्तेक अपने इन साधनोंकी शक्ति देख घरोंमें जा सोये, यह सोचकर कि जो काम उन्हें करना था वह अना-यास अपने-आप जलकी धाराएँ कर लेंगी। केवल उनके पहरुए परकोटों-पर जागते रहे।

कोर्तिज़ने जब देखा कि अब जिन्दगीकी आखिरी बाज़ी लगानी है तब उसने अपने आदमियोंमें पासा फेंका—तियोकाली और दूसरे मन्दिरोंमें लूटी राशि, मोस्तेजूमाका अनगिन खजाना उसने अपने सैनिकोंके सामने बिखेर दिया। उनसे कहा, जितना चाहो ले लो, पर यह न भूलना कि रातके अँधेरेमें वही भागनेवाले राह पाते हैं जो हलके होते हैं।

कोर्तिज़की सीख बहुत थोड़ोंने सुनी। जो सोने और रत्नोंके भारसे

जलसे बाहर न निकल सके, बह गये। लकडीका एक पुल जैसे-तैसे स्पेनियोंने भागनेके लिए एक जलधारा पार डाला था। पर आदमी और घोडोंके भारसे वह मिट्टीमे धँस गया। उधर आज्तेक पहरुओंने भगोडोंका इरादा बूझ लिया और हाँक लगायी। आज्तेक घरोंसे निकले, घमासान फिर शुरू हुआ। बारूद और गोलियोंकी मार आज्तेक अपने सैनिकोंकी दीवारपर ले रहे थे और स्पेनी जानपर खेल रहे थे। लडते-लड़ते रात बीती, रंजीदा रात। पौ फटी और अपने देवता सूरजके अंगारको आज्तेकोंने कुछ खास खूनो लाल पाया। उन्हें लगा कि देवता नाराज है, कुछ करके ही दम लेगा। और तभी उन्होंने देखे, सामने दूरके क्षितिजपर गर्दके उड़ते बादल। कोर्तिज़के हरकारोंने आज्तेकोंकी दुश्मन जातियोंको खबर दे दी थी और वे आ पहुँचे थे। देशी-विदेशी शत्रुओंकी दोमुँही मार आज्तेक न सह सके, कुचल गये। मोस्तेजूमाकी कायर सलाहका जवाब जिन्होंने उसे पत्थर मारकर दिया था वे आज खुद गोलियोंके शिकार खेतमें पडे थे और स्पेनका झण्डा आज्तेकोंके गढपर फहरा रहा था।

कोर्तिज़ने मोस्तेजूमाका लूटा हुआ खज़ाना और देवालयोंकी धनराशि बहुत ढूँढी, थलपर, जलमे, पर हाथ बहुत थोडा लगा। फिर भी समूचे खजानेका पाँचवाँ हिस्सा उसने इसलिए छिपा रखा था कि यदि कभी वह स्पेनके राजाके कोपका भाजन बना तो उसी धनसे अपने जानकी क़ीमत चुकायेगा। वह धनराशि उसने जहाज़से स्पेन भेजी। पर समुद्रमे तब डाके-ज़नी बेइन्तेहा होती थी और फ़्रान्सीसी डाकू-जहाज़ोंने छापे मारकर कोर्तिज़-की स्पेनको भेजी धनराशि छीन ली। मोस्तेजूमाका ख़ज़ाना स्पेनके चार्ल्स प्रथमको भेजा गया था, मिला फ़्रान्सके फ़्रान्सिस प्रथमको!

■
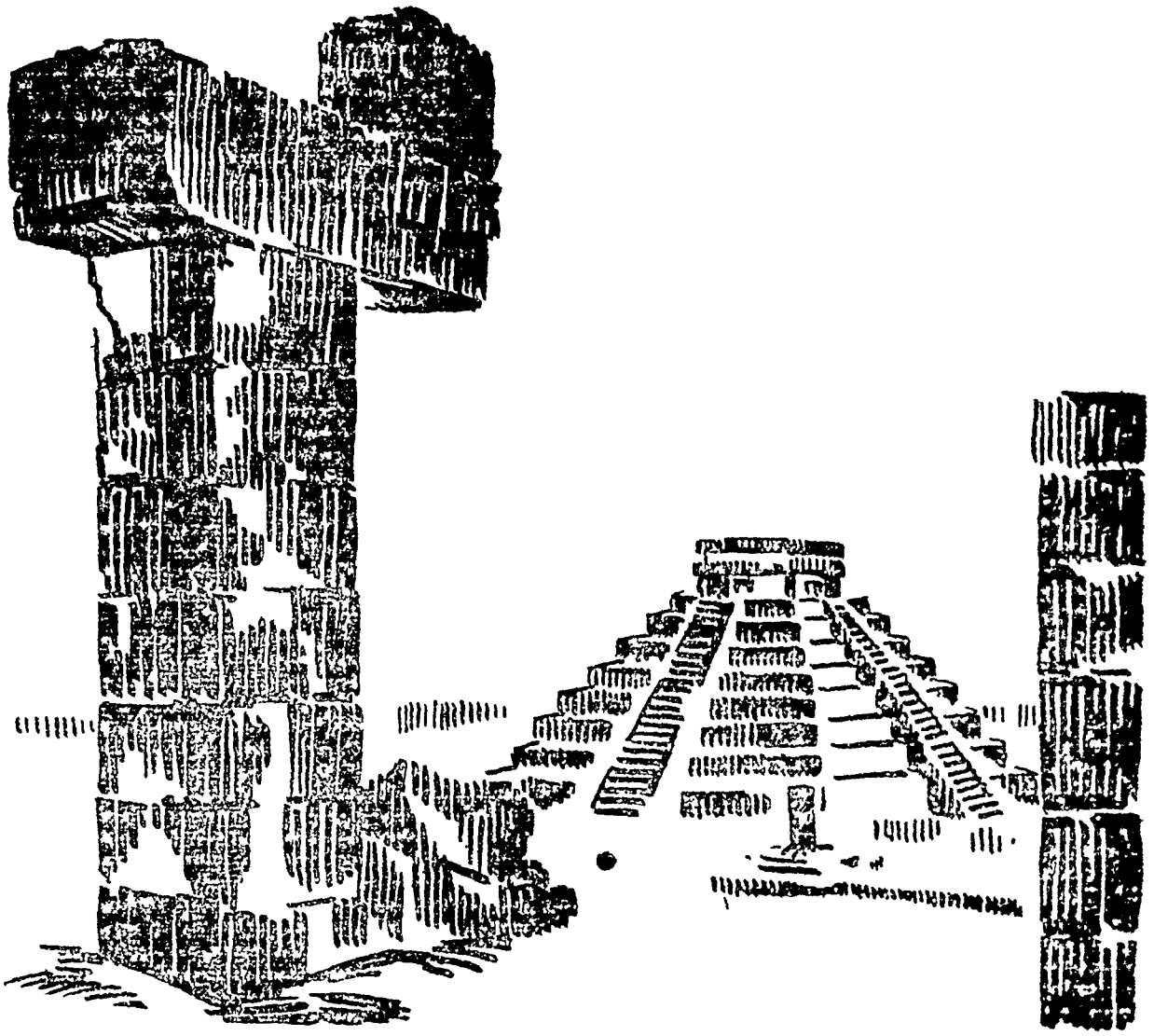
एक तरफ एक टूटा-सा खण्डहर था और सामने
था 'मिस्री पिरामिडों' की शक्लका मन्दिर :
इसे खोजने निकला था रॉम्सन

नरबलिका कुआँ

आपने क्या ऐसे कुएँका ज़िक्र पढा है जो नरबलिके आहारसे ही सन्तुष्ट होता रहा हो ? पुरातत्त्वने एक ऐसा कुआँ मध्य अमेरिकाके युकातान प्रदेशके मय-सभ्यताके गढ चिचेन-इत्ज़ामे खोद निकाला है। पढिए वह लोमहर्षक बयान।

स्पेनकी राजधानी माद्रिदमे १८६३ मे एक डायरी मिली। डायरी युकातानके आर्चबिशप दिएगो दे लान्दाने लिखी थी, प्राय: तीन सौ साल पहले, १५६६ मे। दे लान्दाने मय ख्यातोके आधारपर लिखा था –

'जब-जब देशमे अकाल पडता, उसपर संकट आता, तब-तब पुजारियो और साधारण जनताका, पातालके देवताओको प्रसन्न करनेके लिए, जुलूस निकलता। पुजारी कीमती और पवित्र चढावेकी वस्तुएँ लिये जाते और उन्हे बलिके कुएँमे झोक देते। चढावेकी इन पवित्र वस्तुओमे लावण्यवती सुन्दरियाँ होती, युद्धमे पकडे तरुण होते।'

फिग्ररोआका वृत्तान्त सुनिए–

'देशके स्वामियो और श्रीमानोकी रीति थी – साठ दिन संयमपूर्वक उपवास कर वे पौ फटते ही बलिके कुएँपर जा पहुँचते। फिर उनमें-से प्रत्येक स्वामी और श्रीमान् इण्डियन (रेड इण्डियन) जातिकी अपनी स्त्रियाँ कुएँमे यह कहकर डाल देते कि देवतासे माँगना कि स्वामीका साल उसके मनोरथोको पूरा करे।

'हाथ-पैरोसे निर्बन्ध नारियाँ धमाकेके साथ तेजीसे जलमे गिरती। अगले दोपहर उनमे-से जो चिल्लाकर पुकार सकती थी, पुकारती, और डोरें ऊपरसे उन तक लटका दी जाती। जब वे अधमरी ऊपर आती,

उनके चारो ओर अलाव जला दिये जाते, सुगन्धि द्रव्योका धुआँ कर दिया जाता। जब धीरे-धीरे वे होशमे आती तब कहती – नीचे हमारी जातिके अनेक लोग है, नर-नारी और उन्होने हमारा स्वागत किया था। और जब वे उन्हे देखने सिर ऊपर करती तब उनपर मार पडती, और जब चोटसे तिलमिलाकर वे अपने सिर नीचे झुकाती तब उन्हे लगता कि नीचे अतल गहराइयाँ और गढे दिखाई पड रहे है, और तब नीचेवाले लोग स्वामियोके वर्ष-फलके सम्बन्धमे उनके प्रश्नोके उत्तर देते।'

एडवर्ड हर्बर्ट टॉम्सनने लान्दाके लिखे ग्रन्थ पढे। कुएँकी कहानी पढ उसने औरोकी तरह उसपर अविश्वास नही किया। उसपर उसने ठीक वैसे ही विश्वास किया जैसे श्लीमानने होमरपर किया था और ठीक जैसे श्लीमानने उसी आधारसे त्राय-मिकीनीको खोद निकाला था, टॉम्सनने भी बिशप लान्दाकी कहानीके आधारपर बलिकूपको खोज निकाला।

तब टॉम्सन केवल १५ सालका था, १८८५ के साल, युकातानमे अमेरिकी दूतावासका कर्मचारी। छह साल पहलेसे ही वह पुरातात्त्विक विषयोपर लिखने लगा था। चला वह बलिकूपकी खोजमे।

पूर्णिमाकी रात थी, युकातानके जंगलपर चाँदी बरस रही थी। टॉम्सन घोडेपर चढा अपने इण्डियन गाइडके साथ मयोके नव-साम्राज्यके बीचसे प्रकृतिकी छटा निहारता चला जा रहा था। उसकी आँखें तो निश्चय खुली थी पर भीतर उसका मानस इतिहासकी मंजिलें तय करता जा रहा था। जिन मयोंकी राजधानीकी वह खोज करने चला था वे डेढ हजार पहले अपने नगर छोड उत्तरको ओर चले गये थे। उनका नव-साम्राज्य भी सदियो पहले स्पेनी सेनाओंके आक्रमणसे टूट चुका था।

टॉम्सन मयोके सबसे विपुल, सबसे सुन्दर, सबसे शक्तिमान्, सबसे वैभवशाली नगर चिचेन-इत्जाको खोज रहा था। दोनो जंगली राहकी हजार कठिनाइयाँ झेलते चले जा रहे थे, दोनोके घोडे अपने सवारोकी ही भाँति थकानसे चूर हो रहे थे। टॉम्सनका सिर थकानसे बेताब उसकी

छातीपर लुढका जा रहा था, और बार-बार जब उसका घोड़ा लड-खडाता, टॉम्सनको लगता, वह काठीसे नीचे लुढक पडेगा। तभी उसके गाइडने चिल्लाकर उसे पुकारा। टॉम्सनकी रगोंमे जैसे बिजली दौड गयी, सिर सहसा छातीसे उठा और आँखें सामनेके दृश्यपर गड़ गयी – सामने परियोंका अखाडा साक्षात् खडा था।

पेडोंकी गहरी फुनगियोंके ऊपर पीछे टीला था, सीधा ऊँचा। उसके शिखरपर खडा मन्दिर शीतल चाँदनीमे नहा रहा था। रात्रिकी अनिर्वचनीय नीरवताने वृक्षोंसे छिपे, शिखरसे प्रकट मन्दिर अपने वातावरणसे उदासीन इन्द्रजालके प्रभावसे जैसे अवाक् कर दिये थे। गाइड घोडेसे उतरा, घोडेकी पीठसे ज़ीन हटायी और सोनेके लिए ज़मीनपर कम्बल फैला दिया। पर टॉम्सनकी आँखें तो जैसे जादूसे सामनेके दृश्यपर जड गयी थी, न हटी। जो वह अबतक खोज रहा था आज उसने पाया।

गाइडने जमीनपर उसका बिस्तर लगा दिया। पर टॉम्सन उछलकर घोडेकी पीठसे नीचे आया। पैदल आगे बढा। सीढियोंकी ऊँची खडी चढाईपर घनी घास और झाडियाँ उग आयी थी। सीढियाँ जो ऊपर मन्दिर तक चली गयी थी, कालके क्रूर प्रहारसे जहाँ-तहाँ टूट गयी थी। मन्दिरकी इमारतका वास्तु टॉम्सनका अजाना न था, मिस्री पिरामिडोंकी-सी उसकी शक्ल थी। पिरामिडोंके प्रयोजनसे भी वह अवगत था, पर मयोंके पिरामिड मिस्रियोंके पिरामिडोंसे भिन्न थे, मृतकोंकी समाधि न थे। बाहरसे वे बाबुलियोंके ठोस मन्दिर ज़िग्गूरतोंका आभास उत्पन्न करते, पर वस्तुतः थे वे उनसे भी भिन्न – सीढियोंकी ठोस पुश्ते उनके पत्थरोंसे भरी बनी थी और सीढियाँ सूर्य और चन्द्र देवकी ओर ऊपर उठती चली गयी थी।

टॉम्सनने आँख-भर उस चाँदनीसे धुली चुपचाप खड़ी इमारतको क्षण-भर देखा, फिर वह सीढियोंसे ऊपर चढ़ चला। गाइडको वह भूल

गया, घोडेको भूल गया, जंगल और बीचकी रातको भी। सोपान मार्गके सिरेपर, जगलके विशाल तरुओंके शिखरके ऊपर वह जा खडा हुआ। उच्चतम तरुशिखर उससे करीब १०० फुट नीचे था। धीरे धीरे उसने छायामें एक-एक कर छह इमारतें गिनी। पेडोंकी हिलती डालियोंकी छायामें झिलमिलाती चाँदनीके छिटपुट प्रकाशमें रह-रहकर इमारतें सहसा दिख जाती, फिर खो जाती। और जब तरुशाखाओंपर पेंग भरती पत्तियोंसे छनी चाँदनी इमारतोंकी शिलाओंपर पडती, शिलाएँ चमक उठतीं। अनुसन्धाता मानवका मानस भाव-तरंगपर लहरा उठता। अवाक् था आकाश, अवाक् धरा, अवाक् मन्दिर, अवाक् पर भाव-बोझिल था वह चकित मानव।

सो यही चिचेन-इत्जा था, मयोंके नव-साम्राज्यका सदियों पूर्व छोडा शालीन नगर। उस साम्राज्यका हृदय रहा था वह नगर, उसकी राजधानी। टॉम्सन दिनों वहाँ फिरता रहा, ऊपर-नीचे। एक दिन प्रात वह मन्दिरकी छतपर जा खडा हुआ। पौ फट रही थी, प्राची गगनपर बालारुणकी फूटती किरणें क्षितिजको लाल रँगती चली जा रही थीं। प्रातःवेला नीरव थी, गरिम गम्भीर। रातकी डरावनी रहस्यमयी वन्य-ध्वनि शान्त हो चुकी थी, दिनका कण्ठ अभी फूटा न था। लगता था जैसे ऊपरका आकाश और नीचेकी धरती – दोनों निःशब्द निस्पन्द किसी होनीकी प्रतीक्षामें दम साधे खडे हैं। और तभी थाल-सा बडा सूरजका गोला, दमकता पावक पुंज, उठा और जैसे समूचे पूर्वी क्षितिजपर छा दिगन्तोंमें प्रकाशके पैने तीर मार चला। चराचर जगकर गा उठा, वनके विभिन्न स्वर समवेत फूट पडे। तरुओंके पक्षी और भूमिके पक्षधर कीट समस्वर हुए। प्रकृतिने आदिम मानवको पहले सूर्यके ही प्रतापका राज बताया था, पहला मानव सूर्यका ही उपासक था, जैसे आज भी उसका अन्त उस अग्निपुंजके दूर स्पर्शसे भासमान उल्लसित हो उठता है। टॉम्सनपर सूर्यका अनादि प्राचीन वैभव भरपूर बरस पड़ा।

वह खड़ा रहा, जहाँ खडा था—निस्पन्द, मन्त्रजड। जंगल उसकी आँखोसे ओझल हो गया, सामनेका दृश्य परे हट इन्द्रियोसे अगोचर हो गया। धीरे-धीरे सदियाँ कालके प्रसारसे सरककर खो गयी और उनके परेका विगत ससार दृष्टिपथपर साक्षात् उठ आया। टॉम्सनने देखा – दूरसे आता हुआ जुलूस मन्दिर तक आकर रुका। बाजे बज उठे, भवन आनन्द ध्वनिसे आपूरित हो उठे, धार्मिक स्तवनोसे मन्दिरके अन्तर गूँज उठे। जंगलके छोरोसे टकराकर वे आवाज़े उसे प्रतिध्वनित करने लगी, उन आवाज़ोमे-से एक-एकको पहचाननेका टॉम्सन प्रयत्न करने लगा। सहसा उसका स्वप्न टूटा, कल्पनाका परदा उठ गया, अतीतका संसार फिर आँखोसे ओझल हो गया। पुराविद्ने कर्त्तव्य पहचाना। सामने जंगलकी हरियालीको बेधती चली गयी पतली पगडण्डोको उसने ऊपरसे देखा, झिलमिल चाँदनीमे धुँधली दिखती। सम्भवत वही पगडण्डो चिचेन-इत्ज़ाके पवित्र बलिकूपको जाती हो, उसने सोचा।

वही पगडण्डी चिचेन-इत्ज़ाके पवित्र बलिकूपको जाती थी। टॉम्सन रातमे राह खोजता, राह बनाता बलिकूप तक जा पहुँचा। पिरामिडों और मन्दिरो, चिचेन-इत्जाके वैभवशाली नगरके अभिराम मन्त्रपूत भवनोसे कहीं आकर्षक उसके लिए वह बलिकूप रहा था। जा पहुँचा वह उसके मुँहपर। गहरा काला गर्त, गँदले जल, टूटती-गलती डालियो, शिला-खण्डोसे भरा कुआँ।

ख़ूनी कुआँ। टॉम्सन सोचने लगा – मन्त्रपूत, क्रियानुष्ठानपूत युवा-युवतियाँ पुनीत चढावोके साथ, पुजारियोके सामने धीर गम्भीर गतिसे चुपचाप मथित अन्तर लिये वहाँ पहुँचती। नवपरिधानो सजी, नवभूषणों मण्डित वे उस कूपमे धकेल दी जातीं, देवताको बलि कर दी जाती। नीचेके जलसे टकरा-टकराकर उनकी आवाजें कुएँमे गूँजती, फिर चुप हो जाती। उनके पीछे चढ़ानेकी वस्तुएँ गिरती और पातालका देव प्रसन्न सन्तुष्ट हो उठता।

टॉम्सनने पढा था, यदि मयोके देशमे कही सोना था तो इसी कुएँमे था, जो सदियों उसमे फेंका जाकर एकत्र होता रहा था। उस कुएँके तल तक जाना होगा, टॉम्सनने निश्चय किया। पर निस्सन्देह उस सोनेके लिए नही, उस रहस्यकी गाँठ खोलनेके लिए जिसकी तहमे मानव रक्तका प्यासा दैत्य बैठा था।

पर उसकी तह तक पहुँचना आसान न था, जानकी बाजी लगानी थी। पर जानकी बाजी लगाना टॉम्सनको मंजूर था। वह चुपचाप अपनी राह गुनता लौट गया। सालो बाद वह फिर लौटा। डौल कुछ बैठा नही, वह अभी तैयार न था। जरूरत रुपयोकी थी और उसके पास सिवा अपनी छोटी नौकरीकी मासिक आयसे बचाये कुछ डॉलरोके, एक धेला न था। फिर जरूरत उसीके साथ जानकी बाजी लगा देनेवाले साथियोकी भी थी जिन्हें अभी उसे खोजना था।

वह युकातान मेक्सिकोसे संयुक्त राज्य अमेरिका लौटा। वहाँ उसने विज्ञानके सम्मेलनमे भाग लिया, लोगोसे बलिकूपका ज़िक्र किया। लोगोने उसे पागल कहा, पागलने अपनी राह ली, लोगोने अलग! उसने जाना उसे रुपये चाहिए, गोताखोर चाहिए, गोताखोरोके साजो-सामान चाहिए। रुपये उसे मिल गये, गोताखोरोके सामान उसने खरीद लिये। पर मित्रोने कहा – "देखो, पागल न बनो। उस अथाह जलके भयानक गर्तमे डूबकर मनुष्य फिर ज़िन्दा वापस नही लौटनेका। और अगर तुम आत्मघात करनेपर ही तुल गये हो तो उसके लिए कोई दूसरा, कोई कम भीषण, तरीका ढूँढो।" टॉम्सन लिखता है, "अब मेरा नया कदम था बोस्टन जाकर गोताखोरी सीखना, गहरे समुद्री पनडुब्बोका हुनर साध लेना। कैप्टन एफ्रैम निकर्सनको मैने अपना शिक्षक बनाया, जिन्हें गोताखोरीका सालोका अनुभव प्राप्त था। उनके विशिष्ट धीर शिक्षणसे मै एक हद तक गोताखोर बन गया यद्यपि उसमे मुझे कोई खास महारत न मिली। इसका राज़ कुछ काल बाद खुला।"

टॉम्सनको डुब्बीके साजो-सामान तैयार करने थे। साजो-सामान उसने तैयार कर लिये। मिट्टी खोदने-खरोचनेवाले यन्त्र, मिट्टी-पानी फेंकनेवाली छोटी मशीनें, लोहेके जाल, स्टीलके तार और मजबूत रस्सियाँ, कामकी सारी चीज़ें उसने एकत्र की। उन्हे कार्यस्थलपर भेजनेका समुचित प्रबन्ध कर टॉम्सन अपनेसे ही जानपर खेल जानेवाले मित्रोंको ले फिर युकातानकी ओर चला और कुछ ही मंजिलें पार वह उस कुएँके मुँहपर जा पहुँचा जो सदियों कभी इनसानकी सुन्दर जानोंका भूखा रहा था। पर वे जानें मजबूर रही थीं। अब टॉम्सनके साथ जो जानें वहाँ जा खड़ी हुईं वे स्वतः उसके रहस्यका भण्डाफोड करने आयी थीं।

■

बलि-कूपके

कंकाल

जबसे टॉम्सनने बलिकूपमें घुसनेकी घोषणा की थी, युरोप और अमेरिका-के पुराविदोंमें एक सनसनी फैल गयी थी। मिस्र, ईराक और विशेषकर त्राय-मिकीनोकी खुदाइयोंने जो अविश्वासी पण्डितोंके अविश्वासका खण्डन कर अपनी उगली बहुमूल्य सम्पदासे उन्हें हैरतमें डाल दिया था, इससे इस खोजकी सम्भावनाओंसे भी उनमें सनसनी फैल जाना स्वाभाविक था। सभी उत्कण्ठित हो चिचेन-इत्ज़ाकी ओर देख रहे थे, पर उनसे कहीं बढ़कर उत्कण्ठा स्वयं टॉम्सनको थी।

टॉम्सन आवश्यक औजारों-मशीनोंसे लैस पनडुब्बो-मज़दूरोंको लिये पवित्र बलिकूपके मुँहपर जा खड़ा हुआ। सभी साथी यद्यपि उत्साहसे भरे थे, उनमें शंकाओंकी भी कमी न थी। और शंकाओंसे कहीं अधिक उनमें डरने घर कर लिया था। जो कुएँके तलमें नीचे उतरेंगे, उनमें-से कौन लौटेगा, कौन कूप-दानवका आहार बनेगा, सभीको इसकी चिन्ता थी। इस चिन्तासे मुक्त बस एक व्यक्ति था—टॉम्सन। न केवल वह इस चिन्तासे मुक्त था, उसकी प्रत्येक शिरा नीचे उतरनेको उत्सुक थरथरा रही थी।

इसी स्थितिमें बलिकूपकी वह गहराई नापने लोग उसके मुँहपर खड़े थे जिसमें एक बार उतर जानेपर कोई कभी लौट नहीं सका था। कुआँ, जहाँ उसकी चौड़ाई सबसे ज्यादा थी, आर-पार कोई १८७ फुट था। राँगेका गोला फेंककर कुएँके पानीकी गहराई आँक ली गयी। करीब ८० फुट थी। अब टॉम्सनने लकड़ीके कुन्दोंके बने आदमी रस्सोंसे बाँध प्रायः उसी विधि और वेगसे कुएँके जलमें फेंके जिसे विधि और वेगसे अनुमानतः

कुएँके देवकी पत्निया बननेके लिए युवतियाँ फेंकी गयी होंगी। इससे, रस्सोकी दूरी नापकर, फेंकी गयी दूरीका अटकल लगा लिया गया। बात साधारण थी – कुएँके तलके उस स्थलका अन्दाज करना था जहाँ खोज की जाती। यह अन्दाज लगते ही टॉम्पसन अपनी मशीनोंको ले काममें जुटा।

"मुझे सन्देह है," वह लिखता है, "कि कोई मेरी तबकी खुशीका अन्दाज लगा सकेगा जब चार आदमी यन्त्रकी मूँठोंपर लगे, क्रेकपर लगा एक और यन्त्र अपना फौलादी मुँह बाये सहसा चबूतरेसे उठा, क्षण-भर कुएँके मुँहके ऊपर हवामें झूला, फिर बड़ी तेजीसे नीचे गिरा और स्थिर काले जलमें साफ जा डूबा। इसलिए कि उसकी तेज बड़ी दाँतीं जलके नीचेकी जमावटमें भरपूर चुभ जाय, यन्त्रको कुछ क्षण स्थिर छोड़ दिया गया। फिर तो मजदूरोंकी शिराएँ हिल उठीं और जिस रफ्तारसे वे कसने और ढीली होने लगीं उसी रफ्तारसे यन्त्र अपना सदियोंका भार लिये ऊपर उठने लगा। लोहेके निरन्तर कसते जाते तार इसके गवाह थे।

"अभीतक नीचेका जल दरपन-सा स्थिर था, अब वह हिलने और तारोंके चारों ओर खौलने लगा और उसकी यही स्थिति तबतक बनी रही जबतक कि बाल्टी यन्त्रकी दाँतोंपर जबड़े भींचे, साफ जलकी बूँदें टपकाती धीरे-धीरे कुएँकी जगत् तक नहीं आ गयी। यन्त्रकी बाल्टीने ऊपर बने तख्तके प्लेटफॉर्मपर साथ लायी चीजें उलट दीं – सेंवेका समूचा भार – भूरा बोझ गली लकड़ी, सड़ी पत्तियाँ, टूटी डालियाँ, मलबा। और तब यन्त्र फिर ऊपर उठा, दूसरा खेप लाने डूबनेके लिए···अपनी दाँतीमें भार भींचे फिर जब मशीन ऊपर आया तब इस बार वह पेड़का एक तना साथ लाया, डाली इतनी मजबूत कि लगा जैसे तूफानसे टूटकर अभी कल ही कुएँमें गिरी हो। यह बात शनिवारकी थी। सोमवार तक पेड़का वह तना गायब हो चुका था, उसकी जगह गहरे काले धब्बे-से घिरे कुछ रेशे पड़े थे (बीचका शेष रासायनिक प्रक्रियासे उड़ चुका था) दूसरी बार मशीन लकड़बग्घे और हिरनके पंजर लिये लौटी। जाहिर था

कि हिरन भागता और लकड़बग्घा उसका पीछा करता, दोनों कुएँमे जा गिरे थे।"

दिन बीतते गये, मशीन दाँतोमे भरे भार नित्य लाती रही, पेडोकी डालियाँ, शिलाएँ, जानवरोके पंजर। कुएँकी जगत्के चारो ओर मलवेके टीले खडे हो गये, उनसे दुर्गन्ध निकलने लगी। टॉमसन लिखता है, "मेरी हालत बुरी थी, दिन चिन्तासे कटते, राते उनीदी। क्या यह सम्भव है, मैं अपनेसे पूछता, कि मैंने अपने दोस्तोका धन व्यर्थ बहाया है और कही मुझे दुनियामे हँसीका पात्र न बनना पडे। लोग पूछेंगे, आखिर ये तो मात्र परम्परया प्रचलित कहानियाँ थी, ऐतिहासिकतासे निःस्सार, मैंने उनपर विश्वास क्यो किया ?"

और फिर एक दिन टॉम्सनको कुछ मिला — पीले-सफेद रंगके गोदके लोंदे। टॉम्सनने उन्हे सूँघा, चखा भी। एकाएक उसे सूझा, क्यो न गोदका लादा वह आगपर रखकर देखे। एक उठाकर उसने आगपर रख दिया। धुआँ उठा और सुगन्ध चारो ओर फैल गयी। पा लिया सुराग टॉम्सनने, गोदके लोदे सुगन्धित द्रव्योंके थे जो देवताओकी पूजा, बलिके समय जलाये जाते थे। टॉम्सनको लगा उसकी मेहनत बेकार नही जायेगी, वह गुमराह नही था। "हफ्तोमे पहली बार", वह लिखता है, "उस रात मै सोया, गहरी लम्बी नीद।"

घटते हुए विश्वासपर टॉम्सनने विजय पा ली। एक-एक कर खज़ानेकी अनमोल चीजे ऊपर आने लगी। तबके औजार, गहने, भाँडे, बरतन, तीर और बर्छे, छुरियाँ, वैदूर्यके बने कटोरे। फिर वह चीज़ ऊपर उठी, यन्त्रकी दाँती पकडे, मानव अस्थिपंजर, निस्सन्देह दियेगो दे लान्दाने झूठ नही कहा था।

फिर उसे फिगुरोआका वृत्तान्त याद आया — "हाथ पैरोसे निर्बन्ध नारियाँ धमाकेके साथ तेज़ीसे जलमे गिरतीं। अगली दोपहर उनमे-से जो चिल्लाकर पुकार सकती थी, पुकारती और डोरें ऊपरसे उन तक लटका

दी जाती। जब वे अधमरी ऊपर आती, उनके चारो ओर अलाव जला दिये जाते, सुगन्धित द्रव्योका धुआँ कर दिया जाता। जब धीरे-धीरे वे होशमे आती तब कहती – नीचे हमारी जातिके अनेक लोग है, नर-नारी, और उन्होने हमारा स्वागत किया था। और जब वे उन्हे देखनेको सिर ऊपर करती तब उनपर मार पडती, और जब चोटसे तिलमिलाकर अपने सिर नीचे झुकाती, तब उन्हें लगता कि नीचे अतल गहराइयाँ और गढे दिखाई पड रहे है, और तब नीचेवाले लोग स्वामियोके वर्षफलके सम्बन्धमे उनके प्रश्नोके उत्तर देते।''

फिगुरोआने भी झूठ नही कहा था, उसकी सच्चाई भी सिद्ध हो गयी। टॉम्सन उस यन्त्रपर साठ फुट नीचे लटका बैठा था। उसने जो नीचे देखा तो सहसा चौंक उठा। उसे गहराइयों और गढोका भेद मालूम हो गया। बलिकूपका जल गहरा मैला था। रह-रहकर उसका रंग भूरेसे हरा, कभी-कभी लाल भी हो जाया करता, फिर भी उसमे रंग प्रतिबिम्बित होते रहते थे। एक बार ऊपर देखकर टॉम्सनने जो नीचे जलकी सतहपर देखा तो काली गहराइयाँ और बड़े-बड़े गढे दिखाई पड़े। वास्तवमें वे कुएँके तीरकी चट्टानोके गढ़ोके प्रतिबिम्ब थे और जल बिलकुल फोटोग्राफीके निगेटिवका काम कर रहा था।

यह तो हुई कुएँमे उतरनेकी भूमिका, अब सदियो पहले बलि चढे चराचरसे सम्पर्ककी कहानी सुनिए। टॉम्सनको अब कुएँके सदियो पुराने जलमें डूबकर तह तक पता लगाना था और उस काममें अपनी मददके लिए उसने एक ग्रीक गोताखोर चुन लिया था। गोताखोर निकोलस बहामासे स्पज इकट्ठा किया करता था और अब वह अपने दूसरे सहकारीके साथ बलिकूपके मुँहपर टॉम्सनके बराबर आ खड़ा हुआ था। कुछ इण्डियन मजूर पम्प और ट्यूब चलानेके काममे अभ्यस्त कर दिये गये और उन्हें पनडुब्बोकी पोशाकके नीचे हवा पहुँचानेका काम सौंप दिया गया। यह काम कितनी जिम्मेदारीका था, यह कहनेकी आवश्यकता

नहीं, टॉम्सन और उसके सहकारी ग्रीक गोताखोरोंका जीवन उन्हींपर निर्भर करता था।

टॉम्सन और निकोलस कुएँके जलमें उतरनेवाली मशीनमे जा चढे और दूसरा ग्रीक गोताखोर मजदूरोके साथ उन्हें पम्प करनेपर मुस्तैद रख उन्हीके पास खडा हो गया। इधर टॉम्सन और निकोलस गोताखोरी-का लिबास पहनने लगे। वाटरप्रूफ कनवसका उन्होने सूट पहना और ऊँचा ताँबेका बना टोप, जो आधे मनसे कुछ ही कम वजनका था, आँखो-के ऊपर प्लेट-काँचके गागॅल-चश्मे चढाये और कानोमे हवाकी सँभालके लिए कनौटे, गलेमे आठ-आठ सेर भारी राँगेके हार और लोहेके मोटे तलेवाले ऊपरसे कैन्वसके बने जूते पहने। बोलनेके लिए मुँहमे नली लगायी, साँस लेनेके लिए क्यूब फिर सहकारीको सहायतासे रस्सीको नीचे लटकी हुई सीढी पकडी और इस प्रकार टॉम्सन नीचे उतरा। लिबास इतना भारी इसलिए बना था कि पानी पहननेवालेको ऊपर न फेंक दे और धातुका भार पानीकी तहमे जमीनपर चलनेमे उसे सहायक हो सके। टॉम्सन लिखता है, "जब मै सीढीके पहले पावदानपर उतरा, पम्प करनेवाले सब मजदूर अपनी जगह छोड गम्भीर चेहरा बनाये मेरे पास आ पहुँचे और एक-एक मुझसे हाथ मिलाकर अपनी जगहपर लौट गया। चुपचाप उन इशारोपर काम करनेके लिए जिनपर न केवल हमारी ज़िन्दगी बल्कि समूचे प्रयासकी सफलता निर्भर करती थी। उन्हें डर था कि शायद मै अब लौटूँ ही नही, कि मेरी उनसे यह आखिरी मुलाकात थी, और कि वे मुझे अन्तिम बिदा दे रहे थे। तब मैने सीढी छोड़ दी और राँगेकी थैलेकी तरह पीछे बुलबुलोकी चाँदवी जंजीर छोड पानीमें डूब गया।

"पानीमे पहले दस फुट उतरते समय हलकी पीली किरने पहले हरी हुई फिर बैंजनी-काली। उसके बाद मेरे सामने बिलकुल अँधेरा छा गया। कानोमे बेहद चुभन होने लगी, कारण कि हवाका दबाव बढ चला था।

जब मैंने टोपके वायुद्वार खोल दिये तब दोनो कानोमे फट्-फट्की आवाज़ हुई और दर्द बन्द हो गया। तलेपर पहुँचकर खडे होनेके पहले मुझे यह प्रक्रिया अनेक बार करनी पडी। नीचे उतरते मुझे एक और अनोखा अनुभव हुआ। लगा कि मै निरन्तर तेज़ीसे वजन खोता चला जा रहा हूँ, और जब मैं ऊपरसे ढूँढकर गिरे खम्भेपर खडा हुआ तो जान पडा कि मुझमे जरा भी वज़न नही। मुझे जरा भो नही लगा कि मै भारी वज़नसे जकडा हुआ इनसान हूँ, मुझे मेरी हकीकत बिलकुल बुलबुलो-सी जान पडी।

"पर मुझे इस बातसे अनोखी खुशी हुई कि मै पहला इनसान था जो जिन्दा नोचे पहुँचा था और पहला इनसान हूँगा जो जिन्दा ऊपर आयेगा। और तभी ग्रीक गोताखोर निकोलस ऊपरसे मेरे पास आ पहुँचा, और हम दोनोने हाथ मिलाये।"

टॉम्सन पनडुब्बी जहाजका एक फ्लैशलाइट और एक टेलीफोन भी साथ ले गया था। फ्लैशलाइट साफ या गँदले पानीके भीतर काम करता था, पर जिस तरहके जलमे उसे काम करना था वह न तो पानी था न पंक, बल्कि दोनोका मिश्रण था जिसे उनके मशीनने हिलोर दिया था। फ़्लैशलाइट उसमे बेकार हो गया था। पर उन्हे उससे कोई परेशानी नही हुई, क्योकि, जैसा टॉम्सन लिखता है, उँगलियोके दस्तानोसे न केवल छूनेसे वस्तुओको पहचान हो जाती थी बल्कि रंगो तकका अन्दाज़ लग जाता था। टेलीफोनसे भी कुछ लाभ न हुआ और उसे भी उन्हे अलग कर देना पडा। वाक्-नली और जीवन-रेखा-द्वारा अपनी बात कही अधिक आसानीसे समझायी जा सकती थी। एक और अनोखी बातका टॉम्सनको पता चला जिसकी किसी गोताखोरने चर्चा नही की थी। टॉम्सन और निकोलस बढकर अपने टोपोकी नाके सटाकर बात कर लेते थे और बात आसानीसे एक-दूसरेकी समझमे आ जाती थी। उनकी आवाजें ज़रूर बेजान लगती थी जैसे बहुत दूरसे आ रही हो, फिर भी

दोनो बातचीत भलीभाँति कर लेते थे ।

भारका अभाव अकसर उन्हे उपहासास्पद बना देता था । एक जगहसे दूसरी जगह जानेके लिए उन्हे सिर्फ खडे होकर चट्टानो भूतलको पैरोसे ठेल देना पडता था और तत्काल वे रॉकेटकी तरह ऊपर उठते, पानी मिली कीचडमे शालीनतासे तिर चलते और जहाँ जाना चाहते थे उससे कई फुट आगे लॉघ जाते । पानीकी सतहसे सत्तर-अस्सी फुट नीचेकी यह कैफियत होगी, उन्हे गुमान भी न हो सकता था । उनकी स्थिति ग्रहमार्गमे रॉकेटमे उडनेवाले आजके वैज्ञानिक गगनचारियोकी हो गयी थी, वज़नके अभावके कारण ।

कुएँकी गहराईमे जहाँ जल या जलमिश्रित कीचड खतम हो गयी थी उसके नीचे केवल पंक था जिसमे ऊपरसे गिरी चट्टानें, इमारतोसे टूटे खम्भे, पेडोके तने गिरकर जम गये थे । अकसर कुएँकी दीवारोके सहारे खडी चट्टाने नीचे लुढक पडती, अगर वे उन दीवारोसे लगे खडे होते तो निश्चय ही दो टूक हो जाते, पर पानीके बीच और साठ-सत्तर फ़ुट नीचे होनेके कारण उनपर कोई असर न होता क्योकि बदन तक चट्टानके पहुँचनेसे पहले पानीका दबाव उन तक पहुँचता और चट्टानकी चोट ऐसी लगती जैसे नरम भारी कुशनकी चोट । और वे सिर नीचे पैर ऊपर, उलटते-पुलटते अन्यत्र जा पडते और उलटकर पैरोपर हँसते खड़े हो जाते ।

टॉम्सन लिखता है, "कभी मेरा वहाँ सर्प या अजगरसे मुकाबला नही हुआ पर एक अनुभव मुझे अवश्य ऐसा हुआ जिसका मै उल्लेख कर देना चाहूँगा । मै और ग्रीक गोताखोर दोनो तलेकी एक तग बिल उँगलियोसे खोद रहे थे और उससे कुछ ऐसी चीजें मिलनेकी आशा हो रही थी कि हम लोग आवश्यक सावधानी बरतना भूल गये । सहसा मुझे लगा कि कोई बेहद भारी चीज मुझे दबाये जा रही है, कोई बडी चिकनी चीज चुपचाप धीरे-धीरे मुझे नीचे घसीटे लिये जा रही है । पल-भर लगा जैसे

मेरा खून जम गया। तभी मैंने देखा मेरा ग्रीक बन्धु मेरे ऊपरकी चीज-को ठेले जा रहा है। मैंने स्वयं उसे ठेलनेमे उसको मदद की और हम दोनो उस खतरेको पार कर गये। वह पेडका गलता हुआ तना था और उसकी निचली राहमे मै आ पडा था।"

एक दिन जब टॉम्सन पानीके नीचे तलेमे चट्टानपर बैठा वहाँ मिली धातुकी एक घण्टीको प्रसन्नतापूर्वक निहार रहा था, उसने घुटने बदलने चाहे कि वह यकायक ऊपर उठ चला, तिरता, जो बड़े खतरेकी बात हुई। बात यह थी कि ऐसेमे जलकी इतनी गहराईमे यकायक ऊपर उठनेसे रक्तमे जोरसे बुलबुले उठने लगते है जिससे 'बेण्ड' नामकी एक बीमारी हो जाती है और आदमी दर्दसे तड़प-तड़पकर मर जाता है। इसकी दवा बस एक ही है, हवाका 'वाल्व' खोल लेना। टॉम्सनने ऊपर आते समय तेज़ीसे 'वाल्व' खोल जरूर लिया पर इतनी तेज़ीसे नही जितनी चाहिए थी और उसके कानोके ड्रम फट गये जिससे जिन्दगी-भर वह सुननेसे लाचार रहा।

'वाल्व' खोल लेनेपर भी वह उलटता-पुलटता ऊपर आया और लटके तख्तेके निचले हिस्सेसे जा टकराया। और यह सोचकर, टॉम्सन लिखता है: "हँसते हुए कि तख्तेके तले पैर टकरानेकी आवाज सुनकर ऊपर-के साथी मेरी मृत्युके भयसे घबरा उठेंगे, मै तख्तेके नीचेसे अपनेको खीचे ऊपरकी ओर उठा, और जैसे ही मेरा टोप जलके ऊपर आया, दो बाँहें मेरी गरदनमे पड़ी और घबरायी हुई आँखे मेरे गागॅल-चश्मेके भीतर मेरी आँखोमे झाँकने लगी। जब ऊपर आकर स्वस्थ होकर गोताखोरीका लिबास उतार चाय लेकर बैठा तब निकोलसने मुझे बताया कि कैसे सारे मजदूर डरसे पीले पड गये थे, कि आज्ञाकारी जुआन मिसने कहा था कि अब कुछ किये न होगा, स्वामीको सर्पदेवता निगल गया। पर अब जो उसने मुझे हँसते हुए देखा तो सिरके ऊपर दोनो हाथ उठाकर कृतज्ञताके स्वरमे बोला – धन्यवाद भगवान्‌को, स्वामी जीवित है, हँस रहे है।"

पवित्र बलिकूपसे अनेक चीजें निकली – सोने, ताँबे, बिल्लौरकी चीज़े, ताँबे, पत्थर, लकड़ी आदिपर चढी, सोनेके पत्तरकी शक्लें। बिल्लौरकी छोटी-छोटी पुतलियाँ, अनन्त और सब टूटी हुई। प्राचीन एशियावासी, जैसे आजके मगोल भी, बिल्लौरको सजीव मानते थे, वैसे ही मय लोग भी बिल्लौरको जानदार मानते थे और पुतलियाँ – सोने ताँबे, बिल्लौर आदिकी – तोडकर कुएँमे डालनेका अर्थ वे यही समझते थे कि वे मर गयी और चढावे अथवा बलिमे मारी युवतियों या युवकोंकी आत्माकी सहचर हुई। इन चीज़ोके साथ ही बहुत-से तीर और तीर फेंकनेवाले यन्त्र मिले। इन मिली चीज़ोंका महत्त्व इतना कीमती होनेसे नही जितना प्रतीकतः महत्त्वपूर्ण होनेसे था। सोना तो इतना वहाँ मिला भी नही, यद्यपि टॉम्सनका कहना है कि तूतनखामनकी क़ब्रको छोड इतना सोना अन्यत्र कही नही मिला। उसके इस कूपसे मिली वस्तुओके प्रकाशित करते ही पुराविदोमे खलबली मच गयी। दे लान्दा और फिगुरोआकी कहानी सच हो गयी!

चिचेन इत्जाके उस पवित्र बलि-कूपमे सबसे अधिक महत्त्वकी मिली वस्तुओमे प्रधान नर-कंकाल थे जिनमे अधिक संख्या नारी अस्थि-पंजरोकी थी। और उनसे भी कही अधिक दिलचस्प एक खोपडी थी, बूढे मर्दकी खोपडी। बूढे आदमीका भोग कूपका देवता कभी स्वीकार नही करता था, इससे स्पष्ट है कि बूढे आदमीको कूपमे डाला जाना पुजारियोको सम्मत न रहा होगा। क्या यह सम्भव है कि कोई जवान मर्द या लडकी अपने भाग्यके साथ क्रूर पुरोहितोको भी एक झटकेमे बलिकूपके देवकी भेंटके लिए घसीटती चली गयी हो?

■

तख़्तेवाहीके महल

उत्तरमें बामियान और हिन्दूकुश, पूरबमे चित्राल – यही वह सप्तसिन्धु है जहाँ निषधकी ऊँचाइयोसे आर्योंके क़बीले उतरते चले आये थे। उन्होने अपनी उस हिन्दूकुशकी ऊँचाईसे, जो अभी हिन्दुओकी हत्याकी घाटी नही बना था, नीचेके हरे लहराते खेतोको देखा था और इस सोनेके देशके बदले अपने देवताओको बन्दगीमे वे ऋचाएँ गा उठे थे।

वह अब लमग़ान है, प्राचीन गन्धार, आजके पाकिस्तानका उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रान्त, जिसके पूरबसे पथरीली राहे एक ओर नदियोंके कूल पकडे ऊपर चढती सिन्धु और गिलगितकी ओर आसमान चूमती झेलमकी खुशनुमा घाटी कश्मीरमे उतर जाती है, दूसरी ओर बन्नू-कोहाट-की ओर मुड जाती है। दक्खिनकी राहे हिन्दुस्तानको रुख करती है। उत्तरकी पहाडी बर्फीली राहे पामीरोकी बगलगीर शहरमुजानकी गोमेदकी खानोकी ओर, बलख-बदख़्शाँकी ओर, बाबरी फरगनाके साये बहते आमू दरियाकी कछारमे उतर जाती है।

इसी लमगानमे, काबुल छिन जानेपर, साहियोने अपनी सेनाओके डेरे डाले थे और ताशकन्दी तुर्कोसे तलवारें नापी थी। जहाँकी फैली दाखकी लताओ, रुनझुन बजते बादामो-अखरोटोके मैदानोको छोड साहियो-की लाड़ली दिद्दा कश्मीरमे जा बसी थी, पहाडी रगोसे गाती धाराओका नूर बन गयी थी।

ठेठ गन्धार है यह लमगान, पुरखोके गन्धारका प्राय. केन्द्र, युसुफजई इलाकेका हृदय जहाँ शलातूर गाँवमे व्याडि और पाणिनिने कभी अपने व्याकरणोसे बाँधकर संस्कृतको देवभाषाकी मर्यादा दी थी। वही तख़्तेवाही-

के खण्डहर आज भी खड़े हैं, जिनकी नंगी दीवारें उस वियाबांमें बेरौनक नहीं, गैर इनसानी आवाज़ोंमें वे आज भी गुलज़ार हैं।

दोनी मरदानमें कोई नौ मील उत्तर अकेली पहाड़ीकी खड़ी चढ़ाईपर तख्तेबाहीके महलोंके खण्डहर हैं — पहाड़ीके मस्तकपर, मस्तककी चोटीपर, चूड़ामणिकी तरह दूर निकटकी चांगिर्दी पहाड़ी-मालाग घिरे। इन खण्डहरोंकी बोली बूझनेवालेको उस महलकी याद बरबस आ जायेगी जिसे सन्तने बनाया था; तब पह्लवोंका राजा गुदफ़र (गोन्दोफेरीज, गोन्दाफर्नीज) गन्धारमें यवन-ग्रीकोंसे राजदण्ड छीन अपने प्रखर प्रतापसे तप रहा था।

सन्त गुदफ़रकी राजसभामें निःशंक जा पहुँचा। राजासे बोला — राजन्, महल नहीं बनाओगे? अभिराम प्रासाद जो शेबा और सुलेमान तकको नसीब न हुए?

"कौन हो, सन्त?" राजाने पूछा।

"अकिंचन मँगता सन्त, राजन्," सन्त बोला, "लक्ष स्वर्ण-मुद्राएँ दो, फिर अन्तिओकका असूरिया दमिश्कके अलभ्य महल खड़े कर दूँ।

राजा जानता था कि असुर मयने भारतमें दमिश्ककी ओरसे आकर अनुपम प्रासाद खड़े किये थे। सोचा, क्या अजब जो आगन्तुक सन्त उसी मेधाका धनी हो और मेरे लिए सुलेमानका भी अजाना महल बना दे। बोला — ले लो सन्त, लक्ष स्वर्ण-मुद्राएँ मेरे खजानेसे। खड़ा कर दो मेरे लिए अलभ्य महल।

और महल बनने लगा, स्वर्णके सिक्के खजानेसे तोडे भर-भर जाने लगे। अधीर राजा बार-बार पूछता — अब कितनी देर है? और सन्त पहाड़ीकी ओर सिक्कोंका दरिया बहाता कहता, अब बस छत पड रही है, खम्भे खडे हो चुके हैं, कलश-कँगूरे अब चमक उठनेवाले हैं। और एक दिन सन्तने राजाको सपरिवार आकर महल देख लेनेको कहा। राजा अपने परिवारके साथ आया, पहाड़ीकी चोटीकी छायामें खड़ा हुआ, जहाँ

अकिंचन सन्तकी अकिंचन गुफा थी, और भवोंमे बल डाले पूछ उठा– कहाँ है, सन्त, वह मेरा महल ? लाखो द्रख्मो, दीनारो, स्वर्णोंसे बना महल कहाँ है ? मै तो उसे यहाँ कही नही देखता ।

और सन्तने उत्तर दिया – "यहाँ नही राजन् । धूलमे उठे महलकी बिसात ही क्या ? वह तो देखते-ही-देखते मिट्टीमे मिल जाएगा । वह देखो स्वर्गमे बना अपना अक्षय महल जिसके पाये वे गरीब मँगते उठाये हुए हैं जो आनेवाले स्वर्गके दावेदार है, जिनमे तुम्हारे लक्ष-लक्ष दख्म-दीनर-सुवर्ण बाँट दिये गये थे ।" और सन्तने अपना हाथ आसमानकी ओर उठा दिया था ।

सन्त वह थामस (तोमस) था, ईसाका शिष्य, जो ईसाके जुरूसलम-मे गिलगोथाकी पहाडीपर हाथ-पैरो और दिलमे कील ठोककर सूली दे दिये जानेपर भारतकी ओर मसीहका सन्देश लिये स्वर्गके राज्यके प्रासाद खडे करने चल पडा था । पता नही राजा गुदफरने उसका क्या किया पर समाधि उसे मद्रासमे दी गयी जो आज भी वहाँ दिखायी जाती है ।

सन्त थामसका बनाया वह महल निश्चय ही तख्तेवाहीके खण्डहरोमें पुराविदोको नही मिला पर वह अभिलेख मिल गया जिसे राजा गुदफरने लगभग ४६ ई० मे खुदवाया था, जो आज भी लाहौरके सग्रहालयमे सुरक्षित है। और न केवल वह अभिलेख मिला वल्कि अनन्त बौद्ध भिक्षुओं-के लिए कुषाण कालमे बने विहार मिले । उनके खण्डर पर्वतके शिखर-पर मील-भरके परिमाणमे पूरबसे पश्चिम तक चले गये है । आज भी उनकी दीवारोकी ऊँचाई पचास फुटसे कम नही जो युगोकी उठती-गिरती सतहोपर विहार-दर-विहार उठती चली गयी है ।

तख्तेवाहीके फैले टीलोपर पहले-पहल सार्जेण्ट विल्चरने १८७१ मे हाथ लगाया । पर विशेष कुछ मिला नही यद्यपि नगी जमीन ऊपर उभर आयी । फिर फूशे और स्पूनरके अभियानने तख्तेवाहीके विहारोका उद्धार किया । डो० बो० स्पूनरने १९०७ से १९०९ तक प्राय. तीन जाडोंमें

वहाँ खुदाई की और हज़ारों मूर्तियोंको सन्दूकोंमे भरकर लाहौर भेजा।

चारसद्दा (पुष्कलावती), शहरे-बहलोल, तक्षशिला और तख्तेवाही गान्धार कलाके उत्तम प्राप्ति-स्थल रहे हैं। पुराविद् खनकोंने कुदाल धरतीसे छुलायी कि धरतीने अपनी छाती फाड़ सदियों-सहस्राब्दियोंकी धरोहर उन्हें सौंप दी। धरतीका 'वसुधा' नाम उसकी इसी प्रक्रियासे सार्थक हुआ। प्याज़के-से उसके अर्धवृत्त टीले परत-परत भारतीय कलाकी अनन्त निधियाँ उगलते चले गये।

और यह गान्धार कला, ग्रीक और भारतीय संस्कृतियोंका एकत्र योग। जिन ग्रीकोंने पश्चिमी भारतपर ईसा-पूर्वसे ईसाके प्रादुर्भाव तक, प्राय दो सदियों राज किया, उन्होंने सभी प्रकार भारतीय राजनीतिको तो प्रभावित किया ही इस देशके ज्योतिष, सिक्कों और कलाको भी उन्होंने घनी मात्रामें सँवारा। प्रायः उन्हींके शासन कालमें, कुछ ही आगे-पीछे, बौद्ध धर्मके महायान सम्प्रदायका जन्म हुआ जब बौद्धोंने भी वैष्णवोंकी भक्ति-परम्परामे बुद्ध आदिकी मूर्त्तियाँ बनायीं।

बुद्धकी पहली मूर्ति, जो उपलब्ध है, इसी गान्धार कलाकी है। इसे स्वीकार करनेमें विशेष उदारताकी आवश्यकता नहीं कि पहली मूर्ति भारतीय ग्रीकोंने कोरी। बुद्धकी कोई अपनी समकालीन मूर्ति तो थी नहीं, महापुरुष-लक्षणोंसे युक्त जब गान्धार कलामें उनकी पहली मूर्ति बनी तब वही प्रमाण बन गयी और दीपसे दीप जलते गये, लौसे लौ, और बाहरकी स्थूलाकृति भीतरके भावोंसे मर्महर नये मानोंमें अनुप्राणित-प्रकाशित होती गयी।

गान्धार कला, ग्रीक छेनी और भारतीय विषयोंका समागम, ग्रीक शैली और तक्नीक, भारतीय चिन्तन और कथा, युरॅपीय आकृतियोंमें कोरे मानवाकार। ग्रीक छेनीसे उभारे बुद्धके जीवनके अनन्त दृश्य उत्तर-पश्चिमके उस गान्धार जनपदमें जनमते चले गये। गुप्त कलावन्तोंने ग्रीक कलावन्तोंकी बुद्ध और बोधिसत्त्व मूर्तियोंका वह मानवेतर मान तो

स्वीकार कर लिया पर उसके दर्शन उन्हे सुदर्शन न लगा। उन्होने उनके ऊपरसे ग्रीक दार्शनिकोके परिधान-जैसी चुन्नटें, लहरिया रूप, हटा दिया, उन्हे अपने गुप्तकलाके परिष्कृत साधु वैभवके अनुकूल ही सूक्ष्म वसनकी रेखासे आवृत किया, उनके युरँपीय बहिरंग भारतीय आकारसे साधे और गान्धार कला समुन्नत सुघड़ कुलीन गुप्तकला बन गयी।

तख्तेवाही उसी गान्धार कलाका केन्द्र बना। वही एक ऐतिहासिक कलाका प्राप्तिस्थान है जिसका प्राचीन नाम आज तक पहचाना नही जा सका। फाह्यान और हुएन्त्साग-जैसे चोनी यात्रियोने भो, जिन्होने अपनो राहमे पड़नेवाले सभो विहारोका वर्णन किया है, इसका उल्लेख नहीं किया। आश्चर्य कि फाह्यान भो उसका उल्लेख न करे क्योकि उसके समय तख्तेवाहीका यह विहार 'अभिधम्म' का उच्चस्वरसे परायण करता था, बोधिसत्त्वको परम्पराओका पोषक था।

लगता है, तबके राजमार्गपर तख्तेवाहीका बिहार नही पडता था। पर उसने बुद्धको, बुद्धसे भी बढकर बोधिसत्त्वकी, परम्परा जगा रखी। बुद्ध और बोधिसत्त्व एक ज्ञानसे प्रकाशित, दूसरा शील और सख्य, दया और त्यागका प्रतीक। बोधका पहला साधक "अर्हत" था, अपने निर्वाणका साधक। उसके चतुर्दिक् जो जनता जन्म-मरण और उनके बीच-के हजार दु:खोसे जर्जर थी, उसकी उन्हे लेशमात्र भी चिन्ता न थी। उनका 'यान' ही 'हीन' था, केवल एक जनका भार ही वह लादकर ढो सकता था। एकसे अधिकका भार लेते ही उसका बेडा गर्क हो जाता। पर बोधिसत्त्वोकी दुनिया दूसरी थी, जन-जनकी दुनिया, क्योकि बोधिसत्त्वोने घोषणा की, 'ना, नही चाहिए हमे निर्वाण, जबतक एक जन भी धरापर दु खोंका भार लिये डोलता है! जबतक एक प्राणी भी अनिर्वण्ण है, जब तक सभी निर्वाणमे प्रवेश नही कर जाते, तबतक हम भी अनिर्वण्ण ही रहेगे, निर्वाणमे प्रवेश नही कर सकेगे। लौ निर्वात हमारी तभी होगी जब सारे जीवधारियोके दियेकी बातीकी लौ निर्वात निर्धूम बलने लगेगी।

सच, बोधिसत्त्वोकी परम्परा महायानकी थी। उनका 'यान' एक जनका न था, 'महायान' था। उसकी धारिता अनन्त थी, उसपर चढकर सारा जीव परिवार भवसागरको तिर सकता था। तख्तेवाहीके शिल्पियो-ने बोधिसत्त्वको कायाको नि सत्त्व न होने दिया, उसे विशेप निखारा। पत्थर और स्टक्को (चूना-मिट्टी)की बनी बोधिसत्त्वकी ये मूर्तियां कुछ साधारण नही। तख्तेवाहीसे उनकी भग्न मूर्त्तियोके अनन्त खण्ड मिले है। उनमे मस्तक विशेप उल्लेखनीय है। उनके दर्शन, मुखाकृति, युरॅपीय है, उन्नत नासा, ऊर्णित केशोकी चोटीपर प्रज्ञाकी चूडा, लम्बे कानोके बीच लम्बायित अण्डाकार मुखमण्डल, अर्धनिमीलित नेत्र, जिनकी दृष्टि नासाग्र-पर टिकी, धनुपाकार होठ जहाँपर मूँछोकी छाया नही। अधिकतर होठो-पर धन्वाकृत मूछोकी छाया, नीचे नुकीली सुडौल ठुड्डी। कुंचित कुन्तल, लहराते केश, मुक्ताहारोसे अपनी मर्यादा बाँधे पर शेप शरीर ? जैसे उनपर प्राचीन ग्रीक नगरोके ओलिंपिक खेलोकी छाया पड़ गयी हो, जैसे ग्रीक शिल्पियोने बोधिसत्त्वोमे अपने खेलाडियोको ही नये मानोमे कोर दिया हो। गठी पेशियोसे जैसे उनके चक्र और भल्ल फेकनेवाले खेलाडी गठे होते थे, बोधिसत्त्व भी स्नायु-रज्जुओसे मण्डित हुए। मैत्रेय, अवलोकि-तेश्वर, सभी।

निरन्तर ऊपर उठते चले गये सोपानमार्गपर बिहारोकी मूर्त्तिसम्पदा तख्तेवाहीमे विपुल मिली। उसमे ग्रीक जन-विश्वासके प्रतीक भी मूर्त हुए थे। इधर अतलास (ऐटलस) अपनी स्नायु-पेशियोसे प्रकट ग्रीक देवता श्मश्रुल बैठा, उठनेका यत्न करता-सा विश्वको कन्धेपर उठाये रहनेका उपक्रम कर रहा है। उधर वह पशु-मानव खडा है, मानवका शरीर अपने ऊर्ध्वार्धमे धरे नीचे वृषभके पैरोवाला, जिसकी पुच्छ अजगर-सरीखी सर्पिल लहराती चली गयी है, ग्रीक जलदेवता। और उधर वह मालावाहकोकी परम्परा सम्मोहक क्यूपिडोकी चली गयी है।

तख्तेवाहीकी पत्थरोपर उभारी चित्रपरम्परा मनहर है। जातकोकी

कथाओंके दृश्य बोधिसत्त्वो, बुद्धके जीवनके चित्र कलावन्तोंकी जादूकी छेनीसे एकके बाद एक उभरते चले गये है। बुद्ध अभयमुद्रामे खडे है, धर्मचक्र-प्रवर्तन मुद्रामे बैठे है, तप रहे है। पेट पीठसे जा लगा है, तनकी हड्डियाँ उभर आयी है। यह सम्बोधिके पहले महाभिनिष्क्रमण-का दृश्य है। गौतम कपिलवस्तुसे विदा ले रहे है, पर यह द्वारका पहरुआ श्वान निशीथमे भी जाग्रत है, भौंक कर उनकी राह रोक रहा है। यहाँ यह बुद्ध-द्वारा आचरित अग्निमन्दिरका चमत्कार है, जहाँ बुद्ध बैठे सर्पसे संघर्ष कर रहे है। समूचा ब्राह्मणग्राम अग्निसात् हो चला है, परिव्राजक अग्निकी ज्वालाएँ बुझानेका प्रयत्न करते है। तत्काल अपनी समूची शिष्य-परम्पराके साथ काश्यप बुद्धका मार्ग स्वीकार कर लेते है। इनका-सा कुछ भी अन्यत्र उपलब्ध नही।

आगे वह सम्मोहक दृश्य है, बुद्धकी समाधिका। बुद्ध बैठे है, नासाग्रपर नेत्र टिकाये। सार्थवाहोका कारवाँ चला आ रहा है त्रिपुष और भल्लिक उसके स्वामी श्रेष्ठी अपने रथोपर आरूढ है। कारवाँकी गति एकाएक रुक जाती है, पशु-मानवोके पैर आगे नही पड़ते, मन्त्रबद्ध हो जाते है। कारण कि आगे अमराइयोमे तथागत ध्यानावस्थित है। फ्रेंच कलामर्मज्ञ फूशे रीझ जाता, "नू न पोसेदो पा दर प्रेज़ातासियो तूता फ़े सर्तेन", निश्चय हमारे पास भावोका इतना सजीव प्रदर्शन उपलब्ध नही। बायीं ओर कारवाँके आगेके बैल चलते-चलते रुक गये है, दाहिनी ओर गाडी चलानेकी हर सम्भव कोशिश हो रही है पर उसके चक्के तो सम्मोहनके प्रभावसे जड हो गये है, हिले कैसे? गड गये है, तापसके उपवाससे बुद्धके निकट इस दूसरे दृश्यमे दोनो सेठ, वनदेवता-द्वारा प्रदर्शितमार्ग, मधु और गेहूँकी भेंट लिये चले जा रहे है। दृश्योंकी यह परम्परा अटूट है। बुद्धो और बोधिसत्त्वो-की जीवनकथाएँ अपनी हज़ार जबानोसे भिक्षुओ और गृहस्थ उपासको-को सद्धर्मकी ओर आकृष्ट करती थी। भिक्षुओके दलके दल तख्तेवाही-की परवर्ती भूमिपर बिहरते थे, उसकी श्रावकशालामें संथागारमे कथोप-

कथन करते थे, चैत्यगृहोमे स्तूप और बुद्ध-बोधिसत्त्वोकी प्रतिमाओको पूजते थे, धरतीके अन्तरालमे, तहखानोके ध्यान कक्षोमे आर्य सत्योका मनन करते थे, आष्टागिक मार्गका सेवन करते थे।

संसारका सबसे तेज निशानेबाज़ पठान खूनी ख़ूँख़ार कबीलाई यूसुफज़ई खान तब अपने हथियार शान्तिके चरणोमे डाल चुका था। आज लन्दीकोतलकी ओर पैर रखनेवाला मुसाफ़िर अपने धड़कते दिलपर हाथ धरे चलता है, पर तब यूसुफजईका वह इलाका सन्तपरवर था। क्यो न फिर सन्त वहाँ इस्रायलसे चल, दजला-फरात लाँघ, ईरान-हिन्दूकूश लाँघ, तख्तेवाहीकी जमीनपर उस बहिश्तको उतार लाये जिसकी शूली-पर चढे उसके गुरुने भविष्यवाणी की थी? क्यों न वह पह्लवराज गुदफर-के सोनेसे तख्तेवाहीके आसमानपर अम्बरके नीले चन्दोवे तले कभी न टूटनेवाला महल खडा कर दे?

पर महल क्या सचमुच खडा हो सका? वह स्वर्गका संसार, इन देवोत्तर विहारोके बावजूद, क्या तख्तेवाहीकी धरापर उतर सका? इन बिहारो-की उजडी बस्तीका जनपद सन्तकी बानी अपने खण्डहरोसे नही चरितार्थ करती? –

तिनके चुन-चुन महल बनाया,
ना घर तेरा ना घर मेरा ।
चिड़िया रैन बसेरा!
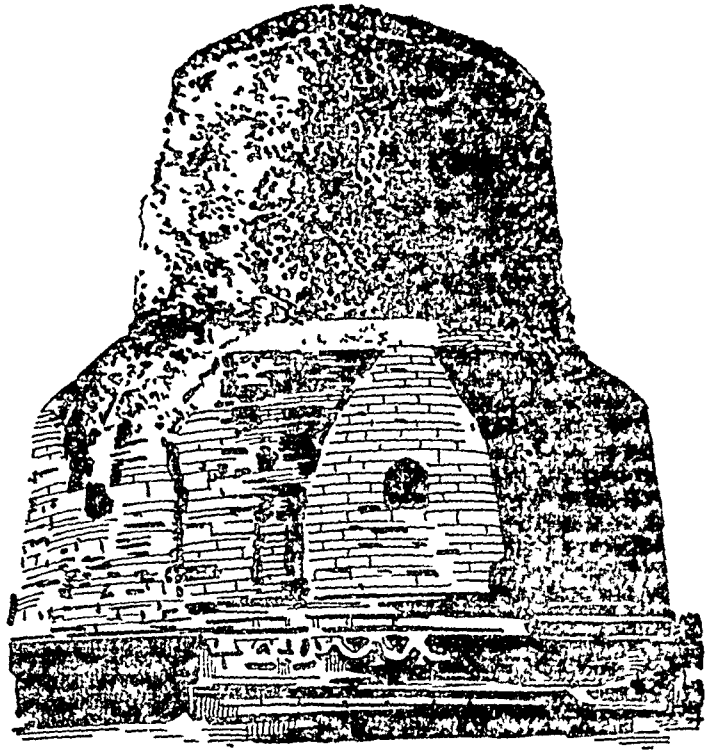
११० फुटसे भी ऊँचा ठोस ईंटोंका बना धमेख अथवा धर्माख्य स्तूप। यही वह स्थल है जहाँ बोधि-प्राप्तिके बाद गौतम बुद्धने पहली बार धर्मचक्र प्रवर्त्तन किया।

मृगदावका धर्मचक्र

राष्ट्रका मुद्रांक

गंगाके तीर जहाँ काशीने अर्धचन्द्राकार करवट ली है, उससे थोडी ही दूरपर, कोई ४ मील उत्तर-पूरब, हिरनोका एक वन था, मृगदाव। उसीका पर्याय बिगडकर आजका सारनाथ बना। काशीके तापसोके लिए मृगदावका एकान्त प्रिय और अभिमत था, यद्यपि हम उसका नाम उपनिषदो अथवा तत्कालीन साहित्यमे नही पाते।

काशी-वाराणसीका पाते है, जहाँ उपनिपदोके ज्ञानके धनी क्षत्रिय अजातशत्रुने ब्राह्मण बालाकिको आत्मरहस्यका भेद बता उसके दर्पका पराभव किया था। उसी वाराणसीमे बार्हद्रथोने राज किया, जिनका उल्लेख बार-बार जातक कथाओमे हुआ है। श्रावस्तीका बहिरुपवन जेतवन-जैसे बौद्ध साहित्यमे प्रसिद्ध हुआ, वाराणसीका बहिर्वन यह मृगदाव भी वैसे ही बौद्ध धर्मके इतिहासमे विख्यात हुआ। कारण कि वहीसे तथागत बुद्धने उस 'धर्मचक्रका प्रवर्तन' किया जो देश और कालकी सीमाएँ पार करके भी आज तक नही थका और जिस धर्मके चक्केकी लीक एक ओर बामियान, तकलामकान, तुर्फ़ान, तुनहुआग तक, दूसरी ओर ईरान, सीरिया, भूमध्यसागर तक, तीसरी ओर बर्मा, मलाया, हिन्देशिया, सिंहल तक अप्रतिरथ चलती चली गयी। उस धर्मका पहला उपदेश तथागतने वहीं मृगदावमे किया। वही उनकी पहली कुटी बनी, मूलगन्धकुटी, जिस मूल आधारसे उठ धर्मगन्ध दिगन्त तक व्याप्त हो गयी।

जब कपिलवस्तुसे महाभिनिष्क्रमण कर सिद्धार्थ गौतम दु.ख-परिहारके उपायकी खोजमे आलार कालाम और उद्दक रामपुत्तके आश्रमोको छोड राजगृहकी पहाड़ियोके पीछे गयाके महाकान्तारमे उतर गये थे तब पाँच

ब्राह्मण ब्रह्मचारियोने भी उनका तेज देख उनका अनुगमन किया था। और जब गौतमने तनको गला देनेवाला महातप आरम्भ किया था तब उन्हे लगा कि सिद्धार्थको सम्बोधि प्राप्त होगी। पर जब उन्होने तपको तन और मानसका ह्रास करते देख उससे विरत हो सुजाताकी खीर खा ली, तब पाँचो ब्रह्मचारी उनसे अलग हो मृगदाव (सारनाथ) चले गये थे। सम्बोधि प्राप्त कर बुद्धने जब उसका उपदेश करना निश्चित किया, तब उन्हे उन ब्राह्मण ब्रह्मचारियोकी याद आयी और वे उनकी खोजमे मृगदावकी ओर चले।

मृगदावमे जब ब्रह्मचारियोने बुद्धको प्रवेश करते देखा तब तय किया कि सिद्धार्थ गौतम आ रहा है, हम उसे जल-आसन न देंगे, उसका अभिवादन नही करेंगे, उससे सम्भाषण नही करेगे। पर जब बुद्धके मुखमण्डलकी दीप्ति निकट आनेपर दमकी तब और अधिक वे अपनेको रोक न सके। किसीने बुद्धका भिक्षापात्र लिया, किसीने आसन दिया, किसीने जल दिया, सबने अभिवादन-सम्भाषण किया। उनकी दीप्तिको सराहा।

बुद्धने उन्हे सूचित किया कि उन्होने सम्यक् सम्बोधि प्राप्त कर ली है, और वे उन्हे उसका उपदेश करेगे। उपदेश करते हुए वे बोले, "भिक्खुओ, मार्ग दो है, एक है अत्यन्त विलासका, दूसरा अत्यन्त तपका। एक मार्ग तीसरा है, तथागतका देखा, दोनोके बीचका, मध्यम मार्ग – मज्झिम पटिपदा – न अत्यन्त विलासका न अत्यन्त तपका।"

उपदेश उस सात्त्विकी बोधकी प्रतिध्वनि था, जो गयामे सम्बोधि प्राप्तिकी प्रतिज्ञा कर समाधिमे गये गौतमने उरुवेलाकी नर्तकियोके गीतमे सुना था – वीणाके तारोको बहुत ढीला न करो, नही वे नही बजेगे। वीणाके तारोको बहुत खीचो भी नही, नही वे टूट जायेगे। बुद्धको फिर तो सम्बोधिका मार्ग सूझ गया था।

उस स्थलकी पावनताकी सीमा कहाँ जहाँ स्वयं बुद्धने न केवल अनेक

पावस-चतुर्मासोमे निवास किया था बल्कि अपने धर्मकी पहली व्याख्या की थी। बौद्ध धर्मके दो अत्यन्त महत्त्वके प्रतीक – मृग (मृगदावसे) और चक्र (धर्मचक्र प्रवर्तनसे) – सारनाथसे ही प्राप्त हुए। इसी चक्रको वही मिले अशोकीय स्तम्भके शीर्ष सिहोके साथ भारतीय स्वतन्त्र सरकारने अपना मुद्राक (मुहर) बनाया और राष्ट्रीय पताकापर स्थान दिया।

पर इससे पहले सहस्राब्दियोसे सारनाथको देश-देशान्तरका आदर मिलता रहा था। यह वहाँ मिले सैकड़ो स्मारक छोटे और कई विशाल स्तूपो, विहारोके खण्डहरों, अशोकके महान् स्तम्भ और अनेक शालीन मूर्तियोसे प्रकट है। देशी-विदेशी सभी धार्मिक श्रद्धालुओने वहाँ बुद्ध और बोधिसत्त्वोकी मूर्तियाँ दान की और पूजाके लिए पधरायी थी। शक-कुषाण क्षत्रप (प्रान्तीय शासक) खरपल्लान और वनष्फर बौद्ध धर्मके ऐसे ही सेवक थे। सातवी सदीका चीनी यात्री हुएनत्साग लिखता है कि "मृग-दावमे सैकडों छोटे-छोटे विहार है, जहाँ हीनयान सम्प्रदायके प्रायः १५०० भिक्षु निवास करते और अध्ययन-अध्यापन करते है। वहाँका महाविहार २०० फुट ऊँचा है और उसकी छतपर जो आमलक चढा है, वह सोनेका बना है।"

सारनाथके प्राचीन गौरवका पता अकस्मात् ही लगा। किसीको गुमान भी न था कि समूचे भारतके धर्मप्राण यात्रियोके केन्द्र काशीके इतने निकट ही वह स्थान होगा, जिसके नीचे संसारके आदरका रहस्य दबा होगा, जो मजूरोके फावडोके स्पर्शसे सहसा खुल पडेगा, और तब सालों साल पुराविदोकी वैज्ञानिक खुदाइयोसे उस धरासे अमोल सांस्कृतिक रत्न निकलते जायेंगे। आज भी रत्नोका वह आकर चुका नही और फावडा भूमिसे लगाते ही वहाँकी वसुधा रत्न उगलने लगती है।

अठारहवी सदीके अन्तमे गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्सके सन्दर्भमें इतिहास प्रसिद्ध काशीनरेश चेतसिंहके दीवान जगतसिंह काशीमे जगत-

गजका मुहल्ला बसा रहे थे, और वहाँ अपना महल बनवा रहे थे। उन्हें जो ईंट-पत्थरोंकी आवश्यकता हुई तो सारनाथके बेमोल ईंटोकी खानपर अनायास उनकी नजर गयी। उनकी आज्ञासे उनके मजूरोने सारनाथकी उस लोकोत्तर भूमिपर फावडे चलाने शुरू किये। फावडे अकस्मात् एक अत्यन्त सुन्दर कटावदार ईंटासे बने स्तूपके निधिकक्षपर पडे। सहसा अनेकानेक बेशकीमत चीजे उछल पडी। अधिकतर चीजे तो जिन्होने खोदा उन्होने हजम कर ली, पर एक हरे सगमरमरकी पेटिका जो नाथान डंकनके हाथ सौभाग्यसे लग गयी। उसमे कुछ जली अस्थियाँ थी, कुछ मोती और लाल थे, कुछ स्वर्णपत्र थे। डकनने वह पेटिका रॉयल एशियाटिक सोसायटीको भेट करते हुए लिखा, "मै एकमे एक रखा, एक पत्थर दूसरा सगमरमरका पात्र सोसाइटीको भेट करनेकी अनुमति चाहता हूँ। ये पात्र १७९४ की जनवरीमे बनारस शहरसे चार माल उत्तर सारनाथके एक मन्दिरके पास दूर तक फैले प्राचीन भवनोकी नीवमे पत्थरोके लिए खादते हुए बाबू जगतसिहके मजदूरोको मिले थे। इन पात्रोंमें सबसे भीतरवालेमे (जो १८ हाथ गहरी जमीन खोदनेपर मिले थे) मनुष्यकी कुछ हड्डियाँ मिली, जिन्हे गगामे प्रवाहित कर दिया गया। हड्डियोंके साथ कुछ गले मोती, सोनेके पत्ते और साधारण मोलके कुछ और रतन भी मिले, जिनको उसी पात्रमे रख छोडना मुनासिब होगा, जिसमे इतने जमाने तक वे पडे रहे थे।" पता नही क्या चमत्कार हुआ कि भीतरकी सगमरमरवाली पेटिका तो लापता हो गयी पर बाहरी पत्थरका सन्दूक प्राप्ति-स्थानपर पडा रहा, जिसे १८३५ मे खुदाई कराते समय जनरल कनिघमने फिरसे पाया। वह पत्थरका पेटिका अब कलकत्तेके संग्रहालयमे सुरक्षित है। आज नये प्रमाणोके अभावमे यह अनुमान कर सकना सम्भव नही कि स्तूपकी इस पेटिकामे किस महापुरुषके अवशेष समाधिस्थ थे।

सारनाथके पुनरुद्धारका इतिहास पसीने और आँसूका है। मनुष्यने उसके भवनोके नाशके बडे मनोयोग और तत्परतासे प्रयत्न किये है। जली

वस्तुओसे प्रमाणित है कि सैकडो साल पहले मृगदावका यह असामान्य तीर्थ मनुष्यकी असन्तुलित धर्मोत्तेजना और आयोजित लूटका शिकार हुआ था ।. पिछले कालमे भी उसे लूटनेकी लोगोंकी हविस नही भरी । शेरिंग लिखता है, "बरना नदीके पुलोमे-से एक डंकन-पुल बनानेके समय ४८ पत्थरकी समूची मूर्त्तियाँ और अन्य मूर्त्त उत्खचित प्रस्तरखण्ड सारनाथसे लाकर धाराकी प्रखरता रोकनेके लिए नदीमे फेंक दिये गये । फिर दूसरे लोहेके पुलके निर्माणके समय कोई पचास-साठ गाडी पत्थर सारनाथके भवनोको उजाडकर पुल बनानेके काममे लाये गये ।" क्वीन्स कॉलेजके निर्माता स्वयं मेजर मार्खम किट्टोने उस कॉलेजके निर्माणके लिए सारनाथ और बकरिया कुण्डसे लाये पत्थरोका उपयोग किया । वैसे तो जगतसिंहके समयसे ही सारनाथके पत्थरोंकी लूट शुरू हो गयी थी, कर्नल मेकेंजी और जनरल कनिंघमकी खुदाइयोके बाद भी उनके खोदे पत्थर उनकी अनुपस्थितिमे गायब हो गये थे । वहाँकी आखिरी लाज–लूट इस सदीके प्रायः आरम्भमे तब हुई जब 'नैरो गेज' (छोटी लाइन) रेलवे लाइन सारनाथकी ओरसे निकाली गयी और जब उसके लिए सारनाथके भवन ईंटो और पत्थरोके लिए भूमिसात् कर दिये गये, उसकी भूमि खोदकर बेपरदा कर दी गयी ।

पुराविदो-द्वारा अध्ययन और इतिहास-निर्माणके लिए मृगदावकी खुदाई १८१५ मे शुरू हुई जब कर्नल मेकेंजीने उसमे हाथ लगाया था । १८३५-३६ मे कनिंघमने सारनाथके अनेक स्थल खोदकर उपलब्ध सामग्री कलकत्ताके संग्रहालयमे रखी, जो वहाँ आज भी सुरक्षित है । मार्खम किट्टोने उसे १८४८ और १८५२ के बीच कई बार खोदा और टामस, हाल, हार्न और रिवेट कार्नाकने बादमें बारी-बारीसे उस कार्यमे योग दिया । सारनाथकी अन्तिम खुदाई एफ०ओ० ओर्तेल, मार्शल और दयाराम साहनीने करायी । साहनीने ही सारनाथमे स्थापित संग्रहालयमे सुरक्षित सामग्रीका एक विस्तृत कैटलॉग भी बनाकर प्रकाशित किया ।

सारनाथको विभिन्न खुदाइयोमे मिली सामग्रीकी अनन्त परम्परा है। वहाँका संग्रहालय ई० पू० तीसरी सदीसे बारहवी सदी ईसवी तककी मिली मूर्ति-सम्पदासे अटा पडा है। यहाँ हम केवल उनके तीन वर्गोका उल्लेख करेगे – स्तूप, स्तम्भ और मूर्तियोका।

स्तूपोकी परम्परा अति प्राचीन है, विशेषकर महत्त्वकी घटनाओके स्मारक स्तूपोसे भिन्न अस्थिसंचायक स्तूपोकी। इस प्रकारके प्राचीनतम मानव अस्थिसंचायक स्तूपोके प्रतिनिधि मिस्रके पिरामिड है, जिनका समय आजसे कोई ६ हजार साल पहले तक पहुँच जाता है। इनसे मिलती-जुलती चट्टानोमे कटी इमारत मालाबारमे प्राय. हजार वर्ष ईसासे प्राचीनतर है। बौद्ध स्तूपोका पहला स्वरूप पिप्रहवा आदि उनका है, जिनमे बुद्धकी अस्थियाँ सचित हुई और जो ईसा पूर्व पाँचवी सदीमे बने।

अशोकके सम्बन्धमे परम्परा प्रसिद्ध है कि उसने हजारो स्मारक स्तूप बनवाये। उनमे-से कई उपलब्ध भी हुए है। इन्हीमे-से एक सारनाथका धर्मराजिका स्तूप है जो छोटे गिर्दमे गुप्तकालीन प्रधान देवालयके दक्खिन ईंटोका बना खडा है और जो मौर्यकालीन वशविधान विधि (बाँसका घेरा) से बनी पत्थरकी वेदिका अथवा रेलिगसे घिरा है। इस वेदिकाके पत्थरपर अशोकके स्तम्भोकी विशिष्ट पॉलिश है। यह स्तूप बुद्धके प्रथम उपदेश, धर्मचक्र प्रवर्तन, की भूमिपर खडा किया गया। उनकी मूलगन्ध-कुटी भी पास ही थी, जिसके स्मारकमे भी स्तूप-निर्माण स्वाभाविक था।

चौखण्डीका स्तूप धर्मराजिका स्तूप अथवा सारनाथकी खुदाइयोके प्रधान-स्थलसे प्राय. आध मील दक्खिन वाराणसीकी राहमे सडकके किनारे खडा है। इसके नामसे ही प्रकट है कि स्तूप चौखण्डमे बना था। यह कह सकना कठिन है कि चौखण्डी अस्थिसचायक स्तूप था या घटना-स्मारक। जनरल कनिघमने उसमे सचित सामग्री खोजनेके अनेक प्रयत्न किये, पर खोद-खोदकर हार जानेपर भी उसका कोई सुराग नही मिला। अब पुराविदो ने यहाँ कुछ सचित पानेकी आशा छोड़ दी है। चौखण्डीका स्तूप

पिछले अनास्था और अज्ञानके युगमे जो नष्ट होनेसे बच रहा, उसका कारण यह था कि अकबरने अपने पिता हुमायूँकी स्मृतिमे उसके मस्तकपर एक चौखण्डा स्तम्भ बनवा दिया, जो आज भी खडा है। शेरशाहसे चौसा-की लड़ाईमे हार मुगल सम्राट् हुमायूँ जब भागा तो इस स्तूपकी छायामें ही उसने एक रात छिपकर गुजारी थी।

धमेख अथवा धर्माख्य (धर्म नामका) विशाल स्तूप ११० फुटसे भी ऊँचा ठोस ईंटोका बना खुदाईकी भूमिके प्रायः पूरब खड़ा है। यह गुप्त-कालीन स्मारक स्तूप है। ईंटोका गिर्द पत्थरकी शिलाओसे दूर ऊपर तक लोह कड़ोंसे कस दिया गया है। शिलाओपर पाँचवी सदीका गुप्त-कालीन सुन्दर कमलवन उत्खचित है। इन्ही शिलाओंके कारण इस स्तूपकी ईंटोकी रक्षा हो गयी है। कुछ अजब नही कि इस स्तूपका आभ्यन्तर मूल गुप्तकालसे भी प्राचीनतर हो। स्थानीय जन-विश्वास था कि लोरिक अहीर चौखण्डोसे धमेखपर कूदा था। दूरसे ही यह स्तूप लक्षित होता है।

जगतसिंह-स्तूप गुप्तकालीन अथवा उसके कुछ बादका है। लाल आकृति खिंची ईंटोंसे बना यह स्तूप सम्भवतः अनेक सदियोंमे आधारके ऊपर आधार रखकर बना। दर्शनीय है, पर प्रधान देवालयसे पूर्व इसका आधार मात्र ही आज सुरक्षित है, शेष जगतसिंहकी संहारवृत्तिसे नष्ट हो गया है। उसके इस आहर्ताके नामसे ही उसका नाम भी पडा है, जो व्यंगतः जगतसिंहकी कुख्याति भी अमर कर रहा है।

छोटे-छोटे स्तूपोंकी संख्या सारनाथकी भूमिपर सैकड़ोमे है। प्राचीन कालसे ही बौद्ध धर्मके देशी-विदेशी यात्रियोने अपने आगमनके स्मारकमें, बुद्धकी विशिष्ट उपदेश-घटनाके स्मारकमे समय-समयपर इन्हें खडा किया है।

प्रधान देवालय (गुप्तकालीन, जिसका अस्तित्व सिवा कुछ मन्दिरके उत्खचित खम्भों और चौसर आधारभूमिके मिट चुका है) के पश्चिम सम्राट् अशोकका बनवाया तीसरी सदी ईसवी पूर्वका मौर्यकालीन दर्पण-

वत् पॉलिशसे अलंकृत प्राय: ५० फुट ऊँचा गोदुमी आकृतिमे सम्पन्न स्तम्भ खडा था। आज वह लोहेके घेरेमे तीन खण्डोमे पड़ा है, जिसका प्रधान खण्ड पूर्ववत् पृथ्वीमे गडा है। उसका मस्तक — पीठसे पीठ मिलाये चार सिंहोंका शीर्ष — संग्रहालयके प्रवेश-द्वारके भीतर ही खडा है। यह शोर्ष घण्टा, अधोमुख कमल, चौकी आदिसे संयुक्त गज, अश्व, मृग आदिकी आकृतियाँ धारण किये हुए हैं, जिनके बीच गतिके प्रतीक और धर्मप्रर्वतन-के स्मारक चक्के बने है। सिंह पहले सम्भवत: सिरपर वही प्रतीक-चक्र उठाये हुए थे। सिंहोके आवयवीय स्नायुरेखाएँ उन्हें सर्वथा सजीव कर देती है। उनकी पॉलिशकी चमक और आकृतिकी सच्चाई संसारके तक्षण शिल्पमे उन्हे अनुपम बना देती है। उचित ही देशकी राष्ट्रीय सरकारने इस सिंहशीर्षको अपना मुद्राक बना लिया है, जो शालीन कलाके अति-रिक्त संसारमे युद्धविरोधी शान्तिका भी परिचायक है।

सारनाथके इस स्तम्भपर मौर्यकालीन लिपिमे सघभेदक भिक्षुओके दण्डस्वरूप संघसे उनके निष्कासनका विधान खुदा है। यहाँ अशोकके बनाये इन स्तम्भोकी सुचारुताके अतिरिक्त उनसे सम्बन्धित संवहन विधिपर भी एक नज़र डाल लेना उचित होगा। ये स्तम्भ उत्तर प्रदेशके मिर्ज़ापुरके ज़िलेमे बनारसके पास ही स्थित चुनारके पत्थरके बने है, जो चुनारकी पहाड़ियोमे ही (जिनका नाम मौर्यकालमे शुंशुमारगिरि था) तैयार किये गये। पर ये स्तम्भ अपने मूल निर्माण-स्थलसे हज़ार-डेढ हज़ार मील दूर हैदराबाद-मैसूर तक मिले है। उस प्राचीनकालमे किस प्रकार करीब ४०–५० टन भारी और प्राय: ५० फुट ऊँचे ये स्तम्भ पर्वतो और नदियोको लांघ इतनी दूर ले जाये गये, यह आश्चर्यका कारण बन जाता है, विशेषकर जब हम जानते है कि फिरोजशाह तुगलकके समयके समुन्नत इंजीनियरीके युगमे इन स्तम्भोका थोडी दूर संवहन भी हास्यास्पद प्रकारसे सम्पन्न किया जा सका। अपनी बसायी नयी दिल्लीको सजानेके लिए सुलतानने जब केवल बारह मील दूर टोपरा गांवमे खडे

अशोकके एक स्तम्भको दिल्ली ले जाना चाहा, तब उसके लिए बैलोंको हटाकर बयालिस बैलगाडियाँ एकसे एक जुडी खडी की गयीं और उनपर रुईके अम्बार लगाये गये और तब एक-एक गाड़ीपर दो-दो सौ आदमी लगे। इस प्रकार ८,४०० आदमियोंने गाड़ियाँ खींचकर स्तम्भकी दिल्ली तककी १२ मीलकी दूरी तय की।

सारनाथकी खुदाइयोमे प्राप्त मिट्टी, पत्थर, ताँबेकी मूर्तियोंमे-से केवल दो का यहाँ उल्लेख करूँगा। इनमे-से एक छत्र, दण्डसे युक्त बोधिसत्त्वकी पहली सदी ईसवीकी कुषाणकालीन विशाल मूर्ति है, दूसरी पाँचवी सदीकी गुप्तकालीन धर्मचक्र-प्रवर्तन-मुद्रामे बैठी बुद्धकी अनुपम शान्ति-प्रदायिनी मूर्ति।

बोधिसत्त्वकी आदमकद मूर्ति अपने छत्र और दण्डके साथ समूची साढे नौ फ़ुट ऊँची है, मथुराके लाल छीटेदार पत्थरकी, ठीक उन्हीकी तरहकी जो सहेठ-महेठ और मथुरामे मिली और जो अब क्रमशः कलकत्ता और लखनऊके संग्रहालयोमे सुरक्षित है। उन्हीकी तरह यह मूर्ति भी भिक्षु 'बल' की दान की हुई है। इसके अभिलेखमे इसके कनिष्कके तृतीय वर्षमे बननेकी बात लिखी है। यह पहली सदी ईसवीकी मूर्तियोमे सबसे प्राचीन है। इसका उल्लेख सारनाथसे प्राप्त अन्य अभिलेखोमे भी हुआ है। मूर्ति खडी स्थूलाकार सर्वतोभद्रिका (चतुर्दिक् दर्शनीय) आकृतिमें कोरी प्राय: प्राचीन मथुरा-यक्षोकी-सी है, शक्तिसीम।

इस मूर्तिके पास ही इसके छत्र और दण्ड भी मिले। छत्र मण्डलाकार दस फुट आर-पार है, विविध सुन्दर खचित आकृतियोसे अलंकृत। नीचेसे लगता है, जैसे उलटा लटकता खिला हुआ कमलका फूल है। उसके मध्यके चहुँ ओर वृत्ताकार १२ पदाधारी पशुओकी आकृतियाँ उत्खचित है, गज, सिह, व्याघ्र, साँड, ऊँट, मृग, मकर आदिकी। उसके बाहरी वृत्तमे शंख, स्वस्तिक, पूर्णकलश, त्रिरत्न, मत्स्य आदि १२ बौद्ध प्रतीक खुदे है।

दूसरी मूर्ति गुप्तकालीन है। बुद्धकी, धर्मका चक्का हाथोसे घुमाती हुई मुद्रामे। मुखका भाव अद्भुत शान्त है, अधखुली आँखें नासिकाग्रपर टिकी है। यह मूर्ति प्राचीन कालमें ही विदेशोमे भी कलावन्तोका आदर्श बन गयी थी। जापान, चीन आदिमे भी इसकी नकलमे बुद्धकी मूर्तियाँ बनी। भारतकी दो सर्वोत्तम बुद्ध मूर्तियोंमे इसकी गणना है। इसके बराबर सुन्दर बस मथुराकी अभयमुद्रामें खडी मूर्ति है। सारनाथवाली मूर्तिका प्रभामण्डल गुप्तकालीन कलाकी परिष्कृत रुचिचारुताका परिचायक है।

सारनाथकी खुदी भूमि आज भी अपने प्राचीन खण्डहरोसे ढँकी आकर्षक लगती है। प्राचीन कालकी ही भाँति उसके एक ओर कमलोसे भरे ह्रदका निर्माण कर दिया गया है। पास ही एक छोटा-सा वन भी लगाया जा रहा है, जहाँ कई प्रकारके मृग रख दिये गये है। इससे सारनाथका मृगदाव नाम सार्थक हो चला है। बौद्ध धर्मके तीर्थस्थलोमें कोई इतना आकर्षक नही, जितना सारनाथका यह मृगदाव है।

■

श्रावस्तीकी प्राचीरें

उत्तर प्रदेशके गोंडा और बहराइचकी सीमापर, बलरामपुरसे १२ मील पच्छिम, अकौनासे ५ मील पूरब, अवधपुरी — अयोध्यासे कोई ५८ मील उत्तर राप्तीके तीर इतिहासके पद-चिह्नोसे गौरवान्वित एक रजत-खण्ड है, पीताभ पुलिनोसे लगा, जहाँसे नदीकी धारा कबकी हट चुकी है।

रजतखण्ड श्रावस्ती, बौद्धोंकी सावत्थी, आजका सहेठ-महेठ — नदीके तीर दूर तक फैले टीले, अपनी छातीमे प्राचीन नगरीके अवशेष छिपाये, जिन्हें काल अपने अन्तरालमे डाल भूल चुका था, पर जागरूक श्रद्धालु नर सदियोंसे खोज रहा था।

कालने जब कोसलकी काया पलटी तब ऐक्ष्वाकुओंकी अयोध्या ऐश्वर्यके पटलसे मिट गयी। उसकी जगह फिर श्रावस्तीने ली। ऐक्ष्वाकुओं-की एक शाखाने श्रावस्तीको राजनगरीका गौरव दिया, उसीकी एक दूसरी शाखा शाक्योने कपिलवस्तुमे अपने गणतन्त्रका सन्थागार खड़ा किया, अपने सिद्धार्थ गौतमको अमरत्वकी खोजमे भेजा।

उसी श्रावस्तीके टीले सहेठ-महेठमे मीलो दौड़ते चले गये है। उनका गिर्द करीब ५ मील है। अकेले महेठका प्रायः १७,३०० फ़ुट, सवा तीन मीलसे ऊपर, अपने आँचलमे चालीस हजार एकड़ भूमि घेरे, सहेठ और महेठ दोनोके बीचकी दूरी कोई चौथाई मील है। महेठ नगर था प्राचीरों से घिरा, श्रावस्तीका प्राचीन नगर, सहेठ उसका बहिरोद्यान, बौद्ध इतिहासमे प्रसिद्ध बुद्धका चातुर्मास्यका प्रवास-आराम जेतवन, जिसे श्रेष्ठिपुंगव अनाथपिण्डकने सोनेके मोल खरीद बुद्धको दान कर दिया था।

सोनेके मोल खरीदा था जेतवनको अनाथपिण्डकने। वन राजा जेतका

था, नन्दनोपम। एक दिन तथागतका मन उस उपवनपर रीझ गया। भिक्षुसंघके साथ वे वहीं रम रहे। बार-बार उसके छतनार वृक्षोंको, उनकी घनी छायाको उन्होंने सराहा। अनाथपिण्डकका श्रद्धालु मन जो तथागतकी शंसासे डोला तो करबद्ध वह बोला – "तथागत, श्रेष्ठपुत्र अनाथपिण्डकने यह जेतवन भिक्षुसंघको दान किया। सुगत स्वीकारें।"

"सुगत कैसे स्वीकारें, श्रेष्ठिवर, यह अनधिकारीका दान, जेतका यह अभिराम वन ?" तथागत बोले।

अनाथपिण्डकको ठेस लगी, गहरी। नत हुआ। निन्दित-सा, आहत-सा उठा, अपने अनधिकारपर लज्जित सोचता चला – कैसे ? कैसे मैंने बिना जेतके वनका मूल्य चुकाये, उसकी बिना अनुमति पाये उसका यह वन भिक्षुसंघको समर्पित कर दिया ? चलूँ, जेतसे वन मोल ले लूँ, अनधिकृत-को अधिकृत करूँ, तथागतके ऋणसे उऋण होऊँ, सुगत जेतवनमें विहरें!

जेत अनाथपिण्डकके दानकी बात सुन चुका था। उसके आते ही करणीय निश्चित कर पूछा – "कैसे पधारे, श्रेष्ठिवर ? स्वागत!"

"जेतवन अनधिकारपूर्वक दान कर चुका हूँ, राजन्, उसे मुझे सौंपें। मूल्य ले लें। वनका परिमाण कहें।" अनाथपिण्डकने तत्काल उत्तरमें कहा।

"जेतवन अमोल है, श्रेष्ठिन्। उसे बेंच न सकूँगा।"

"नगरीमें अनाथपिण्डकने कभी वचन हारा नहीं, जेतवर, द्रवें कि उसका संकल्प अमोघ हो, विफल न हो।"

पर जेत द्रवा नहीं, कठोरतर हो बोला – "जेतवनके मोलका धन देनेवाला धरापर नहीं, श्रेष्ठिवर, उसकी लालसा तज दो।"

"धन जो जेतवनका मोल हो, धराधर, तो बोलो, अनाथपिण्डकके सकल जम्बूद्वीपके सार्थसंग्रह उसे चुका देंगे। अनाथपिण्डककी अक्षयनिधि नि:सीम है, सो आपसे अज्ञात नहीं।" अनाथपिण्डकने उत्तर दिया।

व्यंग्यसे विहँसता जेत तब धीरेसे बोला – "श्रेष्ठिवर, जानता हूँ, तुम्हारा वह व्यापक सार्थसग्रह, वह नि:सीम अक्षयनिधि। चाहता भी नहीं

कि तुम्हारा दान नि.सत्त्व हो। फिर ले लो जेतवन सुवर्णके मोल। जेतवनके परिमाणकी भूमि सुवर्णोसे ढँक दो, सुवर्णसे ढँके परिमाणका जेतवन ले लो। दे दो उसे तथागतको। तुम्हारा पावन संकल्प मिथ्या न हो, सत्यवादिन्।"

"हो गया सौदा, जेतवर, ले लिया जेतवन मैंने तुम्हारे मुँह-माँगे मोल। जाता हूँ, अपने परिचरोके साथ स्वर्णसे भरी गाडियाँ लेकर लौटूँगा, जेतवनकी भूमि उससे पाट दूँगा।"

जेत सन्नाटेमे आ गया। उसे गुमान भी न था कि अनाथपिण्डकके पास इतना धन होगा, या कि वह जेतवनका दूसरोके लिए इतना मोल देना स्वीकार करेगा। वह साफ मुकर गया। तब अनाथपिण्डकने न्यायालयमे जा पुकारा। जीत उसीकी हुई। जेत हार गया। अनाथपिण्डकने जेतवनके परिमाणकी भूमि स्वर्ण सिक्कोसे ढँक दी। उसका नाम अनाथोका पेट भरनेवाला तो था ही, इस दानसे वह अब 'सुदत्त' भी कहलाने लगा। अब उसका दिया जेतवन तथागतने भिक्षुसघके लिए स्वीकार कर लिया। भरहुतके कलावन्तोंने सुदत्तका यह दानकार्य अपनी कलासे अमर कर दिया। वहाँके स्तूपकी रेलिंगोपर यह कथा पत्थरकी भूमिपर चित्रांकित हुई। बैलगाडियाँ स्वर्ण-सिक्कोसे भरे बोरे ला रही है। सिक्के बुद्धकालीन सुवर्ण उस शुंगकालीन वेदिका (रेलिंग) पर लिखी जेतवनकी भूमिपर बिछाये जा रहे है। उसी वेदिकाके एक स्तम्भपर उष्णीष, आभूषणोसे मण्डित सुदत्तका मस्तक अभिराम उत्कीर्ण है।

धराके इस आँचलको हटाया जेनरल कनिंघमने, डॉ० होई ने, फ़ोगलने, मार्शलने भी। १८६३ मे ही कनिंघमकी गम्भीरभेदी दृष्टि इन टीलोपर पड़ी थी और १८७६ मे तो उसने कोसम्बकुटी और गन्धकुटीको पहचान भी लिया था। गन्धकुटी अनाथपिण्डकके दिये जेतवनका सबसे महत्त्वका बुद्धका आवास था।

डॉ० होई सिविल सर्विस था अफ़सर था और उसने सहेठ-महेठकी खुदाइयाँ १८७५-७६ मे, फिर १८८४ और १८८५ में, करायी। पर

पुराविद्का भरपूर वैज्ञानिक योग इन खुदाइयोको १९०७-८ में डॉ० फोगल-द्वारा मिला, जब अकालके प्रबल प्रकोपके कारण अवधमे जनताको कामकी आवश्यकता पडी और दस हजार रुपयोके खर्चसे महेठ-महेठके टीले खोद डाले गये, अकालसे जनताकी रक्षाके बहाने।

सहेठके टीले उत्तरको ओर थे – पनहियाझार, खड़हुआँझार और, इन सबसे अधिक महत्त्वका, १८०० फुटके गिर्दमें फैला, ५० फ़ुट ऊँचा खडा ओडाझार, जो वस्तुत. स्तूप था, मौर्यकालका—ई० पू० तीसरी सदीका, आजसे कोई तेईस सौ साल पुराना – स्तूप, जिसे अनेकने अंगुलि-मालका स्तूप कहा। उसीके अन्तरालसे निकली भी सुरक्षित समाधि दी हुई अस्थियाँ, स्वर्णपत्र, रजतपत्र, श्राद्धकी अनेक वस्तुएँ।

अंगुलिमाल बुद्धकालीन श्रावस्तीका रत्नाकर था, घातक दस्यु। कोसल – श्रावस्तीका राजा प्रसेनजित् उसकी डाकेजनीसे बडा व्यग्र रहता था। उसने जनपदको उजाड़ डाला था। एक दिन जब राजा बुद्धसे मिलने गया तब उसके मुखपर चिन्ताके बादल लहराते देख बुद्धने पूछा – "कौन-सी चिन्ता आकुल कर रही है, राजन् ? क्या मगधराज बिम्बिसार रुष्ट हो गये है या लिच्छवियोंका कोप भड़क उठा है" ? राजा बोला – "तथागत, ना तो मैं बिम्बिसारके कोपसे आक्रान्त हूँ और न ही लिच्छवियो-के क्रोधसे सन्त्रस्त। फिर भी दो चिन्ताएँ मेरे मनको मथ रही है – एक तो अंगुलिमालकी दस्युता – जिससे कोसलका समूचा जनपद उजड़ गया है, दूसरा अपने ही पुत्र विडूडभ (विरुद्धक) का पितृद्रोह – जो मन्त्री चारायणके उकसानेसे नित्य नये सिरेसे उभर उठता है। इन दोनों कारणोसे मैं नितान्त विह्वल हूँ।"

बुद्ध विडूडभको तो राहपर नही ला सके। उलटे उसने उनके जीवन-कालमें ही उन्हीकी जन्मभूमि कपिलवस्तुको जलाकर नष्ट कर दिया। उसकी माता शायद शाक्योमे दासी रही थी, और उन्होने उसे कुलीन कहकर प्रसेनजित्को व्याह दिया था। इस व्यंग्यका बदला उसने

कपिलवस्तुको जलाकर लिया।

पर अंगुलिमालका आतंक कोसलसे बुद्धने दूर कर दिया। अगुलिमालको हत्या नित्य सिद्ध थी। उसने प्रण कर रखा था कि वह हजार आदमियो-की हत्या करेगा, और जब-जब वह किसीकी हत्या करता, उसकी एक उँगली काटकर गलेमे पहन लेता। इस प्रकार उसके गलेका अंगुलिमाल नित्य बढता जाता। इसीसे उसका यह नाम भी पड गया था। जिसजंगल मे वह रहता उधर जानेसे यात्रियोको रोकनेके लिए राजाने प्रहरी बिठा रखे थे।

एक दिन बुद्ध उसी राह निकल पड़े। प्रहरियोने उन्हे रोककर साव-धान किया, अंगुलिमालसे खतरेकी बात कही। बुद्ध चुपचाप वनमे अंगुलि-मालके नियत स्थानको ओर चल पड़े। अभी थोड़ी ही दूर गये थे कि पीछेसे आवाज़ आयी—"ठहर जा!"

बुद्ध शान्तभाव ठहर गये। देखा, वन्यवेश किये गलेमे अँगुलियोकी माला पहने धनुष-बाण, असि धारण किये विकराल दस्यु चला आ रहा है। बोले—"मै तो ठहर गया। सम्बोधिके बाद पुनर्जन्म कहाँ? पर भला तू कब ठहरेगा? घातक वृत्तिसे तो जन्म-मरणकी शृंखला और भी तुम्हे जकड़ती हो जायेगी।"

अंगुलिमाल बुद्धके अमानवी तेजसे, उनकी अलौकिक शान्तिसे, दुर्लभ निर्भीकतासे अभिभूत हो उठा। फिर उनकी सारभूत रहस्यमयी वाणीका व्यंग और भेद समझ उनके चरणोपर गिर पड़ा। बुद्धने उसे भिक्षु बना लिया और कालान्तरमे वह अर्हत् पदपर आसीन हुआ। यह कह सकना निश्चित रूपसे सम्भव नही कि डॉ० होई द्वारा खुदा स्तूप अंगुलिमालका ही था, पर विद्वानोमे साधारण विश्वास ऐसा ही है। स्तूप साधारण जनोके बनते भी न थे, फिर स्वर्ण-रजत पत्तरोसे संयुक्त हड्डियाँ तो ऐश्वर्यवानोंको ही स्तूपतलमे रखी जाती थी। कुछ आश्चर्य नही जो यह स्तूप अंगुलिमालका ही रहा हो।

होई और फ़ोगलने जिन पनहियाझार, खडउआँझार और ओड़ाझार

नामक टीलोको खोदा और जिनसे अनेक मुद्राएँ, मिट्टी-पत्थरकी मूर्तियाँ, सिक्के प्राप्त हुए, उनके नाम भी जनताकी अनुश्रुतियोने दिलचस्प रखे है। श्रावस्तीके निर्माणके समय जहाँ लोग अपने जूतोकी धूल झाड दिया करते थे, वहाँ जो मिट्टीका ढेर बना, वह पनहियाझार कहलाया, जहाँ खडाऊँकी धूल झाडी वहाँ खडउआँझार बना, जहाँ मजूरोने अपनी मिट्टी भरी टोकरियाँ झाडी वहाँ ओडाझार नामका अम्बार खडा हो गया।

जो भी हो, श्रावस्ती नगरीके परकोटेके बाहर सहेठके इन टीलोसे ढँका बौद्ध साहित्यका प्रसिद्ध जेतवन-विहार इन खुदाइयोमे स्पष्ट बाहर निकल आया। जेतवनकी पहचानका सबसे अकाट्य प्रमाण जो सहेठकी खुदाइयोमे मिला वह कनौजके गहडवाल-नरेश गोविन्दचन्द्रका ताम्रलेख था जो विहार नं० १९के एक ध्यानकक्षमे उत्तर-पच्छिमके कोनेमे मिला। ताम्रपत्र प्राय सवा दो फुट ऊँची मिट्टीके एक सन्दूकमें रखकर कमरेकी नीवमे दबा दिया गया था। स्वय ताम्रपत्र १८ इंच लम्बा, १४ इंच ऊँचा और चौथाई इंच मोटा था। उसपर २७ पक्तियाँ खुदी थी, जिनपर कालका प्रभाव बिलकुल नही पडा था। उसके धातुके कड़ेपर गहडवाल-नरेशकी मुहर अंकित थी। यह अभिलेख, अपने ही उल्लेखके अनुसार, संवत् ११८६को आषाढ पूर्णिमाके सोमवार अथवा २३ जून सन् ११३०को वाराणसीसे प्रसारित हुआ। इस अभिलेख-द्वारा छह गाँवोकी आयका दान 'पवित्र जेतवनके महाविहारमे निवास करनेवाले भिक्षुसंघको किया गया था जिसके प्रधान और अग्रणी बुद्धभट्टारक थे।' इस अभिलेखसे दीर्घकाल-से जेतवन खोजनेका विद्वानोका प्रयत्न सफल हुआ और न केवल बुद्धके आवाससे पुनीत, सुदत्त अनाथपिण्डकके रोमांचक दानसे इतिहास-प्रसिद्ध जेतवन विहारकी वास्तविक स्थितिका पता चला बल्कि साथ ही महेठके टीलोके नीचे दबी कोसलकी राजधानी उस विख्यात श्रावस्तीका भी पुनरुद्धार हुआ, जिसके परकोटोके बाहर वह जेतवन अवस्थित था। यह ताम्रपत्र निस्सन्देह भारतीय इतिहासकी अन्यतम उपलब्धियोमे-से है और

बारहवीं सदी तक सहेठको जेतवन माने जानेका प्रमाण प्रस्तुत करता है।

उससे भी प्राचीनतर प्रमाण गुप्त-कुषाणकालीन अभिलेखोसे संयुक्त मूर्तियोकी तत्स्थानीय उपलब्धिसे मिला। जेतवनके जिन कोसम्ब और गन्धकुटियोमे तथागत बुद्धने निवास किया था, उनके गुप्तकालीन अवशेष मिल गये। कमसे कम उनके आजसे कोई डेढ हजार साल पहले बननेके प्रमाण प्राप्त हो गये। खुदाइयोकी गणनामे मन्दिर नं० २ गन्धकुटीका अवशेष माना गया, मन्दिर नं० ३ कोसम्बकुटीका। गन्धकुटीके द्वारकक्ष-की फर्श कक्रीटसे बनी थी। इस कंक्रीटकी फ़र्शका विस्तार मन्दिरके चतुर्दिक् परकोटे तक था। परकोटेकी दीवार ८ फुट मोटी, ११५ फुट लम्बी और ८९ फुट चौडी थी, जहाँ बुद्ध निवास करते थे, उसे गन्धकुटी कहते थे। गन्धकुटीका विधान इस प्रकार मिलता है – १. यह मात्र बुद्धके आवासका नाम होगा, २. वह विहारके बीच बना होगा, कुछ ऊँचा जिसमे प्रवेशके लिए बाहर सोपान मार्ग बना होगा। कुटी औ' सोपान मार्ग बडी सुरुचिसे बनाये जाते थे, सुदर्शन। उसके चतुर्दिक् फूलोके पौधे लगे होते थे, फूलोको रखनेका प्रबन्ध होता था जिससे वहांका वातावरण महमह होनेसे कुटीको 'गन्धकुटी' संज्ञा सार्थक होती थी। सहेठके जेतवन-की यह कुटी इसी विधानसे बनी है और वहाँ मिले सभी भवनोमे अन्यतम और सर्वाधिक अलंकृत है, साथ ही उसके द्वारके नीचे एक सोपान-मार्ग भी बना हुआ है। यह इमारत निस्सन्देह गुप्तकालकी है, पर इससे यह प्रमाणित हो जाता है कि यह उसी स्थलपर बनी जहाँ बुद्धका मूल निवास था और उसी वस्तु-विधानसे निर्मित हुई जो मूल भवनका रहा था।

कोसम्बकुटी (मन्दिर नं० ३) से लगा ईंटोसे बना मार्ग है, ५३ फुट लम्बा, १६ फुट चौडा, ४ फुट ऊँचा। इसका बाहरी भाग गुप्तकालीन स्तूपोकी अलंकरणविधिसे अलंकृत है। इस उन्नतमार्ग तक पहुँचनेके लिए सीढियाँ बनी है, जो अंशत आज भी सुरक्षित है। जेनरल कनिंघमने इसी प्रकारका बुद्धके टहलनेका मार्ग – जो चक्रम कहलाता था – गयाके

महाबोधि मन्दिरकी उत्तर ओर ढूँढ निकाला था। वह भी ठीक सहेठ (जेतवन) की कोसम्बकुटीमे बोधिसत्त्व मथुरा (मथुरा और सारनाथके बोधिसत्त्वोकी ही जोडकी, समान कलावन्तकी बनायी, समान दानी भिक्षु 'बल' द्वारा दानमे दी हुई) की एक विशाल मूर्ति मिली है जिसे भिक्षु बल-ने प्रसिद्ध कुषाण-नरेश कनिष्कके तीसरे राज्यवर्ष (ईसाकी पहली सदी ईसवी) मे वहाँ पधराया था। उस मूर्तिपर खुदे अभिलेखसे प्रकट है कि कोसम्बकुटीमे ही वह मूर्ति स्थापित की गयी थी। कोसम्बकुटी बुद्धका तब आवास बनी जब, बौद्ध साहित्यके अनुसार, वे त्रयस्त्रिंश स्वर्ग-से धरापर पधारे थे। इस प्रकार सहेठ-महेठके इस जेतवन और कोसम्बकुटी-को बुद्धके मात्र ५०० वर्ष बाद कुषाणकाल तक ऐसा माने जानेका प्रमाण प्राप्त है। और निस्सन्देह यह कुषाणकालीन विश्वास और भी प्राचीन बुद्धके निकटतरके प्रमाणपर आधृत रहा होगा।

इसके अतिरिक्त भी सहेठके भग्नावशेषोका कालस्तर मौर्यकाल अर्थात् बुद्धके निर्वाणके दो सदियो बाद तक पहुँच जाता है। कारण कि अँगुलिमाल अथवा भित्तिस्तूप, जिनके खण्डहर यहाँ मिले है, मौर्यकाल अर्थात् ईसासे प्राय. ढाई सौ साल पहलेके है।

इस प्रकार प्राचीन श्रावस्ती और उसके उत्तरवर्ती उपवन जेतवनके अवशेषोके टीले सहेठ और महेठके दो भागोमे अवस्थित है। सहेठकी खुदाइयाँ तीन भागोमें हुई है। वह समूचा ही जेतवन था। उत्तरी भागमें एक विस्तृत विहार था, जेतवनका महाविहार, १५० फुट लम्बा, १४२ फुट चौडा। उसमे आँगनके चारो ओर ३६ कमरे बने थे। कमरो और आँगनके बीच बरामदे थे जिनकी छतें खम्भोपर टिकी थीं। खम्भे सम्भवत. लकडीके थे, उनके आधार ईंटोके बने थे। फ़र्श कंक्रीटकी थी। इसी विहारके भग्नावशेषपर दसवी सदीमे एक मन्दिर बनाया गया था। जेतवनका यह उत्तरी भाग था, उसकी उत्तरी सीमा इससे भी उत्तरकी ओर थी। चीनी यात्री फ़ाह्यानने जेतवनके पूरब और

उत्तर दो द्वार देखे थे। इस उत्तरी भागमे खोदनेपर कुछ पहली-दूसरी सदियोंके कुषाणकालीन भवन भी मिले। जेतवनके मध्य भागमे ही बुद्धके आवाससे पवित्र कोसम्बकुटो बनी थी।

जेतवनके दक्षिणी भागकी खुदाई एक दृष्टिसे विशेष महत्त्वकी सिद्ध हुई। यहाँ सिक्के काफी संख्यामे मिले। एक विहारके भिक्षुकक्ष नं० १५मे एक पात्रमे गडे शक सिक्के मिले। इनमे कुछ पंजाबमे नमककी पहाड़ियोके जनपदके राजा सोफाइतिज़ (सौभूति) के भी थे। कुछ अयोध्याके राजा आयुमित्र, कुषाणोके राजा कनिष्क, हुविष्क और वासुदेवके भी ताँबेके सिक्के थे जिनसे प्रकट है कि शक – कुषाणोका अधिकार भी कोसल (अवध) पर रहा था। बुद्ध, बोधिसत्त्वकी समूची और खण्डित पत्थर-की मूर्तियोके अतिरिक्त बडी संख्यामे वहाँ मिट्टीकी मुहरें भी प्राप्त हुईं।

महेठके टीले सहेठके टीलोसे आकारमें बडे विस्तृत थे। स्वाभाविक ही है, क्योकि जहाँ सहेठ नगरके बहिरुपवन जेतवनकी भूमि थी वहीं महेठ कोशलकी राजधानी और महानगरी स्वयं श्रावस्तीका प्रतिनिधि था। नगर मिट्टीके परकोटोसे तीन ओरसे घिरा था, एक ओर राप्तीकी धारा थी जिससे उधर श्रावस्ती प्रकृतितः ही सुरक्षित थी। पुराविदोने नगरके उत्तर-पश्चिममे दौड़नेवाले परकोटे प्राय: ३५–४० फुट और दक्षिण पूर्वमें प्रायः २५–३० फुट लम्बे खोद निकाले है। परकोटेके नीचे ही राप्ती बहती थी जिससे उधरका परकोटा कुछ कट भी गया है। नदी आज अपनी प्राचीन तलहटीमे नही बहती, प्राय दो मील दूर हट गयी है। उसीके तीर कभी श्रावस्तीके भवनोकी परम्परा खडी थी।

बुद्धपूर्व भारतके सोलह महा जनपदोमे काशीके साथ कोसलकी भी गणना की गयी थी। बुद्धके समय उत्तर भारतमे चार राजसत्ताएँ प्रबल थी, मगधका हर्यंक राजकुल वत्सके कोशाम्बीके उदयनका कुरु राजकुल, मध्यभारतसे लगी चण्डप्रद्योत महासेनकी उज्जयिनीका अवन्तिराजकुल, और प्रसेनजित्की श्रावस्तीका यह कोसल राजकुल। इनके अतिरिक्त

शाक्यो, मल्लो, लिच्छवियों, वज्जियोके अनेक प्रबल गणतन्त्र थे जो मगध और कोसलके फैलते साम्राज्योमे समा गये। श्रावस्तीके ही सेनापति बन्धुलने अपनी गर्भवती भार्याकी इच्छापूर्तिके लिए वैशालीके प्रतापी राजाओकी अभिषेक-पुष्करिणीके लिच्छवी प्रहरियोका वध कर उसका वहाँ स्नान सम्भव किया था।

स्वयं श्रावस्ती और राजगृहमे विग्रह प्रारम्भ हुआ। प्रसेनजित्की भगिनी मगधके बिम्बिसारको ब्याही थी और काशी जनपद वह स्नान-चूडा (तेल आदि) खर्चके लिए दहेज़मे ले गयी थी। अजातशत्रुके अपने पिता और प्रसेनजित्के भगिनीपति बिम्बिसारका वध कर देनेपर कोसल-राजने काशीकी करदाय रोक ली थी। अजातशत्रुने दीर्घकालिक युद्ध कर कोसलसे काशी छीन ली, साथ ही वहाँकी राजकन्या वाजिराको ब्याहा। उधर विडूडभने पिता प्रसेनजित्को श्रावस्तीसे मार भगाया। प्रसेन-जित् आश्रयकी खोजमे सम्बन्धी मगधराजके नगर राजगृहकी ओर चले और उसके प्राचीरो तक भूखे-प्यासे पहुँचते-पहुँचते उन्होने दम तोड दिया। प्रात: जब नगरका द्वार खुला श्रावस्तीके राजाका शव वहाँ पडा मिला।

पाटलिपुत्र अभी भविष्यके गर्भमे था, शोण और गगाके कोणमे बसे क्षुद्र गाँव पाटलिमे तब उसके गौरवका बीज अभी छिपा था। श्रावस्तीका प्रताप तब तप रहा था। बुद्धका एक सीमावास तब श्रावस्तीका जेतवन था, दूसरा राजगृहका वेणुवन और बीचकी कुसीनारा और वैशाली उनकी यात्राकी चरणरज लेती थी।

श्रावस्ती प्राचीन कालमे ही उजड गयी। अनेक बार वह जलकर क्षार हुई, अनेकोके कोपकी भाजन बनी। उसके भवनोका कोयला राखके नीचे आज भी दबा है, पर कालान्तरमे परिवर्तित हीरेके रूपमें। अनाथ-पिण्डकके स्वर्ण सिक्कोसे ढँकी जेतवनकी भूमिपर अद्यावधि मस्तकहीन समाधिस्थ खडी तथागतके सन्निवेशसे पवित्र कोसम्ब और गन्धकुटियोकी दीप्ति किस कोहेनूरसे कम है?

■

अम्बपालीकी अमराई

वैशाली

गण्डक पार पूरब जहाँ आज बिहारके मुजफ्फरपुर ज़िलेमे बसाढ गाँव, राजा बिसालका गढ, कुण्डपुर, बनिया (वाणियागाम) और कोल्हुआ खडे है, वही कभी वर्धमान महावीर और तथागत बुद्धके आवाससे पुनीत नगरी बसी थी, वैशाली। ७७०७ प्रासाद थे अलम्बुष-इक्ष्वाकुके तनय विशालको वसायी उस नगरीमे, ७७०७ कूटाकार (अटारियाँ) थे, ७७०७ आराम (उद्यान), ७७०७ पुष्करिणियाँ (तालाब) थी। नगर-के भीतर नगर प्राचीरोसे घिरे, द्वारोंसे बिधे, अन्तरतमके बीजनगरके भवन स्वर्ण शिखरोसे मण्डित, उससे बाहरके नगरके प्रासाद रजत शिखरोसे धवल, बाह्यतम घेरेके भवन ताम्रकूटोसे अभिराम।

उसी वैशालीसे कालग्रहसे आते बुद्धके स्वागतके लिए जब पीत, हरित, नील, अश्व जुते पीत, हरित, नील रथोपर आरूढ पीत, हरित, नील उष्णीप वस्त्र अलकार पहने पीत, हरित, नील वर्म अस्त्र-छत्र धारण किये दलके दल लिच्छवि राजा आये तब तथागतने भिक्षुओको सम्बोधन कर कहा था : "भिक्खुओ, तुमने कभी त्रयस्त्रिंश स्वर्गके देवताओको उनकी नगरी सुदर्शनासे नन्दन जाते नही देखा। भिक्खुओ, देखो आज उन देवताओको ! देखो, इन देवसम लिच्छवियोको। वैशालीके इन लिच्छ-वियोको परिपद्को देखो। देखो, गजारूढ इन्हे, इन स्वर्ण-छत्र मण्डित, स्वर्ण शिबिकावाहित, स्वर्ण-रथारूढ इन लिच्छवियोको देखो।"

७७०७ विशिष्ट कुल थे वैशालीमे। प्रत्येक कुलका प्रतिनिधि 'राजा' कहलाता, पुनीत पुष्करिणीके जलसे अभिपिक्त हो लिच्छवियोका अराजक गणतान्त्रिक सथागारमें बैठता। लिच्छवि राजाओसे भिन्न जन कभी उस

पुष्करिणीके जलसे आचमन नही कर सकते थे। दिन-रात पहरुए उस पोखरकी रक्षा करते। घने जालसे पोखरका आकाश ढका रहता जिससे पक्षी तक उसमे अपनी चोच न डुबा पाते। बस एक बार उसका जल अनावृत हुआ जब श्रावस्तीके सेनापति बन्धुलकी गर्भिणी पत्नी मान कर बैठी। "जबतक वैशालीकी अभिषेक मगल पुष्करिणीमे स्नान न कर लूँगी, उसके जलसे तृप्त न हो लूँगी, आहार ग्रहण न करूँगी"—शपथ ली मल्लिकाने।

गर्भिणीका मान किस मानी पतिने नही रखा? बन्धुल जानपर खेल जाने-वाले एक सहस्र धनुर्धर लिये, पत्नीको रथपर बिठा एक रात वैशाली जा पहुँचा। पुष्करिणीके रक्षक आकस्मिक आक्रमणके बावजूद जानपर खेल गये। लडते हुए वीरगतिको प्राप्त हुए। कुछ अचानकके संकटसे, कुछ गर्भिणीके मानकी रक्षाके लिए लिच्छवियोमे द्विधा-भाव जनमा। बन्धुलकी दुरभिसन्धि फली। गर्भिणीकी मान रक्षा हुई। मल्लिकाने मन-भर अभि-षेक मंगल पुष्करिणीमे नहाया, छककर उसका जल पिया, पतिके साथ श्रावस्ती लौटी।

वैशालीने इससे अपना पराभव न माना। उसका वैभव विपुल था: उसकी शक्तिके आतकसे आये दिन राजा और सम्राट् डर जाया करते। उसी श्रावस्ती और कोसलके राजा प्रसेनजितको एक दिन खिन्न मन देख बुद्धने पूछा था: "महाराज, ऐसे सन्न क्यो हो? मगध श्रेणिक राजा बिम्बिसार तो कही अप्रसन्न नही हो उठे? लिच्छवियोका कोप तो कही नहीं भडक उठा?"

गगाके घाटोका कर कुछ वैशालीके लिच्छवि उगाहते, कुछ लिच्छ-वियोके छोडते ही मगधराज अजातशत्रु। वहाँ बहुमूल्य सुगन्ध द्रव्य बहुत उतरता था। उधर अजातशत्रु 'आज जाऊँ — कल जाऊँ' के विकल्पमे पड़ा रहता, और एकमत संकल्प किये लिच्छवि पहले जाकर कर ले लेते — पीछे जब अजातशत्रु जाता, तब विकल मन कुपित वह

राजगृहको लौट पड़ता। सालों-साल मुँहकी खानी पडती। तब अजातशत्रुने लिच्छवियोको जीतनेके उपाय सोचे, बुद्धके पास मन्त्री वर्षकारको भेजा। बुद्धने लिच्छवियोंको उनकी एकमत मन्त्रणा और अभेद्य नीतिको अजेय बताया। अजातशत्रुने तब संघभेदको अपना अस्त्र बनाया। और जब उसकी फूट-नीतिसे लिच्छवियोंका भी एक साथ रहना, मन्त्रणा करना कठिन हो गया, दो जन तक एक दूसरेके प्रति शंकासे विरत न हो सके, तब लिच्छवियोका वह गढ टूटा।

वरना वैशाली अजेय थी। विशालसे सुमित्रके शासन तक अजेय चली आयी थी, फिर कालान्तरमे गणतन्त्र और संघशासनका निर्माण कर और शक्तिमती हो उठी थी। हिमालय पर्यन्त फैले उसके महावनकी रमणीयता अनुपम थी। उसे देख बुद्धने कहा था : "आनन्द, रमणीय है वैशाली, रमणीय है उसका उदयन चैत्य, उसका वह गोतमक चैत्य रमणीय है, सप्ताम्रक चैत्य रमणीय है, रमणीय है, आनन्द उसके बहुपुत्तक चैत्य, सारन्दद चैत्य। अभिराम है, रमणीय है, आनन्द, वैशाली।"

उसी अभिराम वैशालीके दक्षिण भागमे अवस्थित अभिरामतर वह अमराई थी, जिसमे मदिर मानत्री अम्बपालीका आवास था। गणिका थी अम्बपाली, गणकी अपनी, समूचे लिच्छवी-गणके उच्छल रागकी रागिणी अम्बपाली जन्मजात गणिका न थी, मनोनीता गणिका थी। जब उसके यौवनका मादक सौरभ वैशालीके वनान्तोको सुरभित कर नगरीके कुमारोका अन्तर मथ चला, जब उसके करग्रहणकी लालसासे बाहर आये विवाहाकुलो और लिच्छवि कुमारोमे घना संघर्ष छिड गया, तब महानामने अम्बपालीको गणको ला सौंपा। "सौन्दर्य अम्बपालीका निःसीम है, निर्बन्ध है", महानाम बोला : "उसके द्वारा एकका लाभ अनेककी हानि है। गणको सौंपता हूँ अम्बपालीको। वह अनेकको हो, गणकी हो, गण उसे स्वीकार करे, वह गणकी हो, गण आदेश करे।"

और गणने आदेश किया, शासन किया : अम्बपाली गणकी हुई,

गणिका बनी, एकके भोगसे ऊपर, समूचे गणके अनुरागकी केन्द्र। फिर तो जैसे-जैसे उसकी अमराइयोंके आम बौराये वैसे ही वैसे वैशालीके किशोर उसके तरुण और प्रौढ भी कामासक्त हुए। अमराइयोंमें पराग झड पडा। बिम्बिसार मगधसे राग लिये आया, अम्बपालीने अभिसारका दान दिया। पुत्ररत्न भेट किया।

और अपने प्रासादोंमें धनका कूट खडा कर अम्बपाली एक दिन तथागतके वचन सुन स्वर्णराशिसे विरत हो उठी। रूपकी छलना उसे अब और न छल सकी। एक दिन उसने अपनी अमराइयोंमें बुद्धको भिक्षु संघसे ला उतारा। उन्हें उसने अपना वह आम्रकानन सौंप दिया।

लिच्छवि श्रीमानोंने, वैशालीके राजाओंने बुद्धसे भोजनका प्रसाद माँगा था। अम्बपालीका विनीत निमन्त्रण तथागत स्वीकार कर चुके थे। उन्हें तथागतने मौन-द्वारा लौटा दिया, तब वे अपने रथोंपर खिन्न मन लौटे। तभी बुद्धकी निमन्त्रण-स्वीकृतिसे उल्लसित अम्बपाली भी नगरको लौट रही थी। उसने गर्वसे लिच्छवि तरुणोंके रथोंकी धुरियोंसे धुरी, चक्कों-से चक्का, जुओंसे जुआ सटाकर अपना रथ हाँका। उसके दर्पसे कुपित, धृष्टतासे चकित लिच्छवि कुमारोंने गणिकाके अविनयका कारण पूछा।

गणिका बोली : "भगवान्‌ने भिक्षुओंके साथ, आर्यपुत्रो, मेरा निमन्त्रण स्वीकार कर लिया है।"

लिच्छवि कुमार बोले : "अम्बपालि, मुँहमाँगा धन ले लो, तथागतका निमन्त्रण हमें बेच दो।"

"निमन्त्रण अलभ्य है, आर्यपुत्रो, महाभोज नहीं बेच सकती," अम्बपाली हँसी।

"सौ लो, अम्बपालि, सहस्र लो, लक्ष लो, गणिके, इस भोजके बदले!" लिच्छवि बोले।

"ना, आर्यपुत्रो", अम्बपाली अड़ गयी, "यह विशाल नगरी, वैशालीका समूचा जनपद तुच्छ है उस महाभोजके सामने। उनके बदले भी

इस निमन्त्रणको न बेचूँगी । राह लो अपनी ।"

"अम्बिकाने छल किया। अम्बिकाने हमे जीत लिया", कहते लिच्छवि तरुण चले गये। तथागतने भिक्षुसंघके साथ अम्बपालीकी अमराइयोमे जीमा। अमराइयोने अभिसार विसार दिये, उनमे अब भिक्षुओके दीक्षा-संकल्प, तीनो 'शरणो' के उद्घोष गूँजने लगे।

नारीके संघ-प्रवेशसे उदासीन तथागतके बार-बार तिरस्कारसे सम्बलित धातृमाता, मासी, प्रजापती गौतमी इसी वैशालीके 'वटवन' के संघद्वारपर एक दिन आ खडी हुई थी। राजगृहसे चलकर वह आयी थी। महिलाओसे घिरी सिर मुडाये, भगवा पहने, चलनेकी थकानसे जर्जर, सूजे पैरोकी पीड़ाको अमान करती, मलीन-सूखा मुँह लिये, आँखोमे आँसू-भरे महावनकी कूटागारशालाके द्वारपर आनन्दसे बोली, "स्वीकार करा दो, आनन्द, तथागतसे नारियोंका संघ प्रवेश।"

आनन्दने तथागतसे आठ आदेशोके बदले संघमे नारी प्रवेश स्वीकार करा दिया था और उनका पालन अपना अनिवार्य कर्त्तव्य मान गौतमीने कहा था, "आनन्द, जैसे नववयस्क तरुण-तरुणी स्नानान्तर दोनो हाथोमे कमल, चमेली, अतिमुक्तकके फूलोकी मालाओके अलंकार उल्लासपूर्वक मस्तकपर धारण करते है, तत्परतासे सजते है, वैसे ही उल्लासके साथ तथागतके इन अष्टादेशोके पालनकी प्रतिज्ञा करती हूँ। जीवनमे कभी इनकी अवहेलना न होगी, आनन्द, विश्वास करो।"

लिच्छवियोके गणराजा जिस चेटकने अपनी कन्या चेल्लनाके कर-ग्रहणके लिए मगधराज बिम्बिसारका निवेदन ठुकरा दिया था, वही, कन्याका अभिमत जान, उसकी रक्षासे विरत हो गया। और तब एक दिन वत्सराज कामचारी उदयनके आचरणसे प्रभावित बिम्बिसार वैशाली-से चेल्लनाको ले भागा। वैशालीका अभाग्य कि चेल्लनाकी ही कोखका जना चेटकका दौहित्र अजातशत्रु लिच्छवियोके विध्वंसका कारण बना।

चेटकका आवास कुण्डग्राममे था, जहाँ उसकी भगिनी त्रिशला

ज्ञातृकोमें व्याही थी। इसी त्रिशलाका वह पुत्र वर्धमान महावीर था. जिन परम्पराका एकान्तिक सिद्ध निर्ग्रन्थ केवली, जिसकी शीतोष्ण सुख-दुःखकी एकायनता, तपकी सहिष्णुता ग्रीक स्तोइक दार्शनिकोका आदर्श बनी, निःसीम तपन जिसकी निरावृत कायाका उल्लास बनी, शान्ति और अहिंसा जिसके जैन सिद्धान्तके सर्वस्व बने। वैशाली उस नाटपुत्त निगण्ठ महावीरकी भी प्रसविनी बनी थी। और उस अचेल कोरमट्टक नागाकी भी, जिसने सप्तव्रतके संकल्पसे उस नगरीकी सीमा बाँधी थी। उसने व्रत किया था, वस्त्र धारण न करनेका, आमृत्यु ब्रह्मचर्यका, मांस भोजन और सुरापानसे भिन्न कुछ भी भोजन न करनेका, पूर्वकी ओर उदयन चैत्य, पश्चिमकी ओर सप्ताम्रक चैत्यसे आगे न जानेका। ये ही चैत्य वैशाली नगरीके चतुर्द्वार थे, उसकी सीमाएँ।

कुसीनाराकी ओर महापरिनिर्वाणके लिए अग्रसर बुद्धने नगरके सीमान्तपर अपने समूचे शरीरसे वैशालीकी ओर घूम गजवत् उस नगरीको निहार आर्द्र कण्ठसे कहा था, "आनन्द, तथागतका यह वैशाली दर्शन अन्तिम है। अब फिर, आनन्द, तथागत वैशाली न लौटेंगे।" और गाथाकारने उस करुण वचनको संस्कृतमें अमर कर दिया था :

भगवन् वैशालीवनं अविशरणं दक्षिणेन
सर्वकायेन नामावलोकितेन व्यवलोकयति।
इदम् आनन्द तथागतस्य अपश्चिमं वैशालीदर्शनम्।
न भूयो आनन्द तथागतो वैशाली आगमिष्यति॥

कुछ काल फिर भी वैशालीका महत्त्व बना रहा। बौद्धोंकी दूसरी संगीतिकी बैठक वहीं हुई। लिच्छवियोंने बुद्ध और आनन्दकी अस्थियोंपर वहाँ स्तूप निर्मित किये, अशोकने अपना सिंह-शीर्षक स्तम्भ वहाँ खड़ा किया, जो कोल्हुआमें आज भी खड़ा है। फ़ाह्यानने उन्हें खड़ा देखा था, हुएनत्सांगने वैशालीके बीस मीलके गिर्दका बखान किया था। लिच्छवियोंका तेज अभी सर्वथा बुझा न था, यद्यपि उनकी नगरी

विनष्ट हो गयी थी।

तीसरी सदीमे गुप्तोंकी उदीयमान शक्तिको लिच्छवियोकी अस्तगामिनी शक्तिका सहारा मिला। चन्द्रगुप्त प्रथमने लिच्छवि-कुमारी कुमारदेवी-का कर ग्रहण कर अपनेको धन्य माना और उस महान् घटनाको अपनी उस विशेष स्वर्ण मुद्राके प्रचलनसे अमर किया, जिसपर कुमारदेवीके चित्र-के साथ लिच्छवियोका नामोल्लेख था, 'लिच्छवयः' और उस विवाहसे प्रसूत गुप्त साम्राज्यका प्रतिष्ठाता समुद्रगुप्त तो अपने अभिलेखोमे अपनेको 'लिच्छवियोंका धेवता' (लिच्छविदौहित्रः) बार-बार लिखकर भी न अघाता था। चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यके राज्यकालमे वैशाली उसके शासन प्रान्त तीरभुक्ति (तिरहुत) का केन्द्र बनी रही। अन्तमे इन्ही लिच्छ-वियोकी एक शाखा नैपालका राजवंश बनी। सातवी सदीके आरम्भ तक वैशाली मिट चुकी थी, यत्र-तत्र उसके भग्नावशेष खड़े थे, उसके कुण्डग्राम, वाणियगाम, अभिराम चैत्य, अमराइयाँ कबकी कालके अन्तरालमे समा चुकी थी।

धराशायिनी वैशालीकी समाधि १९०३-४ मे तब टूटी जब पुरातत्त्व विभागके सुपरिण्टेण्डेण्ट डॉ० ब्लाखने और १९१२ मे डॉ० स्पूनरने वसाढ़-की भूमि खोद डाली। भग्न स्तूप-सा राजा बिसालका गढ़, ईंटोंका ढेर, भूतलसे, जुते खेतोसे, प्रायः ८ फुट ऊँचा पडा था, उत्तरसे दक्खिन लम्बाई-मे प्रायः १७०० फुट पूरबसे पच्छिम चौडाईमे प्रायः ८०० फुट।

वैशालीका प्रधान राज-प्रासाद अथवा दुर्ग मानकर पुराविदोंने पहले राजा बिसालके गढपर ही कुदाल चलायी। १८८१ मे ही जनरल कनिं-घमने गढ़के प्राचीरोकी खोज की थी, पर सिवा २०० फुट चौडी खाई (जो अब केवल १२५ फुट बच रही है) के उसके प्राकारोका कोई चिह्न शेप नही मिला। ब्लाखका श्रम सफल हुआ और ९-१० फुट भूमि खोदते ही पहले सातवी सदीमे हुएनत्साग-द्वारा देखे भवनोकी दीवारें पीछे प्रारम्भिक गुप्त काल अर्थात् ३०० ई० के आस-पासकी मिट्टीकी मुहरें निकल पड़ी।

छोटे-छोटे कमरे जिनकी छतें कंक्रीटकी बनी थी और जिनमे मलबेके साथ ठप्पे लगानेवाली मिट्टीकी ७२० मुहरें मिल गयी।

पर वैशालीके विगत गौरवको देखते, जो विशेषत बौद्ध और जैन ग्रन्थोमे अटूट सुरक्षित था, वह पर्याप्त नही समझा गया और डॉ० स्पूनरने आठ साल बाद, १९१२ के वसन्तमे, कुदाली-द्वारा निचले स्तरोकी खोज प्रारम्भ की। १६-१८ फुट नीचे पहुँचते ही धरातलका जल मिल गया, पर क्वारी भूमि अभी और भी नीचे थी, जिस तक आज भी पुराविदोकी पहुँच न हो सकी। पानीमे हाथ डालते ही उसमे-से मूर्तियो, भाण्डो आदिके प्राचीनतर खण्ड निकल पडे, जिनमे प्रधान अशोककालीन पॉलिश किया हुआ चिकना पाषाण-खण्ड था, सुदर्शन मूर्ति-खण्ड। भग्नावशेषोका स्तर मौर्यकाल तक पहुँच गया। फिर कुछ मुहरें और पंचांकित सिक्के भी मिल गये, जो तीसरी-चौथी शताब्दी ई० पू० मे प्रचुरतासे चलते थे।

गुप्तकालीन, आजसे कोई डेढ सौ साल पुरानी, प्राय: पॉच सौ चिट्ठियोको मोडनेवाली सील-मुहरोसे ज्ञात होता है कि तबकी वैशाली व्यापारका केन्द्र तो थी ही, उसके व्यापारियो और निगमोके अतिरिक्त महत्त्वके नागरिक भी पत्रोपर मुहरोका उपयोग करते थे। कुछ राजकीय मुहरोके लेख इस प्रकार थे :

१ महाराजाधिराज श्री चन्द्रगुप्तपत्नी महाराज श्रीगोविन्दगुप्तमाता महादेवी श्री ध्रुवस्वामिनी।

२. श्री घटोत्कचगुप्तस्य।

३. कुमारामात्याधिकरणस्य।

४. युवराजभट्टारकपादीय बलाधिकरणस्य।

५. श्री रणभाण्डागाराधिकरणस्य।

६. दण्डपाशाधिकरणस्य।

इन मुहरोंके लेखोसे राजकीय पदाधिकारियों और उनके अधिकरणो अथवा विभागों (दफ़्तरों) को पहचान लेना कठिन न होगा। गुप्त साम्राज्यके प्रशासकीय विभागानुभागोंका पुनर्निर्माण इतिहासकारोने विशेषतः बसाढसे मिली इन मुहरोके आधारपर ही किया है। चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्यकी पत्नी ध्रुवस्वामिनीका नाम अन्यत्रसे तो उपलब्ध है ही, वैशालीकी एक मुहरमे भी लिखा है। इन्ही ध्रुवस्वामिनीको भाई रामगुप्तसे उनके साम्राज्यके साथ ही चन्द्रगुप्तने स्वायत्त कर लिया था। इन्हीके कारण शकराजका विक्रमादित्यने विनाश भी किया था।

ध्रुवस्वामिनीपर तो इधर भारतीय भापाओंमे प्रचुर साहित्य रचा गया है। गोविन्दगुप्त इन्ही ध्रुवस्वामिनीके पुत्र और सम्राट् कुमारगुप्तके अनुज तथा उनके तीरभुक्ति (वैशाली) स्थित राज्यपाल थे।

इन ७२० मुहरोके प्राय: ११०० मुद्रांकनोके १२० वर्ग है, जिनमे राजकीय मुहरोका वर्ग केवल एक है। सौदागरो, सेठों, व्यापारियो तथा उनकी श्रेणियों, निगमों आदिकी मुहरोका वर्ग भिन्न था, महत्त्वमें राजकीय मुहरोसे कुछ ही घटकर।

कुछ मुहरों और सिक्कोके अतिरिक्त मौर्यकालसे उपलब्ध स्मारकोमे प्रधान तीसरी सदी ई० पू० का अशोकका बनवाया एक सिंह-स्तम्भ है, जिसे वहाँके रहनेवाले 'भीमसेनकी लाठी' कहते है। यह राजा बिसालके गढसे प्राय: दो मील उत्तर-पश्चिममे स्थित कोल्हुआ गाँवमे बाबा नारायण दास बैरागीके आँगनमे खड़ा है। इसपर कोई अभिलेख नही है। लगता है पाटलिपुत्रसे नेपाल जानेकी राहमे रामपुरवा, लौरिया अरराज और लौरिया नन्दगढकी भाँति कोल्हुआ भी पडता था। स्वयं अशोकने पाटलि-पुत्रसे नैपाल जानेके लिए यह राजमार्ग निर्मित किया था।

कोल्हुआ गाँव प्राचीन कोल्लाक अथवा कुण्डग्राम है, जहाँ वर्धमान महावीरका जन्म हुआ था।

पिछली खुदाइयोंसे वैशालीकी पुरातात्त्विक प्राचीनता मौर्यकाल तक प्रमाणित हो गयी है। उससे पूर्वकी उसकी स्थितिपर रामायण, बौद्ध, जैन साहित्य प्रकाश डालते हैं। अभी बसाढके पास अनन्त टीले अपने अन्तरमे इतिहास छिपाये खड़े हैं। जो खुदे है उनकी भी निम्नतम भूमिका स्पर्श कुदालने अभी नही किया है। कुछ आश्चर्य नही जो खुद जानेपर यह भूमि न केवल महावीर बुद्धकालीन इतिहासको खोलकर रख दे, बल्कि उससे पूर्वका उपनिषद्युगीन जीवन भी अँगड़ा उठे।

सन्त स्तेफानस,
मुरदोंके अम्बारका कंकाल
पहरुआ

कंकालों और अस्थियोंका अम्बार
जिनकी रखवाली पन्द्रह सदीसे
सन्त स्तेफानस करता आ
रहा है

मुरदोंके अम्बारका
कंकाल पहरुआ

'माइ गॉड !' सहसा ग्लैडिसके मुँहसे भयमिश्रित चीत्कार निकली।

वह यकायक पीछे हटी और इतिहासके टीले खोदनेवाले वेण्डेल फिलिप्सके घुटनोमे जा गिरी। वेण्डेल फिलिप्स एक हाथसे उसे सँभालते डग-भर पीछे हटे, डॉ० जामसे टकरा गये। डॉ० जामने एक डग आगे भरकर देखा, नज़र आगेसे पीछे फिरी, जिज्ञासाकी नज़र, डॉ० अल्ब्राइटकी ओर। अल्ब्राइट अबतक आगे बढ आये थे और जो सामने था उसपर उनकी निगाह जम गयी थी, सबकी निगाहे उन्हींपर लगी थी। उनके मुँहसे निकला केवल 'हुँ—ऊँ—।'

कण्डीलके क्षीण प्रकाशमे दृश्य निस्सन्देह भयावना हो रहा था—सामने नरकंकाल छठी सदीका लेबास पहने कुरसीपर, पत्थरके कुरसीनुमा आसनपर, बैठा था।

तबकी बात है जब भारतमे उसके इतिहासका स्वर्णयुग अभी चुका न था यद्यपि उसके निर्माता गुप्त सम्राट् हाल ही राज कर चुके थे और हूणोने रोमन साम्राज्यकी रीढ हमलोसे तोड दी थी। तभी सिनाई (तूर) पर्वतके चरणोमे खडे सन्त कथरीनीके मठमे ५८० ई० में सन्त स्तेफानस मरा था। जीवन-भर वह पर्वतके कब्रगाहका रखवारा रहा था, जब वह मरा तब उसने अपनी अकिंचन इच्छा प्रकट की कि वह सदा उसका पाहरू बना रहे और तबसे आज तक लगातार प्राय: डेढ हजार साल तक, उसी कब्रगाहके द्वारपर वह बैठा रहा है, तभीका पादरी परिधान पहने – सिर-पर बैजनी टोपी, तनपर कुरतानुमा चोगा, गलेमे क्रूस लगी लम्बी सामने लटकती ज़ंजीर, दण्ड और सुमिरनी माला धारे। मानिक टूट जानेसे

मस्तक दाहिनी ओर झुका कन्धेपर टिका हुआ है। मस्तक क्या हड्डियोका कपाल-मात्र, जिससे त्वचा लुप्त हो गयी है, खोपड़ीके ऊँचे ऊपरी उभारके नीचे आँखोके दो बडे गढे नाकके दो छोटे सुराख किसीको भी सकतेमे डाल सकते है। पैर लेबाससे बाहर निकले हुए है, त्वचाविहीन नंगे है, उँगलियाँ केवल हड्डियोकी मोटी रेखाएँ रह गयी है।

सिनाई (तूर) के इस कब्रगाहमे केवल छह मुरदोके लिए जगह है। मठका जब कोई पादरी मरता है तब वह सातवाँ होता है और सातवेंको दफनानेके लिए वहाँ जगह नही। पर कमसे कम एक बार उसकी वहाँ सो लेनेकी तमन्ना होती है, फिर चाहे उसका शव कही क्यो न रख दिया जाय। इससे मठके पादरी उस सातवे नये मृतकको मूसाके स्पर्शसे पवित्र उस भूमिमे स्थान देनेका उपाय करते है। छहमे-से एक दफनाया शव क़ब्रसे निकाल दिया जाता है, छहोमे सबसे पुराना, और उसकी जगह यह नया शव दफना दिया जाता है। इस प्रकार मठका प्रत्येक मरनेवाला कुछ काल इस कब्रगाहकी पाक ज़मीनमे सो लेता है पर कयामतके पहले ही उसको उठकर अपनी हड्डियाँ जतनसे रखनेको दे देनी पडती है।

ककालके तब टुकडे कर दिये जाते है। हड्डियाँ अपने टालमे चली जाती है, खोपडियोके अम्बारमे। हड्डियाँ उस राशिमे सँभालकर रख दी जाती है जो ठीक लकडीके टाल-सी लगती है, खोपडियोका तो एक ऊँचा टीला ही बन गया है। जब कोई आर्चबिशप या विशिष्ट अधिकारी मरता है, उसकी हड्डियाँ लकडीके बॉक्समे या दीवारोमे बने ताकोमे सँभालकर रख ली जाती है। दखिनी फ्रान्सके प्रोवेन्समे दो भाइयोने एक बार चिढकर क्रोधमे अपने चाचाको मार डाला था। अपने उस पापके प्रायश्चित्तके लिए वे तब सिनाईके इसी मठमे चले आये थे। उन्होने मिलकर यह पाप किया था, इससे वे एक ज़ंजीरसे परस्पर अपनेको बाँधे रखकर पर्वतकी गुफामे निवास करते थे। साथ ही डोलते, साथ ही काम करते, खाते-पीते, साथ ही सोते। साथ ही शायद वे मर भी गये थे, साथ ही वे पाक

ज़मीनमे दफनाकर निकाल लिये गये थे और अब साथ ही पुरातन जंजीर-से आज भी जकडे वे डबल तावूतमे कंकालोके रूपमे सोये पड़े हैं। इस नियमका अपवाद केवल सन्त स्तैफानसका कंकाल है जो सदाकी भाँति आज भी कब्रगाहके द्वारपर बैठा सन्तरी भावसे उसकी रक्षा कर रहा है, प्रेतोंका प्रेत, कंकालोका रखवारा कंकाल।

इस सन्त कथरीनीके मठका नामकरण भी कुछ कंकाली परिस्थितियो-से ही सम्बन्ध रखता है। सम्राट् माक्सिमिनस द्वितीयके समय जब ईसा-इयोंपर रोएँ खडे कर देनेवाले अत्याचार हो रहे थे, कथरीनी तभी सिकन्द-रियामे मरी। घूमते हुए यन्त्रणाके यन्त्रपर धार्मिक अपराधीको कसकर तोड देनेका दण्ड दिया जाता था जबतक कि वह अपने धर्मको तौवा न कर दे या मर न जाय। पर कहते है कि जब कथरीनीको यन्त्र-चक्रपर रखा गया तब वह तो न टूटी उसकी बजाय यन्त्र ही टूट गया। तब उसका सिर काट लिया गया। पर मरते समय उसने जो प्रार्थना की थी कि उसका शरीर आततायियोंको न मिले, वह सहसा गायब हो गया और फरिश्तोने उसे सिनाई पर्वतपर पहुँचा दिया। वही सिनाई पर्वतकी ढलान-पर गेबेल मूसाके थोडा दक्खिन-पच्छिम मिस्री ईसाइयोको एक शव मिला जिसे उन्होने सन्त कथरीनीका शव माना और उसीके नामपर इस मठका नाम पड़ा। आज भी विशेष अवसरोपर दो चाँदीकी पेटियोंमे रखे सन्त कथरीनीके अवशेष दिखाये जाते है — कपाल और हाथ। हाथोकी उँग-लियाँ रतनजड़ी अँगूठियाँ पहने हुए है। अरबके दक्खिन यमनमे जहाँसे रब-अल-खाली — रीति दिशा — की ओर प्राचीन कालमें अरबी धूप-नैवेद्यके सुगन्धित द्रव्य संसारके देवताओकी पूजाके लिए ऊँटोके लम्बे कारवाँ रवाना होते थे, सिनाईका यह मठ उनकी प्रस्थान-भूमि था। यह वही खडा हुआ आज जहाँसे बाइबिलकी पुरानी पोथीके अनुसार जलती झाड़ियोके बीच भगवान् जेहोआने हज़रत मूसाको आवाज़ दी थी। उसी सिनाई पर्वतकी चोटी — गेबेल मूसा — पर मूसा चढ गये थे और वही

उन्होने भगवान्‌से पुनीत 'दशादेश' प्राप्त किये थे।

उन्ही 'दहकती झाडियो' की पवित्र भूमिपर रोमन सम्राट् कोस्ता-न्तीनकी माता – राजघरानेकी पहली ईसाइन – रानी हेलेनाने ३३७ ई० मे इस मठका निर्माण कराया जो सदियोके दौरानमे नये कलेवर धारण करता गया। पूरबकी ओर पर्वत पार अकाबाकी खाडी है जहाँ सालोमनके सौदागर जहाज़ अपनी मुसाफिरीमे विरमते थे, दक्खिनकी ओर रास मुहम्मद है, सिनाई अन्तरद्वीपका जलगत तिकोना, उधर उत्तर जिनका अपरिमित बलुई मैदान है, पुरानी पोथीका 'बियाबाँ' और उधर पच्छिम फ़राऊनोका वह मिस्र जहाँसे हज़रत मूसा अपनी इस्रायली जातिके क़बीलो-को ले भागे थे और मिस्री जुलमसे उन्हे मुक्त कर भागनेके दौरान सागर लाँघ इसी सिनाईकी जमीनपर उतरे थे।

इस सन्त कथरीनीके मठको हज़रत मुहम्मदने भी अपने आगमनसे पवित्र किया था। प्राचीन कालसे ईसाई सम्राट् और राजा-रानी इस मठ-को समृद्ध करते रहे है – पोप ग्रेगरी महान् (५९२-६०४) ने रोममे रहकर इसे भरा-पुरा, पिछली सदियोके राजाओने इसे सँवारा और १६६८ में नैपोलियनने इसका जीर्णोद्धार कराया। चौदह सदियाँ इस मठके इति-हासमे गूँजती रही है, धर्मयोद्धा क्रूसेडरोने इसकी चट्टानोपर खोदकर अपने नाम अमर कर दिये। यह भूमि यहूदियो, ईसाइयों, मुसलमानो – तीनोकी तीर्थ है, हजरत मूसा तीनोके नबी थे।

मठका महत्त्व इसकी प्राचीन पवित्रतासे भी बढकर इसकी हस्त-लिपियोकी राशिमे है। अत्यन्त महत्त्वके ग्रन्थरत्न इसके सदियो पुराने ग्रन्थागारसे उपलब्ध हुए है। लासाके बारह-चौदह हजार ऊँचो तिब्बती मठोके ग्रन्थागारोकी ही भाँति यह मठ भी ज्ञानका ऋद्ध आकर सिद्ध हुआ है। १८४८ मे जर्मन पण्डित एल० एफ़० के० फान टिशेण्डोर्फको चौथी सदोकी बाइबिलकी ग्रीक हस्तलिपि – प्रसिद्ध 'कोदेक्स सिनाइ तिकस' – यही

मिली थी। इतनी पुरानी हस्तलिपि किसी धर्मकी कहीं, मृतसागरके स्क्रोलोंके अतिरिक्त उपलब्ध नही हुई। टिशेनडोफने यह हस्तलिपि रूसी जारको भेंट कर दी और रूसी क्रान्तिके समय ब्रिटिश म्यूजियमने इसे साढे तेरह लाख रुपयोंमे खरीदा। ब्रिटिश म्यूजियममे यह प्रति आज भी सुरक्षित है। इसकी पंक्तियोके नीचे और बीच-बीचमे और भी प्राचीन लिखावट है जिसमे सन्तोके चरित लिखे है।

वेण्डेल फिलिप्सके नेतृत्वमें इसके ग्रन्थागारका उद्घाटन हुआ। नित्य प्रातः आठ बजे पादरी जौआरिक्म सदियोंकी ग्रन्थराशिके द्वार खोल देते और अमरीको काँग्रेस ग्रन्थागारके अध्यक्ष वालेस वेडके सहकारी हस्तलिपियोंकी फिलम पद्धतिसे नकलें तैयार करने लगते। दो पृष्ठोंका एक फोलियो होता है। ऐसे ५००० फोलियो नित्य आठ घण्टोमें कैमरे-द्वारा फिल्मायित कर लिये जाते। इससे इस अगाध ग्रन्थराशि और उसके सदियों संचयका अटकल लगाया जा सकता है।

पर इस ज्ञानराशिके पहरुए बाहरी दुनियासे कितने विमुख है। जब इस मठके ग्रन्थसंचयका पता चला और फ़िलिप्सने अपने पुराविदो और लिपि-विशेषज्ञोके साथ वहाँ डेरा डाला तब सन् ५०-५१ मे कोरियाका युद्ध चल रहा था। उसकी जानकारी तो सन्त कथरीनीके मठके वृद्ध पिता प्राखोमियसको खैर नहीं हो थी प्राखोमियसको भी बडा आश्चर्य हुआ जब उसे बताया गया कि १९१४ से १८ तक एक विध्वंसकारी युद्ध लडा जा चुका है और अभी हाल दूसरा विश्वयुद्ध समाप्त हुआ है जिसमें नगर और आबादियाँ लुप्त हो गयी है। पवित्र पिताने जो पचाससे ज्यादा सालों अन्तर्मुख हो सन्त कथरीनीके उस मठमे रहते आये थे, नगरो और आबादियोके लोप हो जानेकी बात समझी या नही यह कह सकना मुश्किल है पर निश्चय जंगबाज खूनी दुनियाके खूंखार पंजोकी ओर पीठ कर जो ज्ञानराशि उन्होने बचा रखी है उसपर आज सैकडों ग्रन्थ लिखे जा रहे है, आगे हजारों लिखे जायेंगे। ज्ञानका दम भरनेवाले आजके सभ्योने

जहाँ सदियों संचित सभ्य जगत्के ग्रन्थागारों, म्यूज़ियमोंको बमोंसे नष्ट कर दिया है, सन्त स्तेफ़ानसका कंकाल आज भी त्वचा-मज्जा-रक्तविहीन अपना अस्थिपंजर धारे सन्त कथरीनोकी ज्ञानराशिकी उस वियावाँमें रक्षा करता जा रहा है।

■

दक्षिणी अरबके
फनजनकी खुदाईमें मिला ई० पू० दूसरी
सदीका यफासके घरानेका एक
अभिलेख

शेबाके क़ैदी

यमनके पुराविद् खनक दलके डाइरेक्टरने अमरीकी प्रेसिडेण्टको केबुल भेजा – "प्रिय प्रेसिडेण्ट, मेरा 'अमेरिकन फ़ाउण्डेशन फ़ॉर स्टडी ऑव मैन' अभियान दल रानी शेबाकी राजधानी मारिब-यमनमे नितान्त संकटमे पड़ गया है। सुलतान अहमदने दवा, आहार, पेट्रोलकी रसदका हम तक पहुँचना रोक दिया है। कृपया अत्यन्त तत्परतासे निजी रूपसे सुलतानको मजबूर करें कि वह अपने सैनिकोंको रोक ले और मेरा अपने अमरीकी वैज्ञानिकोंको सल्तनतसे बाहर निकाल ले जाना मंजूर करे। अगर आपने तत्काल कार्रवाई नहीं की तो अमरीकी जानें गहरे खतरेमे पड़ जायेंगी। कृतज्ञतापूर्ण धन्यवाद। वेण्डेल फ़िलिप्स।" पर प्रेसिडेण्टके कुछ कर सकनेके पहले ही जानें खतरेमें पड़ गयी और फिलिप्सको अपनी ही सूझ और साहसका सहारा लेना पड़ा। यह लोमहर्षक घटना यो घटी –

यमनकी बादशाहतके इमामके साथ इक़रारनामेपर हस्ताक्षर हो जानेके बाद 'अमेरिकन फाउण्डेशन फ़ॉर द स्टडी ऑव मैन'के खनक दलका डाइरेक्टर वेण्डेल फ़िलिप्स जब दल-बलके साथ शेबाकी रानी बिल्किसके महलोकी खोजमे चला तो उसे रंच-भर भी अन्देशा न था कि उसका यह सपनोंका अभियान सपना ही साबित होगा और उसे जान बचाकर यमनसे भागना होगा, अदनमे पनाह लेनी होगी।

फिलिप्सने बाइबिलकी पुरानी पोथीमे शेबाकी रानीका हाल पढा था, उसके अभियान-अभिसारकी बात पढ़ी थी – "ऊँटोकी भीड, वे सारेके सारे शेबासे आयेंगे, वे सोनेकी राशि लायेंगे, पूजाके धूप-नैवेद्य और वे मालिक (जेहोवा) का नूर नाज़िल करेंगे। और रानी शेबा आयी, उसने

राजा (सोलोमन) को स्वर्णराशि दी, ढेरके ढेर धूप-नैवेद्य दिये, रतन-जवाहरात दिये, मसालोकी इतनी राशि कभी नही आयी जितनी शेबाकी रानीने राजा सोलोमनको दी ।"

फिलिप्सने वह कहानी भी सुनी थी कि किस प्रकार, रानी शेबाके रूप-जालमे सोलोमन बँध न जाय इससे, उसकी रानियोने अफवाह उड़ा दी कि रानीके पैर बकरीके खुरो-जैसे है, और फिर सोलोमनने चतुराईसे वह भ्रम दूर कर रूपवती रानीको अपने पलंगपर खीच लिया था । वह रानी बिल्किस सेबाइयोंपर राज करती थी, ख़ूँख़ार बर्बर सेबाइयोपर — जिनके रक्तपातका उल्लेख पुरानी पोथीमे हुआ है कि — और फिर सेबाई उनपर टूट पडे और उनको बाँध ले गये; हाँ सेवकोको उन्होने तलवारके घाट उतार दिया है, और मै अकेला तुझसे हकीक़त बताने भाग निकला हूँ ।

उस शेबाकी रानीकी हज़ार कहानियाँ सच करनेका २८ सालके फिलिप्सने बीडा उठाया था । उसने मित्रोसे, संस्थाओसे लाखो डॉलर, दसो ट्रक-मोटरें, रेडियो, फिल्म, डॉक्टर, दर्जनो पुराविद्, वैज्ञानिक, खनक लिपिपाठक, अभिलेख शोधक इकट्ठे किये थे और अरबकी ओर चल पडा था । साथ-साथ चार-चार रुपयोके वज़न और क़ीमतके मारिया थेरेसाके हज़ारो चाँदीके सिक्के थे जिन्हे विशेष प्रकारके ढाला गया था क्योकि ये सिक्के ही यमनके मजूरो और अहलकारो-अफसरोको विदेशियोसे लेने मजूर थे । वैसे अठारहवी सदीकी ऑस्ट्रियाकी रानी मारिया थेरेसाके सिक्के दूर अरबमे दो सौ साल बाद आज भी चलते हैं, यह स्वयं कुछ कम अचरजकी बात नही । शायद युरेंपियन तुर्कोंके ज़रिये इनका अरबमें चलन हुआ जो आजतक बना हुआ है ।

अरबके प्रायद्वीपके दक्षिण-पश्चिममे सागरसे लगी यमनकी सल्तनत है जहाँसे यहूदी आबादी अभी-अभी इस्रायलकी ओर सरक गयी है । कभी यहाँ हज़रत मूसाने मिस्रसे अपने यहूदी क़बीले लाल सागर पार उतारे थे।

इसी यमनकी उत्तरी-पूरबी सीमापर ईसासे लगभग हजार साल पहले कुनबनियो और सबाहइयोकी बस्तियाँ थी। कुतबनियोकी राजधानी आजके नगर तिम्नासे लगी बसी थी और उससे कोई चालीस मील उत्तर-पश्चिम रानी बिल्किसकी राजधानी शेबा (शाबा) थी जिससे लगा हुआ आजका नगर मारिब बसा है। फिलिप्सने दोनोके खण्डहर सन् ४९-५१ मे खोद डाले। उनके प्राचीन मन्दिर और जलाशय मरुभूमिकी छाती फाड़ उघाड दिये, बाइबिलके पृष्ठ सच कर दिये। उसी मारिबकी ऐतिहासिक खुदाईकी यह ऐतिहासिक कहानी है।

फिलिप्स लिखता है मारिबके सामने पहुँचते ही प्राचीन इमारतोके खण्डहर दिखाई पडे, विशाल शिलाएँ इधर-उधर बिखरी पडी थी जिनपर ऊँचे टीलेकी चोटीपर पुराने नगरके खण्डहर खडे थे, अमरीकी गगनचुम्बी महलोंकी तरह झिलमिलाते। बायी ओर चन्द्रमाके मन्दिरके खम्भोकी टूटी क़तार खड़ी थी, नयनाभिराम। दाहिनी ओर बिल्किसके मन्दिर (महरम-बिल्किस) के वृत्ताकार भग्नावशेष मुसकरा रहे थे।

लिपिविशेषज्ञ डॉ० जॉन उधर अभिलेखोपर नज़र गडाये आपा खो रहे थे, इधर फिलिप्सका दल कुछ चकित था कि नगरकी ओरसे स्वागतके लिए लोग अबतक क्यो नही आये। पर शीघ्र ही सपना टूट गया। लोग आये, पर दूसरी हैसियतसे, फिलिप्सके दलको हिरासतमे लेने।

मारिबकी बस्तीके बाहर जैसे ही फ़िलिप्स-दल रुका अरबोकी भीड़ने उन्हे घेर लिया। कबीलाई भीड, सख्त चुप दिखनेवाले कबीलाई और सैनिक, दोनो हथियार बन्द। रायफलोसे लैस। बद-सूरत ख़ूँखार, नीले कपड़े पहने, चेहरे नीलसे रँगे। खनक चकरा गये। कोई उपाय नही सूझता था। घेरनेवालोकी संख्या बड़ी थी, मन्शा उनकी डरावनी लग रही थी। उनकी निगाहमे कुछ जिज्ञासा भी थी क्योकि उनमे-से किसीने न तो युरॅपीय देखे थे न मोटर गाड़ी देखी थी।

बड़े धीरजसे दलके सोमाली-अरब दुभापिये जामाने एक सैनिकसे

पूछा : क्या आप हमारे आनेकी राह नही देख रहे थे ? क्या सुलताननें सूचना नही भेजी कि हम आ रहे है ?

चेहरेपर बगैर कोई रग लाये सैनिकने कहा, नही। हमने मोटरकी आवाज़ सुनी तब हम उसे हवाई जहाज़की आवाज़ समझ आसमानमे देखने लगे। हमे मशीनगनोके फ़ायरसे उन्हे गिरा देनेका हुक्म मिला था। तुम लोग हमारे कैदी हो।

दूसरोको वही गारदकी हिरासतमे छोड सैनिक जामा और फिलिप्स-को नगरसे अलग एक गढीमे ले गये। वहाँ काली दाढीवाला एक जन ग़लीचोके अम्बारपर बैठा था। उसने अचरजसे फिलिप्सको देखा, फिलिप्सने उसे। दोनोने एक-दूसरेको पहचाना। पिछले साल तिम्नाकी खुदाईमें वह दवाके लिए फिलिप्सके पास गया था। उसका नाम क़ाज़ी अहमद बक्र् था और वह वहाँका हाकिम था। पर उसकी नज़रसे साफ ज़ाहिर हो गया कि पिछली मुलाकात रहमतके लिए उसे मजबूर न कर पायेगी।

"यहाँ क्या कर रहे हो ?" उसने तीखी सख्त आवाज़में पूछा।

"सुलतानने मारिबमे हमे खोदनेकी इजाज़त दी है," फिलिप्स बोला। फिर उसने सुलतानके साथ अपने इकरारनामेकी नकल उसके सामने रख दी। पर उसका उसपर कोई असर नही हुआ।

"मुझे इसका यकीन नही होता", काज़ी बोला, "तुम हमारे क़ैदी हो।"

फिर वे डेढ़ फुट मोटी पत्थरकी दीवारसे घिरे एक छोटे कमरेमे बन्द कर दिये गये, एक दर्जन सिपाही ऊपरसे तैनात कर दिये गये। सोलोमन और बिल्किसकी मुन्सिफ़ रूहोको काठ मार गया।

कुछ घण्टो बाद जामाने फिलिप्सके कानमे धीरेसे कहा—"यह जानकर कि हमारे पास कई ट्रकें है, ओबिदी क़बीले हमे बचानेके लिए आ पहुँचे है।" पर दल बनाकर लडना बूतेके बाहर था, फिलिप्स चुपचाप

सुनता रहा ।

नींद हराम हो गयी । नोद लगी भी तो सहसा टूट गयी, सैनिकका हाथ फ़िलिप्सकी मशहरीमे कुछ टटोल रहा था । पर एक दूसरा लम्बा हाथ भी उसमे घुसा और पहले हाथको उसने घसीट दिया । यह दूसरा हाथ सोमाली जामाका था ।

दूसरे दिनका वातावरण बदला हुआ लगा । सुबह ही काजी अहमद कुछ घबराया हुआ आया, बड़ी दिलचस्पी दिखाते खैरियत पूछी और पिछली रातकी नीदका ज़िक्र किया । पर बात कुछ और ही थी । हरकारेने बताया कि सुलतानका विशेष प्रतिनिधि घोड़ा भगाता आया और बोला था कि इतिहासकी खुदाई करनेवालोका अमरीकी दल मारिब पहुँचना ही चाहता है ।

विशेष प्रतिनिधि स्वयं सुलतानका साला था जो श्वेत अश्वपर तब भी विराजमान था जब फ़िलिप्स और क़ाज़ी उससे मिलने पहुँचे । उसने रात-भर घोड़ा सरपट भगाया था । अब ऐलान कर दिया गया कि अमरीकी दलको मारिबमे यथोचित खुदाई करनेका अधिकार होगा । तभी हारिब और मारिबका हाकिम सैनिकोंको और सशस्त्र ऊँट-सवारोके साथ अमरीकी दलको गिरफ़्तार करने आ पहुँचा । सैयद अलकोहलानीकी मन्शा दलको जंजीरोमे जकड़कर हारिब ले जानेकी थी । अब बदली स्थितिको देख उसका पसीना छूट चला । सभी हँसने लगे, कोहलानी अपनी हँसी उड़ती देख जल-भुन उठा । तभी फिलिप्सके हाथमे धीरेसे किसीने चिट थमा दी, चिटपर खबर लिखी थी – बेहरानसे शरीफ हुसेनके यहाँसे आयी थी – "कोहलानी हारिबसे चल पड़ा है, सलूक खतरनाक करेगा । खबरदार रहना ।"

पर मारिबमे खुदाइयाँ शुरू हो गयी । मारिबके सामने ही शेबाकी प्राचीन राजधानी सदियोसे सोयी पड़ी थी, फावड़ोकी चोटसे वह उठी । और अलाबस्तरकी मूरतें पृथ्वीके उदरसे नये जनमते बच्चोकी तरह निक-

लती गयी, अभिलेखो-भरी शिलासे अनन्त लेखो-द्वारा बीती दुनियाकी कहानी कहती चली गयीं। डॉ० अलब्राह उन्हे पढ़ने लगे, उनका ऐतिहासिक काल – ईसासे हज़ार साल पहलेसे ईसाके जन्म और बाद तक कूतने लगे, डॉ० जॉन लिखावटोकी नकलें गीली मिट्टीमे उतारने लगे। बिल्क़िसका मन्दिर, चन्द्रदेव इलुम्कुहका मन्दिर, प्राचीन जगत्का जलाशय, जिसके लिए शेबाका नगर विख्यात था, सब एक-एककर जमीन फाड़ नज़रोके सामने उठते चले आये, कुरानका कलाम सच उतरा – "शेबाके निवासियोके पास फलोसे लदे खूबसूरत बगीचे थे। पर जब लोग खुदाकी हकीकत भूल गये तब उसने उनको सज़ा देनेके लिए उनके जलाशयका बाँध (डैम) तोड़ दिया। मीठे फलोकी जगह अब उन बगीचोके पेड़ोमे कड़वे फल लगेंगे।" प्राचीन इतिहासमे किसी घटनाका इस बहुलतासे उल्लेख नही हुआ जिस बहुलतासे मारिबके इस जलाशयके बाँधके टूटनेका हुआ। प्राचीन कालमे मरुभूमिमे कुएँ खुदवानेका, नहर निकलवाने, तालाब बनवानेका बडा महत्त्व था, क्योकि जल ही वहाँका सच्चा जीवन था। उस जलाशयके तीस-तीस फ़ुट ऊँचे परकोटेके स्तम्भोकी क़तारें पृथ्वीके गर्भसे सहसा बाहर निकल आयी। खनकोके गोदाम खुदीं-निकली ऐतिहासिक वस्तुओसे, अभिलेखोसे भर गये।

पर उनकी बहुलता ही खनक दलका अभाग्य बन गयी। जितना ही अपनी सफलतापर खनक खुशियाँ मनाते उतनी ही गहरी चोट यमनके, विशेषकर वहाँके हाकिमोके, दिलको लगती। विशेष क्रोध उनको डॉ० जॉनपर था क्योकि वही मूरतो-अभिलेखोकी नक़लें तैयार करता, उन्हे एकसे अनेक कर उनका महत्त्व कम करता।

शत्रुताके दाँव-पेंच चलने लगे। दलके सदस्य उनसे बचने लगे, दिन-दिन उनसे अपमान सहने लगे। परसो उन्होने कुत्तेको गोली मार दी, कल दुभाषियेको छुरी दिखा दी, आज जान लेनेपर तुल गये। अब काम करना कठिन हो गया। पहले तो उन्होने नक़लोकी प्रतियाँ माँगी फिर

नक़ल करनेका हुक्म सुल्तानसे मँगवा दिया। अन्तमें मारीया थेरेसाके सिक्कोंके झगडे खडे कर दिये। कहा, काम बन्द कर दो। काम बन्द कर दिया गया। कहा, खम्भोंकी जमीन रेत हटाकर खाली कर दो, यह बतानेपर भी कि रेत हटते ही खम्भे गिरकर नष्ट हो जायेंगे, हुक्म जारी रहा। रेत हटा ली गयी। खम्भे गिरने लगे, मजूरोंकी जानपर आ बनी। तब फिर हुक्म आया कि रेत खम्भोकी जड़ोमे डाल दो। इस तरह दिन-दिन मुसीबतका पहाड़ खडा होने लगा था, वहीं घुटते रहनेके सिवा कोई चारा नहीं था। अमरीकी प्रेसिडेण्टको केबुल भेजा गया, राष्ट्रसंघके सेक्रेटरी जनरलको तार भेजा गया, पर कुछ बन न पाया। बाहर खबर भेजना भी साधनसे परे तो था ही, जानपर खेलना भी था।

अब एक और खतरा सामने आया। पता चला कि हुक्काम इस साजिशमें है कि फिलिप्स, डॉ० जान और बाब कार्मीनकी हत्या कर दी जाय और दल तथा खुदाईकी बीसवर्षीया सेक्रेटरी आइलीनको गायब कर किसी हरममें डाल दिया जाय जहाँसे वह कभी निकल न सके। अब खुदाईमे निकली बहुमूल्य वस्तुओकी रक्षा और बचा लानेसे भी बढ-कर चिन्ता दलके सदस्योकी जान और आइलीनकी लाजकी रक्षा की हो गयी। फिलिप्सने उसका उपाय सोच लिया।

यमनसे जान बचाकर भाग आया जाय। पर सैनिकोकी आँखोमे धूल झोंक इतने आदमियोके साथ निकल भागना सम्भव कैसे होता? पर जानके जब लाले पड जाते है तब उसकी रक्षाकी सूरतें भी एकसे एक सूझने लगती है। फिलिप्सने दलके सदस्योसे चुपके सलाह की। तय पाया – दो ट्रकोके लिए पेट्रोल और ट्रकोसे काछ लिया जाय, रातो-रात राहके लिए कुछ खाना, उससे भी आवश्यक पानी रख लिया जाय, हमले-का जवाब आखिरी वक्त हमलेसे देनेके लिए रायफलें रख ली जायँ।

रख ली गयी रायफलें; पानी, खाना, पेट्रोल बाँधकर भर लिये गये ट्रक। हिलना-डुलना कठिन था, खतरेसे भरा, क्योंकि तैनात सिपाही

रायफलें भरे, उनपर सगीन चढाये चौकस खडे थे, ज़रा-सी चूकका परिणाम प्राण नाश था। पर हो सब गया। कह दिया गया था कि अगले दिन मन्दिरके पास मूवी फिल्म तैयार करना होगा। ऐसेमे हलचल सदा होती थी, सिपाहियोने उस हलचलको मंजूर कर लिया, न जाना कि पक्षी सीकचोका द्वार खोल चुके है।

सारा सामान पीछे छोड सभी दो ट्रकोमे जा बैठे। दुभाषिया जामा एक ट्रककी पीठसे जा चिपका। हुक्काम दुश्मन क़ाजी जैद इनान और नागिव बुहसिन भी सिपाहियोके साथ मन्दिर जानेके लिए ट्रकोपर सवार हो गये। सुबह छह बजकर चालीस मिनिटपर ट्रक चल पडे। एकका चक्का फिलिप्सके हाथमे था दूसरेका चेस्टरके हाथमे।

ट्रक मन्दिर पहुँचे। जब-जब मूवी बनाये जाते सिपाही साथ खड़े होते थे, दल कुछ दूर जाकर फोकस वगैरह दुरुस्त करता। इस बार भी वैसा ही हुआ। शुबहाकी कोई वजह नही जान पड़ी। ट्रक कुछ दूर हो लिये जैद इनान अब भी साथ था। उससे बात करता एक मनोवैज्ञानिक क्षणमे फिलिप्स जो ट्रकसे उतर गया था ड्राइवरकी सीटपर यह कहता हुआ जा बैठा – फिलिप्सकी जगह सँभालें।

और एक, दो, तीन – दोनो ट्रक सर्रसे निकल गये। न हुक्काम कुछ समझ सके न धूल फाँकते सिपाही। दूर खड़े सिपाही हुक्कामकी ओर देखते रहे, हुक्काम ट्रककी ओर, और ट्रक उन्हे धूल फाँकते देखते-ही-देखते रायफलोकी मारके बाहर दूर निकल गये। तब कही दुश्मनोको होश आया पर अब हो ही क्या सकता ? ट्रको और साढिनियोका क्या मुकाबला ?

पर साढिनियोका उपयोग हुआ। अगले पडावपर ट्रकोकी राह रोकनेके लिए तार दे दिया गया था जिसकी खबर फिलिप्सको न हो सकी। कुछ खुशीसे कुछ डरते हुए मिनिट-मिनिट मृत्युसे दूर भागते फिलिप्स और चेस्टर रेतको आँधीमे बढ चले। पचासों मील आगे रेतका पहाड मिला, फिलिप्स तो निकल गया। पर चेस्टरका ट्रक फँस गया। बडी मेहनतसे

उछलते दिलपर हाथ रखे ट्रक निकाला गया। दौड़ जारी रही। सहसा पीछेके ट्रकसे आइलीनकी चीख सुनाई पडी – हाय, ऊँटोंकी सेना दाहिनी ओरसे पीछा करती आ रही है, वह देखो!

सबकी नजरें दाहिनी ओर मुडी, ऊँटोकी सेना ट्रकोंकी राह रोकने और तेज़ भागी आ रही थी। फिलिप्सने एक हाथमे पिस्तौल सँभाली, दूसरेमे ट्रकका चक्का और चेस्टरको भी वैसे ही तत्पर देख वह ट्रककी चाल तेज कर भागा। जितनी रायफ़लें साथ थी, कन्धोसे टिका ली गयी।

बेइहानकी सरहद पास थी। उस खूनी ज़मीनपर सरहद कैसी और किसकी? फिर अगर ऊँटसवार ट्रकोको सरहद पार भी पकड़ लेते तो बेइहानवाले क्या कर लेते, बद्दू क़बीलोके हमलोसे कौन-सी सरहद सीमातीत थी? ट्रक भाग चले।

सरहद पार, फिर ट्रक भागे। भागते रहे, घाटोंकी राह मिनिटोमें तय होती रही। ऊँट बिचक गये, बैठ गये, सवार उलट गये। ट्रक निकल गये, बेइहानमे, गहरे खतरो पार। रेडियोकी लहरें हजार आवाजोसे दिशाओमे प्राणरक्षाकी यह कहानी गुँजा चली। संसारके समाचारपत्रोने सहज क्रोधके साथ अपने शीर्षकोंके अक्षर ढाले।

■

ग्लैडिस टेरी,
पहली अमेरिकी नारी पुरा-
विद् जिसने खुदाइयोंमें
भाग लिया

आइलीन सलम्बा,
अरबी हरममें महिलाओंसे
मिलने जानेकी तैयारीमें

पुरातत्त्वकी पुजारिनें

इतिहासकी रोमांचक खुदाइयोंकी कहानियाँ पढनेवाली लडकियोंकी कमी नही पर जिन्होने इतिहासके भग्नस्तूपो और तिमिरवद्ध समाधियों-को खोद निकालनेमे अपनी जान संकटमे डाली है उनकी संख्या नहीके बराबर है। उन्हीमें-से ग्लैडिस और आइलीन है जिन्होने शेवा और सेमिरामिस और आजकी सदियोके बीच सेतु बाँधा है। ये अगर न होतीं तो मरुमे इतिहासके हीरे खोजनेवाले खनकोका लू और प्रचण्ड धूपमें डहता जीवन जलकर कोयला हो जाता। इनको पुरातत्त्वकी पुजारिनें वनानेका श्रेय 'अमेरिकन फाउण्डेशन फॉर स्टडी ऑव मैन' अरवी अभियानके डाइरेक्टर अट्ठाइस वर्षीय वेण्डेल फिलिप्सको है जिसने नारीको पहली बार इस कठिन और अधिकारके कार्यमे नियुक्त किया। ग्लैडिस सिनाई पर्वत सम्बन्धी खुदाइयोंमे अभियान और दलकी सेक्रेटरी रही थी, आइलीन अभियानके अन्त तक उसकी मुसीबतोकी साथिन भयानक खतरोसे उसकी रक्षा करनेमे तत्पर।

ग्लैडिस अभियानके फील्ड डाइरेक्टर टेरीकी वीवी थी, रूप और स्फूर्तिकी नारी मर्यादा। अमेरिकी लड़कियाँ तो सामान्य भी सुन्दर होती है पर जिसने मूवी-सचालकको साथी वरा और न्यूयॉर्क हालीवुडके स्काइस्के-परोको वीरान कर मिस्र और अरबके मरुका बियावाँ आवाद किया, निश्चय वह ललित सुन्दर थी, पतिके वनाये चलचित्रो-सी ही मनहर चपल नीलाक्षी, पिंगलकेशिनी। मिस्रमे अमेरिकी राजदूत जेफर्सन काफ्रे ने मुनासिब ही कहा था – यह अभिराम नवोढा निःस्सन्देह अविस्मरणीय है। काफ्रे को दो-दो वार ग्लैडिस-द्वारा चलायी गाड़ीमें उसके पास वैठने, उसे निकटसे

देखनेका अवसर मिला था, उसे बखाननेका वह अधिकारी था।

ग्लैडिस दलकी सेक्रेटरी तो थी ही, उसके 'पावर वैगन' की अभ्यस्त संचालिका भी थी। मोटरो, ट्रकोके बेडेकी गतिको रफ्तार वही अपनी गाडोकी गतिसे नियत करती थी। सचालनकी निर्भीकता, बीहड ऊँची-नीची भूमिमे उसकी शान्ति और सन्तुलित गति कोई उसकी देखता। इसी कारण मुबारक उसका इकला प्रशसक था। अरबोमें मोटरके कुशल संचालक और हवाई जहाजके पाइलटके लिए बडी श्रद्धा होती है। और ग्लैडिसके हाथ ट्रक और पावर वैगनके चक्केपर जितने सधे थे, हवाई जहाज़के चक्केपर भी उतने हो सधे थे। उड़ानके तीर तेवर कोई ग्लैडिससे सीखे।

ग्लैडिसने तीन-तीन ख़ुदाइयोके बड़े अभियानोको रोकड सँभाली थी, दो दरजन मिस्री और एशियाई खुदाइयोमे सौ-सौ अमेरिकी और यूरॅपीय पुराविदो, वैज्ञानिको, मिस्त्रियो, तीन-तीन सौ देशी सहायकोका प्रबन्ध किया था, उन वीरानोमे उन्हे घरकी याद नही आने दी थी। उसने ढाई टनका ट्रक, ट्रेलरके साथ, काहिरासे केपटाउन तक हाँका था और क़ाहिरासे सिनाई पर्वत तक दस दिनोमे छह चक्कर कर, पावर वैगनके ड्राइवरकी सोटपर बराबर बैठे रहकर मध्य-पूर्वमे गाडी चलानेका रेकॉर्ड क़ायम कर दिया था। अभियानके हद्रमाडंतकी यात्रामे ट्रकोके बेडेकी गति तो उसने इस योग्यतासे साधी कि किसी गाड़ोका न तो एक टायर फटा, न किसीका स्प्रिंग टूटा।

ग्लैडिस और आइलीनकी उपस्थिति अरबोसे आनेवाले ख़तरोको नरम भी जब-तब कर दिया करती थी। उनसे अरबी हरमोका आभास भी मिल जाता था जिनकी नारियोको पुरुष तो क्या सूरज-चाँद तक नहीं देख पाते थे। ग्लैडिसने अपनी डायरीमे एक हरमके भोतर प्रवेश पानेका बयान लिखा है जो दिलचस्प है।

बेइहानके शासक शरीफ हुसेनका लड़का अमीर हुसेन उसे अपने

पिताके हरममे ले गया। हरममे बारह बेगमे थीं, पर ग्लैडिस लिखती है, यह बता पाना कठिन है कि वे सारी पत्नियाँ थी या बच्चियाँ। कारण कि बेदुइनी लड़कियाँ बारहकी उम्रमे ब्याह दी जाती है। ग्लैडिसके सामनेकी ही घटना थी कि शरीफ हुसेनकी सालगिरहपर चौदह सालकी एक लड़की भेट की गयी। उसने झट उसे बीवी बना डाला, बीसवी बीवी!

बेगमे खूबसूरत थी, जैतूनी रंगकी, लम्बी आँखें, प्यारे जिस्म, शर्मीले चेहरे। अमीरने उसे अपनी माँ, हरमकी सबसे बड़ी चालीस सालकी बेगमसे मिलाया और उसे गलीचोंके अम्बारपर बिठा दिया। सारी औरतें अपने गलीचोसे उठ उसके चारों ओर जमा हो गयी। बेदुइनी औरतोंकी तरह उनके लेबास नीले नही थे, मनभावने रंगोकी रेशमोके थे, कमरपर भारी कमर-बन्द कसे थे।

लम्बी चुप्पीके बाद एक बेगमने अपनी ठोस चाँदीकी कमरबन्द ग्लैडिसको दे दी, ग्लैडिसने भी अपनी ब्रेसलेट उसे प्रतिभेंट कर दी – दोनों मित्र हो गयी।

यमनकी खुदाइयाँ शुरू होनेके पहले ही ग्लैडिस टेरी अमेरिका चली गयी। उसके पतिका एक सपना था, डॉक्टरी पढनेका, वह जॉन हॉप्किन्स यूनिवर्सिटीमे दाखिल हो गया। ग्लैडिसका भी अपना एक सपना था, उसे पूरा करने वह भी चली गयी – उसके सपनेने शिशुका आकार धारण किया।

ग्लैडिसकी जगह अब आइलीनने ली। ग्लैडिस ब्याही थी, आइलीन अनब्याही। आइलीन सलामा काहिरामें फ्रेंच माता-पितासे जनमी थी। बीस वर्षीया, जिसके बाल कागाकी तरह काले थे। इतनी कम उम्रपर जो फ्रेंच, अँगरेजी और इतालवीके अलावा अरबी जबानकी हर शाख समझती थी, हर बद्दू कबीलेकी जबान बोल सकती थी। अब वही दलकी सेक्रेटरी बनकर आयी। उसने सिनाईकी खुदाईमे काम किया था और

उसकी जबान और सूझने अनेक बार दलकी जान बचायी। आइलीनने अरब हरमसराका जिक्र किया है।

बेइहानके शासक शरीफ़ हुसेनके बेटे अमीर सालेहने जब पहली बार आइलीनपर नजर डाली तब उसके भीतर एक बार आँधियाँ चल गयीं, पर वह जानता था, आज़ादीमे पली यूरॅपीय लडकियाँ अरबी हरमसराकी बेगमोसे भिन्न होती है। उसने केवल उसे हरम देखनेको निमन्त्रित किया! आइलीन गयी, देखा सो लिखा।

अमीरकी बेगम कमसिन थी, आइलीनको देख ठगी सी रह गयी — इतनी आज़ाद यह आइलीन मरदोके बीच रहनेवाली, अरबी बेधड़क बोलनेवाली, इतनी हसीन!

आइलीन लिखती है — अरबी बेगमने कहा कि उस मर्दको एकसे ज्यादा बीवियाँ ब्याहनेको कोई हक नही जो सबके साथ बराबर इन्साफ न कर सके। अगर वह एकसे ज्यादा बीवियोसे निकाह करे तो सबके लिए उसके दिलमे बराबर प्यार होना चाहिए, सबके साथ बराबर उसे सोना चाहिए, बराबर हँसना चाहिए। उसे एक रात बस एक ही बीवीके पास जाना चाहिए, एक ही रात दो के साथ कभी नही बितानी चाहिए।

आइलीन समृद्ध घरानेमे जनमी थी। अनेक नौकर-नौकरानियोसे सेवाकी अभ्यस्त थी, आलीशान मकानमे रहती आयी थी। पर जीवनका यह रोग, पुराविद्-खनकका जीवन चुनकर, अपने-आप पाला था। धूप-लूसे जलते दक्षिणी अरबी रेगिस्तानमे मिट्टीके मकानमे रहना उसने स्वीकार किया था। जिन्दगीमे उसने कभी कपडे नही धोये थे, अब वह नित्य-खुशीसे धोती थी।

आइलीनको गुसलखाना बहुत प्यारा था, जैसा कही देखनेमे नही आया था। उसमे खुले आसमानके नीचे चारो ओरसे घिरे प्रकृतिकी छटा निहारते स्नान किया जा सकता था। गुसलका यह कमरा छतसे ऊपर बना था। इसकी दीवारें बस कन्धो-भर ऊँची थी, जिससे वह वहाँ धूपसे

भी नहा सकती थी, जलसे भी और गोपनीयता बनी रहती थी। गोपनीयता भंग होनेका खतरा बस एक ही था, उस लड़केसे जो फुहारके लिए छतपर जल भरने जाता था। नित्य एक बार वह मशकमें पानी भरकर ऊपर चढ जाता। इस सम्बन्धमें भी लड़केकी अक्लने एक सही रवैया अख्तियार कर लिया था जिससे सभी, विशेषकर आइलीन, सन्तुष्ट हो गये थे। वह मशक लिये पहले आइलीनके कमरेके द्वारपर जाता, वह कमरेमें है या नहीं। अगर वह कमरेमें होती तो वह ऊपर खटाखट सीढियाँ चढ जाता, स्नानागारका जलाशय भर देता जब वह उसका कमरा खुला और स्नानागारका द्वार बन्द पाता तो वापस लौट जाता। आइलीनको लगता कि दक्षिण अरबोंके बराबर संसारकी कोई दूसरी जाति शीलवान् और विनम्र नहीं। काश कि उसकी उनके प्रति यह निष्ठा आखिर तक बनी रह पाती!

एक दिन जब अरबी हाकिमोंकी ज्यादतीसे उसे सारी सुबह अरबीसे अँगरेजीमें और अँगरेजीसे अरबीमें निरन्तर अनुवाद करना पड़ा – झगड़े और बहसका अनुवाद – जिसमें इन्साफसे कोई वास्ता न था, तब भयकी छाया तक न जाननेवाली आइलीन – जिसने तीन-तीन अभियानोंका संचालन करते समय एक आँसू तक न डाला था – सहसा टूट गयी, रोती हुई कमरेसे बाहर निकल गयी।

सूबेके हाकिमका मन पसीज गया। ऐसे ही मनोवैज्ञानिक क्षणोंमें नारीकी आर्द्र-सत्ताकी आवश्यकता होती थी, और बिगड़ा काम बन जाता था। इसीसे अमेरिकी अभियानोंने कुशल नारी-सदस्योंको अपने दलमें शामिल किया था। ग्लैडिस और आइलीन उसी परिस्थितिकी उपचार थीं। हाकिमने उसे अपना हरम देखनेको आमन्त्रित किया जिससे दोनोंके मनकी बदगो छँट जाय। आइलीन आवेशमें थी, उसे वहाँ जाना मंजूर न था, पर अभियानकी सफलताका ध्यान कर उसने निमन्त्रण स्वीकार कर लिया।

हरमसे लौटकर उसने अपनी डायरीमें दर्ज किया, मित्रोंसे बताया – "एक छोटी-सी गुलाम मुझे धुंधले बड़े कमरेमे ले गयी, जहाँ फुसफुसाहटके वातावरणमे बस एक वाक्य सुनाई पडता था – यह वही लडकी है, देखो, कैसी लगती है। फिर किसीने सहसा एक परदा उठा दिया और मैंने अचरजसे देखा कि चित्र-विचित्र परिधानोंसे सजी कमसे कम बीस नारियोंसे घिरी हूँ। जैसे मै कोई नया खिलौना होऊँ, वे मुझे अचम्भे और प्यारसे घूरने लगी।

"फिर हाकिमकी बेगमने मेरा स्वागत किया और तब तो दूसरी भी मेरी ओर बढी। मेरी अरबी जबानने उन्हे विशेप खीचा। उनका सलूक बडा दोस्ताना, बडा प्यारा था। उन्होने कभी यूरॅपीय नारी देखी न थी। उन्हे लगा जैसे मै किसी और द्रव्यसे बनी हूँ। वे मुझे छूने-परसने मेरी बाँहें सहलाने लगीं और सिरसे पैर तक मुझे जतनसे जाँचकर जाना कि मै भी मनुष्य हूँ उन्हींके समान तत्त्वोंसे सिरजी।

"एक लडकीने जीवनमे पहली बार मेरी कलाईपर बँधी घड़ी देखी, उसके छोटे अंकोपर गौर किया, उसकी खूबसूरती सराही। दूसरीने मेरे घाँघरेको छूकर उसका कपडा देखा, तीसरीने मेरे काले बालोंमे उँगलियाँ फिरायी, चौथीने मेरे होठोंपर उँगली रख जानना चाहा कि उनकी सुरखी स्वाभाविक है या रंगसे बनी है। मैंने समझाया कि वह लिपस्टिक है, पर्ससे लिपस्टिक निकालकर अपने होठोंपर घुमाकर उसका प्रयोग बताया। उन्हे जानकर खुशी हुई, उन्होंने लिपस्टिकें ले ली अपने चेहरोंपर जगह-जगह उन्हे रगड़ा, बस होंठ बचा गयी।

"हाकिमकी बीवी स्वयं काफी सुन्दर थी। साफ़-सुथरी उसकी त्वचा थी, बाल उसके भौंरे-जैसे काले थे। सुन्दर सभी थी पर उनमे सुन्दरतम एक केवल चौदह सालकी थी, अत्यन्त सुन्दर, बहू लेबासमे सिमटी, हरी आँखें, चमकते केश, जैतूनी रंग। मैंने पूछा – क्या शादी हो चुकी है? शरमाते हुए उसने कहा, प्रस्ताव अनेक आये है पर मंजूर कोई नही किया,

क्या शादीके लिए उम्र उसकी बहुत छोटी नहीं ? मेरे पास ही एक और अत्यन्त आकर्षक लडकी बैठी थी – आँखोंमे श्याम सरोवर लहरा रहा था, काले 'कोल' का अंजन उनमे रचा था। कई बच्चोकी माँ थी, पर थी वह बीस सालसे एक दिन ऊपर नही। तीसरी बहू लड़की थी, सुन्दर वैसी ही जैसीका बयान 'अरेबियन' नाइट्स' में पढनेको मिलता है। साँवली, रहस्यमयी सुन्दरता, अण्डाकार आकर्षक मुख, भरपूर काले केश, गहरी काली आँखें, छोटी-सी सीधी नाक, भरे होठ, चेहरेपर कोई सिगार-बनाव न था, उसकी कोई ज़रूरत भी न थी। लम्बा क़द, तराशा जिस्म बाहोंमें शिशु। सिवा हॉ-ना के कुछ बोलती न थी, मुसकराती आँखोसे केवल देखती थी।"

पर मनकी बदली छँटी नही। बदली वह मनकी थी ही नही। खुदाई-मे निकली चीजोपर कब्ज़ा पा लेनेकी बात थी। ऐतिहासिक वस्तुओका मोल या तो मिट्टीका होता है या सोनेका, यद्यपि सोनेकी वस्तुओकी क़ीमत सोनेसे कही महँगी हो जाती है। सो उन्होने जो देखा कि ससारके पत्रोमे खुदाईमे निकली चीज़ोंकी चर्चा हो चली है और उनका महत्त्व ऑका जाने लगा है, तब तो सब-कुछ समेट लेनेके लालचने उन्हे धर-दबाया और उन्होने वह किया जो पुरातत्त्वके इतिहासमे कभी किसीने कहीं नही किया था।

कशमशकश चलने लगी। तनातनी यहाँतक बढी कि अरब हाकिमों-ने अभियानी दलको मार उसे रेगिस्तानकी रेतमे दफना देनेकी साज़िश की। उस साज़िशसे पनाह पानेकी बस एक ही सूरत थी, सब-कुछ जहाँका तहाँ छोड़कर जान बचाकर भाग जाना।

दलके अन्य सदस्योंकी बस जानपर ही बनी आ रही थी, आइलीनकी स्थिति तो उससे भी कही बदतर थी। उसके लिए तैयारी यह थी कि अभियानी दलको समाप्त कर चुकनेपर उसे हरममे डाल दिया जाय। फिर बाहरकी दुनिया उसके लिए सपना हो जाय। वह बच्चे जनती जाय, इन-

सानकी शक्ल न देखे।

आइलीनने तय किया कि अगर इसकी नौबत आयी और दलको हत्या हुई तो वह भी आत्महत्या कर लेगी जिससे तिल-तिलकर मरती लम्बी भयानक ज़िन्दगीसे वह एक साथ नजात पा ले।

पर ज़िन्दगी मौतसे बडी होती है, उसने बचनेके उपाय सोचे, किये, और एक दिन क्षितिजपर सूरजके उठते गोलेके साथ ही अभियानियोका दल संगीनो और रायफलोके बावजूद, हक्का-बक्का खडे हाकिमोके बावजूद, ट्रकोमे यमनकी सीमापर बेइहान-अदन इलाकेमे जा पहुँचा।

आइलीनकी ज़बानकी चुस्तीने, उसकी चौकसी आँखोने, निर्भीक तत्परताने जिस खतरेसे सबकी रक्षा की वह पुरातत्त्वकी रोमांचक कहानी है।

■

मृतसागरके तीरकी गुफा-
ओंमें मिले अभिलेखोंको
सदियों सुरक्षित रखनेवाले
मिट्टीके उत्तुंग कलश
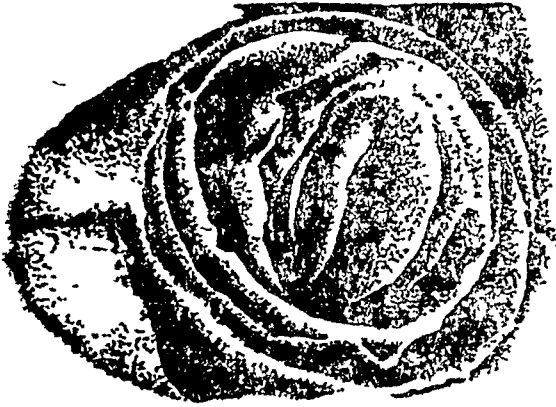
मृतसागरकी धातुकी
पत्तरें जिनके अभिलेखने बाइ-
बिलकी प्राचीनतम हस्तलिपि-
से अपना काल हजार साल
पहले प्रमाणित किया है

मृतसागरके परचोंका क्रय-विक्रय

रिचमण्ड ब्राउन और जोजेफ़ साद जब कन्दूसे मिलने नियत होटलकी ओर चले तब सादकी जेबें नोटोसे भरी थी। उनके उभारसे जेबोंकी थैलियाँ फूल गयी थी। एक-एक नोटके हज़ार जार्डनी दीनार, हजार पाउण्डके बराबर करीब साढे तेरह हजार रुपयोके नोट जेबोमे –

खतरा था, और वह खतरा ब्राउन और सादकी नजरोकी राह चेहरोपर झलकने लगा, जब होटलकी राह जाते इधर-उधर निगाह भटकी। दोनोने देखा, राहकी दोनों तरफ़ ख़ूँखार कातिल नजरें उनपर टिकी है। कई शक्लें जिनकी जालिम आँखोसे ज़ाहिर था कि उन्हे कुछ भी कर गुज़रनेसे परहेज न होगा और कि जिन कटारोकी मूठोपर उनके पंजे चिपके थे उन्हे काममे लाते उन्हे देर न लगेगी।

सादके हाथ अनायास अपनी भरी-फूली जेबोपर चले गये। उसे लगा कि नोट बजाय जेबोंके अगर उसके हाथोमे होते तो कुछ विशेष स्थिति प्रकट न करते क्योकि जेबोके भीतर भी बाहरसे उनकी पहचान कुछ मुश्किल न थी। दोनोके रोगटे गरदन तक खड़े हो गये, अनायास दम फूलने लगा, जब उन्होने देखा कि कन्दोने कच्ची गोलियाँ नही खेली और अपनेको धोखेसे बचा रखनेके लिए उसने होटलके दरवाज़े तक भेड़िये खडे कर रखे है।

ब्राउन और सादको लगा कि उनकी हर चेष्टापर नज़रे टिकी है। दोनो चुपचाप होटलके द्वारकी ओर बढ़े, होटलमे प्रवेश कर गन्दे कपड़े पहने होटलका मालिक दिखनेवाले एक आदमीसे पूछा – कन्दो क्या इधर कहीं है? होटलके मालिकने एक बार तीखी निगाहसे उन्हे देखा और

सामनेसे दूर एक कमरेकी ओर चुपचाप इशारा कर दिया।

ब्राउन और साद ऐसे चले जैसे उन्हे कोई परवाह न हो, पर दोनोंके दिल बेहाल धडक रहे थे। सादने दोनो जेबोमे हाथ डाल नोटोकी गड्डियाँ दबा ली। कमरेमे दाखिल होते ही उन्होने देखा कि कन्दो बडी बेचैनीसे उनका इन्तजार कर रहा है। उसके पीछेकी खिडकी खुली थी। कन्दो संयोगपर कुछ छोड़ रखनेवाला आदमी न था, पीछेसे भागनेकी राह उसके हाथमे थी।

दूसरे महायुद्धके बमोकी लगायी आग अभी नगरोमे बुझी भी न थी कि दुनियाके अखबारोंमें छपी एक खबरने लडाईके मैदानोसे लोगोकी निगाहे सहसा इस्रायल और जार्डनकी ओर फेर दी। जो घटना वहाँ घटी थी उसमे तिलिस्मका जादू था और विद्वानोका संसार लड़खड़ाता मृत सागरकी ओर चल पडा, भावुक दाताओके तोड़ोके मुँह खुल गये और धन मुँहमाँगी मात्रामे जुरूसलम, बेथलहम और अम्मानकी गलियोमें बरस पड़ा।

सन् ४७ की झुलसती गरमियोमे मृतसागर (डेड-सी) के उस पश्चिमी तटपर जहाँ पापसे भठे नगर गोमोराके निवासी नमकके खम्भे बने आज भी खडे है, खिरबत कुमरानके कुछ ही उत्तर जेरिकोसे कुछ ही दक्खिन पराड़ियोकी नीची ऊँचाइयोमे सैकडो छोटी-छोटी गुफाएँ है वहीं एक दिन बद्दुओके तामीर कबीलेका एक लड़का मुहम्मद अदोब बकरियाँ चरा रहा था। दिन-भरके थके माँदे मुहम्मदसे गफलत हुई, तीसरे पहर उसकी आँख लग गयी। उसकी बकरियोमे-से एक इसी बीच भटक गयी।

मुहम्मद उसकी खोजमे बकरियोकी आवाजकी नकल करता ऊपरकी ओर चला। धूपकी गरमाने फिर उसे बेदम कर दिया और पहाडो दीवारकी ढलानपर कुछ समतल भूमि पा वह लेट रहा। थकान भारी थी पर आँखे लगी नही, गुफाओसे आसमानकी ओर, आसमानसे गुफाओकी ओर फिरती टकराती रही और तभी उसकी नजर पासकी ही गुफाके सुराख-

पर जा टिको। उसे बचपनेमे सूझा कि और गुफाओंके मुँह तो नीचे हैं, इस गुफ़ाका मुँह इतना ऊँचा क्यो और ज़रा उचककर उसने उस गुफाके मुँहमे पत्थर फेंका।

पत्थरकी आवाज गुफाके भीतरसे कुछ ऐसी गूँजी कि मुहम्मदका कुतूहल बेहद बढा। कारण कि वह आवाज पत्थरके चट्टानसे टकरानेकी न थी, मिट्टीके बरतनोसे टकराने और बरतनके टूट जाने-जैसी थी। मुहम्मद निचली चट्टानसे पैर टिका जो उछला तो ऊपरकी गुफाका मुँह उसकी आँखोके सामने था। एक बार, दो बार, तीन बार, बारम्बार मुहम्मदने लटक-लटक सुराखमे झाँका और वे जब अँधियारेसे अभ्यस्त हो गयी तब उसने देखा – ऊँचे लम्बे मिट्टीके कलश कतारोमे रखे है।

अभी वह स्थितिकी समझपर काबू भी न पा सका था कि उसके छोटे-से आदिम दिमागमे डर पैदा हो गया और वह भागा, सरपट। अब उसे न तो भटकी बकरीकी परवाह रही न बची बकरियोके झुण्डकी। अब तो उसे स्वयं अपनी ही जान उस जिन्नसे बचानी थी जो उस गुफामे घर बना, बरतन भाँड़े डाल रम रहा था, वरना भला गुफाके इतने छोटे मुँहमें आदमीकी पैठ कहाँ हो सकती थी, उन बरतनोका प्रवेश कहाँ सम्भव था जिनसे वह गुफा भरी मालूम हो रही थी?

रातमे मुहम्मदने अपने एक मित्रसे इस अचरजका ज़िक्र किया। मित्र इस तरहके विश्वासपर हँसा करता था। उसने गुफा देखनेकी इच्छा प्रगट की। दूसरे दिन दोनो गुफाके द्वार जा पहुँचे। धीरे-धीरे लेटकर वे उसके मुँहमे सरके और गुफाके भीतर जा खडे हुए। आँखोको पहले तो विश्वास न हुआ पर उन्होने देखा दीवारके दोनो ओर ऊँचे-ऊँचे ढक्कनोसे ढके कलशे कतारसे रखे है, ज़मीन कलशोके टुकड़ोसे, ऊपर छतसे गिरे, मलबेसे ढँकी है। उन्होने एक कलशमे हाथ डाला, कुछ नही मिला, दूसरेमे डाला, कुछ नही मिला, तीसरेमे चिथड़ोके कुछ बण्डल मिले। मुहम्मद और उसके मित्रको बड़ी निराशा हुई कि कलशे सोनेसे भरे नहीं

निकले। पर तब उन्हें पता नहीं था कि जो बण्डल उनके हाथमें था उसका मोल सोनेसे कहीं अधिक था और जब चिथड़ोंमें गोल लिपटे रेशमके रोल-को उन्होंने खोला तो उसकी लम्बाई गुफाके बराबर निकली। इसी रोलकी लिखावट जब पढ़ी गयी तब बाइबिलके विद्वानोंमें तूफान आ गया क्योंकि वह नबी ईसाइयाकी किताब थी जो जानी हुई बाइबिलकी प्राचीनतम लिखी प्रतिसे कमसे कम हज़ार साल प्राचीनतर थी।

रोल लिए हुए दोनों असूरियाई ईसाई खलील इस्कन्दर शाहीनके पास पहुँचे जिसकी बेथेलहममें मोचीकी दूकान थी और जो उनसे पनीर और ज़कातसे बचाकर लायी चीज़ें खरीदा करता था। उसका दूसरा नाम कन्दो था। कन्दाने जो रोलोंपर लिखावट देखी तो उसका माथा ठनका। अपने मित्र जार्जके साथ वह लड़कोंको लिए गुफामें पहुँचा। उसे दूसरे रोलोंके पुलिन्दे भी हाथ लगे। उन्हें उसने जुरुसलमके पुरानी आबादीके सन्त मार्क सीरियाई मठके पादरीको दिखाया। पादरी प्राचीन इब्रानी लिखावट पढ तो न सका पर उसने जाना कि रोल अमूल्य है और उसने उन्हें २४ पाउण्डपर गिरवी रख लिया। अब स्वयं पादरीने उनकी मददसे आसपासकी अनेक गुफाएँ खोज डालीं और रोलोंका ढेर लग गया। पादरी-ने उन्हें हिब्रू विश्वविद्यालयके प्रोफ़ेसर सुकेनिकको दिखाया और सुकेनिकने कई बार कन्दोसे मिलनेके लिए बेथेलहमकी खतरनाक यात्रा की। खतर-नाक इस कारण कि अबतक यहूदी-अरब झगड़े बहुत विस्तार पा गये थे और एकके दायरेमें दूसरेका मिलना जानपर खेलना था, फिर इन रोलों-की खोज गुपचुप रीतिसे ही हो रही थी। क्योंकि देशकी सरकारने प्राचीन वस्तुओंकी निजी खोजको ग़ैरकानूनी ऐलान कर दिया था। इससे यह समूची भाग-दौड़ ही ग़ैरकानूनी थी।

अन्तमें १९ फ़रवरी १९४८ को पादरीने अमेरिकन स्कूल ऑव ओरिएण्टल रिसर्चके जॉन ट्रेवरसे सम्पर्क स्थापित किया जो डाइरेक्टरकी अनुपस्थितिमें डाइरेक्टरका काम कर रहे थे। पादरीने गुफाओंकी बात

छिपाकर बताया कि पुस्तकालय साफ़ करते समय 'स्क्रोल' मठमें ही मिले हैं। ट्रेवरने जो उनकी फोटो लेकर प्राचीन लिखावटोंसे मिलाया तो स्क्रोल उनसे भी पुराने साबित हुए। ट्रेवरको आश्चर्यका पारावार न रहा और वह अपना आश्चर्य पादरीसे छिपा भी न सका। पादरीको अब उन स्क्रोलोंकी प्राचीनतामे सन्देह न रहा। अगले नवम्बरमें अमेरिकन स्कूल ऑव ओरिएण्टल रिसर्चकी बुलेटिनमे छपा कि अठारह महीने पहले मृत-सागरके पास ऐसे स्क्रोल मिले है जो ईसासे भी पुराने है। इनके फोटो छप रहे थे और अलब्राइट-जैसे विद्वानोने लिखावट ईसासे पुरानी मानी जिससे ईसाई और यहूदी संसारमे हलचल मच गयी; जार्डन — इस्रायलका पण्डित लैंकेस्टर हार्डिग उनकी खोजमें लगा।

पादरी इस बीच, चुपकेसे स्क्रोलोको देशसे वाहर निकाल अमेरिका जा पहुँचा और उनका लाखोमे भाव-तौल शुरू कर दिया था। इधर जार्डनकी सरकारने उन्हे वापस माँगा। उनका भाव अमेरिकामे वेहद बढ गया था। पादरीने तय किया कि चाहे उसे स्वदेश छोड़ ही क्यो न देना पडे वह अपनी कीमतपर उन्हे बेचेगा और अमेरिकामें ही धनी जीवन बितायेगा।

उधर पैलेस्टाइन आरक्यालॉजिकल म्यूज़ियमके स्थानापन्न क्यूरेटर हार्डिगने उस संस्थाके सेक्रेटरी जोजेफ सादको गुफाओंका पता लगानेको कहा। साद अमेरिकन स्कूलके नये डाइरेक्टर डॉ० सेलर्ससे मिले। दोनों सन्त मार्कके मठ पुराने नगर (जुरूसलम) पहुँचे, जहाँ निरन्तर यहूदी गोले बरस रहे थे और मकानसे वाहर जानपर खेलना था। दोनों गलियों-मे छिपते मकानोके छज्जोके नीचे पनाह लेते दीवारके पास पहुँचे जो जुरू-सलमको यहूदी और अरबी दो भागोंमे बाँटती है। वहाँ वे जॉर्ज ईसाइया नामके व्यक्तिसे मिले। पर उसने गुफाओका भेद बतानेसे इनकार कर दिया।

सादकी धमकियोसे भी काम न चला पर तभी संयोगवश मठके एक पादरी फादर यूसुफ उधरसे निकले और सादने यकायक गुफाओंकी बात

पूछ दी। जॉर्ज जबतक उन्हे बोलनेसे रोके वृद्ध पादरीके मुँहसे निकल गया – मृत सागरके तीर जेरिको जानेवाली सडकके मोडकी गुफा। इतना काफी तो न था, क्योकि गुफाएँ वहाँ शहदके छत्तेकी तरह सैकडो फैली हुई थी, पर निश्चय उसकी पडोसका पता चल गया जो उस स्थितिमे कुछ कम न था।

सादने तय किया कि रिश्वतसे काम लिया जाय। जुरूसलमके मेयरको साथ लेकर वह सन्त मार्कके मठमे पहुँचा। लम्बी-चौडी बातें हुई। बात-बातपर 'इन्शाअल्लाह' का उच्चारण हुआ पर बात बनी नही, जॉर्ज ईसाइयाको कुछ भी बताना मंजूर न था। साद सेलर्सको लिये मेजर जन-रल लैशके पास पहुँचा। लैशने पहले ही पता पाकर गुफा खोजनेके लिए सैनिक देना मंजूर कर लिया था। ब्रिगेडियर ऐश्टन और कैप्टन अवकाश-की देख-रेखमे सैनिकोने गुफाको ढूँढ निकाला और १५ फरवरी सन् '४९ को खुदाई शुरू हुई। बीसों अभिलेखोके अंश चमडेपर लिखे हुए प्राप्त हुए। अनेकानेक पीतलपर खुदे लेख भी मिले, क्योकि अब अनेक ऐसी गुफाएँ मिली जिनसे ग्रन्थागारका काम लिया गया था, सैकड़ो कलशोकी सामग्री एकत्र कर ली गयी।

एक बार और सन्त मार्कके मठका द्वार ठकठकाया गया। जॉर्ज तो नही खुला पर फादर यूसुफ राहमे मिल गये। चर्चा हुई पर सादका गुफाओके सम्बन्धका ज्ञान यूसुफसे कही अधिक बढ़ गया था। अब गुफाओ-की जानकारीकी इतनी आवश्यकता न थी जितनी उन अभिलेखोकी जो मुहम्मद और उसके साथी गुफासे लाये थे और जिनमें-से ईसाइयाके पुरानी पोथीके अंश थे। राहमे यूसुफसे जब बात हुई थी तब एक स्त्री अपने द्वार-पर खड़ी बडी तत्परतासे उसे सुना रही थी। जैसे ही साद और सेलर्स चलनेको हुए उस स्त्रीने बढकर पूछा – आप क्या उस खुदाईकी बात कर रहे थे जिसका प्रबन्ध जॉर्ज ईसाइयाने साल भर पहले किया था? उनके 'हाँ' कहने पर उसने बताया कि उसके शौहरने भी उसमे हिस्सा लिया था

और मजूरीके बदले उसे चमडेका एक टुकडा मिला था। उसने शौहर जाब्राको बुलाया और जाब्राको वे अपने साथ म्यूजियम ले गये। खुदाईमे निकली चोजे करीनेसे मेज़ोपर सजायी रखी थी, सादने जाब्राको उनको दिखाकर पूछा – इनमे कोई चीज़ पहचानते हो ? उसने चारों ओर देखा। उनके बीच अपने सिगरेट रोलको पहचाना जिसे खुदाईके समय वह गुफामे ही भूल आया था। उसने मुसकराकर उसकी ओर इशारा किया और गैरकानूनी खुदाईकी चीज़ों तक पहुँचके लिए एक कडी और मिल गयी। जाब्राने अब स्थिति समझकर जो ज़बान वन्द की तो रिश्वत-की उदार रक़मसे ही फिर खोली। पता चल गया कि गुफा तो वही थी पर बहुत-से अभिलेख मठके पादरीके पास थे जो उन्हे लिये अमेरिका चला गया था। अब बेथेलहमके सौदागरका नाम पूछा गया पर जाब्राकी आँखो-मे मौतका डर-सा समाया दिखने लगा। जाहिर था कि जिससे सौदा करना है, बेथेलहमका वह सौदागर बेहद खौफनाक है, उससे जाब्राकी रक्षा भी करनी होगी, उसका पता भी लगाना होगा।

पर बेथेलहमकी यात्रा कुछ आसान न थी। साधारण समय वहाँ जानेमे केवल बीस मिनिट लगते थे, इस काल राह गोलियोंके भयसे मारा सरबाके मठसे होती अँधेरेमे, जूरियाई पहाडियोकी ओरसे चक्कर काट जाती थी। साद म्यूज़ियम की गारद लिये दोपहरके बाद बेथेलहम पहुँचा।

सादने जाब्रासे सौदागरका पता पा लिया था – बेथेलहमका सौदागर कन्दो सैनिक पीछे छोड़ साद कन्दोकी दूकानकी ओर वढा। बिना हथियार-बन्द रक्षकके एक पग बढ़ना भी कठिन था, पर पुराविद्‌को जानसे वढकर वह वस्तु प्यारी थी जिसकी खोजमे वह था। दूकानमे वह घुसा। अँधेरेसे अभ्यस्त हो जाने पर कुछ मिनिटो बाद उसने देखा – दूकानके भीतरी भागसे कुछ आदमी खड़े उसे घूर रहे है। उन्हींमे कन्दो भी था।

उनकी ओर देखता साद बोला – कन्दोने एक गुफा खोदकर कुछ

अभिलेख पाये है, कन्दो आपमे-से कौन है। इसपर एक आदमीने सादको देशद्रोही सरकारका जासूस आदि कह गालियाँ देता उसपर टूटा और उसे धकेलकर दीवारमे रगड दिया। इस बीच बाकी आदमी भाग गये। सादने तय किया कि चाहे जैसे हो कन्दोका विश्वास जीतना होगा। और वह आगमें कूद पड़ा। उसने साथियोंको गारदके साथ लौटा दिया, स्वयं कमरा लेकर बेथेलहममे ही रहने लगा।

धीरे-धीरे उसने कन्दोसे मेल-जोल बढाया। उसकी दूकानपर रोज जाने लगा पर कभी उससे अभिलेखोंकी बात न की। जब कन्दो और जॉर्ज-का उसपर विश्वास जम गया तब उसने कहा – तुम इन्हें अपनी क़ीमत-पर इस देशमे तो बेच नही सकते, यहाँ बेंचते ही ग़ैरकानूनी कामके लिए कैद कर लिये जाओगे, बाहर जाओगे तो देश छूटेगा, फिर क्यों न ऐसा करो कि मै सौदा पटा देता हूँ, यहीं मुँह-माँगे दामों अभिलेख बेच दो? म्यूज़ियममे आ जाओ। कन्दोने आना स्वीकार कर लिया।

म्यूज़ियम वह आया पर अभिलेखोंकी बात न की। साद भी चुप रहा, तब एक दिन कन्दो सादको म्यूज़ियमके बगीचेमे एक ओर ले गया, फिर अपनी जेबसे एक गन्दी पुटली निकाली। उससे तीन-चार अंगुल बड़ा एक टुकड़ा निकालकर सादको दिया। सादने उसे देखा-भाला, जाना कि दूसरे अभिलेखो और इसमे कोई फ़र्क़ नही है। निश्चय वह मूल और पुराना है, धोखा नही। भले प्रकार पुटलीमें लपेटकर सादने कन्दोको पुटली लौटा दी क्योंकि ज़रा-सी गफलत भी अभिलेखको सदाके लिए आँखोंके ओझल कर देती। सादने बता दिया कि वह उस अंशके साथ ही और अभिलेख भी लेनेको तैयार है। हार्डिगसे भी उसने बात पक्की कर ली।

कन्दो फिर लौटा, बात पक्की करने। उसने पूछा – किसकी ओरसे बात कर रहे हो साद? बोला – एक अँगरेज़ प्रोफ़ेसरकी ओरसे जो इस मुल्कमे इन अभिलेखोंको खरीदने ही आया है। कन्दोने बताया कि उसके पास और भी टुकड़े है जिन्हें वह बेचना चाहेगा। मिलनेकी जगह जेरिको

तय हुई। दिन तय कर साद खरीदनेवालेकी तलाशमें चला। जैसा उसने कन्दोसे कह रखा था, उसे अँगरेज होना चाहिए था। अँगरेज़ मिल गया। हार्डिगका एक असिस्टैण्ट था, अँगरेज, रिचमण्ड ब्राउन, जो अँगरेज़ प्रोफ़ेसरकी भूमिका करनेको तैयार हो गया। हार्डिगने एक-एकके हज़ार जार्डन दीनार (करीब साढ़े तेरह हज़ार रुपये) दे दिये। तय हुआ कि एक वर्ग सेण्टीमीटरका एक-एक दीनार (एक पाउण्ड-तेरह रुपये सैंतीस पैसे) मूल्य होगा। निश्चय यह मूल्य कुछ विशेष ज्यादा न था। जो पादरी अन्य अभिलेखोंको लेकर अमेरिका भाग गया था वह तो उनके मिलियन डालर (क़रीब पचास लाख रुपये) माँग रहा था।

रिचमण्ड ब्राउनको साथ लिये जोजेफ साद जब जेरिकोके उस गन्दे होटलमें पहुँचा, जिसका जिक्र ऊपर हो चुका है, तब दोनों ओर छुरीबाज़ोंके बीचसे उन्हें अंगारोंपर चलना पड़ा था। कन्दो कमरेमें जॉर्जके साथ खड़ा था, पीछेकी खिड़की खुली हुई थी, पता नहीं क्या गुजरे।

दोनों दलोंने एक दूसरेको सन्देह-भरी नज़रसे देखा, घूरा। शुबहेसे दोनों ओर नसें तन गयी थीं। 'सलामालेकुम' और 'वालेकुम अस्सलाम' की आवाजसे भी तनाव कुछ कम न हुआ। फिर प्रकटरूपसे सादने पूछा – टुकडे लाये हो? उसने सिर हिलाकर हाँ कर दिया, साथ ही जिज्ञासाकी नजर खुद उसपर डाली – क्या दीनार लाये हो? सादने उत्तरमें जेबसे नोटोंकी गड्डियाँ निकाल ली, मेजपर हाथोंसे उनके एक सिरे दबा पंखेकी तरह उन्हें फैला दिया। कन्दो आश्वस्त हो गया। उसने भी जेबसे कटे-पिटे टुकड़े निकालकर मेज़पर अँगरेज़ प्रोफेसरके सामने रख दिये। रेशमके उन टुकड़ोंपर धूलके नीचेसे पुरानी लिखावट झाँक रही थी। अँगरेज़ प्रोफ़ेसर सेण्टीमीटरसे टुकड़ोंको नाप रहा था, साद कन्दोसे बातें कर रहा था। कन्दोकी जान वहाँ जा फँसी थी, अँगरेज़ प्रोफ़ेसरके हाथोंमें।

सौदा हो गया। दोनो नोटोंके बदले रेशमी टुकडोंपर लिखे अभिलेख लिये लौटे। राह अब भी खतरनाक थी, क्योंकि अभिलेखोंकी कीमत दीनारोंसे अब भी कम न थी पर कोई बोला नही, साद और ब्राउन अंगारोंपर पाँव धरते म्यूज़ियम लौट आये।

बाहरकी दुनिया दम साधे सौदेकी राह देख रही थी जिसे ज़ाहिर करना उसे खो देना तो था ही, जार्डनकी सरकारसे दुश्मनी मोल लेना भी था।

■